A

श्री [illegible]

नं २०८८

सन् 1954-55

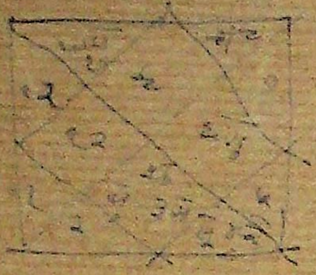

यह पञ्चांग गवर्नमेंट आफ इण्डिया से रजिस्टर्ड हो चुका है अतः कोई महाशय इसके किसी भी मजमून की नकल करने का साहस न करे। रजिस्टर्ड नं० १८०५

यह पञ्चाङ्ग गवर्नमेंट आफ इण्डिया से रजिस्टर्ड हो चुका है अतः कोई महाशय इसके किसी भी मजमून की नकल करने का साहस न करें। राजस्टर्ड नं० १८०५

॥ श्री ॥

दुरन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीप्रपम् ।
त्रिकालदर्शि प्रथरम्यपूर्वं 'मार्तण्डपञ्चाङ्ग' मिदं चकास्तु ॥

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

श्रीगणेशाय नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥

श्रीलक्ष्म्यै नमः

Shyam Sunder Sharma.

श्री बघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलभूषण श्रीमद्राजाधिराज
श्री१०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E.
सोलन

राजा रविः

मन्त्री भौमः

भारत के विख्यात पञ्चांगकर्त्ता
एवं ग्रन्थकार

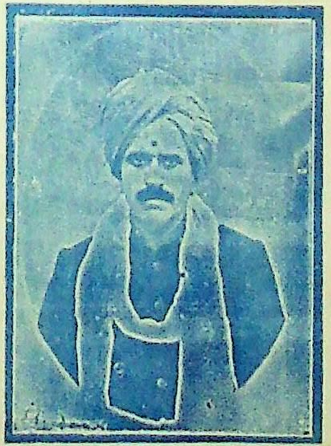

दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

रूपगढीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयैः

—०:श्री:०—

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं च

BAGHAT श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम् PANCHANG

श्रीविक्रमार्कीय सं० २०११, शके १८७६, सन् १९५४–५५ ई०, जयहिन्द सं० ७, (१५ अगस्त से ८)

गुरुवर्य श्री ६ पूज्यपाद श्री० बा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम. ए. बी. एस. सी. गणकचक्रचूडामणीत्याद्युपाधिधारिणाम् एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित-सिद्धान्तपञ्चाननपूज्यश्री ६ पं० केदारनाथसाहित्यभूषणज्योतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गतकुरालीनिवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्योतिषाचार्येण श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मणा विरचितम् । गणितकर्तारौ—साहित्याचार्यश्रीसत्यव्रत-प्रियव्रतशास्त्रिणौ ।

बांकीपुर पटना ❋ मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, बनारस । ❋ किनारी बाजार देहली

विषय-सूची

विषय	पृष्ट
अवतरणिका, श्रीकाशीपण्डितसभा का व्यवस्थापत्र	१
मंत्रों का अद्भुत चमत्कार	३-४
दैनिकलग्नसारिणी	५-१०
लग्नसारिणी देखने की रीति, नवांशानयन एवं चन्द्रोदयास्त प्रसूतिलग्नविचार	११-१३
पुरुष एवं स्त्री जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलादि मातृपितृसन्तानादि नाशयोग	१४
स्त्रीजातक बालकदन्तोत्पत्तिफल कन्या वा बालक गण्डमूलोत्पन्नफल	१५-१६
बालकष्टावली-नक्षत्रकष्टावली	१७- ०
रोगविनाशी तिथिवारकष्टावली	२१
अनिष्टग्रह दान-जप-स्नानौषधय:	२२
गोच ग्रहभावफल ग्रहदृष्टयादिचक्र	२३-२४
नक्षत्रराशिज्ञान जन्मफल भावीविचार	२५-२६
वर्षाविज्ञान द्वादश राशियों का फल	२७-२९
वर्षफल श्रवण सृष्टिक्रम	३०
वर्ष के राजा आदि का फल विश्वेस्तंभ लाभ खर्च	३१-३२
आकाशी कौंसिल ग्रहण निर्णयादि	३३-४०
२४ पत्र (चैत्रादिमास)	४१-६४
तेजीमंदी ध्रुवा आवश्यक मुहूर्त विचार मेलापक सारिणी, विवाहलग्न शुद्धि यात्रादि मुहूर्त प्रश्न विचारादि	६५-८८
लग्नदशमसारिणी दैनिक ग्रह तथा चन्द्र १०।१० घटी का स्पष्ट	८९-१०९
२०११ संवत्सरे शुद्ध विवाहाद्यनेक मुहूर्त	११०-१११
कात्यायनोक्तविवाहसूत्रों पर सम्मतिपत्र	११२-११३
श्रीजैनपर्व निर्णय:	११४

संस्कृत और हिन्दी परीक्षोपयोगी पुस्तकें

ज्योतिष ग्रन्थ

धर्म, कर्मकाण्ड, पाचरात्र, आगम, तन्त्र

व्रत, कथा, माहात्म्य तथा पुराण आदि

चिकित्सा सम्बन्धी साहित्य

आशीराशंसना

जयन्ति श्रीमहाविद्यापादपङ्कजरेणव: ।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्त्वरम् ॥१॥
श्रीदुर्गासिंह वर्माख्यो राजा राजगुणैर्युत: ।
सनातनी धर्मधुरं, वहन् भागवतोत्तम: ॥२॥
बघाटेश: सोलनाख्ये[1] राजधान्यामुदारधी: ।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजक: ॥३॥
निदेशात्तस्य राजर्षेरिदम्पञ्चाङ्गमुत्तमम् ।
प्रसृत्य मार्तण्डसमम्ज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥४॥

१ पुरानवपलान्यस्ति रेखात: सोलनं पुरम् ।
यत्र रुद्रव्यङ्गुलाद्रि (७।११) मितांगुलप्रभा ॥

श्री १००८ आनन्दमयी मां

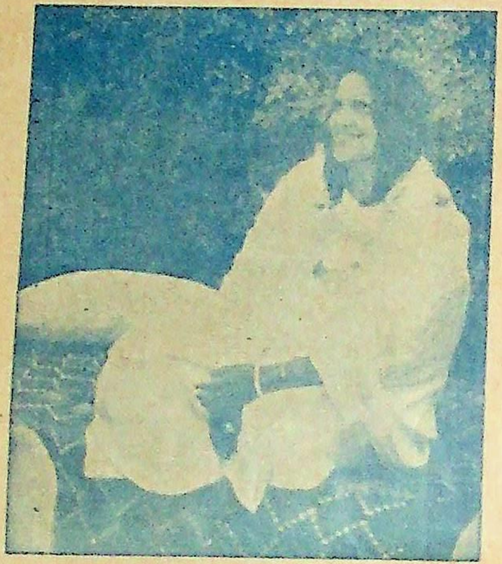

पार्थे भवार्तिघनपाशविमुक्तिदायै
वृन्दावनप्रमनसा शरणागतानाम् ।
ज्ञानञ्च भक्तिममिता सततं वदन्त्यै
आनन्दसान्द्रघनचराकृतये नमस्ते ।। —पन्त व:

भारतके उपराष्ट्रपति महामान्य डा० सर श्रीराधाकृष्णन् महोदय की श्रीमार्तण्ड-पञ्चाङ्ग पर सम्मति—

Vice-President's Secretariat
New Delhi.

Dear Shri Sharma,

Thank you for your letter & a copy of Shri MARTAND PANCHANGAM, which I glanced throughout with interest.

Yours Sincerely
S. Radha Krishnan

3-2-53

❁ कर्मठगुरु: ❁

यह द्विजातिमात्र के लिये नित्यक्रिया एवं कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थरत्न है। इसके आधार पर साधारण पाठत जन भी विद्वानों के आगे बैठकर सर्वप्रकार के कर्म नि:संकोच करा सकता है। इसकी अद्भुत शैली देखने योग्य है। जप, मन्त्र पुरश्चरणादि के अनेक विधान और सिद्धिप्रद तान्त्रिक प्रयोग भी दिये गये हैं। सिद्धपुत्रेष्टि विधि और कई अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ आज तक कहीं नहीं छपा। विशेष क्या गागर में सागर भरा हुआ है। मू० ५)।

मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, बनारस

पञ्चाग कर्ता क सुपुत्र—उपसम्पादक

साहित्याचार्य श्री सत्यव्रत शर्मा शास्त्री — प्रियव्रत शर्मा शास्त्री

अवतरणिका

'ज्योतिश्चक्रस्य केन्द्राय जगतः स्थितिरूपिणे । त्रिनेत्रनेत्ररूपाय ग्रहेशाय नमो नमः ॥"

इस पृथिवी के याम्योत्तरीय दोनों ध्रुवों के मध्य समानान्तर में जिस वृत्त की कल्पना है उसे विषुवद्वृत्त कहते हैं, और सूर्य के गमन मार्ग को क्रान्तिवृत्त कहते हैं। यह क्रान्तिवृत्त जहाँ विषुवद्वृत्त को काटता है उसे अयन सम्पात कहते हैं। यह वर्ष में दो बार होता है, एक सायनमेष संक्रान्ति के समय वसन्तसम्पात दूसरा सायनतुला संक्रान्ति के समय शरत्सम्पात। यह भचक्र रेवती के अन्तिम भाग से २७ अंश दोनों ओर जाकर लौटता है। एक बार में २६००० वर्ष का समय लगता है। रेवती योग तारा से जो सम्पात की दूरी है उसे अयनांश कहते हैं "स्फुटदृक्तुल्यतां गच्छेदयने विषुवद्द्वये।" सायन कर्क-संक्रान्ति और सायन मकरसंक्रान्ति एवं सायन मेषसंक्रान्ति तथा सायन तुलासंक्रान्ति के समय अयन चलन स्पष्ट दीखता है। इसी अयन चलन एवं वेधोपलब्ध अयनांश तथा आरम्भ स्थान सम्बन्धी मतभेद होने से आज ज्योतिष संस्थाओं में मतभेद बढ़ता ही जा रहा है। इसी का यह परिणाम है कि प्रायः दाक्षिणात्यों के पंचाङ्गों म मलमास संक्रान्ति निरयन ग्रहों में बहुधा अवाञ्छनीय अंशों तक का अन्तर देखने में आता है। इसी अयनांश को बहुधा १९ से लेकर २४ तक मानने वाले देखे जाते हैं। परन्तु हमने आर्ष वाक्यों का समादर कर श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग में सूक्ष्म अयनांश का साधन करने में सम्प्रति बहुसम्मत चित्रापक्षीय मत को और श्री १०५ धर्म मार्तण्ड बघाटनरेशजी के आदेसानुसार धर्म-शास्त्र सम्मत तिथ्यादि साधन में अदृश्य (आर्ष) गणना को ही स्वीकार किया है। आचार्य कमलाकर ने अपने सिद्धान्ततत्त्वविवेक में लिखा भी है—

"अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद्युक्तितः कुरु। गणितं यद्धि दृष्टार्थं तद्दृष्टयुद्भवः सदा ॥"

शाकल्य संहिता में भी—

"तिथ्यादिसाधने क्वापि नार्केन्दोर्बीजयोगिता। राहुदर्शनतोऽन्यत्र दृकसिद्धा नेष्यत तिथिः॥"

उधर स्पष्टग्रहों के विषय में फलितज्योतिष के श्री केशवाचार्यादिकों ने "यत्पक्षे हि घटन्त" तथा "यान्ति संसाधिताः खेटा येन दृग्गणितैक्यताम्" इत्यादि लिखकर जन्म वर्ष प्रश्न के लिये तात्कालिक दृक्पक्षीय गणित को ही स्वीकृत किया है। तदनुकूल हमने भी नये ध्रुवे के अनुसार विशेष परिश्रमपूर्वक दृक्पक्षीय दैनिक सूक्ष्मग्रह स्पष्ट करके लिखे हैं जो यन्त्रों द्वारा वेध करके आकाश में प्रत्यक्ष दिखाये जा सकते हैं। जो दैनिक ग्रहों के साथ लिखा हुआ सूर्य है वह वेधोपयोगी दृक्पक्षीय है, और तिथ्यादि के सामने लप्टर में जो दैनिक सूर्य लिखा हुआ है वह सूर्यसंक्रमण एवं क्षयाधिकमासनिर्णयार्थ सौरपक्षीय है, क्योंकि महाकवि कालिदासजी ने लिखा ह—

'श्रीसूर्यसिद्धान्तमतोद्भवार्कात्साध्यौ तथा तावधिकक्षयाख्यौ।
मासौ तथा सङ्क्रमकाल एव साध्यः सदा होरिकशास्त्रविद्भिः" ॥

प्रश्न मुहूर्तादिक में चन्द्रमा का स्पष्ट नवांशादि देखने के लिए दस दस घटी क अन्तर पर (दिन में ६ बार) सौरपक्षीय चन्द्रस्पष्ट भी कठिन परिश्रम करके लिखा है, जोकि आप को अन्य किसी भी पञ्चांग में नहीं मिलेगा।

इस पञ्चांग का फलित लेखन एवं अन्य उपयुक्त विषयों का सङ्कलन मेरे पूज्य श्री पिताजी (प्रधान सम्पादक) ने किया है, और गणितादि का सम्पूर्ण कार्य मुझ अल्पज्ञ ने किया है। यद्यपि मैंने श्री पूज्य ज्येष्ठ भ्राता साहित्याचार्य श्री सत्यव्रतजी शास्त्री कविवर्य के तत्त्वावधान में सम्पूर्ण गणित किया है, तथापि यह अङ्कजाल बड़ा ही गहन है, अतः कदाचित् "गन्तुर्हि स्खलनं भवेत्"—"भ्रान्तिर्मनुष्यधर्मः" इस न्याय से प्रमादवश कोई त्रुटि अथवा लिखने छपने की कोई अक्षम्य अशुद्धि रह गई हो तो उसे विद्वान् निर्मत्सर हो दयार्द्र-दृष्ट्या सुधार कर अपने नूतन सुझाव के साथ सूचित करने की कृपा करें यही नम्र निवेदन है। १

निर्मत्सराणां सतामनुचरः—

श्री मार्तण्डभवन कुराली (अम्बाला) चै०शु० ९ सं० २०१० वि०
प्रियव्रतशर्मा शास्त्रि (पञ्जाब) साहित्याचार्य-(राजस्थान) सिद्धान्त ज्यौतिष-शास्त्री (काशी)

कात्यायनोक्त विवाहनक्षत्रों के विषय में "श्री काशी पण्डित सभा बनारस" की ओर से प्राप्त व्यवस्था पत्र—

मुद्रा
श्री काशी पण्डित सभा

श्री काशी विश्वेश्वरो विजयते

—o—

मुहूर्त्तग्रन्थेषु विवाहोक्तनक्षत्रमीमांसावसरे यानि नक्षत्राणि ग्राह्यत्वेनाभिमतानि तेष्वश्विनी-श्रवण-चित्रा-धनिष्ठेति चत्वारि न वर्त्तन्ते, वर्तन्ते चैतानि तथात्वेन पंचाम्बुमण्डलान्तर्गत-कुरालीजनपदवासि दैवज्ञरत्न श्री मुकुन्दवल्लभमिश्र ज्योतिषाचार्य-विरचित-श्रीमार्तण्डपंचाङ्ग इत्यास्तिकप्रवराः केचन विद्वांसस्तथ्यातथ्यावधारणे संशयलीलान्दोलितहृदयाः सन्तः कर्त्तव्याकर्तव्यविवेकशून्या वरीवृततीति सप्रमाणं निर्णयमधिगन्तुं तत्रत्यैः कैश्चन विद्वद्भिः प्रार्थितायाः काशीपण्डित सभायाः अधस्तनः सिद्धान्तः—

यद्यपि वैवाहिकनक्षत्रपरिगणनाऽवसरे साधक-बाधकवाचोयुक्तिभिर्मौहूर्तिकप्रवरैः स्व-स्व-ग्रन्थेष्वश्विन्याद्युक्तनक्षत्र-चतुष्टयस्योल्लेखो नाक्रियत, तथापि विवाहसंस्कारः षोडशसु संस्कारेषु प्रधानतमः, स च स्वस्वशाखीयं गृह्यसूत्रमेव प्रामाण्येनाऽवलम्बते। तद्व्युत्पत्तिस्तु गृहाय = गृहस्थाश्रमधर्माय हितो गृह्य इति, गृहे भवो गृह्यइति वा यौगिके "यस्मिन्नग्नौ पाणिं गृह्णीयात्स गृह्यः" इति खादिरोक्तरीत्या रूढे च गृह्यशब्दे गृहीतशक्तिके तत्र क्रियमाणानां कर्मणामपि गृहसंज्ञात्वात् संक्षेपेण तत्प्रतिपादको ग्रन्थो गृहसूत्रमितिप्रमाणविदोविदुः। तच्च विविधासु शाखासु तत्तन्मुनिप्रणीततयाऽनेकविधतामाप्नुवत्स्वन्यतमं कात्यायनापराभिधश्रीमन्महर्षिपारस्करप्रणीतं पारस्कराभिधं गृह्यसूत्रं काण्वमाध्यन्दिनशाखिनां यजुर्वेदिनामुपयोगीत्यतस्तच्छाखीयं कर्माण्येतत्सूत्रोक्तविधानेनैव विधातव्यम्। उक्तञ्च गृह्य परिशिष्टे—

"बह्वल्पं वा स्वगृह्योक्तं यस्य कर्म प्रचोदितम्। तस्य तावति शास्त्रार्थे कृते सर्वं कृतं भवेत् ॥"

अन्यथा प्रत्यवायापत्तेः। यथोक्तं महर्षिणा जाबालिना—

"स्व शाखाविधिमुत्सृज्य संस्कुर्यादन्यशाखया। प्राजापत्यत्रयं कृत्वा पुनः संस्कारमर्हति ॥" इति।

एवञ्च स्वस्वशाखोक्तकर्मणामनुष्ठितौ स्वस्वगृह्यसूत्रस्यैवाऽभ्यर्हितत्वात्तेषाञ्च तत्तच्छाखाभिनिवेशिमहर्षिभिस्तत्तत्सूत्रेषूपनिबद्धत्वात्तत्तच्छाखीयैर्विद्वद्भिः स्वस्वगृह्योक्ते कर्मणि तत्तत्सूत्रमेव प्रमाणतयाऽभ्युपगन्तव्यमिति काण्वमाध्यन्दिन-शाखिनां यजुर्वेदिनां कृते पारस्करे-गृह्यसूत्रे "त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु स्वातौ मृगशिरसि रोहिण्यां वा" इति प्रथमकाण्डीयचतुर्थ-कण्डिकायामश्विनी-चित्रा-श्रवण-धनिष्ठेतिनक्षत्रचतुष्टयस्योद्वाहेऽभ्युपेतत्वादन्यवैवाहिकनक्षत्रेष्विवैतेष्वपि नक्षत्रेषु काण्वमाध्यन्दिनशाखाध्येतृभिर्यजुर्वेदिभिर्विवाहसंस्कारश्चक्षुषी निमील्य यथासुखं विधेय इति निर्विचिकित्सं विनिश्चिन्वन्ति काशीपण्डितसभासदस्या दशोत्तर-द्विसहस्रमितविक्रमाब्दीयशुद्धवैशाखशुक्लपौर्णमास्यां वाराणस्याम्।

(१) म.म. श्री नारायणशास्त्री खिस्ते (भूतपूर्व प्रिन्सिपल-गवर्नमेन्ट संस्कृत-कालेज बनार.

(२) श्री गणपतिशास्त्री मोकाटे व्याकरणाचार्य. (भूतपूर्व प्रो०–ग० सं० कालेज काशी)।
(३) श्री गोपालशास्त्री नेने व्याकरणाचार्य (भू. पू. प्रधानाध्यापक–ग०सं०कालेज काशी)।
(४) श्री ताराचरणशर्म भट्टाचार्य: (प्रिन्सिपल–टीकमणि संस्कृत कालेज काशी)।
(५) श्री योगेश्वरपाठक: दैवज्ञवाचस्पति (अध्यक्ष–शारदाज्योतिर्महाविद्यालय बनारस)।
(६) पं० श्रीनीलकंठज्योतिषी (प्रधान ज्योतिश्शास्त्राध्यापक-साङ्गवेदमहाविद्यालय बनारस)
(७) श्री ढुण्ढिराजशास्त्री न्यायाचार्य: (प्रधानाध्यापक–नित्यानन्दवेदविद्यालय बनारस)।
(८) श्री अनन्तशास्त्री फड़के: व्याकरणपुराणेतिहासाचार्य (प्रो०–ग०सं० कालेज बनारस)।
(९) श्री गौरीनाथपाठक: साहित्याचार्य: (प्रधानमन्त्री–पण्डित सभा काशी)।
(१०) श्री विश्वनाथमिश्र: दैवज्ञवाचस्पति काशी। (११) श्रीरामचद्रशास्त्री खनङ्ग:मीमांसाचार्य: (हिन्दुविश्वविद्यालय: काशी)। (१२) श्री लालचन्द्र वैद्य: (प्रिन्सिपल–अर्जुन आयुर्वेदविद्यालय: काशी)।

मुद्रा—श्री काशी पण्डित सभा

कात्यायनोक्त श्रवणादि नक्षत्रोंके विषयमें सुप्रसिद्ध पंचांगकर्ताओंके मत–

"मार्त्तण्डपञ्चाङ्गे महर्षिपारस्कर गृह्यसूत्रानुरोधेनाश्विन्यादिनक्षत्रचतुष्टयमधिकमङ्कितम्। यदवलोक्येतरैरेतद्गौरवमसहिष्णुभिर्विपश्चिद्भिरनौचित्यमुद्घोषितम्। अत्रानुयुज्यते—किमेतान्यनार्षसूत्राणि, उत-आर्षाणि? चेदनार्षाणि, तर्हि–अहो, पाण्डित्यं प्रेक्षावताम्। चेदार्षाणि, तदानीं "छन्दोवत्सूत्राणि भवन्ति" इति न तत्राऽऽक्षेपावसर:। यत: 'सक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवु:" इति निरुक्ते। महर्षय:सूत्रकारा एवाऽऽसन्, तद्यथा–कात्यायनकपिलकणादजैमिनिपाणिनिपतञ्जलिभृगुशुकव्यासपिङ्गलगोभिलादयो वेदाङ्गकारा दर्शनकाराश्च। आचार्याणां ग्रन्था: कालपरिवर्त्तनेन न सर्वथा मान्या:, यत: कैश्चिद्द्वेषानलकलुषितमनस्कै: स्वपक्षसमर्थनाय ग्रन्था निर्मिता:, इति। यथा— वराहमिहिराचार्यविसंवादिना कालिदासेन पुस्तकं व्यलेखि। इत्थमितस्ततो नक्षत्रचतुष्टये निर्मूलं दोषा: कथिता:। दोषनिरूपणे नाऽऽर्षप्रमाणम्, नाऽपि तत्र युक्तिवाद:। पुरा केनचिद्विदुषा नक्षत्रेषु रोहिणीमृगशिरउत्तराफाल्गुनीहस्तस्वात्युराषाढोत्तराभाद्रपदारेवतीत्यष्टनक्षत्राण्यार्षाणि समुद्धृत्य मघाऽनुराधामूलानीति नक्षत्रत्रयमप्रमाणमतर्कसहञ्च नियुक्तमिति, अन्यैरपि कविभिर्गतानुगतिकतया तत्क्रमोऽनुसृत:। तत्र मघानक्षत्रं पितृदेवताकं विवाहे क: शुभं कथयेन्मनीषी? विवाहपद्धतौ पैत्रिकमन्त्रोच्चारणान्ते समुद्विग्नस्वान्त:स्वास्थ्याय प्रणीतोदकस्पर्श: क्रियते। अनुराधानक्षत्रे च चन्द्रस्य नीचत्वमुपजायते, तत: को मेधावी चन्द्रबलमन्वेष्टुमुत्सहेत? अपिच–विस्मयास्पदं खल्वेतद्यद्वंशोच्छेदकं निर्ऋतेर्दारिद्र्यदेवताया अलक्ष्म्या: अधिष्ठानं राक्षसदेवताकं मूलनक्षत्रं विवाहे कथमङ्गीक्रियते कात्तान्तिकै:?
यद्दूषयन्ति वेदा—"ज्येष्ठघ्न्यां जातो विवृतो यमस्य मूलबर्हणात्परिपाह्येनम्।
अत्र मूलं मूलबर्हणं वंशोच्छेदकम्।" (अथर्ववेदे)
यजुर्वेदे— "यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवा स्व विवृत्य।"

इत्थं वेदमन्त्रानुरोधेन निर्ऋति-(राक्षस) देवताकस्य मूलनक्षत्रस्य विवाहे प्रतिषेधो-विधीयते। अतोऽलक्ष्मी हेतुकस्य मूलनक्षत्रस्य स्वीकारो यदि विधीयेत, तदानीं किमपराद्धं महर्षि-पारस्करप्रोक्तैर्हरिहरभाष्यस्फुटीकृतैरश्विन्यादिनक्षत्रै:? येषां दस्र-त्वष्टृ-वसवो देवता विवाहकर्मणि माङ्गल्यहेतुका: सम्यगभिधीयन्ते। अतो महर्षिसम्मतनक्षत्रचतुष्टयाङ्गीकारे न कापि क्षति:। आर्षाणि खलुनक्षत्राणिग्राह्याणि। प्रोत्साहनीयविषये न वृथाऽऽक्षेपाडम्बरप्रबन्ध: सम्बन्धनीय:"। इत्यावेदक:—श्री हंसराजकपिलो ज्योतिषाचार्य:
ति० ८।११।२००६ (मू०पू० पञ्चाङ्गकर्त्ता) हरियाण

जम्मू काश्मीर के प्रधान राजज्योतिषी श्री पं० मदनमोहनजी शास्त्री ज्योतिषाचार्य सम्पादक 'पञ्चाङ्ग-कल्पद्रुम' लिखते हैं—आपने चित्रा श्रवण घनिष्ठा और अश्विनी में विवाहलग्न लिखे हैं सो पारस्करगृह्यसूत्रानुसार ठीक ही है, मैं आपसे सहमत हूं। वैदिक-सम्प्रदायानुसार याजुषों को हित हैं इसीप्रकार सूर्याशानुसार बाणविचार भी ठीक हैं।
ह० मदनमोहन शास्त्री ज्यो०, जम्मू ९।४।५३

जयपुर पञ्चाङ्गकर्ता ज्योतिर्भूषण गणितमार्तण्ड श्री पं० बंशीधरजी शर्म्मा गौड़ लिखते हैं—आपने-अपने श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग में महर्षि कात्यायनोक्त चित्रा आदि ४ नक्षत्रों में विवाह-मुहूर्त लिखे हैं वह यजुर्वेदियों के लिये ग्राह्य हैं, आपने शास्त्रसम्मत ही लिखा है।
ह० बंशीधर शर्म्मा ज्यो० भू०, सिमरला ७।३।५२

खुर्जा शहर के सुख्यात ज्योतिषाचार्य श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ 'चिन्तादलनजंत्री' के कर्ता अपनी जंत्री में लिखते हैं—महर्षि कात्यायन के मत से चित्राश्रवणधनिष्ठा-अश्विनी में विवाह करना आर्यमतानुसार है और शास्त्र सम्मत है।
सम्पादक—चिन्तादलन जंत्री एवं विज्ञान ज्योति:

श्रद्धेय श्री 'महाकालपंचाङ्ग' सम्पादक अवन्तिकापुरी से लिखते हैं कि—गृह्यसूत्रोक्त "त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु" ये सभी चित्राश्रवणादि वैवाहिक ग्राह्यनक्षत्र हैं।
अवन्तिका, २८।२।५३

सौराष्ट्र के प्रसिद्धपञ्चाङ्गकर्ता पं० श्री देवशी वीरजी खोना तथा वेदशास्त्र सम्पन्न ज्योतिषरत्न पं० कृष्णजी विट्ठल सोमण अपने सुप्रसिद्ध खगोलसिद्ध पंचाङ्ग सँ० २००९ विक्रमी में लिखते हैं—श्र० ध० चि० अश्विनी यह चार नक्षत्र धर्मसिन्धु तथा कात्यायनमतानुसार विवाह में ग्राह्य हैं। इन चार नक्षत्रों को विवाह में लेने के लिये विद्वान् ज्योतिषियों में बहुमत हो चुका है एतदर्थं हमने भी इन नक्षत्रों में इस वर्ष से विवाह मुहूर्त लिखे हैं इत्यादि।

गुजरात के प्रसिद्ध प्रत्यक्ष पञ्चाङ्गकतर्ता श्री हरिहरभट्ट तथा पं० मणिशङ्कर शर्म्मा अपने लोकप्रिय पञ्चाङ्ग में लिखते हैं— रोहण्यादि विवाह नक्षत्रों के साथ आचार्य हरदत्त तथा कात्यायन मत से अश्विनी चित्रा श्रवण धनिष्ठा भी विवाह में ले सकते हैं। (इसी प्रमाण से इस सं० २०१०के पञ्चाङ्ग में अश्विन्यादि नक्षत्रों में विवाहमुहूर्त लिखे हैं)

मेदपाट देश के रत्न पण्डितभूषण श्री पं० हरदेव शर्म्मा त्रिवेदी ज्यो० जी ने अपने सं० २०१० के 'विश्वविजयपञ्चाङ्ग' में कात्यायनोक्त वैवाहिक नक्षत्रों का समर्थन करके श्रवणादि नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त लिखे हैं।

अमृतसर के सुप्रसिद्ध सूर्य पञ्चाङ्गकर्ता श्री पं० गिरधारीलाल ज्योतिषीजी (महर्षि श्री चिट्टु बिल्लूजी के वंशज) ने अपने पञ्चाङ्ग में इन कात्यायनोक्त नक्षत्रों का समर्थन करके विवाह मुहूर्त लिखे हैं।

ज्योतिश्शास्त्र के प्रकाण्डपण्डित अनेक ग्रन्थों के निर्माता व टीकाकार ज्योतिषाचार्य श्री पं० अच्युतानन्दजी झा (Ripon gold Medallist) लिखते हैं—श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग में विवाह के वेदोक्तनक्षत्र, शीर्षक लेख देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई श्रुत्युक्त इन नक्षत्रों (अश्विनी श्रवण चित्रा धनिष्ठा) में शादी करने में कोई क्षति नहीं है। यदि कोई व्यक्ति दुराग्रहवश नहीं करे तो यह बात दूसरी है, श्रुति का प्रमाण मिलने के कारण मैं इन नक्षत्रों को अत्युत्तम समझता हूं अनेक जगह मैंने शादी करवाई भी है, इस विषय में मैं आपसे पूर्ण सहमत हूं।
ह० अच्युतानन्द झा मु० दाथ (दरभंगा)

पटियाला महाराज के प्रधान राजपण्डित श्री मुल्कराजजी शास्त्री वेदान्त न्याय रत्न लिखते हैं—श्रीकात्यायनमतमनुसृत्य यल्लिखितं विवाहविषये तत्तु सर्वथा युक्तियुक्तम् नास्त्यत्रसन्देहलवः यदि च शास्त्रार्थो भवेन्नाम तदा सुवचम्। ह० मुल्कराज शर्म्मा पटियाला

सिद्धान्तपञ्चानन राजपण्डित श्री पं० केदारनाथजी साहित्यभूषण जयपुर से लिखते हैं—कात्यायनोक्त श्रवणादि विशेषनक्षत्रोंमें विवाहकर लेनेके में भी पक्षमें हूं। ह० केदारनाथजो०

सौराष्ट्र के खगोलसिद्ध पञ्चाङ्ग में श्रवणादि नक्षत्रों में विवाह मुहूर्त लिखे हैं इसी पञ्चाङ्ग पर परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १००८ जगद्गुरु श्री शंकराचार्य स्वामी श्री योगेश्वरानन्द तीर्थजी महाराज का तथा वैष्णवाचार्य श्री १०८ गोस्वामी श्रीकृष्णजीवनजी महाराज का चित्र है एवं पंचाङ्ग के विषयों से सहमत होते हुए आशीर्वाद पत्र छपा है इससे सिद्ध है उपरोक्त श्री शंकराचार्य तथा वैष्णवाचार्य महोदय भी कात्यायनोक्त नक्षत्रों में विवाह करने के पक्ष में हैं। आशा है कि अब धार्मिकजनता का भ्रम दूर हो गया होगा। काशी की पण्डित सभा का व्यवस्थापत्र भी आपने पढ़ लिया होगा।

कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी में विवाह मुहूर्त लगाने में निम्नलिखित धुरन्धर विद्वान् भी सहमत हैं—जैनमुनि श्री विकाशविजयजी महाराज। महामना पूज्य स्व० मालवीयजी के सहयोगी ज्योतिषरत्न श्री पं० रामेश्वर मिश्र, सिद्धेश्वरी काशी। श्री पं० देवीदत्तजी राजज्योतिषी पटियाला। श्री पं० रविदत्तजी ज्यो० कालका। श्री नर्मदाशंकर कृष्णाराम दर्शनशास्त्री पंचाङ्गकर्ता अहमदाबाद। श्री शंकरलाल छगनजी धर्मशास्त्री पंचाङ्गकर्ता अहमदाबाद। श्री पं० पुलस्त्यरामजी ज्योतिषी पंचाङ्गगणितज्ञ खन्याण (नाभा)। श्री पं० श्रीगोपाल शास्त्रीजी मोरिण्डा। श्री पं० हरिभानुदत्त शास्त्रीजी तथा श्री पं० लक्ष्मीदत्तजी ज्योतिषी कथारत्न तथा श्री गुरुमखरायजी वैद्यराज तथा पं० ज्ञानचन्द्रजी जंतली अमृतसर। श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री ज्योतिषी गढ़वाल। श्री पं० अभयानन्दजी शास्त्री सूर्यपुर (पेप्सू) श्री पं० परमानन्दजी वेदपाठी तथा श्री पं० शिवकुमारजी कर्मठ चरणियां। गणकरत्न श्री पं० बंशीधरजी शास्त्री मु० दटोह (बिलासपुर) श्री पं० रखखारामजी शर्मा शाण्डिल्य मु० पोसी (होश्यारपुर) श्री पं० टीकारामजी वेदाचार्य प्रो० वेदविद्यालय खुर्जा। श्री पं० दयालुचन्द्रजी शास्त्री मुलतानी। श्री पं० चन्द्रमणि ज्यो० मु० बडोह (होश्यारपुर) श्री पं० लज्जारामजीसंड सरहिन्द, (शेष देखो पञ्चाङ्ग केपीछे विवाह मुहूर्तों के समीप)।

मन्त्रों का अद्भुत चमत्कार

मननात्त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्न संशयः॥

मंत्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह होता है कि जिनके दृढ़ इच्छा शक्ति पूर्वक उच्चारण मात्र से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं, थोड़े शब्दों में इसी का नाम मंत्र है। इसमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कंपन (स्वर लहरी) उत्पन्न होता है। जिसमें रचना करने की तथा इच्छित वस्तु को आकर्षित करने की बड़ी प्रबल शक्ति होती है और वह मानसिक तथा भौतिक आकृतिपर आश्चर्यजनक प्रभाव डालनेके साथसाथ जिन कामोंको हम असंभवसमझते हैं या वर्षों में भी नहीं कर सकते। उन्हें वह दिव्यशक्ति चन्द मिनटों में पूर्ण कर सकती है।

मन्त्र शास्त्रज्ञों का कथन है कि वेद मन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तांत्रिक मन्त्रों को भगवान् शिव ने शक्तिमान् बनाया। इसी तरह कलियुग में शिवावतार श्री शावरनाथजी ने शावरमंत्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की है। मंत्र का पुरश्चरण करते हुए गुप्त रक्खें, प्रकट करने से उस किये हुए पुरश्चरण का प्रभाव कम वा नहीं के बराबर रह जाता है। ऐसी गलती होने पर पुनः गुप्तरीति से पुरश्चरण करें अत्युत्कट प्रभाव होगा।

घर में लक्ष्मी स्थिर रखने का मंत्र—ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

यदि किसी मनुष्य के पास अच्छा लाभ होते हुए भी धन संचय न होता हो पैसा साथ ३
ही साथ खर्च होता चला जाता हो तो उसे चाहिये कि शुभ मुहूर्त में स्नानादि से शुद्ध होकर एकान्त स्थल में बटवृक्ष पर बैठकर उपरोक्त मंत्र का जप करे तो घर में लक्ष्मी स्थिर हो जावे इसमें संशय नहीं। जप १ लाख करना, अन्त में हवनादिक भी विधि पूर्वक करे।

सट्टा लाटरी जीतने का विजय यंत्र

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

विधि—इस यंत्र को अनार की कलम और लालचन्दन से ग्रहण या दिवाली की रात से लिखना प्रारम्भ करे जब तक ३१ हजार पूरा न हो तब तक ब्रह्मचर्य से रहे किसी के घर भोजन भी न करे, यंत्रों को श्री लक्ष्मीजी का ध्यान करके चलते जल में प्रवाहित करके कन्या और बालकों को मिष्टान्न भोजन करावे। तदनन्तर यह यंत्र शुक्लपक्षस्वाति नक्षत्र में अनार की नई कलम से भोजपत्र पर पवित्र होकर लाल चन्दन द्वारा लिखे और अष्ट धातु के तावीज में रखकर दक्षिण भुजा में बांधे तो लाटरी सट्टा आदि में लाभ होगा।

नोट—इस धारण किये हुए यंत्र को कभी भूमि पर न रक्खें और न इसे अपवित्र होने दें। प्रातः दैनिक गंधपुष्पधूपादि से पूजन अवश्य कर लिया करें।

कल्याणमार्ग दर्शक मंत्र—"ॐ कार्पण्य दोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहितन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥"

किसी कार्यारम्भ की असमंजसता में किंकर्तव्य विमूढ़ होने पर रात्रि को शुद्ध मन एवं अत्यन्त भक्तिभाव और तार स्वर से १०८ बार या ११ बार उपरि लिखित गीतोक्त मंत्र को पढ़कर एकान्त में शुद्धासन पर शयन करे। प्रातः जागने पर जो आपके लिये कल्याणप्रद मार्ग होगा, वही मन में आवेगा उसी के अनुसार कार्य करना उचित है। यदि कोई सत्पुरुष इस मंत्र का ग्रहण या दिवाली में जप करके फिर उपयोग में लावेगा तो उसे अचूक सफलता मिलेगी।

गर्भ रक्षा यंत्र

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
श्रीं	ह्रीं	लं	छि

जिस स्त्री का गर्भपात होता हो उसकी कमर में उपरोक्त यंत्र अनार की कलम अष्टगन्ध या रक्तचन्दन से लिखकर तांबे धूपादि से सुपूजित कर रविवार के दिन बांधे और साथ ही रविवार को पुष्य नक्षत्र में काले धतूरे की लाई हुई जड़ को भी कुमारी छोटी कन्या के हाथ के काते सूत से कमर में बांध दें तो निश्चय ही गर्भ न गिरे ९ मास बाद उपरोक्त यंत्र और धतूरे की जड़ को कमर से खोलकर जल में प्रवाह दें। काम लेने से पहले उपरोक्त यंत्र को भी दिवाली और ग्रहण में अष्टगंध से लिखकर सिद्ध कर लेवें।

शावरी मंत्रों के चमत्कार—कलियुगी क्षुद्रजीवों के उपकारार्थ श्री शावरनाथजी ने शावरीमन्त्रों का निर्माण किया है। शावरीमंत्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है जिसके प्रायः कोई अर्थ नहीं होते परन्तु श्री शंकरजी के प्रताप से वह असर से खाली नहीं हैं श्री गो० तुलसीदासजीने इस विषय में क्या ही अच्छा कहा है—

अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेशप्रतापू॥

नोट—स्मरण रहे इन मंत्रों को जैसा लिखा वा बतलाया गया हो वैसा ही जपना और बोलना चाहिये। अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाकर किसी शब्द वा अक्षर को न्यूनाधिक्य न करें

बिच्छूविष दूर करने का मंत्र—

बिच्छू के काटने पर जो असह्य पीड़ा होती है उसे भुक्त भोगी ही जानता है निम्नलिखित मन्त्र से विष तुरन्त दूर होकर शांति हो जायगी। मन्त्र—"ऊँचां खेड़ा ढांक ढिकोड़ा जहां बसे निर्गुण का चेला, लाल बिच्छू काला बिच्छू पीला मटियाला धोला पहाड़ी हरा बिच्छू धरी चोप सोने की माला, ईश्वर मले गौरां नहाय मेरा बंध निर्विस होजाय पूरा मंत्रो ईश्वर बिचा मेरे गुरु का शब्द सांचा।" विधि—जिस स्थान पर बिच्छू काटे उससे ऊपर गांठ लगावे। अगर समय पर गांठ लगाने को कुछ न मिले तो चूल्हे की राखसे ही बन्द लगा दे, मंत्र पढ़ पढ़ कर विष उतारे, पीछे मिलसके तो इमली के बीज रगड़ कर डंकपर चिपका दे। उपरोक्त मंत्र को ग्रहण दीपावली की रात में जपकर पहले चलता कर लेवे पीछे बच्चों को मीठा बांटे तो सिद्ध हो।

सुखप्रसव मन्त्र (बंगाल देश का)—

यह सभी जानते हैं कि बच्चा पैदा होते समय स्त्रियों को घोर कष्ट होता है। उस कष्ट के दूर करणार्थ निम्नलिखित मंत्र अत्यन्त प्रभावशाली है। मन्त्र—"आकाश टले पर्वत टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुनकी कर कोका कोकी रक्त कुण्डली वसिया वाहिर हव असिया गुह्यडोल गुह्यद्वारे छड़िया वाहिर आसिया सिद्ध गुरु कालिका चण्डीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़े।" विधि—इस मन्त्र को ग्रहण में जपकर चलता कर लेवे, फिर इस मंत्र से ताजा शुद्ध जल को ७ बार अभिमन्त्रित कर प्रसव पीड़िता को पिला दे तो शीघ्र सुखपूर्वक प्रसव होवे। तान्त्रिक को चाहिये कि पुष्य नक्षत्र में घोड़े का नाखून कटवा कर अपने घर में रक्खें। प्रसव पीड़ा के समय अभिमन्त्रित जल पान के साथ उस नख की धूनी भी स्त्री को देवें तो निश्चय बच्चा सुख से जन्मे।

दाद कनेडू नहरुवा और कछराली का मन्त्र—

"दाद कनेडू नहरवा कछराली पकलूट दोहँ शाह फकीर की पाँचो भस्माभूत।" विधि—ग्रहण दिवाली को जपकर सिद्ध होने के बाद जब भी कनेडू (कान के नीचे का फोड़ा) या कछराली (काँख के फोड़े) आदि का कष्ट दूर करना हो तो उपले की शुद्ध राख पर ३ बार मंत्र पढ़ कर राख लगावें दिन में २ बार। तीन दिन में कष्ट बिल्कुल दूर होवे।

पेट के दर्द का अचूक टोटका

पेट में दर्द या अफारा अजीर्णादि रहता हो तो अनलगा सिर्फ खाली पानपत्र नागरवेल का ले, उसमें (१०) कालीमिर्च रखकर प्रातः भोजन से पहिले जब दायां स्वर चलता हो उस समय मुख में डालकर धीरे २ चबाकर निगल जावे, थूके नहीं ऐसा (८) या (१०) दिन करने से पेट का दर्द समूल नष्ट होकर आरोग्य लाभ होगा, भोजन के बाद लघुशंका करके १०० कदम चले तदनन्तर बांई करवट १५-२० मिनट लेटने का नित्य अभ्यास भी रक्खे।

सर्पविषनाशक गारुडास्त्र मंत्र

ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्माच्छन्दास्यङ्गानि यजूंषि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याऽशफा सुपर्णोसिगरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत ॐ। विधि—यह यजुर्वेद का गारुड़ास्त्र मंत्र है इस मन्त्र को सूर्यग्रहण के समय स्पर्श से मोक्ष तक किसी पवित्र नदी के किनारे कंबल के आसन पर बैठकर सूर्याभिमुख होकर रुद्राक्ष की माला द्वारा जप करे। जप के समय गरुड़ के साथ श्री चतुर्भुजी नारायण का ध्यान करता रहे बस ग्रहण के अनन्तर मंत्र सिद्ध है। तदनन्तर रोजाना सन्ध्या-पूजा के समय इस मंत्र को सात बार जप लिया करे फिर जब किसी को सर्प काटे तो नीम की लकड़ी या पुठकंडा (अपामार्ग) की जड़ से शनैः शनैः झाड़े विषदूर होगा।

अथ गारुडोपनिषत्

"ॐ ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि ब्रह्मा नारदाय नारदो बृहत्सेनाय बृहत्सेनो बृहस्पतये बृहस्पतिरिन्द्राय इन्द्रो भरद्वाजाय भरद्वाजो जीवत्कामेभ्यः स्वशिष्येभ्यः प्रायच्छत्, ॐ तत्तकारी मर्त्तकारी विषहारिणी विषदूषिणी विषसर्पिणी विषनाशिनी हतं विषं नष्टं विषं प्रणष्टं विषं हतं ते ब्रह्मणा विषं हतमिन्द्रस्य वज्रेण स्वाहा।"

नागानां सर्पाणां वृश्चिकानां लूतानां प्रलूतानां गोधानां गृहगोधानां मूषकाणां स्थावराणां जङ्गमानां यद्यनन्तकदूतस्त्वं यदिवानन्तकः स्वयं यदि वासुकिदूतस्त्वं यदि वा वासुकिः स्वयं यदि तक्षकदूतस्त्वं यदि वा तक्षकः स्वयं यदि कर्कोटकदूतस्त्वं यदि वा कर्कोटकः स्वयं यदि शंखपुलकदूतस्त्वं यदि वा शंखपुलकः स्वयं यदि पद्मकदूतस्त्वं यदि वा पद्मकः स्वयं यदि महापद्मकदूतस्त्वं यदि वा महापद्मकः स्वयं यद्येलापत्रकदूतस्त्वं यदि वा एलापत्रकः स्वयं यदि महैलापत्रकदूतस्त्वं यदि वा महैलापत्रकः स्वयं यदि कम्बलाश्वतरदूतस्त्वं यदि वा कम्बलाश्वतरः स्वयं यदि कालिकदूतस्त्वं यदि वा कालिकः स्वयं यदि कुलिकदूतस्त्वं यदि वा कुलिकः स्वयं। य इमां महाविद्याममावस्यायां शृणुयाद् द्वादशवर्षं न तं दशन्ति सर्पा य इमां महाविद्याममावस्यायामधीयानो धारयेद् यावज्जीवं न तं दशन्ति सर्पा अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा तृणेन मोक्षयति भस्मना मोक्षयति शतं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा चक्षुषा मोक्षयति सहस्रं ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा मनसा मोक्षयति इत्याह भगवान् ब्रह्मा आह भगवन्नित्यथर्वणवेदे गारुड़ोपनिषत् समाप्ता। ओं शान्तिः ३॥

इस गारुड़ोपनिषद् को जो मनुष्य अमावास्या को पढ़ता है या श्रवण करता है उसे सर्प भय नहीं होता। जिसे सर्प का भय रहता होतो उसे चाहिये कि इस उपनिषद् को पवित्र होकर अनार की कलम और लालचन्दन से भूर्जपत्र पर लिखकर त्रिलोह (सुवर्ण चांदी तांबा) के तावीज में रखकर धारण करे और स्वयं दैनिक स्नानादि से शुद्ध रहे फिर सर्पभय कदापि न होगा।

बीमार के जन्म पत्र से जानना कि जीयेगा या मरेगा—

विंशोत्तरी में जन्म लग्न से दूसरे या तीसरे छठे सातवें आठवें बारहवें स्थान के स्वामी की दशा हो, (अथवा) इन स्थानों में से किसी स्थान में वह ग्रह पड़ा हो जिसकी दशा वर्तमान हो, और योगिनी दशा में पिंगला, भ्रामरी, उल्का, या संकटा दशा में से कोई भी दशा उस समय वर्तमान हो, और योगिनी दशा में अन्तर सप्तमेश का अथवा सप्तम में जो ग्रह पड़ा हो, या सप्तम को पूर्ण दृष्टि से देखता हो, उसका अन्तर योगिनी दशा में हो। और गोचर में जन्म राशि से जन्म के चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें स्थानों में शनि, गुरु, राहु या केतु हो, गोचर में मंगल जन्म राशि में हो या जन्म राशि को देखता हो और गोचर में सूर्य जिस राशि के हों (सम राशि या विषम राशि)। यदि सम में हो और उस राशि का स्वामी जन्म पत्र में विषम राशि का हो और सूर्य विषम राशि में हो तो उस राशि का स्वामी जन्म पत्र में सम राशि में हो, बीमार की अवश्य मृत्यु हो जावेगी और इसके विपरीत हो जाने से निश्चय करके नहीं मरेगा।

बैठकर सूर्याभिमुख होकर रुद्राक्ष की माला द्वारा जप करे। जप के समय गरुड़ के साथ। इसके विपरीत ही जान से निश्चय करके नहीं मरेगा।

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।२२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्र्योत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२८	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२५	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

ता०	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३६	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३२	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

ता०	वृश्चि०	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४५	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४१	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३६	१०।५४	१२।५९	१४।४२	१६।७	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३२	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४५	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४१	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

प्रविष्टे	(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०											
	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

प्रविष्टे	(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०											
	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है. उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्नसारणी देखने की रीति—

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं। वे रेल्वे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं। जैसे रात के १को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४, एवं ३ को १५, रात के १२ को २४(०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरु हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बजकर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की संधि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि—

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्न सारिणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवे, शेष घंटा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्न मान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवे, लब्धि १ नवांश के मिनट जाने। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सैकिण्ड आवेंगे। यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होगा तुम्हें जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोडने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुवे के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटायातो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़े तो ९३ मिनट हुवे। अर्थात् मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सैकेंड एक नवांश का मान प्राप्त हुवा। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारम्भ काल का ज्ञात करना है। यहाँ मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुवे, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेंड) को ४ से गुणा किया तो ४१ मिनट, २० सैकेन्ड हुआ। इस ४१ मिनट २० सैकेन्ड को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेन्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भ काल हुवा। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सेकेण्डमें एक नवांश का मान १० मिनट २० सैकेन्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सैकेन्ड हुआ। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विवाह, यज्ञोपवीत, गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्तों में उपर्युक्त सूक्ष्म विधि से सिद्ध किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्त ज्ञानम्—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमूनं च युतं भुजाभ्याम्॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाडयश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की होतो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जानो।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरांत दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लालमलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४ बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्मा, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिन्ह, देर से रोया, ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याण प्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।२६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु:—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२ ६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २, स्त्री पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न १२
जानना क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कही शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुंण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचारः—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च न मूल त्रिकोण राशिका केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहोंकी दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशी भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशी पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो—तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनि-दशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब धाम, दीप तैल सों युक्ति कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूति का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्नसे चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उप सूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखे। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्या जोड़ना अन्यथा नहीं जोड़े। लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

घा, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१२।३।६।७।८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ

वनवमांश स्वद्रेष्काण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के वें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान गा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोगांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों हां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुरचरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण ४।५ में दक्षिण, ६ में नैॠत्य ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्---षट्‌त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहैं गर्गवचन परिमाण॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के पट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तकें अवश चिन्ह दरशाह॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिन्ह को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिन्ह भणंद॥

बालारिष्ट

दो०---धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहैं शशी जो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन॥
बसे चन्द्रमा द्वादशें अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥

अथ काणयोगाः---तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आइ बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अंध यह योग हैं भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशें वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगाः---पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जीन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुर्वसिह अज, दश भानु कुज बास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश॥

दुःखदयोगाः---रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख बिखवावीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परे लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगाः---क्रूर रहैं धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर करि, निवसें कारागार॥

सुखदयोगाः---अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह में परे तो जानो सख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीव(नपुंसक)योगाः---दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसें क्लिब भानु॥

कुष्टयोगाः---लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून॥

केमद्रुमः---आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।

सर्पवेष्टित योगाः---यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः---चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन के उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे---शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार---जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर---प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनीदेकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसका यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या वड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु:—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२ ६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को. जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २, स्त्री पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक ह, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न १२
जानना क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कही शनौ लोह कहि सोय॥

जन्मकुंण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचारः—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च न मूल त्रिकोण राशिका केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहोंकी दिशा–सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशी भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशी पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो–तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनि-दशमें वाम पञ्चम तनुपं चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीप तैल सों युक्ति कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका–यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूति का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्नसे चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उप सूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखे। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्या जोड़ना अन्यथा नहीं जोड़े। लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परिमाण ॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिन्ह दरशाहु ॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिन्ह को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिन्ह भणंद ॥

बालारिष्ट

दो०—द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहैं शशी जो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन ॥
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरें मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आइ बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अंध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुर्वसिह अंज, दश भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश ॥

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परें ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परें तनु मुख बिस्वाबीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परें लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय ॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहैं धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर करि, निवसे कारागार ॥

सुखदयोगाः—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह में परे तो जानो सुख संग ॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीव(नपुंसक)योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसे क्लिब भानु ॥

कुष्टयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह बरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट ॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून ॥

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परे ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन के उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनीदेकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसका यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु:—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२ ६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २, स्त्री पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक ह, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न जानना क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कही शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुंडली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचारः—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च न मूल त्रिकोण राशिका केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहोंकी दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशी भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशी पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो—तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब बाई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनि-दशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीप तैल सों युक्ति कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूति का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्नसे चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उप सूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देख। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्या जोड़ना अन्यथा नहीं जोड़े। लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

स्वनवमांश स्वद्रेष्काण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन कहें गर्गवचन परिमाण ॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिन्ह दरशाहु ॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिन्ह को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिन्ह भणंद ॥

बालारिष्ट

दो०—धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहें शशी जो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन ॥
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आइ बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अंध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय ॥ शुक्र त्रिके गुरुसिह अज, दश भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश ॥

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख बिश्वाबीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय ॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहैं धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर करि, निवसे कारागार ॥

सुखदयोगाः—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह में परे तो जानो सख संग ॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सबं सुखी नर होय ॥

क्लीव(नपुंसक)योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसे क्लिव भानु ॥

कुष्टयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह बरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट ॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून ॥

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन के उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनीदेकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसका यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ठ्या भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दा-भद्रा-जया-रिक्ता-पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।।

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह २ घड़ियां नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घटयादिमान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जाने ।

तीसका यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	शूर अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	२	धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत	५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री	७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु	८	अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म	९	दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	१०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ	११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	१२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थ ग्रहफलानि

भावाः		सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	२	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज	३	सुसुता	सुखिनी	बिसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत	४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत	५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकीर्तियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	८	विधवा	रोगिनी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म	१०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	१२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिनी

अथ मातृसुखनाशयोगः—(१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रह से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिये ।

पितृनाशयोगाः—(१) सूर्य मंगल दशमें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।।

भ्रातृनाशयोगः—भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय ।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय ।।

संतानसुखनाशयोगः

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव ।। पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ।।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पांचवें गुरु बसै नीचजात मनसाई ।। सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होई कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल ।। जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राज सुख होवे वेश्यावाज ।।

जारजयोगाः—भानु चन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है पर पुरुषको भाषत ज्योतिषमग्न ।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ।।

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्—

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । इसी प्रकार यदि चन्द्र के साथ २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो, शुभ कोई भी न हो तोमाता को कष्ट जानना ।

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल रल है, भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि तवें पति जीवे नहीं जासु ॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी वर कहँ कुज नीच ॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या स कुठौर ॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को जे तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग। भौम आठवें भवन में सो पति करिहै ग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ दशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम गु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि ॥

वैधव्य विष कन्या योगा:—चौ०—रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा तांहि दिन में जोय ॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार। साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय ॥४॥ जन्म लग्न द्वै शुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य विषकन्या भंग योगा:—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादि योगा:—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगा:—चौपाई—केंद्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई ॥ रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइहै सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ भवन गुरु आवे धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षट्वर्ग सुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्रभवन में होई ॥ ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइहैं तीन ॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचार:—पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्में तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है ॥ माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धन हानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता तोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है।

बालककी दन्तोत्पत्ति फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

एकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्—

शीर्ष	मुखे	कण्ठे ५	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वोः	पादे	स्थान
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी.
पशुना	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयाव.	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्—

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सैता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः ॥

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गंडान्त जन्म यात्रा में भय प्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ठया भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दा-भद्रा-जया-रिक्ता-पूर्णा च तिथयः क्रमात् ॥

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह २ घड़ियां नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घट्यादिमान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो ो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जाने ।

तीसका यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भाव:	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	शूर अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व:	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म ९	दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थ ग्रहफलानि

भावा:	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायु:	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिनी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृपांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिनी

अथ मातृसुखनाशयोग:—(१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रह से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिये ।

पितृनाशयोगा:—(१) सूर्य मंगल दशमें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ॥

भ्रातृनाशयोगा:—भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय ।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

संतानसुखनाशयोग:

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव ॥ पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ॥

रोगिणी स्त्रीयोगा:—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगा:—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पाँचवें गुरु बसै नीचजात मनसाईं ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होई कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल ॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राज सुख होवे वेश्याबाज ॥

जारजयोगा:—भानु चन्द्रतनु ना लखैं लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है पर पुरुषको भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्—

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । इसी प्रकार यदि चन्द्र के साथ २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो, शुभ कोई भी न हो तोमाता को कष्ट जानना ।

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुल गरल हैं, भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु ॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहँ कुजनीच ॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या त्रास कुठोर ॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजे तमारि ॥ छठें आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग। भौम आठवें भवन में सो पति करिहै भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पापग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि ॥

वैधव्य विष कन्या योगाः—चौ०—रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार। साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शत-भिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय ॥४॥ जन्म लग्न द्वे शुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य विषकन्या भंग योगाः—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादि योगाः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्काविष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई—केंद्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई ॥ रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइ हैं सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ भवन गुरु आवे धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी ॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्रभवन में होई ॥ ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइ हैं तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः—पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है ॥ माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धन हानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता तोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है।

बालककी दन्तोत्पत्ति फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्—

शीर्षे	मुखे	कण्ठे ५	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वोः	पादे	स्थान
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी.
पशुना	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयाव.	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्—

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः ॥

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त को ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गंडान्त जन्म यात्रा में भय प्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिये, तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४		पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटी.
राजा	पि. म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा.	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२। ५। ८। ११	३। ६। ९। १२	१। ४। ७। १०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतिपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्म दंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्। शतछिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचारः---ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाश माप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

अश्विनीजातस्य फलम्---अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालकका जन्म काल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये०	म० श्ले०	रे० अश्वि०	न
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	

मघा पाद फलम्---मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्---प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश। तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा॥

रेवती पादफलम्---रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुखतार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्।

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुल हानि	कुल कष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है तदनुसार फल जाने अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्मफलम्---जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली---जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू---जिस में चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल--व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृकष्ट वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति कराने से कल्याण हो।

			प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ॥		स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
किस समय कौन पूतना ग्रहणकरती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलिविधान व समय		
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोष।	नदीके दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटेके सतिये, कपूर लोहबान	श्वेतभात, ५पूर्णपोली (सुहाली), १ पहर दिन चढे पूर्वदिशा में चौरस्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वैश्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई खस आक के फल बिल्ली और मनुष्य के बाल निम्बपत्र गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग, भय, कृशता।	एक सेर चावल का आटा	१०दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलके आटे के सतिये १०	भात एकसेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिमदिशामें चौरस्तेपर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दुष्टा ग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हृड़फूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेतध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एकसेर लालभात, आधसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशामें किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन गोशृंग, सांप की कांचली नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमिलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिलचूर्ण एकसेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	भात १ सेर आटेके पूड़े आध सेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्षके नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में बिडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर शरीर में गर्मी, तेज।,	एक सेर चावलों का आटा।	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	ॐभगवती ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठः ठः चामुण्डे सर्वारिचण्डिके ठः ठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा।	नदीके दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना।	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथी दांत, घृत।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५।	भात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरस्तेपर मौनहोकर रखना।	बिडालिकाविधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनोंकिनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५ दीपक ५।	गेहूं कीरोटी, मसूरकीदाल हरासाग छागमांस, संध्यामेंचौरस्तेपररखना	बिडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी सुहाली उत्तरमें प्रातःचौरस्तेपर रखना।	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहनहुंफट्स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक २५ सतिये।	गुड़ के घी भुनेचावल, गोघृत, सायंकालदक्षिणमें चौरस्तेपररखना	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हृडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दोंका आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये।	श्वेतभात ७ पूड़े, सुहाली ७ सायं व प्रातः दक्षिणमेंचौरस्तेपररखना	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली पूड़े ७ पूड़ियां ७ मत्स्यमांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहन शोषय२ मर्दय२ शोषय२ हुं३ हन२ दुष्टानां हुं हुं फटस्वाहा	

अथ नक्षत्रकष्टावलीचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्विष्णुपूजाकर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः ।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्या [दतुलं धनञ्च] ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भंग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प घृत-गुग्गुलधूप घृतदीप क्षीर मोदक गुड नैवेद्य	गुडोदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥ १ ॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दरोग ।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप गुडोदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृत शर्करा छायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐ यमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देव-स्त्वासवितामध्वानवतु । पृथिव्याः संस्पृश-स्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोसि ॐयमाय नमः ।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपतिलमाषान्नबडाघीका नैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतांसिजिन्वति । ॐ अग्नये नमः ॥ ३ ॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीडाकुक्षि शूलशिरःपीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णा गोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवे-नआवः । सबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः । ॐ ब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधि तण्डुल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ इमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमह-तेज्यैष्ठयायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविषएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणना राजा । ॐ चंद्रमसे नमः ॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्यमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूप घृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभ कृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्ध धूप घृतदीप घृताक्त पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदिति र्जातमदितिर्जनित्वम् । ॐ अदितये नमः॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल महा कष्ट ।	कुंकुम गन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपघृतपायसशर्करानैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये नमः॥८॥	१० हजार

अश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवस्त्राकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मण भो.	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनु: ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्य: सर्पेभ्यो नम: । ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा तथा शिरपीडा	श्वेतचंदनगन्ध चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानमः। प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽती तृपन्न पितर: पितर: शुन्दध्वम् ॐपितृभ्यो नम:	१० हजार
पू. फा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि-मूलम्	ज्वरशिरपीडा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालतीपुष्प घृत बिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनीतिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदानभोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाद दन्न: भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंत: स्याम: ॥ ॐ भगाय नम: ॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल, शिरःशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्क पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐदेव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं ॐ अर्यम्णे नम: ॥१२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा ऊरु शूल सर्वांग-पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता वविह्रुतम्। वात जूतो यो अभिरक्षतित्म-ना प्रजा: पुपोष पुरुधाविराजति। ॐसवित्रे नम:	५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव-मूलम्	विचित्रानेक-रोग,अतिकष्ट	केसरअगरगन्धविचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुडविचित्रवृ ष.छा.पा.ब्रा.भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रियमक्षागौर्नावयोदधु: ॥ ॐ विश्वकर्मणे नम: ॥१४॥	१० हजार
स्वाति (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति-मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगंधदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णं रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्रिणो रथासस्ते भिराग हि नियुत्वामसोमपीतये ॥ ॐ वायवे नम: ॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इंद्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुञ्जा-मूलम्	कुक्षिशूलस-र्वांग पीड़ा	चंदनकेसरगंध कमलपुष्प देवदार घृत धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रकु.वृ. छायापा.दा.वि.भो	ॐइंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्यपातं धियोषिता ॥ ॐ इंद्राग्निभ्यां नम:।	१० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीड़ा	केसरगन्धकमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड यवाज्य	स्वर्णगोछा.पा.दा. ब्रा.भोजन	ॐनमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृ तं सपर्यतं दूरदृशे देवजातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशं सत्। ॐ मित्राय नम: ॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग-मूलम्	व्याकुलतापित्त रोगकम्पन	श्वेतचंदनगंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन सुपुष्प	तण्डुलतिल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन मघवाधात्विन्द्र: ॐशक्राय नम: ॥१८॥	१० हजार

मूलम् (राक्षसः)	०	६	१५	६	मन्दार-मूलम्	उदरतथामुख-रोगसन्नि-मय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृतदीप कृष्णागुरुधप माषमिश्रान्न-नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत कन्दमूल	स्वर्ण व.कृ. गौछा पात्र दा.कु.पू.वि.	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुभ्वा। तांविश्वेदेवऋतुभिःसंवदानःप्रजा-पतिविश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिर्ऋतये नमः।१९।	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पास-मूलम्	शिरपीड़ाकम्प. महाकष्ट	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्न	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव.ति.त.ज. कु.गो.दा.ब्रा.भो.	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्यं सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कार्पास-मूलम्	ऊरुशूल कटि-पीड़ा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसा न्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मणभोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमं हवंयेमे अन्तरिक्षे य उपद्यविष्टाये अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिषिमादयध्वम् ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	६	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वा. पीडा त्रि. भय	श्वेतचन्दनगंध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषडरस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव-मसि विष्णवेत्वा ॐ विष्णवे नमः ॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज-मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्पगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व. गो.दा.ब्रा.भो.	ॐवसोःपवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र-मसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोःपवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षःवसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल-मूलम्	सन्निपातभय वातज्वरकष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूर रच धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत. चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्रगोदा. कु.पू.ब्रा.भोजन	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसि वरुण-स्यऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन-मासीद ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजैकपा.)	०	१२	२१	१६	भृंगराज मूलम्	शरीरपीडात्रि व्याकुलतावमन	केसरचन्दनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौष. स्रिश्रितधूप घृतदीप दधिपायसनैवेद्य	दृध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजत अन्न श्वेत छा. पात्र दान ब्रा. भोजन	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृ-थिवीसमुद्रः। विश्वेदेवाःऋतावधीहुवानः स्तुतामंत्रा कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्य)	१०	२	६	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसा-र कामला रोग	चन्दनकर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजततिल कृष्णवस्त्रदान ब्रा. भोजन	ॐशिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु माभा हिंसीः। निवर्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वा-यसुवीर्याय। ॐअहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ-मूलम्	चित्तभ्रम उरु शू.ज्वर वा.वि.	रक्तचन्दनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्र पैत्तल. पा.वृ.छा.दा.ब्र.भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः	५ हजार

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) वमघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता (४।९।१४) आर्द्रा व धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त वा पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा. आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु व मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुला-दान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निस्संदेह रोगी की मृत्यु कहे यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाड़ां) होती हैं। काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयन्त्र

ओं

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिखकर देना शुरू करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१सौ लिख कर आटे की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्नबलि रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

वारकष्टावलीयन्त्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशिका, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानू (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीनराशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भावमें कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरु, दशम भाव में जानू, एकादश भाव में जंघा, और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों में युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

ग्रहाः गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः														जपनीयमन्त्राः	समय-समिधः	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दहीं	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सु. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णागौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः		मुंथेशकाले

सूर्यादिग्रहपीड़ासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मंत्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति।।)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदंत
खश	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलेठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

शनिविचारः—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधि बन्धुविरोध-देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं। लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा॥१॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढेसाती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्। रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा॥ २॥

सप्तधान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६ कंगनी ७
अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर दोनों चन्दन।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हलदी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ानाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान

साधुओं से बातें, मन की शुद्धता; जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

॥ देश भेद से दशा निर्णयः ॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा। कृष्णे चन्द्रस्य होरायां-रात्रावष्टोत्तरीमता॥ अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा॥१॥

अर्थः—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब युक्त प्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है। किन्तु विशेष निर्णय में यथा समय के फल विकाश कार्य के लिये शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म, सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हो तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी। कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना। अन्यथा योगिनी दशा से विचार करना।

कफ-परीक्षा

ले०—डा० रमेशचन्द्र वर्मा, आयुर्वेद यूनिवर्सिटी झांसी।

कफ के सम्बन्ध में इस प्रकार का विवरणात्मक ग्रन्थ भाषा में आज तक प्रकाशित नहीं हुआ था। लेखक ने इस ग्रन्थ को एलोपैथिक ढंग से लिख कर छात्रों का महान् उपकार किया है।

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धिः	धनला.	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाशः	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनला.	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनला.	धनना.
बुधः	बंधनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा.	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनला.	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनला.	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना-	दौर्मन.	धनला.	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैरं	सख	भयं	सखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्त्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

ग्रहमैत्रीचक्रम

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं, मं., बृ.	सू. बृ.	सू. चं., बृ.	सू शु.	सू, मं., चं.	बु. श.	शु बु.	मित्राणि
बु.	मं बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ., श,	श.	मं. बृ.	बृ	समाः
शु. श.	००	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं,	शत्रवः

शनि–यन्त्र

यह यन्त्र शनिवार को भोज पत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

अथ ग्रहाणामेकर्क्षभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
मा १	दि२।	मा १।।	मा. १	म. १२	मा. १	मा ३०	मा. १८	एकक्षभोग
आदौ	भांत्ये	भादौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फलसमयः
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा. २	दि. ७	मा ६	मा. ६	गंतव्यराशे प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्टयर्थधारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्परागं	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैडूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	लाजवर्त्तं	लाजवर्त्तं

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्––पिप्पलाद उवाच–ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो! नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।। इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती।। अथ शनैश्चर पाद विचार–ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर, जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनिरसे रुद्र सुवर्णं हानि) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना फल हानि।। यदि २।५।९ वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च) अथ सुवर्ण पादफलं––कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम्।। ।। अथ रजतपाद फलम्––व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे ।। २२ ।। अथ ताम्रपाद फलम्––अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे ।। ३ ।। अथ लोहपाद फलम्–शरीरपीड़ा बधिरप्रकोपं कलत्रपीड़ां पशु-पुत्र-पीड़ाम्। व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम् ।। ४ ।।

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखरा.	मध्येसू. माणि.	द. भौम मूंगा
वा. केतु वैडूर्यं	प. शनि नीलम	नै. राहु गोमेद

ग्रहाणां दृष्टयादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०.	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वजा दान	नष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनं
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	अश्ले. ज्ये. रे.	पुन.वि. पू. भा.	भ. पूफा. पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरी नक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरी वर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. ग. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनुः १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे.वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल.	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्ण	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्ण	अपराह्ण	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊपर	ऊपर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	ना	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गो	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में व और ब में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे [1]नाम्नि ग्राह्यं तदादिमाक्षरम्)

नाम्नि ऌॡ[2] अनुस्वारमात्राया न भवन्ति ते। चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युःकथञ्चन। ततःपश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते-विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश [3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्–निर्णयः—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतो भिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वाँ भाग जोड़ के उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५ वाँ भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। उस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहाँ लिखा गया है। (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नैपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मँगाइये। मूल्य १।) रु०।)

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये। क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणाकर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विष-घटी ४ घटी की होती है। इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

टिप्पणी—(१) जज्ञौज्ञः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। क्षसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं ज्वालारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा–ऋषभदेवः ऋतकरामः ऌतरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेद–व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान–मेपलीन्मोकौ विवाहः षोडशक्रियाः॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहिन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ०–शे। द × मं = यो. शे.—यो. = शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है।

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वज दान	नष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनं
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	अश्ले. ज्ये. रे.	पुन.वि. पू. भा.	भ. पूफा. पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरी नक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरी वर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. ग. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनुः १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे.वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल.	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्ण	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्ण	अपराह्ण	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में व और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगवाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्यं तवादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हू	डी	मा	मो	टे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०

राशयः	कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	ना	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	टो	ष	पो	०	रे	तु	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ङ्लृक्[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते। चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युःकथञ्चन। ततःपश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषितै येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णं या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्यो प्रधानता निर्णीयते-विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतो भिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५ वां भाग जोड़ के उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५ वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १–१ चरण मानो। उस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहाँ लिखा गया है। (अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "नामाभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नैपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मँगाइये। मूल्य १।) रु०।)

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये। क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणाकर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विष-घटी ४ घटी की होती है। इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है। उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना।

टिप्पणी—(१) जजोर्झः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं ग्यालारामस्य कुम्भराशिः। (२) यथा-ऋषभदेवः ऋतकरामः लृनरामः। (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने क्रमात्। चूड़ोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मेषलोन्मोक्षौ विवाहः षोडशक्रियाः॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहिन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ०—शे०। द × मं = यो. शे.—यो. = शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता की कष्ट होता है।

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्री सुख होने का समय जानना-(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्ट काल शुद्ध करना—जहाँ अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्ध आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष फल रहें उनको दुगुने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव, में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

भावीविचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढा से पुनर्वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा. उ. भा. से हस्त. रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचारपूर्वक अपने पास नोट कर लें जिस से वर्षा का अन्दाजा ध्यान में रहे॥

(२) माघशुक्लसप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले आकाश बादलों से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होना है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहाँ मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है॥ २६

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघ गर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूर होती है॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षा-नाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटें आदि हो जायँ तो अशुभ फल नहीं होता है। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटें बिजली वा वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटें न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूँदा बाँदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है। अतः कृत्तिका के सूर्य में बूँदा-बाँदी बिजली बादल का होना अच्छा है।

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खेंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु, बादल, बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिये, रोहिणी में बूँदाबाँदी होने पर वर्षा की खींच जरूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का असर तो पहिले होता ही है॥

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और कम भी होती है॥

जीवन को सुखी बनानेवाली आदर्श पुस्तक

सफल जीवन

लेखक–प्रो० रामचंद्र शर्मा एम. ए.

सुखी जीवन के लिये हर एक मनुष्य लालायित है। पर साधारण वास्तविक सुख क्या है नहीं समझता और अज्ञान के कारण ही ठोकरें खाता फिरता है। लेखक ने साधारण जनता की इसी त्रुटि को अनुभव करते हुये शास्त्रों के आधार पर सच्चा सुख क्या है और उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, तथा मनुष्य जीवन का उद्देश्य, धर्म और आचार, सफलता के साधन, सत्य और प्रिय भाषण, ब्रह्मचर्य, छूआछूत सन्तोष की आवश्यकता, स्वाध्याय, श्रद्धा और भक्ति, आसन प्राणायाम आदि मनुष्य जीवन से सम्बन्धित सैंकड़ों विषयों को इस पुस्तकमें दर्शाया है। जो मनुष्य अपने जीवन में वास्तविक सुख का आनन्द लेना चाहते हैं उन्हें एकबार अवश्य इसे पढ़ना चाहिए।

मूल्य ३)

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहाँ कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहाँ वर्षा न होवे। जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी-सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७५	५०	४५	४२	३६	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायु से राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिकहोतीहै।

वर्षा ज्ञानसारिणी

दिसंबर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून जुलाई	१४ जू.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१ जु.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई अगस्त	जु. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त सितंबर	अ. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सि. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितंबर अक्टूबर	सि. १२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर नवंबर	अ. १३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	न. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति—दिसंबर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारों मासोंकी तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर इन चार मासों में वहाँ वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धांत से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसंबर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसंबर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहाँ २ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारणी यह बता देगी कि वर्षा ऋतु में वहाँ २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। इसमें ज्योतिष शास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन-जिन तारीखों में शतभिषा श्लेषा मघा स्वाती आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारणी में आकर पड़ेंगी उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जलवाले माने जाते हैं इसी प्रकार शीतकाल में जिन-जिन तारीखों में पू. भा. उ. भा. पू. फा. उ. फा. रोहिणी ये पाँच नक्षत्र पड़ जावें और उन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षा ऋतु में जिन महीनों की जो तारीखें सारणीमें पड़ेंगी उनमें कई दिनों की वर्षा की झड़ी लगेगी। वर्षा जानके लिये शीतकाल में होनेवाली वर्षा की तारीखवार टाइम सहित नोट कर के देखने से वर्षा ऋतुकी वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है, विशेष सूक्ष्मताके लिये मेघगर्भ तथा ग्रहोंका सप्तनाड़ी चक्रादि विचार करना चाहिये।

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़ के अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब वा वन वा शिव के मन्दिर में जाकर वहाँ मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यंत्र बना के उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदि से पूजा करे। (मेघों के नाम और आवाहन मंत्र) ॐ ह्रीं मेघदूताय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीं मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रीं महानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥३॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाश-निवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामश्रृंङ्गमेरुनिवासाय मेघ-राजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणश्रृंगमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभि मात्र जल में खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मंत्र को १०००-१००० जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद, तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मंत्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे ॥ अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग। "ॐ नमो हनवन्त वीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सत खण्ड जावसी।" ॥ अति वर्षा के समय इस मंत्र का ७–७ बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूँक मारने से अतिवर्षा करते हुवे मेघ भी तत्काल फट जावे। इसी मंत्र को जपता हुआ बर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा कर दे तो वर्षा बन्द हो जावे। मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले ॥

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०११ वि.

राशय.	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	लाभ उत्तम, स्त्रीचिन्ता, संतति सुख, कारोबार में वृद्धि।	विवादमें जय, लाभ अच्छा बन्धुमेल, घरमें रोग, यात्रा।	शत्रुहानि, कारोबार ढीला शरीर निर्बल, बन्धु-चिन्ता, दुःस्वप्न।	उदर विकार. सत्कार्य में व्यय, स्त्री कष्ट, यश-लाभ, पद वृद्धि।	बन्धुसुख, दुष्टसंग, वृथा खर्च, कारोबार श्रेष्ठ-शिरपीड़ा।	वायुपीड़ा, विवाद वृथा, दिलमें अशान्ति, कारोबार मध्यम।
वृष	स्वास्थ्य ठीक, शत्रुनाश खर्च अधिक, लाभ में रुकावट।	शिरमें पीड़ा, लाभसे खुशी, अग्निभय, पड़ोसियों से मिलाप।	बन्धुओंसे बिगाड़, कष्ट कारोबार अच्छा, नये-काम का विचार।	शत्रुनाश, इच्छितकार्य सफल, वायुपीड़ा, धन लाभ।	लाभ अच्छा, साधु-संग, स्त्रीकी फिकर, बिगड़ा-कार्य बने।	बन्धुसुख, शत्रु कुछ न बिगाड़ सकें, भूमि से लाभ, कुटुम्बचिन्ता।
मिथुन	शुभ में खर्च, यात्रा परि-वार चिन्ता, यशवृद्धि, लाभ अच्छा।	लाभ की चिन्ता, स्वास्थ्य में गड़बड़, शत्रुनाश, विवाद में जय।	गत मास की अपेक्षा लाभ-अच्छा रोगभय, यात्रामें कष्ट।	लाभ हो, पर खर्च हैरान करे, कारोबार ठीक, स्त्री-चिन्ता।	व्यापारादिसे लाभ, संतति सुख, उदरविकार मनमें उद्वेग।	द्रव्य लाभ उत्तम, पुत्र-स्त्रीकी चिन्ता, यशवृद्धि, शत्रुभय।
कर्क	शत्रु भय, स्वास्थ्य ठीक लाभ उत्तम, राजपक्षकी चिन्ता।	स्वामी-कोप, यात्रा, नेत्र-पीड़ा, ऋण का प्रसंग बने	मानसिक चिन्ता, घरमें-रोग, बन्धुओं से अनबन लभ कम।	घरू चिन्ता, लाभमें रुका-वट, राजपक्षसे फिकर, वायुपीड़ा।	आमदनीसे खर्च अधिक, पुण्यमें रुचि, ज्वर भय, तेज हानि।	आपके विरुद्ध विचार फैलें, मित्र द्वारा शत्रुनाश, लाभ मध्यम।
सिंह	पराक्रम उत्तम, संतति-कष्ट, शत्रुनाश, वृथायात्रा खर्च ज्यादा।	कुटुम्ब में क्लेश, कारोबार में वृद्धि, वृथा विवाद, पित्त पीड़ा	उद्योगसे सफलता स्वा-स्थ्य ठीक. अकस्मात् यात्रा, चौरभय।	पुत्रादिककी चिन्ता, स्वा-स्थ्य मध्यम, कारोबार ठीक, मित्रसुख।	महापुरुषसे मेल, मित्र-विरोध, धनकी चिन्ता हौंसला ठीक।	प्रत्येक कार्यमें उन्नति, मनमें क्रोध बढ़े, झूठे कलंक का भय।
कन्या	धर्म में प्रवृत्ति, कार्यमें विघ्न, गुप्त चिन्ता, कारोबार ढीला।	शत्रु गुप्तरूपसे हानि करें, लाभ मध्यम, शुभमें व्यय,	मस्तक पीड़ा, बुद्धि मलीन यात्रा, नीच से भय. लाभ-मध्यम।	लाभकी चिन्ता, शत्रुभय, पशु-कष्ट स्त्री-सुख, उदर-विकार।	लाभ खर्च सम, गृहभूमि की चिन्ता, चौरभय यात्रा से कष्ट।	प्रसन्नताके कार्य में विघ्न, मित्र वियोग, उदासी, घरेलूचिन्ता।
तुला	वृथा यात्रा, पराक्रम-ठीक, बन्धु चिन्ता, खर्च से हैरानी।	बन्धु कष्ट, उदासी, धर्म-मेंख्याल, लाभ से खर्च-अधिक।	कार्यमें विघ्न, राजभय शिर वा कानमें कष्ट. कारोबार ढीला।	शुभमें प्रवृत्ति, कारोबार साधारण, वायुपीड़ा, मित्र-वियोग।	नेत्र-कष्ट, रोजगार-चिन्ता, नये काममें रुकावट, बन्धु पीड़ा।	विचारकी विचित्र तरंगें उठें, नौकरसे सावधान, लाभ कम।
वृश्चिक	बने बनाये काम में बिगाड़ लाभ कम, कमरतोड़ खर्च, चिन्ता।	पशुपीड़ा, वाहनभय, लाभ होकर भी न मिले यात्रा हो।	कोपमें कमी, इज्जतकी चिन्ता, नये कामका विचार, धर्ममें ध्यान।	पैसे की तंगी, मित्र तथा राजरोग भय, वृथायात्रा, असंतोष।	चिन्ता फिकरमें शरीर दुर्बल, कार्यान्तर का विचार, स्त्रीसुख।	चिन्तामें कुछ कमी, वृथाखर्च, देशान्तर का विचार, मानभय।
धनु	स्वास्थ्य खराब, शत्रु-वृद्धि लाभ अच्छा संत-ति सुख मित्र मिलाप।	रक्तपित्त पीड़ा, शत्रुहानि, कारोबार ठीक, पुत्र स्त्री-सुख	सफलतामें रोक, शत्रुभय मासका मध्य शुभ, बन्धु-सुख।	बन्धु-सुख, परोपकारमें चित्त, लाभ मध्यम रक्त-पित्त पीड़ा।	धनलाभ, मित्र-मिलाप, कारोवारमें गड़बड़ी, शत्रु भय।	स्वास्थ्यमें बिगाड़, लाभ, मध्यम।, चित्तमें उद्वेग, घरेलू खर्च बढ़े।
मकर	स्वास्थ्य में गड़बड़ी, संतानपक्ष से खुशी, कारोबार उत्तम।	नेत्र वा शिर में पीड़ा लाभ अच्छा, पुत्र चिंता यात्रा कष्ट।	धर्ममें खर्च, स्थानान्तर उदर-विकार, लाभमध्यम।	द्रव्य-प्राप्ति, यशला०, विवाद चिन्ता, उद्योग सफल, शत्रुभय।	लाभ होकर भी न मिले, बन्धु-सुख, राजपक्ष शुभ, पशु-पीड़ा।	धनहानि, शोक, मासके अंतमें शान्तिसुख, यात्रामें कष्ट।
कुम्भ	लाभ अच्छा, चित्त अशान्त, यात्रा, शत्रुभय, स्त्री-सुख, मित्र-लाभ।	धर्ममें अरुचि, स्वास्थ्य मध्यम, उत्साह बढ़े कारो-बार अच्छा।	पुत्र-स्त्री चिन्ता, वृथा-भय, कारोबार ठीक यात्रा. यश की चिंता।	गृह मित्र वाहन सुख शत्रु विजय, स्त्री-सुख, लाभ,	स्वास्थ्यमें बिगाड़, कारो-बार ठीक, संतति कष्ट, यात्रामें भय।	कारोबार मध्यम, अक-स्मात् लाभ, धर्ममें अरुचि, वृथा चिंता।
मीन	किसी झगड़े में मन पड़ो, बन्धुसुख, अकस्मात्	राजपक्षसे भय, कारो-बार में विघ्न, मित्र	लाभ कम, कारोबार की चिन्ता. बन्धुसुख, विवाद	लाभ होकर भी चला जाय, विचार अस्थिर,	लाभ मध्यम, बन्धुकष्ट, जल वा शत्रुभय. बुद्धि	लाभ अच्छा, कफ वायु पीड़ा, नया उद्योग, धर्ममें

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०११ वि.

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०११ वि.

राशयः	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	मकानादिककी चिन्ता, स्त्री कष्ट, नीचसे लाभ, स्वास्थ्य में बिगाड़ ।	संतानसे खुशी, राज्यमान, हौंसला बढ़े, अग्निभय, गुप्त चिन्ता ।	अचानक श्रेष्ट लाभ, कारोबार ठीक, सफर में भय, स्त्री चिंता ।	हौंसला बढ़े, लाभ अच्छा, राज्यमान, शुभमें खर्च मन में खुशी ।	सुख उत्तम, राज्यमें विजय, वायु विकार, पशुलाभ, लाभ हो ।	लाभकम. साधुसंगति, मित्र मिलाप नष्ट वस्तु लाभ ।
वृष	मित्र बन्धुसे लाभ, संतानसे खुशी, कारोबार ठीक, शत्रु हानि हो ।	कारोबार ठीक, लाभ अच्छा, कार्य्य सिद्धि, स्त्री चिंता, मान वृद्धि ।	प्रेमीसे मेल, राजपक्ष-मध्यम , कारोबार बढ़े, शुभमें प्रवृत्ति ।	शरीर तंदुरुस्त, लाभ मध्यम, यात्रामें कष्ट, कारोबार ढीला ।	अचानक उत्तम, लाभ,सन्त समागम, मित्रसे सन्तोष ।	लाभ होते २ रुके, शिर वा नेत्र कष्ट, बान्धवोंसे खुशी ।
मिथुन	कार्य सफल, मनमें खुशी, लाभ विशेष, यात्रामें कष्ट, वायु पीड़ा	लाभ अच्छा, बन्धुसे बिगाड़, गुप्त चिन्ता, विदेश गमनका विचार ।	राजपक्ष शुभ, स्वास्थ्यमें गड़बड़, स्त्री-कष्ट, मास का अन्त श्रेष्ट ।	स्त्रीपुत्रसे खुशी, कारोबार में वृद्धि, बन्धुओंसे मन खिन्न ।	कारोबार में लाभ, नये मित्र से प्रेम, यात्रासे खुशी, दुःस्वप्न	अकारण विवाद, लाभ अच्छा, राजमें मान कारोबारमें उन्नति ।
कर्क	चित्त खिन्न, चोरभय, पुण्यमें ध्यान, झगड़े से हैरानी ।	लाभ होते २ रुके, नये-काम का ख्याल, स्वास्थ्य ठीक, पशुपीड़ा ।	लाभ कम, सफर, शत्रु वृद्धि, संत समागम, वृथा खर्च ।	व्यापारादिसे लाभ, अकस्मात् खर्च, बन्धुओंसे विवाद शत्रु वृद्धि ।	खुशीके कार्यों में खर्च झगड़ेका कष्ट लाभ भी हो, वाहन भय ।	कारोबार द्वारा लाभकम, स्त्रीकष्ट, यात्रा से फायदा शत्रु चिन्ता ।
सिंह	लाभ अच्छा, शुभमें खर्च, पुत्र, स्त्री, द्वारा खर्च, वृथा संकट ।	स्वास्थ्य ठीक, कार्य में, विघ्न, लाभखर्च सम, मासका अन्त सुखप्रद ।	स्वास्थ्य अच्छा संतति रा खर्च, कारोबार ठीक, वृद्ध स्त्री चिन्ता ।	सन्ततिसुख, तीर्थ वा संत दर्शन, कारोबार श्रेष्ट, सफर ।	स्वास्थ्य मध्यम, बन्धुकष्ट, विवादसे हानि लाभ खर्च सम ।	पुत्र-स्त्री चिन्ता, कारोबार, श्रेष्ठ, सवारी से भय, शत्रु नाश ।
कन्या	खर्च बढ़े, लाभ कम, गुप्त चिन्ता, शत्रुभय, देह पीड़ा, पशु हानि ।	स्त्री-पुत्र का कष्ट, अचानक यात्रा, कारबार की चिन्ता, मित्र वियोग।	जिम्मेदारी बढ़े, लाभ हो कर फिर हानि, यात्रा कष्ट साधु-संगति ।	पशुपीड़ा, शत्रु वृद्धि, कारोबार मध्यम, राज्यसे भय, गुप्त चिंता ।	शत्रुहानि मित्रसे बिगाड़, धनकी चिन्ता, सफरसे लाभ, दुःस्वप्न ।	संतति सुख, वायु विकार कारोबार मध्यम, लाभ में विघ्न ।
तुला	स्त्रीपुत्रसे कष्ट , मान भंग-अपने ही शत्रु बनें लाभ की चिन्ता ।	गतमास की अपेक्षा लाभ अच्छा, पशुपीड़ा, रोगभय, चिन्ता	कारोबार की चिन्ता, अकस्मात् कुछ लाभ, शिर में पीड़ा ।	किसी कामके बिगड़ने से कष्ट, लाभ खर्च सम, संतानसे खुशी ।	कारोबार ढीला, मास का आदि भाग शुभ हिस्सेदार की चिंता ।	हौसला कम, आमदनीसे खर्च अधिक, स्वास्थ्यमें गड़बड़ी ।
वृश्चिक	सफर वा बन्धु खर्च व्यवसाय की चिंता, कार्य-हानि ।	चित्त खिन्न, नये कार्यमें हानि, नीचसे विवाद, खर्च से हैरानी ।	स्वजातिमें विवाद, छाती वा मस्तक में कष्ट, लाभमें विघ्न ।	लाभ साधारण, कार्य सिद्धि की चिन्ता, विवादसे हानि मित्र विरोध ।	बन्धुवर्गसे कष्ट, मनचंचल चौरभय । कारोबार की चिन्ता ।	चिन्ता अधिक लाभकम खर्च विशेष, मास के अंत में सुख ।
धनु	सुख कम, झगड़ेकी चिन्ता, लाभ कम, वाहन भय, वायु पीड़ा ।	शिर वा उदरमें विकार, बन्धु विरोध, शुभमें खर्च, लाभ अच्छा ।	स्वास्थ्यमें गड़बड़ी, स्त्री सुख, श्रेष्ठ, गुप्त चिन्ता राजभय ।	शरीर सुखी, कारोबारमें नुकसान, इज्जत बचे, बन्धु चिन्ता ।	लाभ खर्च सम, शत्रु प्रबल, सुतमित्र की चिंता मास मध्य शु. ।	बुद्धि भ्रम संतति सुख शुभ कार्यमें व्यय, लाभमें विघ्न
मकर	कभी सुख कभी दुःख, शत्रुवृद्धि, यात्रामें हानि व्यवसाय ढीला ।	दोषमें कमी, बन्धुचिन्ता कारोबार मामूली, साधु-संगति, स्त्रीसुख, ।	लेन-देन में कठिनाई,वायु-पीड़ा लाभ खर्च सम, चित्त अशान्त ।	लाभ कम गुप्तचिन्ता, शिर वा छातीमें पीड़ा नौकरसे सावधान ।	शरीर कष्ट नया झगड़ा लाभ अच्छा, राजपक्षसे चिन्ता ।	मनमें घबराहट, बड़े आदमी से मिलाप, मासका अंत शुभ ।
कुम्भ	लाभ अच्छा, संतति-चिंता लाभ खर्च दोनों बढ़े, मान-वृद्धि, दुःस्वप्न ।	शत्रुभय, राजसे मान, लाभ मध्यम शीतसे कष्ट, चिन्तादूर, ।	शत्रुवृद्धि, लाभ अच्छा कुटुम्बसे दुःख, शुभमें प्रवृत्ति ।	शीत पीड़ा, कार्यान्तर वा स्थानान्तर का विचार, स्त्री-सुख, लाभ ।	यात्रामें खर्च, कारोबार श्रेष्ठ, नये काम का विचार वायु पीड़ा, ।	शत्रु नाश, बन्धुप्रेम, स्वास्थ्य मध्यम, लाभ अच्छा यात्रा चिन्ता
मीन	शुभमें प्रवृत्ति, बन्धुकष्ट, लाभ मध्यम शत्रु चिन्ता पशुपीड़ा ।	लाभसे खर्च अधिक, धर्ममें रुचि, यात्रामें कष्ट मन खिन्न ।	चित्त भ्रम, लाभसे खर्च अधिक, राजपक्षकी चिंता, स्त्री-कष्ट ।	हौंसला कम, राजपक्ष से भय, दुःखद समाचार की प्राप्ति ।	शत्रु वृद्धि होकर नाश, लाभकी चिन्तामें भ्रमण, धर्ममें रुचि ।	राज से भय, लाभसाधारण, कार्य सिद्धि की चिन्ता शत्रु पीड़ा,

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यक् विचार्यगणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥
तिथिर्वारञ्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मङ्गल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरुकी पूजाकर, स्त्रियाँ शिशु आदि-वस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजीका सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्बके कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सैंधा) अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बीमारी नहीं होती)।

पञ्चाङ्गस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्ठान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाताहै।

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्ररुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याद्यतां, राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं बुद्धिदम्। धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेःक्षेत्रेषु वृद्धिस्तया, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इति संवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रम वर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्माकी आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्षके प्रथम दिनका उदय है। इस दिनकी १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है–एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्ष-संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है (ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ये छ मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८वाँ कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था—सत्ययुग–कार्त्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायणके मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुए, श्रीमत्स्यजी ने वेदोंके चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मंथन करा कर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहजीने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतारने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी पर-द्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियाँ पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामनजी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्रीपरशुरामजी ने कर्तव्य विमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेममें प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों-का नाश करके २१बार ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था। श्रीरामचन्द्रजी ने महा-अभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौवें त्रिकाल दूध देनेवाली होती थीं, प्रायः चाँदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री-परद्रव्यसे पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युगमें सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियोंका राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नमिषारण्य प्रधान था। **द्वापर**—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीयप्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान् योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४०००वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्णने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्मका उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौवें दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देनेवाली होती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मणलोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करनेवाले किञ्चित लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और

शाप देने में समर्थ थे । स्त्रियाँ शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं । इस युग में धर्मप्राण चन्द्रवंशी राजा हुए । प्रायः चारों वर्ण अपने अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री-परद्रव्य से लोग डरते थे । इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था । **कलियुग**—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है । इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका,और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा । इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा । इस युग में एक पैरवाला धर्म रह जायगा । गौएँ दूध कम देंगी मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कर्गज मुद्रा प्रायः चलेगी । अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का सञ्चार होगा । ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे । क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे । वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे शास्त्र निन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्णवालों के उपदेष्टा होंगे । प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी । स्त्रियाँ ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी । पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी । पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे । स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा । पिता कन्या-विक्रय करेंगे । गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे । पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा । राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा । धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी । इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा ।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनःक्रूरः कलिश्च कलहप्रियः । धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वाश्च नृत्यति ॥ अथ कलिमाहात्म्यम्—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम् । राजानोऽर्थपरा ह्यरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः । साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः । भार्या भर्तृ विरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणो, हा ! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः । प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जना शिष्टा नष्टा अहह ! कलिकालो विलसति ॥ कलौ गंगायाः स्थितिः । पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव । **भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च**—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो-दिवि कल्पपादपः । यावत्समुद्रं वड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दश सहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

अथ वर्षराजादि फल विचार २०११

अथ श्रीमन्नृपतिधर्ममूर्ति-विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवताभिधः २०११ श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणि—शकजातियवननिर्बीजक-शालिवाहनराज्याद् गतहायनानि तत् शकाभिधः १८७६ श्रीकृष्णजन्म सं० ५१६० श्री महावीरनिर्वाण (जैन) संवत्सरः २४८०,—८१ ईस्वीसन् १९५४—५५ हिजरी सन् १३७३-७४ फसली सन् १३५९ वर्षादौ गुरुमानेन प्रभवादि षष्ठ्यब्दानां मध्ये विंशत्यां **प्लवंग नाम संवत्सरस्तस्य फलम्**—प्लवंगाब्दे सध्यवृष्टी रोग चौराकुलाधरा । अन्योन्यं समरे भूपाः शत्रुभिर्हृत भूमयः ॥ प्लवंग वर्षमें थोड़ी वर्षा पृथ्वी रोग तथा चोरों से व्याकुल होवे, राजा परस्पर युद्ध में प्रवृत्त हों और शत्रुओं से उनकी भूमि हरीजाय । जैनाचार्यों ने इसका विशेष फल कहा है, तद्यथा—प्लवङ्ग नाम संव्वत्सरे ब्रह्मा स्वामी, चैत्रे वैशाखे महर्घता, ज्येष्ठमध्ये राजपीड़ा, आषाढेऽल्पमेघः, भूमिकम्पः, हस्तिपीडा, तुरङ्गम महर्घता, श्रावणे महामेघो भाद्रपदाष्टमीतो महामेघः, आश्विने रोग चालकः, रसमहर्घता अश्वमहिषीपीडा, लोक पीडाच । **राजा सूर्यस्तस्य फलं** (सर्वदेशेषु)—सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा । स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम् ॥ इस वर्ष का राजा सूर्य होने के कारण वर्षा कम हो, गायों के दूध कम रहे, मनुष्यों में पीडा, धान्य कम हो, वृक्षों में फल कम लगें, चौर एवं आग से हानि हो, राजाओं का विनाश हो ॥ **मन्त्री भौमस्तस्य फलम्**—(बाल्हीक मालवयोः)—अवनिजो ननु मन्त्रिकतां गतो भवति दस्युगदादिज वेदना । जनपदेषु जयः सुखसञ्चयो न बहु गोषु पयो द्विज कर्म च ॥ इस वर्ष मन्त्री भौम है अतः जनता को चोर एवं रोग से कष्ट हो, ब्राह्मण यज्ञादि कर्म अधिक करें, गायों में दूध काफी हो, जनपद व्याकुल रहें । **सस्येशः शुक्रस्तस्य फलम्** (पौण्ड्रविदर्भयोः)—शुक्रो यदा धान्यपतिर्धरायां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम् । गोधूमशालीक्षु धनप्रियङ्गु वृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि ॥ इस वर्ष सस्येश शुक्र होने के कारण वर्षा अच्छी हो, गेहूँ, चावल ईख, प्रियङ्गु के वृक्ष खूब फूलें फलें ॥ **धान्येशो बुधस्तस्य फलम्**—बुधे धान्याधिपे मेघा जलंमुञ्चन्ति वै भृशम् । सैन्धवेलाटदेशे च माधवोऽल्पं च वर्षति ॥ बुध धान्येश हो तो वर्षा जोर से पड़े, सिन्ध एवं लाट देश में तो वर्षा की कमी ही रहे ॥ **मेघेशो भौमस्तस्य फलम्**—अवनिजे जलदस्यपतौ भुवि श्रुतिविचारविहीनधरामराः । क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम् ॥ भौम मेघेश हो तो ब्राह्मण लोग वैदिक विचार हीन हों, कहीं अत्यधिक वर्षा एवं कहीं वर्षा के सर्वथा अभाव से अनेक कष्ट हों ॥ **रसेशो रविस्तस्यफलम्**—रसपतिस्तरणि र्धरिणीतदा विरसभागरताल्पपयोधरा । वसन तैल-घृतप्रियमानवाः सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः ॥ रसेश सूर्य होने के कारण रसों (दूध आदि) की कमी, वस्त्र, तैल, घी का कष्ट और राजाओं को कष्ट हो ॥ **नीरसेशः शुक्रस्तस्य फलम्**—कर्पूरागुरुगन्धानां हेममौक्तिक-वाससाम् । अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशोभृगुर्यदि । यदि शुक्र नीरसेश हो तो कपूर, अगर आदि सुगन्धित द्रव्य, सोना, मोती, व वस्त्र महँगे हों ॥ **फलेशश्चन्द्रस्तस्यफलम्**—यदिविधुःफलपो द्रुमराशयः फलयुतावलिभिः कुसुमैर्युताः । द्विजसखा वरभोगसमन्विता नृपतयो नयनाटन तत्पराः ॥ फलेश चन्द्र हो तो वृक्ष एवं लतायें फल फूलों से लदी हुई हों, ब्राह्मणों को अच्छे २ खाद्य पदार्थ मिलें, राजालोग न्याय शील हों ॥ **धनेशः शुक्रस्तस्य फलम्**—द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युताः समधनाः सकला ननु मानवाः । समसुखाः क्रयविक्रयजीविनो नृपतयो जनपालनतत्पराः ॥ धनेश शुक्र है अतः इस वर्ष मनुष्य समान सम्पत्ति शाली हों, व्यापारमें प्रगति हो, राजा लोग प्रजापालन में तत्पर रहें ॥ **दुर्गेशो भौमस्तत्फलम्**—अवनिजोगढ़नायकतां गतो विविधदुःखवियोगसमन्विताः । जनपदेषु जनाः क्रयविक्रये भयविशेषतया न फलं क्वचित् ॥ इस वर्ष दुर्गेश भौम है अतः जनता दुःखी रहे, लेन देन में भय होने के कारण लाभ न हो ॥

नव मेघों में से कीलक नाम मेघ का फल—खण्डवृष्टी हो ।

द्वादश नागों में से तक्षक नाम नाग का फल—मृत्यु संख्या बढ़े ।

सप्त पवनोंमें से आवहनामक पवन का फल—अच्छी पवन चले इस वर्ष रोहिणीनिवास समुद्र में है, फल—महावृष्टि। वर्षका निवास माली के घर में है, फल—अच्छी वर्षा। संव्वत्की सवारी अश्व है। शनिकी दृष्टि पश्चिम में है, फल—पश्चिमी प्रदेशोंमें भय। इसवर्ष चन्द्रग्रहण एक है, आषाढ़ सुदि १५ को खण्ड ग्रास ग्रस्तास्त होगा। आषाढ़कृष्ण ३० को कहीं ग्रस्तास्त सूर्यग्रहण भी होगा। इस वर्ष सोमवती ३० नहीं है, बुधाष्टमी भी नहीं है। अथवर्षादीनांविश्वामानम्—वर्षा विश्वे ५, धान्य १३, तृण ११, शीत ५, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ११, तृषा ३, निद्रा १५, आलस्य ९, उद्यम ११, शान्ति ३, कोध ११, दम्भ ११, पाखण्ड ९, लोभ ७, मैथुन ९, रसनिष्पत्तिः १३, फलनिष्पत्तिः ११, उत्साह ३, उग्रता ११, पाप १५, पुण्य ११, व्याधि १३, व्याधिनाशः १, आचार ९, अनाचार ७, मृत्यु १५, जन्म १, देशोपद्रव १, देशस्वास्थ्य १, चौरभय ३, चौरनाश ९, अग्नि ३, अग्निशान्ति ३, टिड्डी ५, तोता १७, मूषक ३, सुवर्ण ३, ताम्र १३, स्वचक्र १३, परचक्र ३, अतिवृष्टि ११, अनावृष्टि ११, उद्भिज (वृक्षलता, क्षुपआदि) ३, जरायुज (मनुष्य एवं गौ आदि पशु) ३, अण्डज (पक्षी-तथा सर्प आदि) ३, स्वेदज (पसीने से उत्पन्न जूं आदि) ३, संव्वत् विश्वा १८।

वर्षस्तम्भ चतुष्टयविचार—इस वर्ष जलका स्तम्भ रुपयेमें लगभग १० आने है, फल—अच्छी वर्षा होवे। तृणका स्तम्भ लगभग ९ आने है, फल—तृण की उत्पत्ति मध्यम हो। वायुका स्तम्भ लगभग ७ आने है, फल—वायु मध्यम चले। अन्न का स्तम्भ लगभग ८ आने है फल—अनाज की उत्पत्ति मध्यम दर्जेकी हो।

आर्षमान (वर्ष रक्षाके ४ किले) पहिला आर्ष गत पौष की अमावस मूलका लगभग ८। विश्वे है। दूसरा आर्ष अक्षय ३ रोहिणीका लगभग १३ विश्वे है। तीसरा आर्ष श्रावण शु. १५ को श्रवण का लगभग १३ विश्वे है। चौथा आर्ष कार्तिक शु. १५ को कृत्तिका का ० विश्वे है।

आर्ष मान देखते हुए यह वर्ष प्रजाके लिये उत्तम नहीं दीखता है।

अखै तीज रोहिणी नहीं होई। पौष अमावस मूल न जोई॥
राखी श्रवणों हीन विचारो। कार्तिक पुन्यों कृतिका टारो॥
महीं माँह खलबली प्रकाशै। कहै 'भड्डुली' साख विनाशै॥

अथनववर्ष प्रवेशः—गत संवत् २०१० चैत्रकृष्ण ३० शनिवारको २६।२१ इष्टघटी लग्न ६ के ११ अंश पर नववर्ष प्रवेश होगा। सो इस वर्ष प्रजा में परस्पर विरोध हो, अनाज महँगा हो, पूर्व में चौपाये सस्ते, ईशानकोण के देशों में राज भय हो, घृत महँगा हो, मजीठ आदि सस्ते, बंगाल में कोई उपद्रव होवे।

वर्षेश लग्नम्—संवत् २०११ वि. चैत्रशुक्ल ११ सं. को इष्टघटी ३५।४४, लग्न ७ के २० अंश पर श्री सूर्यनारायण मेष राशिमें प्रवेश करेंगे। यहाँ लग्न को सूर्य शुक्रपूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं, और लग्न में शनि भी है, अतः यह वर्ष प्रजा के लिये शुभ नहीं है। प्रजा में किसी प्रकार का आतङ्क फैले, जनता को शारीरिक कष्ट हो, खड़ी खेतियों को भी कई जगह हानि पहुँचे इस वर्ष का पहिला, तीसरा, सातवाँ मास प्रजा के लिये अशुभ है।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश कालिक फल विचार—संवत् २०११ वि. आषाढ़ कृष्ण ६ मंगलवार को इष्टघटी ०।२१ पर मिथुन लग्न में श्रीसूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। तिथि ६ का फल—प्रजा में धन, सम्पत्ति अधिक बढ़े, जनता सुखी हो। वार मंगल का फल—किसी महापुरुष पर शस्त्र का प्रहार हो, जिससे उसकी मृत्यु का भी भय है। नक्षत्र शतभिषा का फल—पृथ्वी पर जल अधिक हो। योग प्रीति का फल—जलकी कमी न रहे। प्रातःकाल का फल—प्रजा रोगग्रस्त हो। क्योंकि—आर्द्रप्रवेश की लग्न कुण्डली में चन्द्रमा जलचर राशि का होकर त्रिकोण में स्थित है, जिसे अस्त गुरु देख रहा है, अतः वर्षा मध्यम होवेगी, अनाज की उत्पत्ति भी मध्यम होगी।

अर्थलाभ व्यय चक्रम्

राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	५	५	५	५

लाभव्यय देखने की रीति—लाभ और व्यय के अंकों को जोड़कर एक घटावे, और ८ का भाग देवे शेष १।२।६।७ बचे तो उस वर्ष में लाभ उत्तम होवे, और शेष ३।४।५।०० बचें तो लाभ बहुत कम होवे, और चिन्ता भी रहे।

वर्षलग्नम्

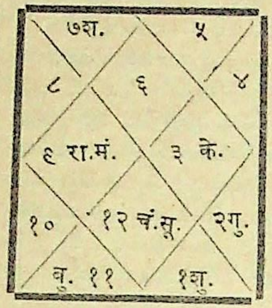

वर्षेश (जगल्लग्नम्)

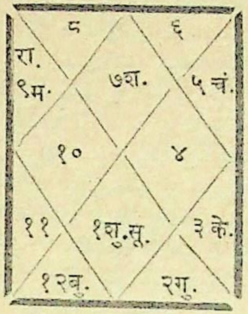

आर्द्रा प्रवेशलग्नम्

जन्म लग्न जन्मराशि और वर्ष लग्न से यदि वर्षेशलग्न (जगल्लग्न) ८वाँ १२ वाँ हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

अथ व्रतोत्सवपरिचय

पञ्चाङ्गों में प्रायः सर्वत्र व्रतोत्सव पर्वों का उल्लेख रहता है, इनकी सृष्टि मनोविनोद ही के लिए नहीं हुई है, किन्तु यह सत्कर्म के प्रवर्तक तथा जातीय इतिहास के अटल स्मारक हैं। परन्तु खेद इस बात का है कि जनता में आमोद-प्रमोद वर्धन होने पर भी अब भक्ति उत्साह कम होने लगा है।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा—चैत्र शु० १ को प्रातः बिस्तर से उठते समय जिस का चन्द्र (बायाँ) स्वर चलता हो उसे उस वर्ष में लाभ और आरोग्यादि सुख मिलते हैं। यदि सूर्य (दाहिना) स्वर चलता हो तो अशुभ अथवा साधारण वर्ष निकलता है। यदि स्वर ठीक न हो तो दाहिनी करवट लेटे रहे जब चन्द्र स्वर चलने लगे तब ईश्वरस्मरण पूर्वक उठ बैठना चाहिये, जिससे अशुभ फल कम हो। आज घर को सब प्रकार से सुसज्जित करके दरवाजों पर ध्वजा तोरणादि लगाना चाहिये, नया वर्ष सुख से व्यतीत हो इस कारण आज अवश्य ही आनन्द मनाना चाहिए, कालीमिर्च, हींग, लवण, जीरे को [illegible]

से वर्ष भर में होनेवाले तीव्र ज्वर तथा रक्त विकारादि रोग नहीं होते, इसी दिन ब्रह्माजी ने प्रथम जगत् को रचा है, इस दिन ब्रह्माजी का पूजन एवं वर्षेशादिकों का फल श्रवण करना चाहिए, और सर्व प्रकार से शक्ति सम्पन्न होने के लिए कलशस्थापनपूर्वक प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त श्री दुर्गाका पूजन पाठ तथा हवन करना या कराना चाहिए।

गणगौरीव्रत—चैत्र शु० ३ के दिन सौभाग्यवती स्त्रियों को श्रीमहादेव गौरी का कुंकुम अगर वस्त्रालङ्कारादि से यथाशक्ति पूजनपूर्वक रात्री में जागरण करना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः दक्षिणा देने से सौभाग्य और वंश वृद्धि होती है।

श्रीरामनवमी—इस दिन धर्म की मर्यादा सुदृढ़ करने के लिए भगवान श्री रामचन्द्रजी का अवतार हुआ था, अतः इस जयन्ती को व्रत पूजन जागरणोत्सव करनेका विशेष माहात्म्य है।

श्रीपरशुराम जयन्ती—वैशाख शु० ३ को कर्त्तव्यविमुख एवं विलासिता के मद में प्रमत्त क्षत्रियों के अभिमान को दूर करने के लिये भगवान श्री परशुरामजी ने अवतार लिया था, इस दिन भगवान परशुराम का पूजन तथा उत्सव मनाने का विशेष माहात्म्य है। (श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य्यप्रणीतश्रीपरशुराम स्तोत्र पढ़ना चाहिये)।

गंगासप्तमी—आज पतितपावनी भगवती भागीरथी के स्नान पूजन का बड़ा पुण्य है॥

नृसिंहचतुर्दशी—"भक्ति चाहिए परमात्मा कहाँ नहीं है" इस सिद्धान्त को पुष्ट करने के लिये भगवान नृसिंहजी ने इस दिन सायङ्काल के समय प्रकट होकर हिरण्यकश्यप का वध कर भक्त प्रल्हाद को अभय किया, अतः इस दिन व्रत पूजन का विशेष पुण्य है।

गंगादशहरा—इस दिन गङ्गादि यथा लब्ध नदियों में स्नानपूर्वक कुशसहित तिलोदक देने से मनुष्य दश पापों से निवृत्त होकर विष्णु लोक को जाता है॥

गुरुपूर्णिमा—त्रिताप से बचाकर जीव को कल्याण की ओर अग्रसर करने वाले श्री गुरुदेव की पूजा तथा भेंट आज अवश्य करनी चाहिए॥

नागपंचमी—"समः शत्रौ च मित्रेच" का सिद्धांत पुष्ट करने को तथा भगवान की विभूति पूजनार्थ पांच फण वाले विभूतिमान नागदेव के पूजन का विधान है, विभूति पूजा का अभिप्राय उसके शरीर की पूजा नहीं, किन्तु शरीर के द्वारा परमात्मा के अंश का जितना विकाश हुआ है उस की पूजा है॥ **उपाकर्म श्रावणी**—विशेषकर ब्राह्मणों एवं अव्रात्य यज्ञोपवीत धारी क्षत्रिय वैश्यों को श्रावणी अवश्य ही करना चाहिए, इसके करने से कर्ता तेजस्वी और पाप रहित होता है, यह ब्राह्मण जाति का मुख्य त्योहार है, शोक है कि हमारे देश में बहुत से ब्राह्मण भाई भी इस काम से दूर भागते हैं।

जन्माष्टमी—भारत के विधाता तथा भारत के अन्तिमपथप्रदर्शक भगवान श्रीकृष्ण चन्द्रका जन्म अर्ध रात्रि के समय व्रज में हुआ था, शास्त्रों में आज के व्रत पूजन एवं जागरणोत्सव का विशेष माहात्म्य लिखा है। **अनन्त चतुर्दशी**—विष्णुप्रीत्यर्थं भगवान अनन्त का धारण और षोडशोपचार से पूजन तथा कथा श्रवण करना चाहिये।

विजयादशमी—यह क्षत्रिय प्रधान त्योहार है, विजय कामना से भगवती अपराजिता का पूजन करके विजया दशमी में राजाओं को युद्धोपयोगी शस्त्र अश्वादि पूजन पूर्वक सायंकाल में मार्गपाली बांधकर विजय का शकुन मनाना चाहिए, भगवान श्री रामचंद्रजी ने भी अपनी वानरी सेना को साथ लेकर इसी दिन प्रस्थान कर रावण के दश सिर हरण करने के लिये लंका पर चढ़ाई की थी, इसी कारण से इस दिनका नाम दशहरा पड़ा।

शरद पूर्णिमा—इस दिन दूध क्षीरादि श्वेत पदार्थ और श्वेत वस्त्र भगवान को चाँदनी में अर्पण कर, लक्ष्मी तथा इन्द्र के पूजनोपरान्त जागरण भी करना चाहिए। **करक (करवा) चतुर्थी**—स्त्रियों को स्थिर सौभाग्य प्राप्त्यर्थ इस व्रत को अवश्य करना चाहिए, खेद है कि इस व्रत के विषय में वामन पुराण की शास्त्रीय कथा के स्थान में कल्पित भूत की कथा प्रचलित हो रही है वह ठीक नहीं, इस व्रत में चंद्र, शिव, स्वामी कार्तिक, गणेश, गौरी का पूजन कुंकुमादि से करना लिखा है, तदनन्तर चंद्रोदय समय चंद्रार्घ्य देकर व्रत का पालन करना चाहिए। यह व्रत स्त्रियों को सच्ची अर्धाङ्गिनी बनाने का उपदेश देता है, और बतलाता है कि पति के हित में ही स्त्री का हित है, स्त्रियों को चाहिए कि लौकिक पारलौकिक कोई भी कर्म अपने उद्देश्य से न कर पति के उद्देश से ही करें, वैसे तो "तपःप्रधाना नार्यः" लिखा है, परन्तु सौभाग्यवती स्त्रियों को पति की आज्ञा बिना अन्य व्रत करने का विधान नहीं है (हाँ, आज्ञा लेकर कर सकती हैं) स्त्रियों को व्रतादिसाधनों में उतना ही लगना चाहिए जितने में उनके प्राण पति को कष्ट न हो, उक्तञ्च-(पत्युराज्ञां बिना नारी उपोष्य व्रतचारिणी। आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत्॥

अहोई अष्टमी—पञ्जाब तथा बंगाल प्रांत में इस दिन पुत्रों वाली माताएँ व्रत रख कर रात्रि को भगवती काली का पूजनार्चन करके बच्चों को पकवान भरे बर्तन दिया करती हैं।

दीपावली—यद्यपि यह वैश्य प्रधान त्योहार है, तथापि सब वर्णों की श्री लक्ष्मीजी का पूजनार्चन दारिद्रच निवृत्यर्थं प्रदोष काल में करना चाहिये। राजा बलि के जेलखाने में समस्त देवी देवताओं के साथ लक्ष्मी भी कैद थी, उनको भगवान विष्णु ने आज के दिन ही छुड़ाया था।

अन्नकूट—आज नाना प्रकार के पदार्थ बनाकर भगवान को भोग लगाने का और गौओं की सेवा का विशेष माहात्म्य है॥ **गोपाष्टमी**—आज सायंकाल गौओं को पुष्पमालाओं से अलंकृत करके मिष्टान्न देकर उत्सव मनाना चाहिए।

भीष्म पंचक—महाभारत के अन्त में शरशय्या पर लेटे हुए भीष्मपितामह ने महाराजा युधिष्ठिर को सम्बोधन कर राजधर्म १, मोक्षधर्म २, नारीधर्म ३, पुरुषधर्म ४, और वर्ण धर्म ५, आदि पर अनेक अमूल्य उपदेश किये थे जिनकी प्रशंसा भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं की है, जो सम्पूर्ण कार्तिक स्नान न कर सके वह भीष्म पंचक में स्नान व्रत दान से अतुल पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

संकटचतुर्थी—इस दिन भगवान गणेश का व्रत रखकर चन्द्रोदय समय यथा लब्धोपचार भगवान गणपति का पूजन करे और तिलमोदक भुग्गों का नैवेद्य लगाकर व्रतोपारण करे तो सर्व संकट दूर हों, इस दिन कथा श्रवण का विशेष माहात्म्य है॥

वसन्तपंचमी—यह कान्ति एवं पुरुषार्थ प्रद ऋतुराज का प्रारम्भिक उत्सव है, अपने इष्टदेव को गुलाल आदि समर्पण कर उत्सव मनाना चाहिये।

श्रीमहाशिवरात्रि—इसी दिन प्रदोष वा अर्द्धरात्री के समय भगवान शङ्कर के पूजन का विशेष माहात्म्य है, व्रत रख कर रात्री को जागरण करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है। **सूचना**—यद्यपि अधिकांश हमारे धार्मिक व्रत ऐसे हैं कि जिनमें निर्जल रहने का विधान है जैसे राम नवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि आदि, परन्तु यह विधान अशक्त बाल-वृद्ध रोगी के लिए नहीं है।

अवतार तथा दिग्विजयी विश्वविख्यात महापुरुषों की कुंडलियें

श्री गणेश जी

गु.—ज्ञान के अधिष्ठाता आदिपूज्यता, गौरव-प्राप्त, सू. मं. महान् प्रभाव-शाली तेजस्वी ।

श्री हनुमान जी

गु.—बुद्धिमतां वरिष्ठ श. मं. वीराग्रणी, तेजस्वी बु. शु. सू. स्त्रीवियोगी, ब्रह्मचारी, निस्पृह ।

श्री महावीर स्वामी

मं. गु. शु. श. सू. महान् त्यागी ज्ञानागार, वन्द्य, धर्मप्रतिष्ठापक, तेजः पुञ्ज, चिरकीर्ति ।

श्री गुरुनानक देव

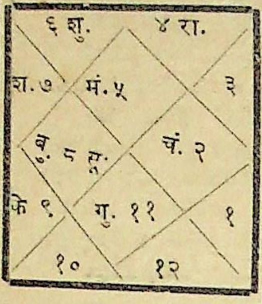

गु. शु. चं. नव मतप्रवर्तक योगनिष्ठ, उपदेष्टा, महापुरुष, सिद्धियुक्त । गु. मं. वन्द्य अमरकीर्ति

श्री स्वामी रामतीर्थ

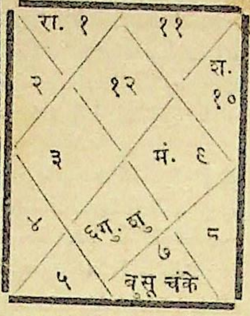

गु. शु. मं. श. तत्त्वचिन्तक, योगनिष्ठ, ज्ञानागार तेजस्वी, निर्लिप्त चं. सू. जलसमाधि ।

श्री स्वामी विवेकानन्द

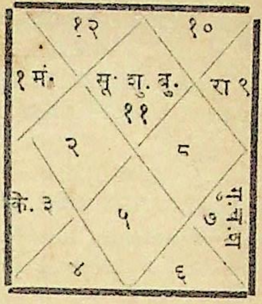

गु. श. चं. शु. बु. प्रतिभासम्पन्न महान् योगी तत्त्वज्ञ तार्किक, उपदेष्टा, तेजस्वी, यात्री ।

महाराणा प्रताप,

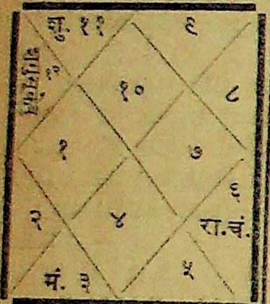

श. मं. सू. गु. रा. वीराग्रणी, तेजस्वी, त्यागी, कष्टसहिष्णु धार्मिक, गु. चं. शुद्धान्तःकरण, ज्वलन्त देशभक्त स्वाभिमानी ।

श्री पृथ्वीराज चौहान

श. रा. गु. बु. तेजस्वी शासक, संघर्षरत चं. सू. मं आप्त मित्र पारिवारिक एवं शत्रु द्वारा आवृत, तथा विपत्तिग्रस्त, गुरु चं. राजयोग भंग ।

लोकमान्य तिलक

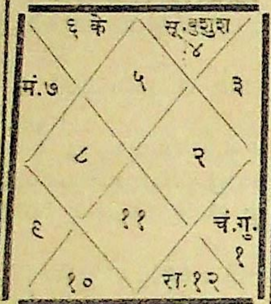

गु. चं. विविधशास्त्र-ज्ञानागार, तेजस्वी, वन्द्यवीर यशस्वी, मं. गु. जननायक, राष्ट्रनिर्माता, संघर्षरत, सू. रा. सरोग शरीर ।

श्री भक्त नामदेव जी

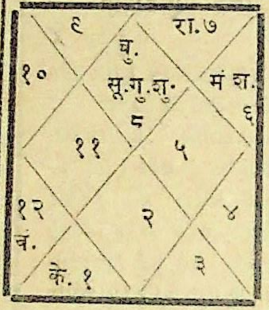

चं. गु. बु. शु.

निर्मलमति, भक्ति एवं दया सम्पन्न, जीवनमुक्त, निरपेक्ष ।

श्री छत्रपति शिवा जी

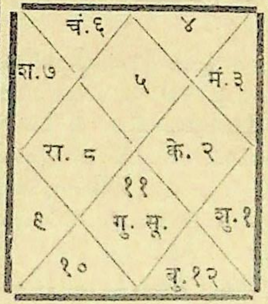

मं. श. गु. शु. सू. राजयोग, चं. शु. गु. उदार, सफल लोकशासक गुरुभक्त धर्मनिष्ठ, नरसिंह

महात्मा ईसामसीह

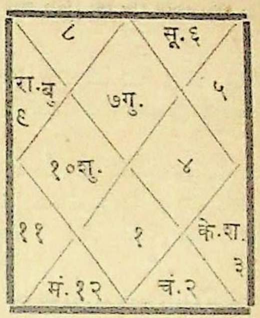

गु. शु. महान् त्यागी, दयालु तत्त्वचिन्तक नवमतप्रदर्शक, चं. शूल-मरण राजावरोध ।

अथ केरलमते प्रश्न-विचार

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्यान्हे तु फलं वदेत्। सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौ तु देवतां वदेत्॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	अष्टकवर्गः
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	प्रश्ननिर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	प्रश्नः
कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी	प्रवासीप्रश्नं
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	स्थिर	स्थिर	कष्ट	प्रवासीचरादि
समीप	समीप	दूर	पुनर्गतः	मार्गस्थं	मार्गस्थं	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासीगमार्ग
स्वल्प	सप्त	एकविंश	१ मास	सार्धमा	२ मास	६ मास	१ वर्ष	प्रश्नदिनानि
पत्र	अस्थि	फल	काष्ट	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्न
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव	धान्य ज्ञान
कौसुंभा	श्वेत	लोहितांग	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि वर्ण
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्नः
सप्तदिन	दो मास	पक्ष	१ मास	पक्ष	१ मास	सप्तदिन	२ मास	कष्टदिन
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानिः	लाभ	हानिः	नष्ट लाभः
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्षुनष्टः
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धानक	नौकर	टहलन	नाई	चौर जाति
ऊखले	अग्निगृहे	अरण्ये	अंतरिक्षे	भांडगते	काष्टशिल	गृहे	भुविमध्ये	नष्टस्थानम्
भैरव	जगदंबा	सूर्य्य	हनुमत	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितृ	देव पूजा
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रुगमागमौ
जय	हानिः	जय	हानिः	जय	हानिः	जय	हानिः	शत्रुजयहानि
न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	बंदीमोक्षप्रश्न
सप्तदिन	१ वर्ष	पक्ष १५	मास ६	मास १	मास ६	मास ३	वर्ष १	दिनानि
स्थिर	न सिद्धि	त्वरितं	दीर्घकालं	त्वरितं	दीर्घकालं	स्थिर	न सिद्धि	कार्य्यसिद्धि
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	व्यवहार प्रश्न
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	स्त्रीलाभप्रश्न
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्रकन्याप्रश्न
शतं	एक	शतं	२०	६०	४५	७५	१६	आयुप्रश्न
विलंब	उत्तम	विलंब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	नवर्षा	वृष्टिप्रश्न
२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०	दिनानि

रोगोत्पत्ति सन्तान प्रतिबन्धादि में देवदोष ज्ञान

प्रश्नलग्न से ३।६।८।१२ स्थान शुभरहित कोई पापग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानें। यदि ८।१२ वें स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, गुरु हो तो पितरदोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो जलदेवी का दोष, सूर्य हो तो देवीदोष, (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष,) शनि हो तो सतीदोष, बुध हो तो भूतदोष, भौम हो तो शाकिनीदोष स्वधर्महानि अथवा ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है। भौम स्वक्षेत्री १२ में हो तो छाया चुड़ैल, चौथे श. मं. राहु चौपटिया, बली वा नीच भौम १।४।८ वें हो तो शत्रु के घर से मसाणी, १० सू. मं. सौकण, १२ भौम नणद बड़ी, ८ वें भौम नणद छोटी, ८ वें भौम नणद छोटी, ४ भौम मैण, १० मं. गु. सती कुल की, १० मं. चं. अपने दुर्गास्थान का दोष कहना। यह ग्रह योग न हों तो केवल प्रश्नलग्न से दोष निम्नलिखित जानें बलवान् मेषलग्न में प्रश्न हो तो पितृदोष कहें, वृष हो तो आकाशदेवी का, मिथुन हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलभय प्रेतदोष, कन्या में केवल ग्रहदोष, तुला में क्षेत्रपाल का, वृश्चिक में नाग का, धन में कर्मजन्य, मकर में श्रीदुर्गा का, कुम्भ में अतिप्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें। बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य, शुभ ग्रह हो तो साध्य होते हैं॥

अखिल ब्रह्माण्ड में जगोत्पता की अलौकिक शक्ति का परिज्ञान करानेवाले जो अनन्त कोटी तारे आकाशमण्डल में हमको दीखते हैं, उनमें जिन तारों (ग्रहों) का हमारी पृथ्वी से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। उन्हीं की उच्च नीच स्थानादि स्थिति एवं वक्रमार्गादि, अष्टधा गतियों के भ्रमणवशात् इस पृथ्वी के राष्ट्रों में सुभिक्ष दुर्भिक्ष कभी युद्धविग्रह वा रोग महामारी भय फूट परस्पर विद्वेष कभी शान्त कभी अशान्त वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन सदैव हुआ करते हैं। यह बात ज्योतिःशास्त्रज्ञ भली प्रकार जानते हैं।

(ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावरा:, सृष्टिरक्षणसंहारा: सर्वे चापि ग्रहानुगा:) जिस तरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासन मण्डल में प्रधान मंत्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पाँच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है और उन अधिकार प्राप्त व्यक्तियों की योग्यता अयोग्यता सच्चरित्रता दुश्चरित्रता निःस्वार्थता एवं स्वार्थपरायणता आदि गुणावगुणों के अनुसार जैसे शासनयन्त्र-पर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुनार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशीय-कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय-कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उल्ट फेर तथा अघटित घटनाएँ घटित होती हैं वह त्रिकालज्ञ महर्षियों, के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती हैं। अब हम इस वर्ष आकाशी कौंसिल का धार्मिक सामाजिक तथा राजकीय स्थिति पर जैसा भी शुभाशुभ प्रभाव पड़ेगा वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभुकृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है लिख रहे हैं। इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजमन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्षविचारपूर्वक भारत एवं अन्य राष्ट्रों के वर्ष-वर्षेशादि लग्नों और शकुनशास्त्र व सूक्ष्म ग्रहयोगों को ध्यान में रखते हुए तथा राष्ट्रनायकों की दशावर्ष प्रवेश आदि अनेक प्रकार की ऊहापोह के अनन्तर ज्ञात होता है कि यह वर्ष विश्व को विशेषकर भारत को भारी जटिल समस्याओं का सामना कराने के लिये एवं राजनीति में एक नया अध्याय आरम्भ करने के हेतु आ रहा है। शासकों को भारी हैरानी उठानी पड़ेगी। विदेशियों की ओर से भारत के अग्रगण्यनेताओं की वैदेशिक नीति में कुछ हेर-फेर के लिये विशेष प्रयत्न होंगे। परन्तु वह सफल नहीं होंगे, क्योंकि स्वतन्त्र भारत की वर्षकुण्डली में नवम में उच्च का शनैश्चर है। वैज्ञानिक गुरुग्रह पाँचवें युद्धेश भौम करके दृष्ट हैं, अतः भारत में भी संहारक अस्त्रशस्त्र की सफल शोध का मार्ग प्रत्यक्ष हो जावेगा। आगामी संवत् २०१३ तक जब सिंह के गुरु होंगे तब भारतीयों को भी उस में पूर्ण सफलता मिलेगी, जिससे भारत के वैज्ञानिकों का भी संसार में मस्तक ऊंचा होगा। अष्टमवर्ष की कुण्डली में नीच का शुक्र अष्टम है अतः कई बड़े समृद्ध नगरों में अशान्ति जैसी स्थिति बनेगी। बड़े धनी लोगों को विशेष कर दक्षिण व यू. पी. में कष्ट होगा। भारत की पञ्चवर्षीय योजना का कारण बनेगा। कहीं बाँधों को हानि पहुँचेगी। इस वर्ष जनता मंहगाई तथा पैसे की कमी से महाकष्ट पावेगी। साधारण गृहस्थों को तो अपनी लज्जा की रक्षा के लिये अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। परस्पर में लड़ाई झगड़े कलह स्वार्थपरायणता क्रूर शब्द का प्रयोग होगा। अपवित्रता और अधर्म वृद्धि के कारण धार्मिक पुरुषों को कष्ट होगा। दलितवर्ग और मजदूरपार्टी की शनैश्चर बलवशात् उन्नति होगी। सुशील श्रेष्ठ पुरुषों और ब्राह्मण जातिवालों को कष्ट तथा इन्हें अपनी मानमर्यादा का भी भय रहेगा। कार्तिक के बाद नये सिक्के में कुछ फेराफेर हो। शनैश्चर की राहु पर पूर्ण दृष्टि है अतः कहीं दफीनों का अन्वेषण हो और जाली वस्तुएँ बहुत बनें उनके कई गिरोह पकड़े भी जावेंगे। मृत्युनायक शनैश्चर के कारण भारतेतर राष्ट्रों में रागद्वेष अशान्ति का वातावरण अभी बढ़ने की ओर रहेगा। इनकी परस्पर की सन्धियाँ विक्रमी संवत् २०१३ तक दृढ़ स्थिर न रहेंगी। इस वर्ष विश्व में कहीं साधारण आन्तरिक युद्ध तो संभव हैं परन्तु विश्वयुद्ध का योग नहीं है।

किस राशि को ग्रहादिवेधसे किस किस देश का शुभाशुभ देखना चाहिये उसका चक्र

आकाशी कौंसिल का भू-मण्डल के राष्ट्रों पर प्रभाव

ब्रिटेन—गत वर्ष की अपेक्षा इस देश की आर्थिक स्थिति कुछ सँभलेगी। मित्रराष्ट्र से गुप्तमंत्रणायें होती रहेंगी, युद्ध से सशंकित रहकर उद्योग में संलग्न रहना पड़ेगा। यहाँ के प्रधान के लिये यह वर्ष शुभ नहीं है संभव है इस पद का उपयोग कोई अन्य व्यक्ति करे।

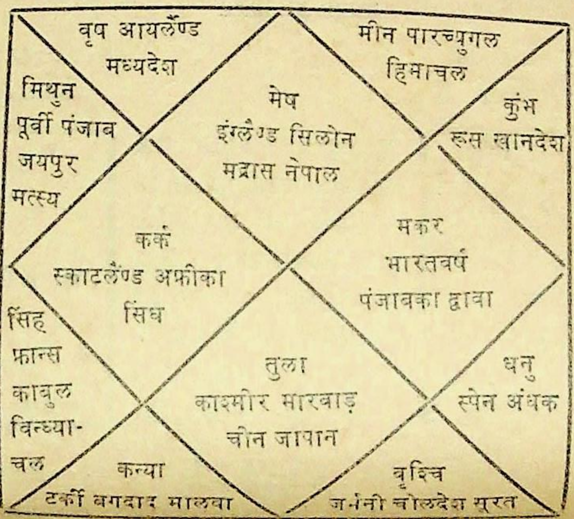

अमेरिका—इस वर्ष कहीं विस्फोटक सामग्री से हानि पहुँचे, सैनिक हलचल होती रहेंगी,

काश्मीर समस्या

अमेरिका—इस वर्ष कहीं विस्फोटक सामग्री से हानि पहुंचे, सैनिक हलचल होती रहेगी, पूर्वीय प्रदेशों में इनके सैनिकों का पदार्पण होगा। मजदूर दल में असन्तोष तथा हड़ताल होने के योग हैं। यहाँ से खनिज पदार्थ विदेशों में प्रचुरमात्रा में जावेंगे।

जर्मनी—इस वर्ष यह स्वतन्त्र और पूर्ववत् ऊँचे उठने की तैय्यारी में कटिबद्ध रहेगा, इनका जोर आकस्मिक रूप से बढ़ने लगेगा, कई कारणों से मनुष्यों की मृत्यु विशेषरूप से होने के तथा विचित्र रूप से स्वतन्त्रता प्राप्ति के भी योग हैं।

रूस—रूस में इस वर्ष आन्तरिक विद्रोह होगा, कहीं सरकारी आदमी और विद्रोही मिलकर क्रान्ति पैदा करेंगे और इस देश की किसी गुप्त योजना का भेद खुलने पर विश्व के राजनैतिक क्षेत्रों में घबराहट फैलेगी, देशके अग्रगण्य नेताओं की अनेक बार सभायें होकर गुप्तमन्त्रणायें होंगी। अपने मित्र देशों की पूर्ण तनमन धन से सेवा होगी। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अधिक विरोध रहेगा। अमेरिका से पूर्ण वैमनस्य। यहाँ के प्रधान को किसी प्रतिद्वन्दी से भय। किसी अधिकृत देश में—उपद्रव हो। सन् १९५६ में यह देश विज्ञान में अमेरिका से आगे निकल जायगा क्योंकि गुरु का भ्रमण इनके लिये पथ-प्रदर्शक है।

चीन—कम्यूनिष्टों का अधिक उत्साह बढ़ेगा। सरकार कई नई योजनायें तैय्यार करेगी। आफिसरों के अधिकारों में बहुत फेरफार होगा। अन्नसंकट का सामना करना पड़ेगा। एशिया में मान्यता बढ़ेगी, विरोधी राष्ट्र भी प्रभावित होंगे।

जापान—यहाँ के प्रधान या सम्राट् को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कई प्रसिद्ध व्यक्ति राजकीय मामलों के कारण कष्ट पावेंगे। सैनिक बल एवं नष्ट हुये कई अधिकार भी पुनः प्राप्त होने के योग इस वर्ष से अच्छे आ रहे हैं। और अन्यराष्ट्रों के साथ सन्धि पत्रों पर नये विचार युक्त फिर हस्ताक्षर होंगे।

अन्य फ्रांसादि—इस वर्ष फ्रांस के प्रधान मंत्री मंडल में हलचल हो। भारत से मनोमालिन्य रहे गा। आर्थिक स्थिति खराब। इटली के लिये यह वर्ष प्रायः अशुभ ही रहेगा। कम्युनिष्टों की हलचलों का प्रभाव हो, कोई नया आन्दोलन खड़ा हो। पोलैण्ड बालकन प्रदेश की जनता में भयंकर विद्रोह फैलेगा। ब्रह्म देश की सरकार को विरोधियों का भय हो। पालस्टाईन में जनता को कष्ट हो, रक्तपात, युद्धभय बना रहे। अफ्रीका के प्रधान को विद्रोह का सामना करना पड़ेगा, वहाँ की आर्यजाति को कष्ट होगा।

पाकिस्तान—यह वर्ष पाकिस्तान की सरकार एवं पाकिस्तानी जनताके लिये अशुभ ही रहेगा, शनैश्चर की बृहत्कल्याणी (साढ़ेसाती) के कारण प्रजा में बेरोजगारी असन्तोष आर्थिक संकट, राज्याधिकारियों से अनबन हो। सूर्यग्रहण के आसन्न संघर्ष हो तो हानि उठानी पड़े, और धार्मिक उन्माद से हानि ही रहेगी।

भारत एवं अफगानिस्तान के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की मृत्यु से शोक-सन्ताप होगा।

सीमाप्रान्त के पठान विद्रोह करेंगे, अपनी बात मनाने को दृढ़ चित्त होंगे। अन्त में उन्हें सफलता भी मिलेगी। दूरदेशीय स्वार्थी लोग पाकिस्तान में इन्हें गृद्धों की तरह खा जाने को तत्पर रहेंगे, इस विषय में उन्हें कुछ सफलता भी मिलेगी, दुःखित पाकिस्तानी जनता अपने नेताओं को कोसेगी, यहाँ की घटनाओं को देखकर संसार आश्चर्यान्वित होगा, मन्त्रीमंडल के विरुद्ध गुप्त षड्यंत्र भी हों, पार्टी बाजी सर्वत्र रहे।

पाकिस्तान की वार्षिक ग्रहस्थिति रक्तपात की ओर जा रही है।

काश्मीर समस्या।

इस वर्ष गोचर में शनैश्चर का तुलाराशि में भ्रमण हो रहा है और नक्षत्र भोग स्वाती का है। सर्वतोभद्र में स्वाती का शत तारा के साथ सम्मुख वेध होता है, जो काश्मीर में गृहकलह और अशान्ति का करनेवाला है।

शतभादित्रयं चैव उत्तराकुक्षिमाश्रितम्।
नेपालं कीरकाश्मीरं गज्जनं खुरसानकम्॥
हिमाश्रयाश्च नश्यन्ति देशा ये चोत्तराश्रिताः।

इत्यादि लिखकर अशुभ फल बतलाया है और काश्मीर तो वैसे भी तुलाराशि के प्रभाव क्षेत्र में होने के कारण वर्तमान में शनैश्चर करके पीड़ित है। काश्मीर की उलझन यदि गतवर्ष के पञ्चाङ्ग में लिखित शनि भौम की युति के बाद भी न सुलझी तो फिर कर्क के बृहस्पति आकर सुलझावेंगे, निश्चित है। क्योंकि वे कर्क में आकर भारत की प्रभावराशि को पूर्णदृष्टि से देखेंगे। किन्तु इधर आर्यशासित भारत के हितैषी बृहस्पति हैं जो सौम्य प्रकृति के हैं और उधर यवन शासित पाकिस्तान के हितैषी क्रूर कर्मा छली शनैश्चर महाराज हैं अतः पाकिस्तान अपने क्रूर हितैषियों की आन्तरिक सहायता से काश्मीर में अवश्य कुछ गड़बड़ मचावेगा, जिससे काश्मीर समस्या सुख से नहीं सुलझ सकेगी। अन्त में इस समस्या का समाधान अवश्य होगा। परन्तु उस समाधान से पूर्णतया भारत व पाक कोई संतुष्ट न होगा।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नेहरूजी के लिये यह वर्ष मानसिक अशान्तिप्रद है इनकी जन्मराशि से शनिगुरु का भ्रमण शत्रुकृत भय को सूचित करता है सावधानी की जरूरत है। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद जी को इस वर्ष का पूर्वार्द्ध भारी चिन्ताप्रद रहेगा, राजनैतिक समस्याओं के कारण उद्विग्नता रहेगी शरीर के में वायु विकार से कष्ट होगा।

आकाशी कौंसिल का व्यापार और व्यापारी वर्ग पर प्रभाव

आजकल प्रायः असंख्य व्यापारी वर्ग को अपनी पोजीशन सम्हालनी मुश्किल हो रही है, ऊपर दीखने में बड़े सम्मानित धनाढ्य पुरुष भी आन्तरिक आर्थिक स्थिति कमजोर होने से घोर सुखविहीन होकर चिन्तारूपी अग्नि में जल रहे हैं। कदाचित् किसी को सुखकी झलक दीखने में आई तो वह सुख भी क्षणिक बिजली की तरह अपनी चमक दिखाकर लुप्त हो जाता है, इसका कारण धर्मविहीन प्राणियों पर क्रूरग्रहों के चक्र का प्रभाव है क्योंकि कलियुग में क्रूर पाप ग्रहों का अशुभ फल शीघ्र और पूर्ण होता है (कलौ पाप फलं पूर्णं शुभोत्थं पादतोभवेत्) और कथित शुभफल चतुर्थांश मात्र होता देखा जाता है।

आकाश गामी शुभाशुभ ग्रहों का प्रभाव जैसे चराचर जीवों पर पड़ता है उसी प्रकार सभी व्यापारिक वस्तुओं पर भी बड़े विचित्र ढंग से पड़ता हुआ प्रत्यक्ष देखने में आता है यदि साथ में तात्कालिक दिव्यान्तरिक्ष शकुनों का भी विचार कर लिया जावे तो कभी व्यापारिक फल में विपरीतता नहीं होती।

व्यापारियों को चाहिये कि अपनी लाभप्रद दशा देखकर व्यापार करें। अन्यथा अशुभदशावालों के दिमाग में तात्कालिक ग्रहगति वशात् उल्टा विचार उत्पन्न होने के कारण लाभ के स्थान में कमरतोड़ हानि हो जाती है, क्योंकि सौदा वा सट्टा सितारे का साथी है, सितारा (भाग्येशग्रह) प्रबल हुये बिना लाभ हो ही नहीं सकता इसलिये अपनी अशुभ

ग्रहस्थिति को देखकर व्यापार से अलग हो जाना चाहिये। कदाचित् न रह सके तो प्रति-वर्ष "कासोस्मीति०" ऋचाका विधिपूर्वक प्रयोग करवाकर कुछ काम करते रहे अन्यथा और भी दरिद्रता के गड्ढे में गिरकर घोर संकट में पड़ जाओगे। इस वर्ष अन्तरराष्ट्रीय व्यापार और नवीनोद्योग में भारी उथल-पुथल क्रान्ति होगी। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक्सचेंज (विनिमय) की अड़चनों के कारण अनेक कठिनाईयाँ उपस्थित होंगी—जिसके कारण बहुतों को लाभ न होगा॥

व्यापारेश बुध वर्षेश कुण्डली में नीच राशि का होकर भौम से दृष्ट है अतः इस वर्ष व्यापारी वर्ग में घबराहट विशेष रहेगी। विदेशों के वातावरणों से बाजारों में कई बार अचिन्तित तेजी मन्दी के तूफान उठेंगे, इसलिए ग्रह स्थिति (अर्घकाण्ड) के साथ व्यापारिक समाचारों को भी मिलाकर चतुरता से काम करके लाभ उठाना चाहिए। शुभ ग्रह दशा वाले व्यापारी उत्तम लाभ-उठावेंगे, ऐसा मुझे निश्चय है।

इस वर्ष तृण लकड़ी घृत कपास और पशु प्रायः तेज ही रहेंगे। गुड़ के मालिक मंगल की स्थिति से ज्ञात होता है कि आश्विन शु० से मार्ग० कृ० तक शक्कर, खांड, गुड़ का भाव खास तेज रहेगा।

अनाज का विचार—वैशाख शु० ९ से वैशाख शु० १५ तक अन्न का स्टाक न करें। इस वर्ष गेहूँ, जौ, चना, चावल, उड़द, प्रायः तेज रहेंगे! कार्त्तिक कृ० १२ से पौ० कृ० १४ तक अन्न में भारी तेजी होगी। विशेष कर गेहूँ में। और माघ शु० ११ से फाल्गुण कृ० ३० तक गेहूँ में मंदा आकर फिर तेजी हो जायगी। मकई, बाजरा, चावल की फसल को उत्पत्ति के बाद हानि होगी।

रूई का विचार—चैत्र शुदी में ४ तक रूई खरीदने से एक मास के अन्दर उत्तम लाभ हो, ज्येष्ट कृ० ४ से ७ तक रूई तेज होकर बाद तुरन्त मन्दी गिरे। ज्येष्ट शु० ९ से आषाढ़ शु० ३ तक रूई मन्दी बाद तेजी आवे। श्रावण शु० १ से भाद्रपद कृ० ३० तक रूई में ५०।६० टके की मन्दी आवेगी। इसी तरह माघ कृ० ८ से फाल्गुण कृ० १३ तक भी खास मन्दी के योग हैं। भाद्रपद शु० के प्रारंम्भ में ही रूई खरीदें। ति० १२ बाद तेजी खूब चलेगी। यहां गेहूँ चना के संग्रह से भी भविष्य में लाभ हो।

आषाढ़ कृ० ११ को या १३ को तथा कार्तिक कृ० १२ को माघ शु० १३ को रूई में एकाएक १०।२० मंदे होंगे, मार्गशीर्ष कृ० १२ से ति० १४ तक रूई में मन्दी का झटका आकर फिर एकदम तेजी हो जायगी।

सूचना—रूई के स्टाक करने तथा विशेष लाभ उठाने के लिए प्रत्यक्ष मिलें।

सुवर्ण चाँदी आदि का विचार—वैशाख कृ० ५ से तथा भाद्रों शु० २ से तथा मार्ग-शीर्ष कृ० ४ से चाँदी में तेजी का काम करनेवालों को जल्दी लाभ होगा। आषाढ़ शु० ६ से चान्दी में ३ टका घटती हो। ज्ये० कृष्ण ४ से सुवर्ण १॥ टका तेज। आषाढ़ शु० १२ से सुवर्ण मन्दा हो। आश्विन कृ० में ५ तक तथा बाद में आश्विन शु० ११ से सुवर्ण में खासी तेजी आवेगी। मार्गशीर्ष कृ० ६ के बाद सुवर्ण के व्यापार में भारी उथल-पुथल होगी। व्यापारीजन सावधानी से काम करें।

ग्रहगति देखते हुए मालूम होता है कि माघ फाल्गुन में चाँदी के व्यापार में भारी तूफान आएगा। समय पर पत्र-व्यवहार करके निश्चित राय मँगावें। माघ शु० ५ से कपड़ा, तेल, घी, तेज होगा। सुवर्ण चाँदी में भी गर्मी रहेगी। आश्विन से पौष तक वस्त्रों तथा तैलों का भाव तेज। आश्विन शु० ११ के बाद घृत, तैल, तिलों के भाव तेज होंगे। ज्येष्ट कृ० में बारदाना में मन्दी का झटका आवेगा। और दीवाली के बाद बारदाने में खासी तेजी आवेगी। परन्तु यह तेजी स्थिर न होगी। मन्दी फिर जल्दी आवेगी। मार्गशीर्ष से चाव-लादिक में तेजी अच्छी चलेगी। श्रावण में अन्न संग्रह से छठे मास में लाभ। मार्गशीर्ष कृ० १० के अनन्तर रंग बिरंगे तथा रेशमी वस्त्र तेज होंगे। फाल्गुन शुदी से बिनौला तेज रहे। पौष के अनन्तर बुध का भ्रमण कागज की कमी को शनैः-शनैः दूर करेगा।

भारत की वर्षा-वायु आदि पर ग्रहों का प्रभाव

वर्षा के लिए यह वर्ष बड़ा बेढंगा है। भौमगतिवशात् कहीं तो अतिवृष्टि से नदी नाले भरपूर ग्राम जलमग्न दिखाई देंगे और जल प्रलय (बाढ़) से जन धन पशुओं की बहुत हानि होगी। जिससे त्राहि-त्राहि मचेगी। सरकार को सहायता के लिए बहुत खर्च करना पड़ेगा। और कहीं दूसरी तरफ क्षुद्र नदी नाले तालाबों में पानी का अभाव दिखाई देगा। बड़े दरियाओं (महानदों) का जल भी अपने स्तर से बहुत कम होगा।

अनाज की उत्पत्ति कहीं रुपये में बारह आने तथा कहीं कृषकों को अपने खाने योग्य भी अन्न उत्पन्न न होगा। वैशाख शुदि १५ से ज्येष्ट शुदी ९ तक कहीं असामयिक वृष्टि होगी। आषाढ़ कृष्ण ५ से ७ तक कई जगह वर्षा होगी। आषाढ़ शु० ६ से श्रावण शु० ४ तक कहीं धूल उड़े और कहीं अति वृष्टि हो। श्रावण शु० ५ से भाद्रपद शु० पूर्णमासी तक वायु के जोर से बहुत जगह बादल उड़ते रहेंगे। मार्गशीर्ष शुदी में तथा माघ शुदी में कहीं वायु के तूफान से हानि तथा कुछ वर्षा भी हो। कहीं टीन आदि के छप्पर भी उड़ते नज़र आवेंगे। कई देवमातृक देशों में गेहूँ की फसल को हानि पहुँचेगी।

इस वर्ष राहु भौम धनु में आश्विन शुदि तक रहेंगे, जो अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि से फसलोंको हानि करनेवाले हैं। कृषक वर्ग के लिए प्रायः यह वर्ष पशु और फसलों की चिन्ता का कारण बना रहेगा। आगे गौ प्रजा के भाग्य प्रबल हैं।

खेती करनेवालों को चाहिए कि अपने यहाँ आषाढ़ कृ० ५ तथा ७ की रात को देखें कि चन्द्रमा बादलों में से उदय हुआ है कि नहीं, यदि इन दिनों चन्द्रमा बादलों में से उदय हो तो समझ लो कि हमारे यहाँ वर्षा अच्छी होकर अनाज की उत्पत्ति भी अच्छी हो जायगी।

फलों की उत्पत्ति के लिए यह वर्ष शुभ नहीं वर्षेश सूर्य के कारण (फलमल्पवृक्षाः)

भारतीय वायु-शास्त्र में वर्षा का शुभाशुभ सुभिक्ष दुर्भिक्ष जानने के लिये आषाढ़ी पूर्णमासी अन्तिम एवं विश्वसनीय दिन है, इसे भी विचारें। शास्त्र में इस दिन के सम्बन्ध में कहा है कि—

यदा श्रेष्ठतमाषाढ़ी ग्रहयोगातिदारुणा।
तदा नावृष्टिर्न दौष्यं व्याधिश्च विग्रहो पि वा॥

अर्थात्—वर्ष में ग्रहों के योग बहुत अशुभ भी बनें हों परन्तु—जिस देश में आषाढ़ी पूर्णमासी वायु बादल आदि से श्रेष्ठ हो जाय, तो अनावृष्टि दुःख रोग दुर्भिक्ष विग्रह आदि वहाँ कुछ भी नहीं होते किन्तु शुभ फल होता है। अत:—बुद्धिमानों को चाहिये कि—संवत् का अच्छा बुरा जानने के लिये आषाढ़ी पूर्णिमा को भले प्रकार से देखें। इस दिन की परीक्षा से सुभिक्ष दुर्भिक्ष सत्य रूप से जाना जा सकता है। यह अनुभव सिद्ध विचार है। आषाढ़ी पूर्णिमा को दिनरात्री की ६० घड़ियों से श्रावणादि १२ महीनों का (अर्थात्—पाँच-पाँच घड़ी से एक-एक महीने के क्रम से) विभाग करे, फिर देखे जिस महीने की घड़ी में बादल बिजली गर्जन वा उत्तर पूर्व की वायु चली हो उस मास में वर्षा सुभिक्ष होगा। ऐसा जाने—

[शेष देखिए पृष्ठ ११३]

संवत् २०११ शकः १८७६ चैत्रशुक्लपक्षः १ (४ अप्रैल से १८ अप्रैल १९५४ई०) उत्तरगोलो वसन्तर्तुः

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र संचारः	सू.उ. रेल्वे		सू.अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३१	७	१	र.	२३	१९	रे.	१०	५८	वै.	४७	८	व.	२३	१९	२२	४	२९	मे.१०।५८	६	१४	६	४२	११	२०	३५	१७
३१	१२	२	चं.	१७	१८	अ.	६	४८	वि.	३९	३०	कौ.	१७	१८	२३	५	१	मेषे	६	१३	६	४३	११	२१	३४	१९
३१	१६	३	मं.	११	३०	भ.	२/५९	४/५३	प्री.	३२	५	ग.	११	३०	२४	६	२	बृ.१६।५५	६	१२	६	४३	११	२२	३३	१९
३१	२०	४	बु.	६	५	रो.	५६	१२	आ.	२५	२	वि.	६	५	२५	७	३	वृषे	६	१०	६	४३	११	२३	३२	१५
३१	२४	५	गु.	१	१६	मृ.	५४	००	सौ.	१८	३५	बा.	१	१६	२६	८	४	मि.२५।१६	६	९	६	४४	११	२४	३१	१०
अवम		६	गु.	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	२८	७	शु.	५४	१३	आ.	५२	३६	शो.	१२	४८	ग.	२५	४४	२७	९	५	मिथुने	६	८	६	४४	११	२५	३०	३
३१	३२	८	श.	५२	११	पुन.	५२	१८	अ.	७	४७	वि.	२३	१२	२८	१०	६	क.३७।२३	६	६	६	४४	११	२६	२८	५१
३१	३६	९	र.	५१	२८	पु.	५३	१३	सु.	३	३९	बा.	२१	४९	२९	११	७	कर्के	६	५	६	४५	११	२७	२७	३८
३१	४१	१०	चं.	५१	५५	श्ले.	५५	२१	धृ.	०/५८	३/१७	तै.	२१	४१	३०	१२	८	सिं५५।२१	६	४	६	४६	११	२८	२६	२२
३१	४५	११	मं.	५३	४६	म.	५८	४८	गं.	५७	१२	व.	२२	५०	१वै	१३	९	सिंहे	६	३	६	४७	११	२९	२५	५
३१	५०	१२	बु.	५६	३९	पू.फा	६०	००	वृ.	५६	५६	व.	२५	१२	२	१४	१०	सिंहे	६	१	६	४७	०	०	२३	४७
३१	५५	१३	गु.	६०	०	पू.फा	३	२२	ध्रु.	५७	३३	कौ.	२८	४०	३	१५	११	कं.१९।४५	६	१	६	४८	०	१	२२	२६
३२	००	१३	शु.	०	४१	उ.फा	८	५४	व्य.	५८	४५	तै.	०	४१	४	१६	१२	कन्यायाम्	६	०	६	४९	०	२	२१	३
३२	४	१४	श.	५	२७	ह.	१५	७	ह.	६०	००	व.	५	२७	५	१७	१३	तु.४८।२४	५	५९	६	५०	०	३	१९	३७
३२	९	१५	र.	१०	३८	चि.	२१	४१	ह.	००	१७	व.	१०	३८	६	१८	१४	तुलायाम्	५	५७	६	५०	०	४	१८	१०

ग्रहदर्शन–मं. अर्द्धरात्रि में और बु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। गु. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में दीखेंगे। शनि सूर्यास्त बाद पूर्व में दिखाई देगा।

चन्द्र दर्शनम्, पञ्च. स. १०।५८, चान्द्रसँव्वत्सरारम्भः, नवरात्रा. ×
सावान मु. ८ [× घटस्था. वर्ष फ. अ.,
भ. ३८।४७ उ. गणगौरीपू. मन्वादिमत्स्य ज.,
भ. ६।४ या.
मीनेबुधः ५५।५६ मेला माई सरखाना

भ. ५४।१३ उ. भरिण्यां शुक्रः ४५।५६
भ. २३।१२ या. श्री दुर्गा ८, मेला श्री मनसादेवी,
उ. भा. बुधः १५।२, श्रीरामनवमी व्र.,

भ. २२।५० उ. ५३।४६ या. अश्वि. सं. मेषेऽर्कः ३५।४४ म. ३०पुण्यं+
निम्बार्का. ११ व्र. [+२०।४४ उ., कामदा ११ व्र., मेला वैशाखी,
प्रदोष व्र., उ. फा. ऽसू.।।।।।।।।। ल. १० श्री जैनमहावीर जयन्ती,
गुड फ्राइडे
भ. ५।२७ उ. ३८।२ या. सत्यव्रतम्,
वैशा. स्ना. प्रा. चैत्री १५ मन्वादि, ईस्टरसण्डे,

चैत्रशुक्ला ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	१	०	६	८	२
२६	५	१	२८	१३	१४	२६	२६
२८	४८	३०	२१	३७	८	१७	१७
५१	५८	२८	२०	२०	५२	८	८
५८	२३	८४	९	७३	४	३	३
४८	१९	५१	२८	५४	१०	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रे.	मू.	[illegible]	म.	भ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३	२	४	२	१	३	४	२

इस पक्ष में श्वेत वस्तु नमक, कपास तथा गुड़ खंड अलसी तेल तिल सरसों अनाजों के भाव में तेजी का असर रहेगा। मिर्च लोहा का भाव कुछ मन्दा हो। ति. ५ से रूई चाँदी में मन्दी, बिनौला तेज। प्रजा में कहीं अग्नि के उत्पात से हानि होगी। ति. २ से ३१ दिन के अन्दर किसी श्रेष्ठ मान्य पुरुष की मृत्यु वा उसे मृत्यु तुल्य भय होवे।

ति. ४, ५, को कहीं २ बादल चाल फिर ति. १२ से १५ तक कहीं २ मामूली बूंदा बांदी हो।

वा० वि०–यदि द्वितीया को चन्द्र श्याम रंग बादलों से ढका हुआ हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाए तो घृतादि

चैत्रशुक्ला १५ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः १३

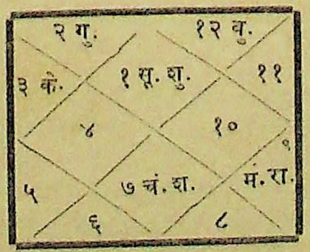

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	८	११	१	०	६	८	२
४	८	१३	२९	२३	१३	२५	२५
१८	४२	५३	४१	२७	३४	५१	५१
१०	२९	४८	१८	३१	१२	४३	४३
५८	२०	९८	१०	७३	४	३	३
३३	२६	५२	२२	४१	२८	११	११
[illegible]	मा	मा	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अ.	मू.	[illegible]	मृ.	भ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२	३	४	२	४	३	४	२

वस्तु की कीमत बढ़े। चैत्र शुदि जो पंचमी दक्षिण पूर्व वाय, वर्षा भी होवे कुछ भादों तेज बिकाय। चैत्र शुदि जो त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान, आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान।

संवत् २०११ शकः १८७६ वैशाख कृष्णपक्षः २									हिं.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	नित्यसूर्यस्पष्टः
वि.मा.	ति.वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	वैशाख	अप्रैल	साबान	संचारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले
२२ १४	१ चं.	१५ ४७	स्वा.	२८ १०	व.	१ ५३	कौ.	१५ ४७	७	१९	१५	तुलायाम्	५ ५६	६ ५१	० ५ १६ ४०
२२ १९	२ मं.	२० २९	वि.	३४ ६	सि.	३ १०	ग.	२० २९	८	२०	१६	वृ. १७।३७	५ ५५	६ ५२	० ६ १५ ९
२२ २४	३ बु.	२४ २८	अनु.	३९ २०	व्य.	३ ५८	वि.	२४ २८	९	२१	१७	वृश्चिके	५ ५४	६ ५३	० ७ १३ ३५
२२ २८	४ गु.	२७ १८	ज्ये.	४३ २३	व.	४ ०	श.	२७ १८	१०	२२	१८	ध. ४३।२३	५ ५३	६ ५४	० ८ ११ ५८
२२ ३१	५ शु.	२९ २	मू.	४६ १८	प.	३ ८	" .	२९ २	११	२३	१९	धनुषि	५ ५२	६ ५४	० ९ १० २०
२२ ३५	६ श.	२९ २३	पू.षा.	४७ ५७	शि.	५८ १ ३६ २३	ब.	२९ २३	१२	२४	२०	धनुषि	५ ५१	६ ५४	० १० ८ ४१
२२ ३९	७ र.	२८ ३१	उ.षा.	४८ २३	सा.	५४ २९	ब.	२८ ३१	१३	२५	२१	म. ३।३	५ ५०	६ ५५	० ११ ६ ५८
२२ ४२	८ चं.	२६ २३	श्र.	४७ ३६	शु.	५२ ४४	कौ.	२६ २३	१४	२६	२२	मकरे	५ ४९	६ ५६	० १२ ५ १३
२२ ४६	९ मं.	२३ १२	ध.	४५ ५१	शु.	४४ ७	ग.	२३ १२	१५	२७	२३	कुं. १६।४३	५ ४८	६ ५६	० १३ ३ २४
२२ ५०	१० "	१९ ३	श.	४३ १४	.	३७ ५०	वि.	१९ ३	१६	२८	२४	कुम्भे	५ ४७	६ ५६	० १४ १ ३४
२२ ५३	११ गु.	१४ ५	पू.भा	३९ ५६	ऐं.	३० ५६	बा.	१४ ५	१७	२९	२५	मी २५।४६	५ ४६	६ ५७	० १४ ५९ ४३
२२ ५७	१२ शु.	८ ३४	उ.भा	३६ १०	वै.	२३ ३७	तै.	८ ३४	१८	३०	२६	मीने	५ ४५	६ ५८	० १५ ५७ ५१
२३ १	१३ श.	२ ४१	रे.	३२ ६	वि.	१६ १	व.	२ ४१	१९	१	२७	मे. ३२।६	५ ४५	६ ५८	० १६ ५५ ५६
अवम	१४ श.	५३ ५२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
२३ ४	३० र.	५० २८	अ.	२७ ५६	प्री.	८ १९	च.	२३ ३०	२०	२	२८	मेषे	५ ४४	६ ५९	० १७ ५४ ०

(१९ अप्रै० से २ मई १९५४ ई०) उत्तरायणगोलो ग्रीष्मर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. अर्द्धरात्रिसे पहिले पूर्वमें दीखेगा। बुध ति. ९ से पूर्व में अस्त होगा। गु. शु. सूर्यास्तिबाद पश्चिम मे दीखेंगे। शनि सूर्यास्तिबाद पूर्व मे दीखेगा।

रेव. बुध. ३८।३६ मृगे. ३ मिथुने गुरुः ४६।४५ अगस्त्योऽस्तः ४८।४६ ×

भ. ५२।२८ उ. कृत्ति. शुक्रः ३६।५१ [× सायं. वृषे भानुः ५२।४० ग्रीष्म. प्रा.

भ. २४।२८ या. व. स्वात्यां २ शनिः ७।१२ श्रीगणेश ४ व्र., अनु. +

[+ ।ऽ।।ऽ सु. ।ऽ।।। ल. गोधूलि,

वर्षेशुक्रः १९।५६

भ. २९।२३ उ. ५८।५७ या.

भ. ५१।७ उ. पञ्चक प्रा. १६।४३ भरि. रविः १७।८ मेषेऽश्वि. ÷

भ. १९।३ या. [÷ बुधः १।२६ पूर्वास्तो बुधः ३।५७

वरूथिनी ११ व्र.

प्रदोष व्रतम्, [△ ३०।३१ मई ५ ता. ३१

भ. २।४१ उ. २९।३७ या. पञ्चक स. ३२।६ रोहिण्यां शुक्रः △

मेलापञ्जौर

वैशाख कृष्ण ८ चन्द्र इष्टम् ०।० दिनगणः २१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०	८	११	२	१	६	८	२
१२	११	२८	१	३	१२	२५	२५
५	११	३	७	१६	५७	२६	२६
१३	३५	३०	२८	३	४२	१९	१९
५८	१६	[illegible]	११	७३	४	३	३
१५	५८	२	४	२८	३३	११	११
क्रां:	मा	मा	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आ.	मू.	रे.	मृ.	कृ.	स्वा	पू.पा	पु.न.
४	४	४	२	३	२	४	२

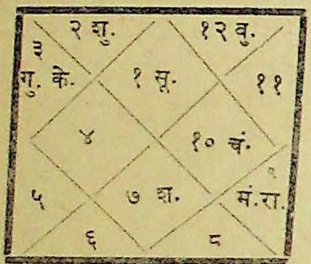

इस पक्ष में हाजर अनाज तथा सट्टे के व्यापार में तेजी का रुख रहेगा—तेजी वाले लाभ में रहेंगे परन्तु मोती जवाहरात के भाव में मन्दी का ही असर रहेगा। ति. ५ से रूई और चाँदी में मन्दी चले ति. ९ से सुवर्ण मोती रत्नों तथा पशुओं के भाव में तेजी-तिलतेल मन्दा—चाँदी में २ टका की मन्दी ति. १३ से अलसी, अरिंड, सरसों घृत गुड़ खंड और सुपारी के भाव में भी मंदी रहे।

ति. १ से ५ तक और ति. १० से ३० तक उत्तर भारत में पहाड़ के समीप हवा के साथ २ कहीं मामूली बूंदा बांदी वा बादल चाल हो। भारत के दक्षिण व पश्चिम प्रदेशों में आकाश साफ रहे।

वैशाख कृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः २७

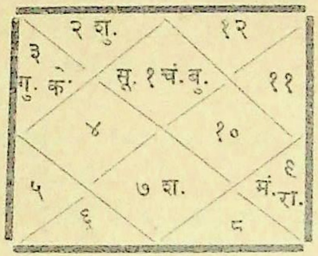

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	.	के.
०	८	०	२	१	६	८	२
१७	१२	९	२	१०	१२	२५	२५
५४	४२	४९	१५	३५	३०	७	७
४	५५	४८	३०	५८	३१	१६	१६
५८	१३	[illegible]	११	७३	४	३	३
४	४६	४१	३३	१३	३१	११	११
क्रांतिः	मा	मा	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	मू.	अ.	मृ.	रो	स्वा	पू.षा	पु.
२	४	३	३	१	२	४	२

शकुन वि. वैशाख वदी आठ दिना बिजली गर्जन होय। संवत् अच्छा जानिये संग्रय करो न कोय।। वैशाख वदी एकादशी प्रबल मेघ जो जान। धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत मान।।

संवत् २०११ शकः १८७६ वैशाख शुक्लपक्षः ३

३मई से १७ मई १९५४ ई. उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्त्तुः

दि.मा.		ति.वा.		घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि. वैशाख	अं. मई	मु. रमजान	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य य स्पष्टः उदयकाले			
३३	८	१	चं.	४४	३४	भ.	२३	५४	आ.	५३	४१ १३	कि.	१७	३१	२१	३	२९	वृ. ३७।५६	५	४३	७	०	०	१८	५२	२
३३	१२	२	मं.	३९	७	कृ.	२०	१३	शो.	४६	८	वा.	११	५०	२२	४	३०	वृष.	५	४२	७	०	०	१९	५०	०
३३	१५	३	बु.	३४	१०	रो.	१७	३	अ.	३६	२३	तै.	६	३८	२३	५	१	मि. ४५।५१	५	४२	७	१	०	२०	४७	५६
३३	१९	४	गु.	३०	७	मृ.	१४	३९	सु.	३३	३७	व.	२	८	२४	६	२	मथुन	५	४१	७	२	०	२१	४५	५१
३३	२३	५	शु.	२६	५६	आ.	१३	३	धृ.	२८	२६	वा.	२६	५६	२५	७	३	कर्के ५७।३६	५	४०	७	२	०	२२	४३	४६
३३	२७	६	श.	२४	४९	पुन.	१२	३१	शू.	२४	६	तै.	२४	४६	२६	८	४	कर्के	५	३९	७	३	०	२३	४१	३८
३३	३०	७	र.	२३	५७	पु.	१३	१०	गं.	२०	५१	व.	२३	५७	२७	९	५	कर्के	५	३८	७	३	०	२४	३९	२८
३३	३४	८	चं.	२४	२०	श्ले.	१५	९	वृ.	१८	३४	ब.	२४	२०	२८	१०	६	सिंहे १५।१६	५	३७	७	४	०	२५	३७	१६
३३	३८	९	मं.	२६	१०	म.	१८	२०	ध्रु.	१७	१८	कौ.	२६	१०	२९	११	७	सिंहे	५	३६	७	५	०	२६	३५	३
३३	४१	१०	बु.	२८	५७	पू.फा	२२	३८	व्या	१६	५९	ग.	२८	५७	३०	१२	८	क. ३८।५८	५	३६	७	५	०	२७	३२	४७
३३	४५	११	गु.	३२	५४	उ.फा	२७	५८	ह.	१७	३१	व.	०	५५	३१	१३	९	कन्यायाम्	५	३५	७	६	०	२८	३०	३०
३३	४९	१२	शु.	३७	३३	ह.	३४	४	व.	१८	३७	ब.	५	१३	ज्ये १	१४	१०	कन्यायाम्	५	३४	७	७	०	२९	२८	१०
३३	५२	१३	श.	४२	३६	चि.	४०	३४	सि.	२०	१२	कौ.	१०	६	२	१५	११	तुला. ७।१९	५	३४	७	८	१	०	२५	४६
३३	५६	१४	र.	४७	४४	स्वा.	४७	८	व्य.	२१	५२	ग.	१५	११	३	१६	१२	तुलायाम्	५	३३	७	८	१	१	२३	२८
३४	०	१५	चं.	५२	२३	वि.	५३	१७	व.	२३	१८	वि.	२०	३	४	१७	१३	वृ. ३६।४५	५	३२	७	९	१	२	२१	४

ग्रहदर्शन—मं. अर्द्धरात्रि के पहिले पूर्व में दीखेगा। बुध अस्त है। गु. शु. सूर्यास्तबाद पश्चिम में शनि सूर्यास्तबाद पूर्व में दीखेगा।

भरि. बुधः ४१।४८

पू. पा. भौमः ५१।१६ चन्द्रदर्शनम्,

रमजान मु.१, रोजा प्रारम्भ अक्षय ३, श्री परशुराम ज., मृ.।।ऽ ‡

भ. २।८ उ. ३०।७ या. श्री भक्तसूरदास ज.,

मृगे. ४ गुरुः २८।१७

[‡ गु.।।।।।। दिवा, ल ५ रात्रौ १०, ११, अत्या. अनि. ग्र.दा..

भ. २३।५७ उ. ५४।८ या. कृत्ति. बुधः ५१।५९, श्री गङ्गा ७ गङ्गा- *

[* स्नाने पूजने च महत्फलम्,

कृत्ति. रविः ५।१० वृषे बुधः २३।६

मृगे शुक्रः २७।२८

भ. ०।५५ उ. ३२।५४ या. श्री मोहिनी ११ व्र.,

सं. वृषेऽर्कः ३३।६ मु. ३० पुण्यं १७।६ उ.

रोहि. बुधः ५९।५० शनिप्रदोष व्र.,

भ. ४७।४४ उ. श्री नृसिंहजयन्ती,

भ. २०।३ या. मिथुने शुक्रः५७।३१ श्रीयमाय जलकुम्भदानम्, सत्यव्र.

वैशाख शुक्ला ८ चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	८	०	२	१	६	८	२
२५	१४	२६	३	२०	११	२४	२४
३७	१४	५८	५०	२०	५४	४१	४१
१६	१४	४४	२३	४८	४३	४९	४९
५७	९	[illegible]	१२	७३	४	३	३
४८	६	१३	३	०	२३	११	११
गति	मा	मा	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	
भ.	[illegible]	कृ.	मृ.	रो	स्वा	[illegible]	[illegible]
४	१	१	४	४	२	४	२

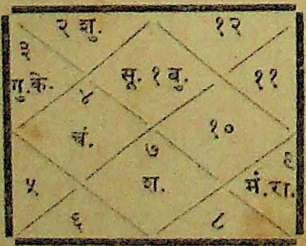

इस पक्ष में रूई पहिले तेज होकर पीछे मन्दी होवे—चांदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी—तेल अलसी गेहूँ आदि अनाज तथा घी श्वेत वस्तुओं के भाव में तेजी होवे—ति. ९ से अफीम लोहा मैशीनरी की वस्तुओं के भाव में तेजी, प्रजा में कहीं उत्पात परस्पर क्लेश लड़ाई की सूरत पैदा हो ति. ११ से गेहूँ चना ज्वार के भाव में कुछ मन्दे का असर होवे।

ति. ३ से ५ तक और ११ से १५ तक कहीं पहाड़ी इलाकों में बूंदा बांदी हो, और जगह मौसम खुश्क रहे।

वैशाख शुक्ला १५ चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१	८	१	२	१	६	८	२
२	१४	१२	५	२८	११	२४	२४
२१	५९	६	१६	५०	२५	१९	१९
४	१७	५४	२२	२४	७	३५	३५
५७	४	[illegible]	१२	७२	४	३	३
३६	२६	३४	२७	३९	७	११	११
गति	मा	मा	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	[illegible]	रो	मृ.	मृ.	स्वा	[illegible]	[illegible]
२	[illegible]	१	४	२	२	४	२

श. वि.—वैशाख सुदी सातदिनाबाजे पूर्वबाय।
बादल हो बिजली दिख और बूंद पड़ जाय।

धान्य इकट्ठे तुम करो सुन लो ध्यान लगाय।
भादों मास में लाभ हो इसमें संशय नाय।

शुक्लपक्ष वैशाख को तिथि दशमी दिन देख,
बादल हो श्रावण विषै जल नहिं पड़े विशेष

संवत् २०११ शकः १८७६ ज्येष्ठ कृष्णपक्षः ४									हि.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	नित्यसूर्यस्पष्टः	(१८ मई से १ जून १९५४ ई०) उत्तरायणगो. ग्रीष्मर्तुः
हि. मा.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	कोष्ठ	पृष्ठ	रेखा	संचारः	रेल्व	रेल्वे	उदयकाले	म. सूर्यास्तबाद पूर्व में–शुक्रगुरु पश्चिम में दीखेंगे। बुध ति. ३ को पश्चिम में उदय होगा श. सूर्यास्तबाद पूर्व में देखें।
३४ ३	१ मं.	५६ १५	अनु.	५८ ४०	ध.	२४ १८	वा.	२४ १९	५	१८	१४	वृश्चिके	५ ३१	७ १०	१ ३ १८ ३९	अनु.।।।।ऽ सू.ऽनृ. ४३ घ. उ. ऽऽ।। दिवा ल. ५ रात्रौ ११, १२ अनि. *
३४ ७	२ बु.	५९ २	ज्ये.	६० ००	सि.	२४ ३२	त.	२७ ३८	६	१९	१५	वृश्चिके	५ ३१	७ १०	१ ४ १६ ११	[* प्र. दा.,
३४ ११	३ गु.	६० ००	ज्ये.	२ ५८	शि.	२३ ५५	व.	३० २	७	२०	१६	ध. २।५८	५ ३०	७ ११	१ ५ १३ ४२	भ. ३०।२ उ. पश्चिमोदयो बुधः १।४, सा. मिथुने भानुः ५६।४०
३४ १४	३ शु.	० ४३	मू.	६ १०	सा.	२२ १९	वि.	० ४३	८	२१	१७	धनुषि	५ ३०	७ १२	१ ६ ११ ११	भ. ०।४३ या. श्रीगणेश ४ व्र.,
३४ १७	४ श.	१ २	पू. षा.	८ ५	शु.	१९ ४३	बा.	१ २	९	२२	१८	म. २३।१५	५ २९	७ १३	१ ७ ८ ३८	मृगे बुधः ३७।५९
३४ १९	५ र.	० ५	उ. षा.	८ ४५	शु.	१६ ६	तै.	० ५	१०	२३	१९	मकरे	५ २९	७ १३	१ ८ ६ ४	भ. ५७।५५ उ. वक्रीभौम. १२।० आर्द्रा शुक्रः २ ८।४९, आर्द्रा १ +
अवम	६ र.	५७ ५०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	[+ गुरुः ३५।६
३४ २१	७ चं.	५४ ४०	श्र.	८ १४	ब्र.	११ ३३	वि.	२६ १७	११	२४	२०	कु. ३७।२७	५ २९	७ १४	१ ९ ३ २९	भ. २६।१७ या. रोहि. रविः ५९।६ पञ्चक प्रा. ३७।२७,
३४ २२	८ मं.	५० ३३	ध.	६ ४१	ऐं.	६ ९	बा.	२२ ३६	१२	२५	२१	कुम्भे	५ २९	७ १५	१ १० ० ५२	
३४ २४	९ बु.	४५ ३४	श.	४ १६	वै.	५३ २०	तै.	१८ ३	१३	२६	२२	मी ४६।५४	५ २८	७ १५	१ १० ५८ १३	मिथुने बुधः २१।१३
३४ २५	१० गु.	३९ ५९	पू.भा.	५७ २४	प्री.	४६ १०	ग.	१२ ४६	१४	२७	२३	मीने	५ २८	७ १६	१ ११ ५५ ३४	भ. १२।४६ उ. ३९।५९ या. उ. भा., ऽबु.।।।।।ऽ।। ल. ११,
३४ २७	११ शु.	३४ ३	रे.	५३ २४	आ.	३८ ४१	व.	७ १	१५	२८	२४	मे. ५३।२४	५ २८	७ १६	१ १२ ५२ ५३	पञ्चक स. ५३।२४, अपरा (भद्रकाली) ११ व्र. स., ×
३४ २९	१२ श.	२७ ५४	अ.	४९ १४	सौ.	३१ ४	कौ.	० ५८	१६	२९	२५	मेषे	५ २८	७ १६	१ १३ ५० ११	शनिप्रदोषव्रतम्, [× रे.।।।।ऽ नृ. ऽऽ।। ल. ११,
३४ ३१	१३ र.	२१ ४२	भ.	४५ ९	शो.	२३ २७	व.	२१ ४२	१७	३०	२६	.५९।१२	५ २८	७ १६	१ १४ ४७ २८	भ. २१।४२ उ. ४८।४४ या, आर्द्रायां बुधः ३२।१७,
३४ ३२	१४ चं.	१५ ४६	कृ.	४१ २२	अ.	१७ ५८	श.	१५ ४६	१८	३१	२७	वृषे	५ २८	७ १७	१ १५ ४४ ४४	
३४ ३४	३० मं.	१० ११	रो.	३८ ५	सु.	८ ५१	ना.	१० ११	१९	१	२८	वृषे	५ २८	७ १७	१ १६ ४१ ५८	जून ६ ता. ३०, श्रीवटसावित्री व्रतम्,

ज्येष्ठ कृ० ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	८	१	२	२	६	८	२
१०	१५	२७	६	८	१०	२३	२३
०	१०	३९	५८	२९	५३	५४	५४
५२	२९	४६	२०	५१	६४	९	९
५७	१	[illegible]	१२	७२	३	३	३
२३	४	२९	५८	१६	४१	११	११
मार्गी	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो.	पू.फा.	मृ.	आर्द्रा	आर्द्रा	स्वा.	पू.फा.	पुन.
१	१	२	१	१	२	४	२

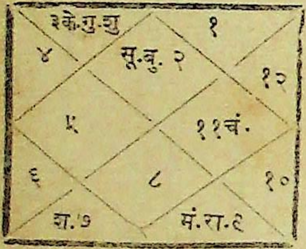

इस पक्ष में प्रजा में हैजे आदि से नुकसान, रूई कपास सूत्र वस्त्र के भाव में काफी मन्दी हो अलसी में २ टका की घटा बढ़ी होवे ति. ३ से व्यापारिक क्षेत्र में भारी उथल-पुथल होगी। पहिले जो वस्तु मन्दी चलती होवे वह यहाँ तेज और जो वस्तु तेज चलती होवे वह यहाँ मन्दी होगी। घृत तेल बिनौले सरसों तथा चावलों के भाव में प्रायः तेजी रहेगी। ति. ६ से अनाज में तेजी, ति. १० से सुवर्ण चाँदी में मन्दे का रुख हो।

ज्येष्ठ कृष्ण ३० भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ५७

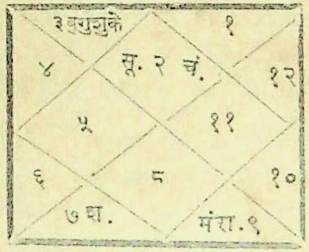

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	८	२	२	२	६	८	२
१६	१४	८	८	१६	१०	२३	२३
४१	४१	४९	२९	५४	२९	३१	३१
५८	३६	१०	४८	३८	५९	५४	५४
५७	६	८७	१३	७१	३	३	३
१४	२७	२७	९	५९	१२	११	११
मार्गी	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो	पू.फा.	आर्द्रा	आर्द्रा	आर्द्रा	स्वा.	पू.फा.	पुन.
३	१	१	१	४	२	४	२

ति. १ से ३ तक आन्धी तूफान वृक्षों को हानि, ति. ८ से १४ तक कहीं २ मामूली वर्षा हो।

घ. वि.–ज्येष्ठ वदी जो पंचमी वाजे दक्षिण वाय। घृत, तैल, तिल, लाभ दे आगा जाके माय। ज्येष्ठ वदी मावस दिना मेघघटा हो जाय। अनावृष्टि दुर्भिक्ष हो ऐसा योग बताय।

संवत् २०११ शकः १८७६ ज्येष्ठ शुक्लपक्षः ५																हि.	अं.	.	चन्द्र	सू. उ.		सू. अ.		नत्यसयस्पष्टः			
द. मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		[illegible]	[illegible]	सव्वाल	संचारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
३४	३६	१	बु.	५	११	मृ.	३५	२६	धृ.	२/५६	१३/१५	व.	५	११	२०	२	२९	मि. ६।४५	५	२८	७	१७	१	१७	३९	१०
३४	३७	२	गु.	०	५९	आ.	३३	४०	गं.	५०	५९	कौ.	०	५९	२१	३	१	मिथुने	५	२८	७	१८	१	१८	३६	२०
अवम		३	गु.	५६	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	३९	४	शु.	५५	३०	पुन.	३२	५४	वृ.	४६	३४	व.	२६	३६	२२	४	२	क.१८।७	५	२७	७	१९	१	१९	३३	२९
३४	४०	५	श.	५४	३१	पु.	३३	१८	ध्रु.	४३	६	ब.	२५	००	२३	५	३	कर्के	५	२७	७	१९	१	२०	३०	३८
३४	४२	६	र.	५४	४६	श्ले.	३४	५६	व्या.	४०	३९	कौ.	२४	३८	२४	६	४	सि ३४।५६	५	२७	७	१९	१	२१	२७	४६
३४	४३	७	चं.	५६	२५	म.	३७	४८	ह.	३९	११	ग.	२५	३५	२५	७	५	सिंहे	५	२७	७	२०	१	२२	२४	५२
३४	४५	८	भौ.	५६	७	पू.	४१	४९	व.	३८	४२	वि.	२७	४६	२६	८	६	क.५८।६	५	२७	७	२१	१	२३	२१	५८
३४	४६	९	बु.	६०	००	उ.फा	४६	५९	सि.	३९	७	बा.	३१	००	२७	९	७	कन्यायाम्	५	२७	७	२१	१	२४	१९	३
३४	४८	९	गु.	२	५४	ह.	५२	५४	व्य.	४०	६	कौ.	२	५४	२८	१०	८	कन्यायाम्	५	२६	७	२२	१	२५	१६	७
३४	४९	१०	शु.	७	२८	चि.	५९	२२	व.	४१	३९	ग.	७	२८	२९	११	९	तु. २६।८	५	२६	७	२२	१	२६	१३	९
३४	५१	११	श.	१२	२५	स्वा.	६०	००	प.	४३	२२	वि.	१२	२५	३०	१२	१०	तुलायाम्	५	२६	७	२२	१	२७	१०	१०
३४	५२	१२	र.	१७	३०	स्वा.	५	५६	शि.	४४	५२	बा.	१७	३०	३१	१३	११	वृ. ५५।३६	५	२६	७	२३	१	२८	७	९
३४	५४	१३	चं.	२२	६	वि.	१२	९	सि.	४५	५९	तै.	२२	६	आ	१४	१२	वृश्चिक	५	२६	७	२४	१	२९	४	७
३४	५५	१४	भौ.	२५	५९	अनु.	१७	४०	सा.	४६	२३	व.	२५	५९	२	१५	१३	वृश्चिक	५	२६	७	२४	२	०	१	८
३४	५७	१५	बु.	२८	४६	ज्ये.	२२	१४	शु.	४५	५५	व.	२८	४६	३	१६	१४	वृ. २२।१४	५	२६	७	२४	२	०	५८	६

(२ जूनसे १६ जून १९५४ ई.) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्त बाद पूर्व में बु. गु. शु. पश्चिम में दीखेंगे, शनि सूर्यास्तबाद पूर्व में दिखाई देगा।

चन्द्रदर्शनम्,

पुन. शुक्रः ३४।३८ सव्वाल मु. १० ईदरोजा खतम,

भ. २६।३६ उ. ५५।३० या., पू. षा. ३ राहुः पुन. १ केतुः ४४।१८,

‡ कारण) हृ. ।ऽ।।ऽ रो ४६ उ. ऽ।। ल. १२ चं. दा.

मघा ।।।।।ऽ नृ. ऽऽ।। ल. ११, चं. दा., * नृ. ऽऽ।। ल. गोधूलि,

भ. ५६।२५ उ. मृगे रविः ५७।५६ आर्द्रायां २गुरुः ४८।७, मघा ।।।।।ऽ*

भ. २७।४६ या. उ. फा. ।।।।।ऽ चौ. ।ऽ।। ल. ११ चं. दा.

व. मूलेभौमः ११।४५, उ. फा. ।।।।।ऽ चौ. ।ऽ।। दिवा ल. ५ वा गोधलि,

पुन. बुधः ४१।१७, श्री गङ्गा दशहरा (हस्त व व्यतिपात योग के‡

भ. ३९।५६ उ., कर्के शुक्रः ५६।५९, व. स्वा. १ शनिः ४६।३,

भ. १२।२५. या., निर्जला ११ व्र. स.

प्रदोषव्रतम्;

सं. मिथुनेऽर्कः ५८।५२मु. ३० पुण्यं परदिने १४।५२या. पुष्येशुक्रः ४५।१९

भ. २५।५९ उ. ५७।२२ या. गुरोर्वृद्धत्वारम्भः, सत्यव्रतम्;

मन्वादि;

ज्येष्ठशुक्ला ८ भौम—इष्टम् दिनगणः ६४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.		के.
१	८	२	२	२	६	८	२
२३	१३	१७	१०	२५	१०	२३	२३
२१	३४	२७	२	१७	९	९	९
५८	४५	१८	३९	३२	२८	३९	३९
५७	१२	६४	१३	७१	२	३	३
६	१	३७	२६	४३	४३	११	११
[illegible]	व.	मा	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स्वा	[illegible]	[illegible]
१	१	४	२	२	२	३	१

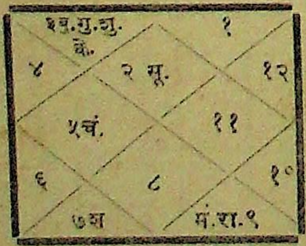

इस पक्ष में किसी पूर्वीय प्रदेश में लड़ाई का खतरा हो, अनाज के भाव में तेजी रहे चाँदी में २।३ टका की और रूई में २०।३० टका की घटा-बढ़ी होकर मन्दी आवे। गुड़ खंड शक्कर तथा सफेद वस्तुओं में भी मन्दी आवे। अलसी में तेजी, ति. ११ से रूई में खासी मन्दी आवे, साथ ही गुड़ खंड शक्कर में तेजी रहे। ति. १४।१५ को रूई सूत सन ऊन और रेशम के भाव में तेजी के हालात बनेंगे।

ति. २ से ७ तक और ति. ११, १२ को कहीं बूंदा-बांदी बादल चाल और वायु का भी जोर रहे।

ज्येष्ठ शुक्ला १५बुध—इष्टम् ०।० दिनगणः २७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	८	२	२	३	६	८	२
०	११	२३	११	४	९	२२	२२
५८	४८	३५	५०	४८	५०	४४	४४
६	१३	५१	५	३४	५१	१२	१२
५६	१४	३२	१३	७१	२	३	३
५८	२५	२६	२९	८	१	११	११
[illegible]	व	मा	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	मृ.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	स्वा	[illegible]	[illegible]
३	४	२	२	१	१	३	१

श० वि०—ज्येष्ठ मास में आर्द्रा से चित्रा तक जोय। नभ में चमके बिजली अथवा बादल होय।
चौमासा बरसे नहीं सारा सूखा जाय। जितना भी यह योग हो उतना जल टपकाय।
ज्येष्ठसुदी सप्तम दिने बिजुरी मेघ निहार। दक्षिण दिशि वायु चले तिल से लाभ अपार॥

संवत् २०११ शकः १८७६ आषाढ़ कृष्णपक्षः ६ (१७ जून से ३० जून १९५४ ई.) उत्त.गो., सा.कर्का. द.अ.वर्षर्तुः

दि. मा.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हिं. आंग्ल	अं. क्रान्ति	मु. मुस्लिम	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्व	नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले
३४ ५८	१ गु.	३० २७	सू.	२५ ४२	शु.	४४ ३६	कौ.	३० २७	४	१७	१५	धनुषि	५ २६	७ २५	२ १ ५५ २
३५ ००	२ शु.	३० ४८	पू.षा.	२७ ५१	व्र.	४२ १२	त.	० ३७	५	१८	१६	मक.४३।१५	५ २६	७ २६	२ २ ५१ ५८
३५ १	३ श.	२६ ५१	उ.षा.	२८ ४७	ऐं.	३८ ४८	व.	० १९	६	१९	१७	मकरे	५ २६	७ २६	२ ३ ४८ ५३
३५ ३	४ र.	२७ ४२	श्र.	२८ २८	वै.	३४ २७	श.	२७ ४२	७	२०	१८	कु.५७।४७	५ २६	७ २६	२ ४ ४५ ४८
३५ ४	५ चं.	२४ ४९	ध.	२७ ६	व.	२९ १३	त.	२४ २९	८	२१	१९	कुम्भे	५ २५	७ २७	२ ५ ४२ ४३
३५ ६	६ मं.	२० २२	श.	२४ ५३	प्री.	२३ १७	व.	२० २२	९	२२	२०	कुम्भे	५ २५	७ २७	२ ६ ३९ ३९
३५ ४	७ बु.	१५ २२	पू.भा	२१ ५०	आ.	१६ ४०	व.	१५ २२	१०	२३	२१	मीने७।३६	५ २६	७ २८	२ ७ ३६ ३४
३५ ३	८ गु.	९ ५०	उ.भा	१८ १५	सौ.	९ ३५	कौ.	९ ५०	११	२४	२२	मीने	५ २७	७ २८	२ ८ ३३ २८
३५ १	९ शु.	३ ५०	रे.	१४ १५	शो.	२/५४ १५/३६	ग.	३ ५०	१२	२५	२३	मे.१४।१५	५ २७	७ २७	२ ९ ३० २२
अवम	१० शु.	५३ ४९	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०
३५ ००	११ श.	५१ २६	अ.	१० ४	सु.	४६ ५७	व.	२४ ३२	१३	२६	२४	मेषे	५ २७	७ २७	२ १० २७ १५
३४ ५८	१२ र.	४५ २५	भ.	५ ५८	ध.	३९ ३०	कौ.	१८ २५	१४	२७	२५	वृ.१९।५९	५ २८	७ २७	२ ११ २४ ६
३४ ५७	१३ चं.	३९ ४८	कृ.	२/५८ ३/३०	शू.	३२ २१	ग.	१२ ३६	१५	२८	२६	वृषे	५ २९	७ २७	२ १२ २० ५७
३४ ५५	१४ मं.	३४ ४०	म.	५५ ४७	.	२५ ३५	व.	७ १४	१६	२९	२७	मि२७।१२	५ २९	७ २७	२ १३ १७ ४९
३४ ५३	३० बु.	३० २५	आ.	५३ ५१	वृ.	१९ २९	च.	२ ३२	१७	३०	२८	मथुने	५ ३०	७ २७	२ १४ १४ ४१

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद पूर्व में और शनि पूर्व से खमध्य को आता दीखेगा ति. १२ से बुध और ति. २ से गुरु पश्चिम म अस्त होंग, शुक्र सूर्यास्त * [* बाद पश्चिम में दीखेगा।

- (ति. २) अस्तो गुरुः ४५।० (गु. अ.)
- (ति. ३) भ. ०।१९ उ. २९।५१ या., श्रीगणेश ४ व्र.,
- (ति. ४) पञ्चक प्रा. ५७।४७;
- (ति. ५) साय. कर्क भानुः २६।३५. दक्षिणायनं, वर्षर्तु प्रारम्भः,
- (ति. ६) भ. २०।२२ उ. ४७।५२ या., आर्द्रायां रविः ०।२१, वक्रीबुधः + [+ ३०।४२, आर्द्रा. ३ रु. ३८।४१
- (ति. ९) भ. ३०।४४ उ. ५७।३९ या., पञ्चकसमाप्तिः १४।१५,
- (ति. ११) आश्ले. शुक्रः २।५९ योगिनी ११ व्र.
- (ति. १२) पश्चिमास्तो बुधः ४।४;
- (ति. १३) भ. ३९।४८ उ. सोमप्रदोष व्र.,
- (ति. १४) भ. ७।१४ या.,
- (ति. ३०) ग्रस्तास्त सूर्यग्रहणम्,

आषाढ़कृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० — दिनगणः ८०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	८	२	२	३	६	८	२
८	९	२५	१३	१४	९	२२	२२
३३	४२	१४	३८	१५	३७	१८	१८
२८	१५	३०	२९	१७	५३	४६	४६
५६	१७	३	१३	७०	१	३	३
५४	५२	४४	३६	४३	१८	११	११
सौरः	व.	व.	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा	मूल	पुन.	आर्द्रा	पुन.	स्वा.	पू.षा.	पुन.
१	३	२	३	४	१	३	१

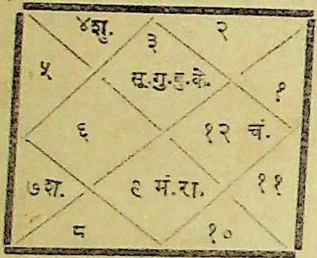

इस पक्ष में घटा-बढ़ी होकर अनाज का भाव तेजी की तरफ ही रहेगा। रुई और शेयरों के भाव भी तेज–सोना चान्दी के व्यापार में मन्दीवाले लाभ उठा लेंगे, मिथुन में गुरु का अस्त है इसलिय सरसों मोंठ और मूँगफली की उत्पत्ति कम हो ति. १२ को रुई में १५।२० टका की मन्दी होवे और रेशम हेसियन भी मन्दी हो चान्दी में कुछ तेजी। संसार में चोरी आदि के उपद्रव अधिक हों कहीं भूकम्प तथा फटने वाले भयंकर पदार्थ से हानि हो।

ति. ५ से ७ तक और ति. ९ से ३० तक वृष्टि के योग हैं, इन दिनों में वर्षा कहीं न कहीं होती ही रहेगी।

आषाढ़कृष्ण ३० बुध इष्टम् ०।० — दिनगणः

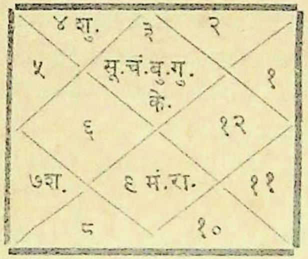

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	८	२	२	३	६	८	२
१४	८	२३	१५	२१	९	२१	२१
१४	१	३६	०	१७	३२	५९	५९
४१	३०	३	१७	५५	१४	४१	४१
५६	१६	२५	१३	७०	०	३	३
५२	२	२८	३८	१४	४२	११	११
सौरः	व.	व.	मा	मा	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा	मू.	पुन.	आर्द्रा	श्ले	स्वा	पू.षा.	पुन.
३	३	२	३	२	१	३	१

शकुन विचार—आषाढ़वदी जो अष्टमी बादल उगे चन्द। वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुख द्वन्द। काला बादल कसबरा चौंलो करे सुकाल। चन्दा ऊगे निर्मला निश्चय पड़े दुकाल। आषाढ़ वदी नौमी बिना बिजली बादल होय। धान्य बेच खेती करो संशय करो न कोय।

संवत् २०११ शकः १८७६ आषाढ़ शुक्लपक्ष ७

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तिबाद पूर्व में और शनि खमध्य में दीखेगा। ति.११ गु और ति.१५से बुध पूर्वमें उदय होंगे शुक्र सूर्यास्तिबाद पश्चिममें दीखेगा

दि. मा.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले	
३४ ५३	१ गु.	२६ ५६	पुन.	५२ ४८	[illegible]	१४ २	ब.	२६ ५६	१८	१	२९	कर्के ३८।१४	५ ३०	७ २७	२ १५ ११ ३३	जुलाई.ता. ३१
३४ ५०	२ शु.	२४ ३९	पु.	५२ ५२	व्या	९ २९	कौ.	२४ ३९	१९	२	३०	कर्के	५ ३१	७ २७	२ १६ ८ २५	चन्द्रदर्शनम् श्री जगदीशरथोत्सवः,
३४ ४९	३ श.	२३ ३१	श्ले.	५४ ५	ह.	५ ४५	ग.	२३ ३१	२०	३	१	सिंहे ५४।५	५ ३१	७ २७	२ १७ ५ १७	भ. ५३।३४ उ. जिल्काद मु. ११ [‡ ध्वजारोपणम्,
३४ ४७	४ र.	२३ ३८	म.	५६ ३९	व.	३ ७	वि.	२३ ३८	२१	४	२	सिंहे	५ ३२	७ २६	२ १८ २ ९	भ. २३।३८ या.
३४ ४६	५ चं.	२५ ८	पू.फा.	६० ००	सि.	१ २८	बा.	२५ ८	२२	५	३	सिंहे	५ ३२	७ २६	२ १८ ५९ १	×निवृत्तिः ५२।४८, सत्यव्र., श्रीगुरुव्यासयोः पूजा, वायुपरीक्षा, ‡
३४ ४४	६ मं.	२७ ४१	पू.फा.	० २७	व्य.	० ४६	तै.	२७ ४१	२३	६	४	क.१६।४१	५ ३२	७ २६	२ १९ ५५ ५३	पुन. रविः ४।२३ व. आर्द्रा. बुधः ३६।१८ मार्गी शनिः ४०।०,
३४ ४३	७ बु.	३१ २६	उ.फा.	५ २३	व.	० ५९	ग.	० २	२४	७	५	कन्यायाम्	५ ३३	७ २६	२ २० ५२ ४५	भ. २१।२६ उ. सिंहे मघा. शुक्रः २८।११ आर्द्रा. ४ गुरुः १८।३६
३४ ४१	८ गु.	३५ ५५	ह.	११ ७	प.	१ ५५	वि.	३ ४०	२५	८	६	तु.४४।१८	५ ३४	७ २६	२ २१ ४९ ३६	भ. ३।४० या.
३४ ४०	९ शु.	४० ५३	चि.	१७ ३०	शि.	३ १८	बा.	८ २४	२६	९	७	तुलायाम्	५ ३४	७ २६	२ २२ ४६ २७	भड्डुली ९,
३४ ३८	१० श.	४५ ५४	स्वा.	२४ २	सि.	५ १	तै.	१३ २०	२७	१०	८	तुलायाम्	५ ३५	७ २६	२ २३ ४३ १९	मन्वादि ‡व्रतनियमाद्यारम्भश्च,
३४ ३६	११ र.	५० ३२	वि.	३० २२	सा.	६ ३४	व.	१८ १३	२८	११	९	वृ.१३।४६	५ ३५	७ २५	२ २४ ४० १२	भ. १८।१३ उ. ५०।३२ या., देवशयनी ११ व्र. चातुर्मास्य‡
३४ ३५	१२ चं.	५४ २७	अ.	३६ ४	शु.	७ ४४	ब.	२२ २९	२९	१२	१०	वृश्चिके	५ ३५	७ २५	२ २५ ३७ ६	उदितो गुरुः ५२।४८, [ग.उ.]
३४ ३३	१३ मं.	५७ १९	ज्ये.	४० ५१	शु.	८ १८	कौ.	२५ ५१	३०	१३	११	ध.४०।५१	५ ३६	७ २५	२ २६ ३४ १	भौमप्रदोषव्रतम्,
३४ ३२	१४ बु.	५९ ५	मू.	४४ ३४	ब्र.	८ १	ग.	२८ १०	३१	१४	१२	धनुषि	५ ३६	७ २५	२ २७ ३० ५६	भ. ५९।५ उ.
३४ ३२	१५ [illegible]	५९ २९	पू.षा.	४७ २२	ऐ.	६ ५२	वि.	२९ १७	३२	१५	१३	धनुषि	५ ३७	७ ३५	२ २८ २७ ५१	भ. २९।१७ या; पूर्वोदयो बुधः २४।२१ ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहणम्, रोबाल्य×

आषाढ शु० ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ९४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	२	२	४	६	८	२
२१	६	१९	१६	०	९	२१	२१
४९	४	१०	४९	३६	३०	३४	३४
३६	३	२९	२५	५५	२	१५	१५
५६	१३	३५	१३	६९	०	३	३
५१	३८	४०	३९	३६	४	११	११
क्रान्ति	व. उ.	व. अ.	मा अ.	मा उ.	मा उ.	व. अ.	व. अ.
पुन.	मू.	आर्द्रा	आर्द्रा	म.	स्वा	पू.षा.	पुन.
१	२	४	४	१	१	३	१

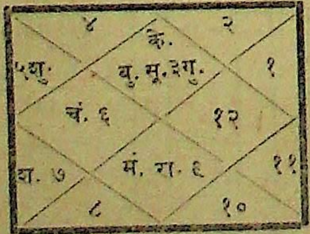

इस पक्ष में चावल चना तिल उड़द और अनाज के भाव में तेजी हो सरसों तोरिया अलसी का रुख मन्दा, यहां ति. ७ के बाद तिल हींग लाल मिर्च सरसों को खरीदने से २ मास में लाभ होगा। ति. ११ से सुवर्ण के भाव में तेजी तथा रुई के भाव में काफी घटा-बढ़ी चलेगी—घटाबढ़ी होकर रुई में तेजी। व्यापारी सावधान रहें। ति. १३ से पहिले जो वस्तु मन्दी चली हो उसे खरीदने से शीघ्र लाभ होगा। सीमाप्रान्त में कई जगह संघर्ष होने का योग है।

आषाढ़शुक्ला १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः १०१

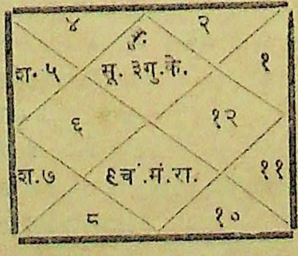

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	२	२	४	६	८	२
२८	४	१६	१८	८	९	२१	२१
२७	४२	१२	२४	४१	३३	११	११
५१	५४	४८	१०	२७	२२	५८	५८
५६	९	१२	१३	६८	०	३	३
५५	३७	१३	२८	५५	४७	११	११
क्रान्ति	व. उ.	व. अ.	मा उ.	मा उ.	मा उ.	व. अ.	व. अ.
पुन.	मू.	आर्द्रा	आर्द्रा	म.	स्वा	पू.षा.	पुन.
३	२	३	४	३	१	३	१

ति. १ तथा ५ से १५ तक भारत में खण्ड वृष्टि के योग हैं। वर्षा के साथ हवा का जोर भी रहेगा।

शकुन ववार---आषाढ़ सुदी नौमी दिना ना बादलना बीज। हलफाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥

संवत् २०११ शकः १८७६ श्रावण कृष्णपक्षः ८ (१६ जुलाई से २९ जुलाई १९५४ ई.) द. उ. गो. वर्षतुः

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद पूर्व में, शुक्र पश्चिम में और शनिखमध्य में दीखेगा। बु. गु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे।

दि. मा.		ति. वा.		घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हिं. श्रा.	अं. जुला.	मु. जिल्का	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
३४	२९	१	शु.	५८	३६	उ.षा	४८	९	वै.	४	३९	श.	२९	२	१	१६	१४	स. २।३४	५	३८	७	२५	२	२९	२४	४७	सं. कर्कोऽर्कः ३७।८ मु. ४५ पुण्यं ७।८ उप.,
३४	२७	२	श.	५६	३२	श्र.	४८	९	वि.	१/५८	२९/५७	तै.	२७	३४	२	१७	१५	मकरे	५	३८	७	२५	३	०	२१	४४	मार्गीबुधः २८।१८
३४	२६	३	र.	५३	२१	ध.	४६	५८	आ.	५२	१४	व.	२४	५६	३	१८	१६	कुं. १८।३३	५	३८	७	२४	३	१	१८	४२	भ. २४।५६ उ. ५३।२१ या., पञ्चक प्रा. १८।३३
३४	२४	४	चं.	४९	१५	श.	४४	५७	सौ.	४६	२६	व.	२१	१८	४	१९	१७	कुम्भे	५	३९	७	२४	३	२	१५	४१	पू. फा. शुक्रः ३।२४
३४	२२	५	मं.	४४	१९	पू.भा	४२	२	शो.	३९	५७	कौ.	१६	४७	५	२०	१८	मी २७।४६	५	३९	७	२४	३	३	१२	४०	पुष्ये रविः ७।४५
३४	२१	६	बु.	३८	४६	उ.भा	३८	३४	अ.	३२	५६	ग.	११	३२	६	२१	१९	मीने	५	४०	७	२३	३	४	९	३९	भ. ३८।४६ उ.
३४	१९	७	गु.	३२	४९	रे.	३४	३५	सु.	२५	३३	वि.	५	४७	७	२२	२०	मे. ३४।३५	५	४०	७	२३	३	५	६	३७	भ. ५।४७ या. पुन. १ गुरुः ८।१, पञ्चक स. ३४।३५,
३४	१७	८	शु.	२६	३९	अ.	३०	२७	धृ.	१७	५९	कौ.	२६	३९	८	२३	२१	मेषे	५	४१	७	२२	३	६	३	३७	सा. सिंहे भानुः ४।२०,
३४	१४	९	श.	२०	२७	भ.	२६	१६	शू.	१०	१७	ग.	२०	२७	९	२४	२२	वृ. ४०।१६	५	४१	७	२२	३	७	०	३८	भ. ४७।२४ उ.
३४	११	१०	र.	१४	२१	कृ.	२२	१६	गं.	२/५५	४४/२६	वि.	१४	२१	१०	२५	२३	वृष	५	४२	७	२१	३	७	५७	४०	भ. १४।२१ या.
३४	७	११	चं.	८	४५	रो.	१८	४१	ध्रु.	४८	३३	बा.	८	४५	११	२६	२४	मि ४७।११	५	४२	७	२१	३	८	५४	४३	पुन० बुधः २५।१७, कामिका ११ व्र. स.
३४	३	१२	मं.	३	३६	मृ.	१५	४२	व्या	४२	१५	तै.	३	३६	१२	२७	२५	मिथुने	५	४३	७	२०	३	९	५१	४७	भ. ५९।१७ उ. भौम प्रदोषव्रतम्,
अवम		१३	मं.	५५	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३४	००	१४	बु.	५५	४६	आ.	१३	३२	ह.	३६	३७	वि.	२७	३१	१३	२८	२६	क. ५७।३४	५	४३	७	१९	३	१०	४८	५३	भ. २७।३१ या. मार्गी भौमः ४१।२०
३३	५७	३०	गु.	५३	२३	पु.	१२	१४	व.	३१	५०	च.	२४	३२	१४	२९	२७	कर्के	५	४४	७	१९	३	११	४५	५९	हरियाली ३०,

श्रावणकृष्णा ८ शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगणः १०९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	२	२	४	६	८	२
६	३	१७	२०	१७	८	२०	२०
३	५०	२९	११	४९	४३	४६	४६
३७	१२	७	२२	११	३	३२	३२
५७	४	३०	१३	६८	१	३	३
१०	१४	३३	२०	७	३३	११	११
	व.	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य	मू.	आर्द्रा	पुन.	पू.फा.	स्वा	पू.षा.	पुन.
१	२	४	१	२	१	३	१

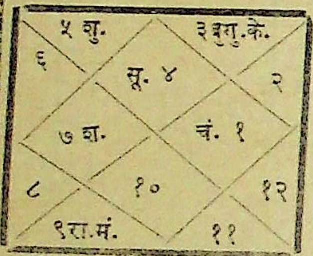

इस पक्ष में गेहूँ चना जौ आदि अनाजों के भाव में तेजी। रुई म पहले मन्दी होकर पीछे तेजी आवे। चाँदी के सौदे में घटा-बढ़ी होकर तेजी, तेल अलसी एरंड गुड़ बिनौला और मूँगफली के भाव में मन्दी हो। ति. १३ को रुई बचे और तेल मद्य, चाँदी खरीदे तो जल्दी ही लाभ होवे। यहाँ कम्युनिष्टों की हलचलें विशेष बढ़ेंगी—गुप्त योजनायें भी तैयार होंगी। प्रजा म पित्तरक्त प्रकोप से कष्ट होगा।

ति. ३ से ५ तक और ति. ८ से १४ तक विचित्र वृष्टि के योग हैं, कहीं वर्षा से हानि भी हो, और कहीं वर्षा के अभाव से सूखा भी रहे।

श्रावणकृष्णा ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ११५

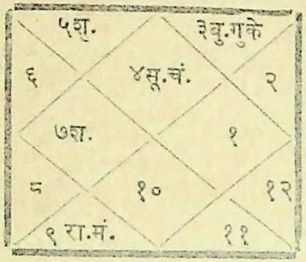

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	२	२	४	६	८	२
११	३	२२	२१	२४	९	२०	२०
४५	३९	३२	३०	३५	५४	२७	२७
५९	४६	२४	५३	२३	१४	२६	२६
५७	००	६३	१३	६७	२	३	३
६	७	२१	८	२१	५	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य	मू.	पुन.	पुन.	पू.फा.	स्वा	पू.षा.	पुन.
३	२	१	१	४	१	३	१

श० वि०—श्रावण पहली पंचमी, वर्षे करे निहाल। पवन चलै तो अति बुरी पड़े हलाहल काल। श्रावणवदी एकादशी, जो नभ वर्षा होय, अच्छा संवत् होयगा, संशय करो न कोय॥

संवत् २०११ शकः १८७६ श्रावणशुक्लपक्ष ९ (३० जुलाई से १४ अगस्त १९५४ ई०) द० उ० गो. वर्षर्तुः

दि. मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि. श्रावण	अं. अगस्त	मु. जिल्हेज	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्य स्पष्टः उदय काले				ग्रहदर्शन-मं. सूर्यास्तबाद पूर्व में शु. पश्चिम में और श. ख मध्य में दीखेगा ति. १० से बुध पूर्व में अस्त होगा—गुरु सूर्योदय से पूर्व—पूर्व में दीखेगा।
३३	५३	१	शु.	५२	१०	पु.	१२	३	सि.	२७	५६	किं.	२२	४६	१५	३०	२८	कर्के	५	४५	७	१८	३	१२	४३	८	उ.फा. शुक्रः ५।१।२३, नक्तव्रतारम्भः, [× भौ. दो.
३३	५०	२	श.	५२	१४	श्ले.	१३	३	व्य.	२५	२	बा.	२२	२	१६	३१	२९	सिंहे १३।३	५	४५	७	१८	३	१३	४०	१७	स्वा. २ शनिः ३३।२३, चन्द्रदर्शनम्, मघा।ऽ।।।ऽ।।ल. २ अत्यावश्यके ×
३३	४७	३	र.	५३	३७	म.	१५	१७	व.	२३	७	तै.	२२	५५	१७	१अ	१	सिंहे	५	४६	७	१८	३	१४	३७	२८	अगस्त ८ ता. ३१ जिल्हेज मु. १२, सन्धारा ३, लोक मान्य भगवान् =
३३	४३	४	चं.	५६	७	पू.फा	१८	४८	प.	२२	१६	व.	२४	५२	१८	२	२	क. ३४।५८	५	४७	७	१६	३	१५	३४	३८	भ. २४।५२ उ. ५६।७ या. कन्या. शुक्रः ५।१।२
३३	४०	५	मं.	५९	४३	उ.फा	२३	२७	शि.	२२	१६	व.	२७	५७	१९	३	३	कन्यायाम्	५	४८	७	१५	३	१६	३१	५१	आश्लेषा: रवि. ८।३२ कर्के बुधः ३५।४९, ह.।।।।ऽरो.ऽऽ।। ल. गोधूलि,
३३	३६	६	बु.	६०	००	ह.	२८	५९	सि.	२३	२	कौ.	३१	५५	२०	४	४	कन्यायाम्	५	४९	७	१४	३	१७	२९	५	
३३	३३	६	गु.	४	१०	चि.	३५	१४	सा.	२४	२०	तै.	४	१०	२१	५	५	तुला० २१७	५	४९	७	१३	३	१८	२६	२०	पुष्ये बुधः ४१।१ [=श्रीतिलक जयन्ती
३३	३०	७	शु.	९	१०	स्वा.	४१	४५	शु.	२५	५८	ब.	९	१०	२२	६	६	तुलायाम्	५	५०	७	१३	३	१९	२३	३७	भ. ९।१० उ. ४१।४१ या. पुन. २ गुरुः २५।५२, पू. षा. २ राहुः आर्द्रा.*
३३	२७	८	श.	१४	१३	वि.	४८	९	शु.	२७	३२	ब.	१४	१३	२३	७	७	वृ. ३१।३३	५	५१	७	१२	३	२०	२०	५४	मेला श्री नयनादेवी व चिन्तपूर्णी,
३३	२३	९	र.	१८	५६	अ.	५३	५६	ब्र.	२८	४५	कौ.	१८	५६	२४	८	८	वृश्चिके	५	५१	७	१२	३	२१	१८	१४	[* ४ केतुः ३७।४२ गोस्वा. श्री तुलसीदासजयन्ती
३३	१९	१०	चं.	२२	५७	ज्ये.	५९	२	ऐ.	२९	२९	ग.	२२	५७	२५	९	९	धनु ५९।२	५	५१	७	१०	३	२२	१५	३६	भ. ५४।२५ उ. पूर्वास्तो बुधः २५।११, हज्ज
३३	१५	११	मं.	२५	५४	मू.	६०	००	वै.	२९	१६	वि.	२५	५४	२६	१०	१०	धनुषि	५	५२	७	९	३	२३	१३	०	भ. २५।५४ या. पवित्रा ११ व्र., स. ईदज्जुहा,
३३	१२	१२	बु.	२७	५०	मू.	२	५५	वि.	२८	१५	बा.	२७	५०	२७	११	११	धनुषि	५	५३	७	८	३	२४	१०	२४	हस्ते शुक्रः ५७।१४, प्रदोष व्र., विष्णोः पवित्रारोपणम्
३३	८	१३	गु.	२८	२१	पू.षा.	५	४१	प्री.	२६	१३	तै.	२८	२१	२८	१२	१२	मक. २१।३	५	५४	७	७	३	२५	७	४६	आश्ले. बुधः ४५।४९, उ. षा. ऽमं.।।।ऽगु.।ऽ।।। लग्नं चिन्त्यम्,
३३	५	१४	शु.	२७	३५	उ.षा.	७	९	आ.	२३	८	व.	२७	३५	२९	१३	१३	मकरे	५	५४	७	७	३	२६	५	१५	भ. २७।३५ उ. ५६।३६ या. [‡ मेला श्री अमरनाथ काश्मीर,
३३	१	१५	श.	२५	३८	श्र.	७	२३	सौ.	१९	५	ब.	२५	३८	३०	१४	१४	कु. ३६।५६	५	५५	७	६	३	२७	२	४२	रक्षाबन्धनम् (रखड़ी), ऋषितर्पणम्, पञ्चक प्रा. ३६।५६, सत्य व्र.‡

श्रावणशुक्ला ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः १२४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	३	२	५	६	८	२
२०	४	५	२३	४	१०	१९	१९
२०	१४	३७	२७	३४	१७	५८	५८
२४	[illegible]	८	१७	५२	१६	४९	४९
५७	६	१	१२	६६	२	३	३
१७	४३	५१	४६	१	५६	११	११
मार्गी	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले.	मू.	पु.	पुन	उ.फा.	स्वा.	पू.षा.	आ.
२	२	१	२	३	२	२	४

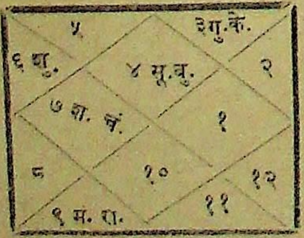

इस पक्ष में रुई अलसी में तेजी, सुवर्ण घृत और तेल में मन्दी हो। गेहूं चावल आदि अनाजों के तथा चारा घास के भाव भी तेजी पर रहें। चांदी में घटा-बढ़ी होकर तेजी होवे। ध्यान रहे कि—प्रायः जो वस्तु श्रावण वदी १२ तक तेजी में रही होवेगी—वोह इस पक्ष में मन्दी और जो वहां मन्दी चली होगी वह यहां तेजी में दीखेगी। ति. ६ से सुवर्ण खंड में मंदी और रुई में २०।३० टका की मन्दी गुड़ में घटा-बढ़ी-सफेद वस्तु सस्ती हों। ति. १० से सुवर्ण गेहूं चावल अलसी में तेजी का जोर खास हो। रुई में घटा-बढ़ी चले—कहीं खड़ी खेतियों को हानि पहुँचे।

श्रावणशुक्ला १५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः १३१

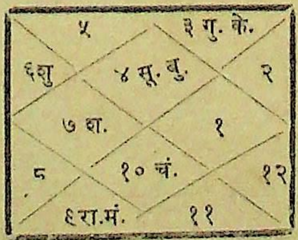

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	३	२	५	६	८	२
२७	५	१९	२४	१२	१०	१९	१९
२	२२	८	५५	१३	४०	३६	३६
४२	४६	३८	२१	४	१५	३३	३३
५७	११	१	१२	६४	३	३	३
२७	५४	२२	२६	५४	२८	११	११
मार्गी	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले.	मू.	आश्ले.	पुन.	ह.	स्वा.	पू.षा.	आ.
४	२	१	२	१	२	२	४

ति. ४ से १० तक और ति. १४, १५ को आकाश में बिजली की गड़गड़ाहट के साथ बहुत जगह वर्षा हो।
श० वि०—श्रावणशुक्ला पंचमी और छठ का जान। कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष पिछान।

संवत् २०११ शकः १८७६ भाद्रपद कृष्णपक्षः १० (१५ अगस्त से २८ अगस्त १९५४ ई.) द.उ.गो.वर्षर्तुः सा.कन्या ÷

५०

दि.मा.	ति.	वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	हि. श्रावण	अं. अगस्त	मु. जिल्हिज	चन्द्र संचारः	सू.उ. रेल्वे	सू.अ. रेल्वे	नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले	ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद पूर्व में शु. श. पश्चिम में दीखेंगे बुध अस्त है। गुरु सूर्योदय से पहिले-पूर्व में दीखेगा। ÷ शरदृतुः
३२ ५७	१	र.	२२ ३४	ध.	६ २९	शो.	१४ ७	कौ.	२२ ३४	३१	१५	१५	कुम्भे	५ ५५	७ ५	३ २८ ० १२	भारते स्वतन्त्रतोत्सवः (मेला आजादी) जयहिन्द सं. ८ प्रा.
३२ ५४	२	चं.	१८ ३४	श.	४ ३६	अ.	८ २७	ग.	१८ ३४	३२	१६	१६	मी०४७।३३	५ ५५	७ ४	३ २८ ५७ ४५	भ. ४६।८ उ.
३२ ५०	३	मं.	१३ ४३	पू.भा.	५८ २६	सु.	५५ ४	वि.	१३ ४३	मा१	१७	१७	मीने.	५ ५६	७ ३	३ २९ ५५ २०	भ. १३।४३ या. सं. मघा. सिंहेऽर्कः ४।५४ मु. ४५ पुण्यं २०।५४ *
३२ ४६	४	बु.	८ १४	रे.	५४ ३६	शू.	४७ ४७	बा.	८ १४	२	१८	१८	मे.५४।३६	५ ५७	७ २	४ ० ५२ ५६	पञ्चक स. ५४।३६ [* या., श्री गणेश ४ व्रतम्,
३२ ४३	५	गु.	२ २१	अ.	५० २९	गं.	४० १०	तै.	२ २१	३	१९	१९	मेषे	५ ५८	७ १	४ १ ५० ३२	भ. ५६।११ उ. सिंहे म. बुधः १९।१६, चन्दनषष्ठी व्रतम्
अवम	६	गु.	५३ ५०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	
३२ ३९	७	शु.	६० ००	भ.	४६ १४	बृ.	३२ २९	वि.	२३ ५	४	२०	२०	मेषे	५ ५८	७ ०	४ २ ४८ १०	भ. २३।५ या.
३२ ३५	८	श.	४३ ५८	कृ.	४२ १२	ध्रु.	२४ ४७	बा.	१६ ५९	५	२१	२१	वृषे.०।१४	५ ५८	६ ५९	४ ३ ४५ ५०	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतम् चन्द्रोदयः घं. ११ मि. ३९
३२ ३२	९	र.	३८ २१	रो.	३८ २९	व्या.	१७ २०	तै.	११ ९	६	२२	२२	वृषे	५ ५९	६ ५८	४ ४ ४३ ३०	पुन० ३ गुरुः ३६।७ गुग्गा ९,
३२ २८	१०	चं.	३३ ११	मृ.	३५ १७	ह.	१० १८	व.	५ ४६	७	२३	२३	मि. ६।५३	५ ५९	६ ५७	४ ५ ४१ १४	भ. ५।४६ उ. ३३।११ या., सा. कन्या. भानुः २७।३४ शरदृतुः प्रा.
३२ २४	११	मं.	२८ ५१	आ.	३२ ५७	व.	५७ ५९	ब.	१ १	८	२४	२४	मिथुने	५ ५९	६ ५६	४ ६ ३८ ५९	चि. शुक्रः २९।५४ अजा ११ व्र. स.
३२ १९	१२	बु.	२५ २०	पुन.	३० २३	व्य.	५२ ५८	तै.	२५ २०	९	२५	२५	क. १६।४७	६ ००	६ ५५	४ ७ ३६ ४५	प्रदोषव्रतम्
३२ १५	१३	गु.	२२ ५५	पु.	३१ ५२	व.	४८ ४७	व.	२२ ५५	१०	२६	२६	कर्के	६ १	६ ५४	४ ८ ३४ ३५	भ. २२।५५ उ. ५२।१८ या., पू. फा. बुधः ५।४७
३२ १०	१४	शु.	२१ ४१	आश्ले	३१ ३६	प.	४५ ३८	श.	२१ ४१	११	२७	२७	सि३१।३६	६ १	६ ५३	४ ९ ३२ २८	
३२ ५	३०	श.	२१ ४३	म.	३३ ३१	शि.	४३ २८	ना.	२१ ४३	१२	२८	२८	सिंहे	६ २	६ ५२	४ १० ३० २२	कुशोत्पाटिनी ३०, ("ॐ हूँ फट्" इतिमन्त्रेण)

भाद्र कृष्णा ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः १३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	४	२	५	६	८	२
३	७	३	२६	१९	११	१९	१९
४५	३	२२	२०	४०	७	१४	१४
५०	१४	१२	४९	४२	६	१७	१७
५७	१६		१२	६३	४	३	३
४०	११	२५	२	१४	४	११	११
क्रा.	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	मू.	म.	पु.	ह.	स्वा	पू.फा.	आर्द्रा
२	३	२	२	३	२	२	४

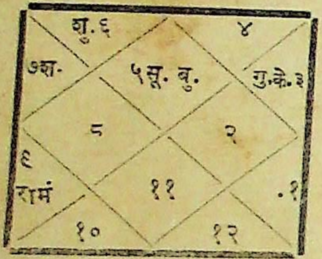

इस पक्ष में पहिले गेहूं आदि के भाव में तेजी रहे फिर मन्दा हो। मूंग उड़द चना चावल रस कस के बाजार तेज रहें, फिर ति. ५ से शेयर तथा तथा गुड़ खण्ड के भाव नरम हों और सूत्र, वस्त्र, रुई, चांदी, सोना में तेजी हो। विदेशी माल में मन्दी हो। प्रजा में ज्वरादि व्याधियों से कष्ट हो। ति. १२ के बाद कहीं फसल में किसी तरह से खराबी पहुंचे। कृषकों को कष्ट-मध्यवर्ग में आर्थिक संकट बढ़ेगा। रेलवे, हवाई जहाज वा समुद्री जहाज में कहीं दुर्घटना के योग हैं। वृष्टि वायु के साथ हो।

ति. १, २ और ति. ६ से ३० तक बादल चाल और वर्षा के योग पाये जाते हैं।

भाद्र कृ० ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः १४५

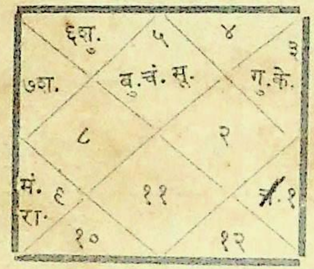

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	४	२	५	६	८	२
१०	९	१६	२७	२६	११	१८	१८
३०	१३	५५	४३	५७	३७	५२	५२
२२	४१	४९	२७	९	४८	१	१
५७	२०		११	६१	४	३	३
५४	२१	४८	३२	४४	३८	११	११
क्रा.	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	मू.	पू.फा.	पु.	चि.	स्वा	पू.फा.	आर्द्रा
४	३	२	३	२	२	२	४

श० वि०—भादो कारी तीजमें उत्तर दिशा प्रदीप।
बादल लख सत्य मानिये मिटे मिटाया दोष॥

संग्रह कर लो अन्न का रुका रहे पटमास।
लाभ होय उस माल में कर लेना विश्वास॥

भादव की दोयज दिना जो ना दीखे चन्द।
धान्य समृद्धि पशु बढ़े प्रजा में हो आनन्द॥

संवत् २०११ शकः १८७६ भाद्रपद शुक्ल पक्षः ११ (२९अगस्त से १२ सितम्बर १९५४ ई.) द. अ. उ. शरदृतुः

दि. मा.		ति. व.		घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि.	अं.	मु.	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३२	००	१	र.	२३	२	पू.फा	३६	४५	सि.	४२	२०	व.	२३	२	१३	२९	२९	कं.५२।५०	६	३	६	५०	४	११	२८	१७
३१	५५	२	चं.	२५	३४	उ.फा	४१	५	सा.	४२	३	कौ.	२५	३४	१४	३०	३०	कन्यायाम्	६	४	६	४९	४	१२	२६	१४
३१	५०	३	मं.	२९	१२	ह.	४६	२६	शु.	४२	३७	ग.	२९	१२	१५	३१	१	कन्यायाम्	६	४	६	४७	४	१३	२४	१२
३१	४६	४	बु.	३३	४०	चि.	५२	२८	शु.	४३	४६	व.	१	२६	१६	सि१	२	तु.१९।२७	६	५	६	४६	४	१४	२२	११
३१	४१	५	गु.	३८	३९	स्वा.	५६	००	ब्र.	४५	१६	व.	६	६	१७	२	३	तुलायाम्	६	६	६	४५	४	१५	२०	११
३१	३६	६	शु.	४३	४७	वि.	६०	००	ऐ.	४६	५०	कौ.	११	१३	१८	३	४	.४८।५०	६	६	६	४४	४	१६	१८	१४
३१	३१	७	श.	४८	३४	वि.	५	२६	वै.	४८	६	ग.	१६	१०	१९	४	५	वृश्चिके	६	७	६	४३	४	१७	१६	२१
३१	२६	८	र.	५२	४०	अ.	११	२५	वि.	४८	५२	वि	२०	३७	२०	५	६	वृश्चिके	६	८	६	४२	४	१८	१४	२६
३१	२२	९	चं.	५५	४२	ज्ये.	१६	४२	प्री.	४८	५३	वा.	२४	११	२१	६	७	ध.१६।४२	६	८	६	४०	४	१९	१२	४०
३१	१७	१०	मं.	५७	४३	.	२०	५०	आ.	४८	१	"	२६	४२	२२	७	८	धनाष	६	८	६	३९	४	२०	१०	५२
३१	१२	११	बु.	५८	२६	पू.षा.	२३	५३	सौ	४६	७	व.	२८	४	२३	८	९	म.३९।१९	६	९	६	३८	४	२१	९	५
३१	७	१२		.५७	४८	उ.षा	२५	३६	शो.	४३	१४	ब.	२८	७	२४	९	१०	मकरे	६	९	६	३८	४	२२	७	२०
३१	२	१३	शु.	५५	५९	श्र.	२६	८	अ.	३९	२१	कौ.	२६	५३	२५	१०	११	कुं.५५।४८	६	१०	६	३५	४	२३	५	३८
३०	५८	१४	श.	५३	३	ध.	२५	२८	सु.	३४	३३	ग.	२४	३१	२६	११	१२	कुम्भे	६	११	६	३४	४	२४	३	५८
३०	५३	१५	र.	४९	७	श.	२३	४६	धृ.	२८	५८	वि.	२१	५	२७	१२	१३	कुम्भे	६	११	६	३२	४	२५	२	२१

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद पूर्व में शु. श. पश्चिम में दीखेंगे, ति. ८ से बुध पश्चिम में उदय होगा गुरु, सूर्योदय से पहिले पूर्व में देखें।

उ. फा. ऽ गु. ।।।।ऽ।। लग्नं चिन्त्यम्, [+ श्रीबाबा गुसाईंयाणां कुबाली*
पू. फा. रविः ५५।४५ तुलायां शुक्रः ५९।५८ चन्द्रदर्शनम्, मेला +
मोहरम मु. १, हरितालिका व्र. ह. ।।।।ऽ नृ. ऽ।। दिवाल. १०
भ. १।२६ उ. ३३।४० या. कलङ्क ४ (पत्थर ४) चन्द्रास्तः घं. ८ ×
उ. फा. बुधः २१।४४, ऋषि ५. [× मि. ३८ सितम्बर ९ ता. ३०
सूर्यषष्ठीव्रतम्। [* उ.फा. ऽ गु. ।।।।ऽ।। दि.ल. १०, ह. ।ऽ ५५।४५ ()
भ. ४८।३४ उ. कन्याबुधः १६।२६ अगस्त्योदयः ४०।४३
भ. २०।३७ या. पश्चिमोदयोबुधः ४४।२५, श्रीदधीचि जयन्ती, दूर्वा ८
स्वात्यां शुक्रः ४६।१७ श्रीचन्द्र ९ (उदासी सम्प्रदाय का महोत्सव)
पू. षा. भौमः ३५।३९ [() या. ।।।ऽ नृ. ऽ५५।४५ उ.।।। ल. ४ आव.
भ. २८।४ उ. ५८।२६ या. पद्मा ११ व्र. स्मा.
पुन० ४ कर्कोगुरुः २४।५१ वैष्णवानां ११ व्र., श्री वामन १२ मेला ÷
हस्तेबुधः १५।१९, प्रदोषव्रतम्, पञ्चक प्रा. ५५।४८.
भ. ५४।३ उ., अनन्त १४ व्र. मेला छपार और बाबा सोढल जालन्धर
भ. २१।५ या., सत्य व्रः प्रौष्ठपदी श्राद्धम्, [÷ अम्बाला, ताजिया

भाद्र शु० ८ स्वाविष्टम् ०।० दिनगणः १५३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	५	२	६	६	८	२
१८	१२	१	२९	४	१२	१८	१८
१४	१४	१५	१२	५७	१७	२६	२६
२९	२६	२	५३	८	१९	३५	३५
५८	२४	०	१०	५८	५	३	३
८	२३	१९	५३	३८	११	११	११
क्रांति	मा	मा	मा	मा.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	मू.	उ.फा.	पुन.	चि.	स्वा.	पू.षा.	आर्द्रा
२	४	२	३	४	२	२	४

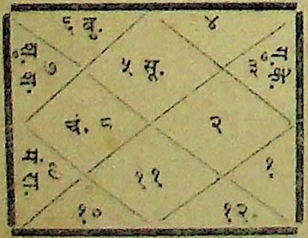

इस पक्ष में तिल, हल्दी, राई, नारियल, अलसी, काली मिर्च के भाव में कुछ मंदी हो, रुई में खासी घटा बढ़ी होकर तेजी आवे। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ आदिक अनाजों में तथा अफीम में तेजी हो। ति. ८ से सोना चांदी शेयर में मन्दी-एरण्ड, बिनौला खण्ड, गुड़, तेल, कपास, रुई, घृत के भाव में तेजी का असर रहे। ति. ३ से ९ तक व्यापार में विशेष उथल-पुथल मचेगी। व्यापारी वर्ग सावधान ! कहीं सवारी मोटर आदि के एक्सीडेन्ट हों, मुसाफिरों को कष्ट। मलाया नेपालादि में—राजनीतिक वातावरण खराब हो। यहाँ कर्क में गुरु आते हैं अतः

भाद्र शु० १५ स्वाविष्टम् ०।० दिनगणः १६०

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	५	३	६	६	८	२
२५	१५	१२	०	११	१२	१८	१८
२	१८	४७	२६	३७	५५	४	४
२१	२५	४४	५२	६	२७	१८	१८
५८	२७	९४	१०	५६	५	३	३
२३	११	३७	१८	७	३२	११	११
क्रांति	मा	मा.	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	पू.षा.	ह.	पुन.	स्वा.	स्वा.	पू.षा.	आर्द्रा
४	१	१	४	२	२	२.	४

मकई चना गेहूँ समयानुसार संचित रखनेवाले सुखी रहेंगे। ति. १ और ति. ७ से ९ के भीतर वायु के साथ वर्षा के योग हैं। ति. ११ से १५ तक भी कहीं न कहीं वर्षा होती रहेगी। भा. शु. ११ रात्रि के समय मेघ की गर्जना हो तो टिड्डियों का उपद्रव होवे।

संवत् २०११ शकः १८७६ भाद्रपद कृष्णपक्षः १०																हि.	अं.	मु.	चन्द्र	सू.उ.		सू.अ.		नित्यसूर्यस्पष्टः				(१५अगस्तसे२८अगस्त१९५४ ई.) द.उ.गो.वर्षर्तुः सा.कन्या ÷
वि. भा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.			श्रावण	अगस्त		संचारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले				ग्रहदर्शन–मं. सूर्यास्तबाद पूर्व में शु. श. पश्चिम में दीखेंगे बुध अस्त है। गुरु सूर्योदय से पहिले-पूर्व में दीखेगा। ÷ शरदृतुः
३२	५७	१	र.	२२	३४	ध.	६	२६	शो.	१४	७	कौ.	२२	३४		३१	१५	१५	कुम्भे	५	५५	७	५	३	२८	०	१२	भारते स्वतन्त्रतोत्सवः (मेला आजादी) जयहिन्द सं. ८ प्रा.
३२	५४	२	चं.	१८	३४	श.	४	३६	अ.	८	२७	ग.	१८	३४		३२	१६	१६	मी.४७।३३	५	५५	७	४	३	२८	५७	४५	भ. ४६।८ उ.
३२	५०	३	मं.	१३	४३	पू.भा.	१/५८	५२/२६	सु.	२/५५	२/४	वि.	१३	४३		भा१	१७	१७	मीने.	५	५६	७	३	३	२९	५५	२०	भ. १३।४३ या. सं. मघा. सिंहेऽर्कः ४।५४ मु. ४५ पुण्यं २०।५४ *
३२	४६	४	बु.	८	१४	रे.	५४	३६	शू.	४७	४७	बा.	८	१४		२	१८	१८	मे.५४।३६	५	५७	७	२	४	०	५२	५६	पञ्चक स. ५४।३६ [* या., श्री गणेश ४ व्रतम्,
३२	४३	५	गु.	२	२१	अ.	५०	२९	गं.	४०	१०	तै.	२	२१		३	१९	१९	मेषे	५	५८	७	१	४	१	५०	३२	भ. ५६।११ उ. सिंहे म. बुधः १९।१६, चन्दनषष्ठी व्रतम्
अवम		६	गु.	५३	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	
३२	३९	७	शु.	५०	००	भ.	४६	१४	वृ.	३२	२९	वि.	२३	५		४	२०	२०	मेषे	५	५८	७	०	४	२	४८	१०	भ. २३।५ या.
३२	३५	८	श.	४३	५८	कृ.	४२	१२	ध्रु.	२४	४४	बा.	१६	५९		५	२१	२१	वृषे.०।१४	५	५८	६	५९	४	३	४५	५०	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रतम् चन्द्रोदयः घं. ११ मि. ३९
३२	३२	९	र.	३८	२१	रो.	३८	२९	व्या.	१७	२०	तै.	११	९		६	२२	२२	वृषे	५	५९	६	५८	४	४	४३	३०	पुन० ३ गुरुः ३६।७ गुग्गा ९,
३२	२८	१०	चं.	३३	११	मृ.	३५	१७	ह.	१०	१८	व.	५	४६		७	२३	२३	मि. ६।५३	५	५९	६	५७	४	५	४१	१४	भ. ५।४६ उ. ३३।११ या., सा. कन्या. भानुः २७।३४ शरदृतुः प्रा.
३२	२४	११	मं.	२८	५१	आ.	३२	५७	व.	३/५७	४६/५६	ब.	१	१		८	२४	२४	मिथुने	५	५९	६	५६	४	६	३८	५९	चि. शुक्रः २९।५४ अजा ११ व्र. स.
३२	१९	१२	बु.	२५	२०	पुन.	३०	२३	व्य.	५२	५८	तै.	२५	२०		९	२५	२५	क.१६।४७	६	००	६	५५	४	७	३६	४५	प्रदोषव्रतम्
३२	१५	१३	गु.	२२	५५	पु.	३१	५२	व.	४८	४७	व.	२२	५५		१०	२६	२६	कर्के	६	१	६	५४	४	८	३४	३५	भ. २२।५५ उ. ५२।१८ या., पू. फा. बुधः ५।४७
३२	१०	१४	शु.	२१	४१	आश्ले.	३१	३६	प.	४५	३८	श.	२१	४१		११	२७	२७	सिं३१।३६	६	१	६	५३	४	९	३२	२८	
३२	५	३०	श.	२१	४३	म.	३३	३१	शि.	४३	२८	ना.	२१	४३		१२	२८	२८	सिंहे	६	२	६	५२	४	१०	३०	२२	कुशोत्पाटिनी ३०, ("ॐ हूँ फट्" इतिमन्त्रेण)

५०

भाद्र कृष्णा ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः १३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	४	२	५	६	८	२
३	७	३	२६	१९	११	१९	१९
४५	३	२२	२०	४०	७	१४	१४
५०	१४	१२	४९	४२	६	१७	१७
५७	१६	[illegible]	१२	६३	४	३	३
४०	११	२५	२	१४	४	११	११
[illegible]	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	मू.	म.	पु.	ह.	स्वा	पू.षा.	आर्द्रा
२	३	२	२	३	२	२	४

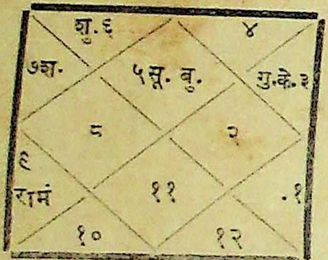

इस पक्ष में पहिले गेहूं आदि के भाव में तेजी रहे फिर मन्दा हो। मूंग उड़द चना चावल रस कस के बाजार तेज रहें, फिर ति. ५ से शेयर तथा तथा गुड़ खण्ड के भाव नरम हों और सूत्र, वस्त्र, रुई, चांदी, सोना में तेजी हो। विदेशी माल में मन्दी हो। प्रजा में ज्वरादि व्याधियों से कष्ट हो। ति. १२ के बाद कहीं फसल में किसी तरह से खराबी पहुंचे। कृषकों को कष्ट-मध्यवर्ग में आर्थिक संकट बढ़ेगा। रेलवे, हवाई जहाज वा समुद्री जहाज में कहीं दुर्घटना के योग हैं। वृष्टि वायु के साथ हो।

ति. १, २ और ति. ६ से ३० तक बादल चाल और वर्षा के योग पाये जाते हैं।

भाद्र कृ० ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगणः १४५

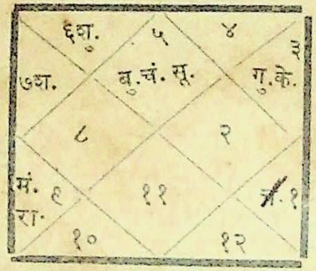

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	४	२	५	६	८	२
१०	९	१६	२७	२६	११	१८	१८
३०	१३	५५	४३	५७	३७	५२	५२
२२	४१	४९	२७	९	४८	१	१
५७	२०	[illegible]	११	६१	४	३	३
५४	२१	४८	३२	४४	३८	११	११
[illegible]	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	मू.	पू.फा.	पु.	चि.	स्वा	पू.षा.	आर्द्रा
४	३	२	३	२	२	२	४

घ० वि०–भादों कारी तीजमें उत्तर दिशा प्रदोष।
संग्रह कर लो अन्न का रुका रहे षटमास।
भादव की दोयज दिना जो ना दीखे चन्द।

संवत् २०११ शकः १८७६ भाद्रपद शुक्ल पक्षः ११ (२९अगस्त से १२ सितम्बर १९५४ ई.) द. अ. उ. शरदृतुः

दि. मा.	ति.	व.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले	ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तिबाद पूर्व में शु. श. पश्चिम में दीखेंगे, ति. ८ से बुध पश्चिम में उदय होगा गुरु, सूर्योदय से पहिले पूर्व में देखें।
३२ ००	१	र.	२३ २	पू.फा	३६ ४५	सि.	४२ २०	व.	२३ २	१३	२६	२६	कं.५२।५०	६ ३	६ ५०	४ ११ २८ १७	उ. फा. ऽगु. ।।।।ऽ।।। लग्नं चिन्त्यम्, [+ श्रीबाबा गुसाईंयाणां कुशली*
३१ ५५	२	चं.	२५ ३४	उ.फा	४१ ५	सा.	४२ ३	कौ.	२५ ३४	१४	३०	३०	कन्यायाम्	६ ४	६ ४६	४ १२ २६ १४	पू. फा. रविः ५९।४५ तुलायां शुक्रः ५९।५८ चन्द्रदर्शनम्, मेला +
३१ ५०	३	मं.	२६ १२	ह.	४६ २६	श.	४२ ३७	ग.	२६ १२	१५	३१	१	कन्यायाम्	६ ४	६ ४७	४ १३ २४ १२	मोहरम मु. १, हरितालिका व्र. ह. ।।।।।ऽनृ. ऽ।।। दिवाल, १०
३१ ४६	४	बु.	३३ ४०	चि.	५२ २८	शु.	४३ ४६	व.	१ २६	१६	सि१	२	तु.१६।२७	६ ५	६ ४६	४ १४ २२ ११	भ. १।२६ उ. ३३।४० या. कलङ्क ४ (पत्थर ४) चन्द्रास्तः घं. ८ ×
३१ ४१	५	गु.	३८ ३६	स्वा.	५६ ००	ब्र.	४५ १६	व.	६ ६	१७	२	३	तुलायाम्	६ ६	६ ४५	४ १५ २० ११	उ. फा. बुधः २१।४४, ऋषि ५. [× मि. ३८ सितम्बर ९ ता. ३०
३१ ३६	६	शु.	४३ ४७	वि.	६० ००	ऐं.	४६ ५०	कौ.	११ १३	१८	३	४	.४८।५०	६ ६	६ ४४	४ १६ १८ १४	सूर्यषष्ठीव्रतम्। [* उ.फा. ऽगु. ।।।।ऽ।।। दि.ल. १०, ह. ।ऽ ५५।४५ ()
३१ ३१	७	श.	४८ ३४	वि.	५ २६	वै.	४८ ६	ग.	१६ १०	१९	४	५	वृश्चिके	६ ७	६ ४३	४ १७ १६ २१	भ. ४८।३४ उ. कन्याबुधः १६।२६ अगस्त्योदयः ४०।४३
३१ २६	८	र.	५२ ४०	अ.	११ २५	वि.	४८ ५२	वि	२० ३७	२०	५	६	वृश्चिके	६ ८	६ ४२	४ १८ १४ २६	भ. २०।३७ या. पश्चिमोदयोबुधः ४४।२५, श्रीदधीचि जयन्ती, दूर्वा ८
३१ २२	९	चं.	५५ ४२	ज्ये.	१६ ४२	प्री.	४८ ५३	बा.	२४ ११	२१	६	७	ध.१६।४२	६ ८	६ ४०	४ १९ १२ ४०	स्वात्यां शुक्रः ४६।१७ श्रीचन्द्र ९ (उदासी सम्प्रदाय का महोत्सव)
३१ १७	१०	मं.	५७ ४३	.	२० ५०	आ.	४८ १	"	२६ ४२	२२	७	८	धनाष	६ ८	६ ३९	४ २० १० ५२	पू. षा. भौमः ३५।३९ [() या. ।।।ऽनृ. ऽ५५।४५ उ.।।। ल. ४ आव.
३१ १२	११	बु.	५८ २६	पू.षा.	२३ ५३	सौ.	४६ ७	ब.	२८ ४	२३	८	९	म.३९।१९	६ ९	६ ३८	४ २१ ९ ५	भ. २८।४ उ. ५८।२६ या. पद्मा ११ व्र. स्मा.
३१ ७	१२	.	५७ ४८	उ.षा	२५ ३६	शो.	४३ १४	व.	२८ ७	२४	९	१०	मकरे	६ ९	६ ३८	४ २२ ७ २०	पुन० ४ कर्कगुरुः २४।५१ वैष्णवानां ११ व्र., श्री वामन १२ मेला ÷
३१ २	१३	शु.	५५ ५६	श्र.	२६ ८	अ.	३९ २१	कौ.	२६ ५३	२५	१०	११	कुं.५५।४८	६ १०	६ ३५	४ २३ ५ ३८	हस्तेबुधः १५।१९, प्रदोषव्रतम्, पञ्चक प्रा. ५५।४८.
३० ५८	१४	श.	५३ ३	ध.	२५ २८	सु.	३४ ३३	ग.	२४ ३१	२६	११	१२	कुम्भे	६ ११	६ ३४	४ २४ ३ ५८	भ. ५४।३ उ., अनन्त १४ व्र. मेला छपार और बाबा सोढल जालन्धर
३० ५३	१५	र.	४९ ७	श.	२३ ४६	धृ.	२८ ५८	वि.	२१ ५	२७	१२	१३	कुम्भे	६ ११	६ ३२	४ २५ २ २१	भ. २१।५ या., सत्य व्र: प्रौष्ठपदी श्राद्धम्, [÷ अम्बाला, ताजिया

भाद्र शु० ८ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः १५३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	५	२	६	६	८	२
१८	१२	१	२९	४	१२	१८	१८
१४	१४	१५	१२	५७	१७	२६	२६
२९	२६	२	५३	८	१९	३५	३५
५८	२४	०	१०	५८	५	३	३
८	२२	१९	५३	३८	११	११	११
मार्ग.	मा	मा	मा	मा.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	मू.	उ.फा.	पुन.	चि.	स्वा.	पू.षा.	आर्द्रा
२	४	२	३	४	२	२	४

इस पक्ष में तिल, हल्दी, राई, नारियल, अलसी, काली मिर्च के भाव में कुछ मंदी हो, रुई में खासी घटा बढ़ी होकर तेजी आवे। गेहूं, जौ, चना, मूंगा, मोठ आदिक अनाजों में तथा अफीम में तेजी हो। ति. ८ से सोना चांदी शेयर में मन्दी-एरण्ड, बिनौला खण्ड, गुड़, तेल, कपास, रुई, घृत के भाव में तेजी का असर रहे। ति. ३ से ९ तक व्यापार में विशेष उथल-पुथल मचेगी। व्यापारी वर्ग सावधान ! कहीं सवारी मोटर आदि के एक्सीडेन्ट हों, मुसाफिरों को कष्ट। मलाया नेपालादि में—राजनीतिक वातावरण खराब हो। यहां कर्क में गुरु आते हैं अतः मकई चना गेहूं समयानुसार संचित रखनेवाले सुखी रहेंगे। ति. १ और ति. ७ से ९ के भीतर वायु के साथ वर्षा के योग हैं। ति. ११ से १५ तक भी कहीं न कहीं वर्षा होती रहेगी। भा. शु. ११ रात्रि के समय मेघ की गर्जना हो तो टिड्डियों का उपद्रव होवे।

भाद्र शु० १५ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः १६०

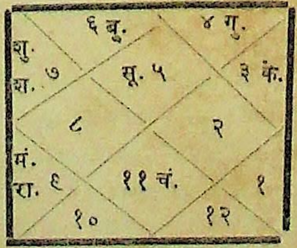

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	८	५	३	६	६	८	२
२५	१५	१२	०	११	१२	१८	१८
२	१८	४७	२६	३७	५५	४	४
२१	२५	४४	५२	६	२७	१८	१८
५८	२७	९४	१०	५६	५	३	३
२३	११	३७	१८	७	३२	११	११
मार्ग.	मा	मा.	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	पू.षा.	ह.	पुन.	स्वा.	स्वा.	पू.षा.	आर्द्रा
४	१	१	४	२	२	२.	४

संवत् २०११ शकः १८७६ आश्विनकृष्ण पक्षः १२ | हि. अ. | चन्द्र | सू. उ. | सू. अ. | नित्यसूर्य स्पष्टः | (१३सितम्बरसे २६ सितं.१९५४ ई.) द. अ. उ. गो., शा. +

ग्रहदर्शन—म. सूर्यास्तबाद पूर्व से ख मध्य को आता दीखेगा, बु.शु.श. सूर्यास्तबाद पश्चिम में दीखेंगे । गुरु सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा ।

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	अंग्रे.	सितं.	मोह.	संचारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	उदयकाले	
३० ४८	१	चं.	४४ २२	पू.भा	२१ १४	शू.	२२ ४०	बा.	१६ ४४	२८	१३	१४	मी. ६।५२	६ १२	६ ३१	४ २६ ० ४६	उ. फा. रविः ४०।१७ महालया (पितृपक्षा) रम्भः
३० ४३	२	मं.	३६ ००	उ.भा	१७ ५९	ग.	१५ ४२	तै.	११ ४१	२९	१४	१५	मीने	६ १३	६ ३०	४ २६ ५९ १५	[+तु. द. गो. शरदृतुः
३० ३८	३	.	३३ १०	रे.	१४ ११	वृ.	८ १९	व.	६ ५	३०	१५	१६	मे. १४।११	६ १३	६ २८	४ २७ ५७ ४६	भ. ६।५ उ. ३३।१० या.,श्री गणेश ४ व्र., पञ्चक स. १४।११, जन्मो-×
३० ३४	४	गु.	२७ ५	अ.	१० ४	ध्रु.	०/५२ ३२/५१	व.	० ७	३१	१६	१७	मेष	६ १४	६ २७	४ २८ ५६ १८	स्वा. ३ शनिः १९।२९ [×त्सव धर्ममार्त्तण्ड श्री १०५ बघाट नरेशजी
३० २९	५	शु.	२० ५७	भ.	५ ५०	वृ.	४५ ७	तै.	२० ५७	अ१	१७	१८	वृ. १६।४८	६ १४	६ २६	४ २९ ५४ ५१	सं. कन्यायामर्कः ५।१९ मु. १५ पुण्यं ५।१९ उ. २१।१९ या.
३० २४	६	श.	१४ ५६	कृ.	६/५७ ४२/५३	ध्र.	३७ ३४	ग.	१४ ५६	२	१८	१९	वृषे	६ १४	६ २४	५ ० ५३ २६	भ. १४।५९ उ. ४२।९ या. चित्राबुधः ५६।३४
३० १९	७	र.	९ १९	मृ.	५४ ३५	सि.	३० २१	व.	६ १९	३	१९	२०	मि २६।१४	६ १४	६ २३	५ १ ५२ ४	
३० १४	८	चं.	४ १४	आ.	५१ ५७	व्य.	२३ ३८	कौ.	४ १४	४	२०	२१	मिथुने	६ १५	६ २२	५ २ ५० ४३	सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्
अवम	९	चं.	५५ ४०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	
३० ९	१०	मं.	५६ २६	पुन.	५० ९	व.	१७ ३७	व.	२८ १०	५	२१	२२	क. ३५।३५	६ १६	६ २०	५ ३ ४९ २६	भ. २८।१० उ. ५६।२६ या., विशा. शुक्रः ३२।१७
३० ४	११	बु.	५४ १	पु.	४९ २३	प.	१२ १८	ब.	२५ १३	६	२२	२३	कर्के	६ १७	६ १९	५ ४ ४८ ११	इन्दिरा ११ व्रतम्
३० ००	१२	गु.	५२ ५०	श्ले.	४६ ४६	शि.	७ ५०	कौ.	२३ २५	७	२३	२४	सिं ४६।४६	६ १७	६ १८	५ ५ ४६ ५८	तुलायां बुधः ४१।५३ सा. तुला. भानुः २१।२
२९ ५५	१३	शु.	५२ ५३	म.	५१ २९	सि.	४ २१	ग.	२२ ५१	८	२४	२५	सिंहे	६ १८	६ १६	५ ६ ४५ ४८	भ. ५२।५३ उ. प्रदोष व्र., कलियुगादि
२९ ५०	१४	श.	५४ १६	पू.फा	५४ २२	सा.	१ ५३	वि.	२३ ३४	९	२५	२६	सिंहे	६ १९	६ १५	५ ७ ४४ ३६	भ. २३।३४ या. शस्त्राग्निविषाग्निहतानां श्राद्धम्
२९ ४६	३०	र.	५६ ४८	उ.फा	५८ २६	शु.	०/५९ २५/५०	च.	२५ ३२	१०	२६	२७	क. १०।२३	६ २०	६ १३	५ ८ ४३ ३२	सर्वपितृ ३०, अज्ञातमृततिथीनां श्राद्धं विसर्जनञ्च ।

आश्विन कृ० ८ चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनगणः १६८

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	८	५	३	६	६	८	२
२	१९	२४	१	१८	१३	१७	१७
५०	९	५१	४५	४२	४१	३८	३८
४३	३६	३०	११	५८	४२	५२	५२
५८	३०	८६	९	५१	६	३	३
३९	१४	४०	२५	००	००	११	११
मौरः	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा.	पूफा.	चि.	पुनं.	स्वा	स्वा	पूफा.	आर्द्रा
२	२	१	४	४	३	२	४

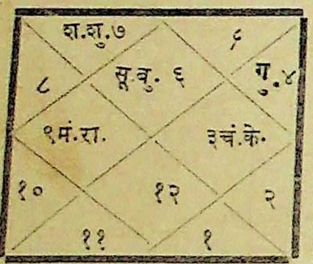

इस पक्ष में रुई,सूत,कपास,चांदी,सोना, घृत, तेल, सरसों, एरण्ड, गेहूं, चावल, उड़द के भाव में तेजी होवे । तांबा,लोहा,शेयर, कोला और ईंट का भाव थोड़ा तेज होकर फिर गिर जायगा । कहीं ओले पड़ें । सुर्ख रंग मजीठ चन्दन का बाजार तेज होवे । चौपाये पशुओं में ऊंट और भेड़ों का भाव सस्ता रहे । ति. ११ के बाद सरसों बिनौला मूंगफली वगैरा में मन्दी-गुड़ खण्ड अफीम में तेजी,कहीं पूर्वी पश्चिमी प्रदेशों की जनता में परस्पर फिसाद का भय हो ।

आश्विन कृ० ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः १७४

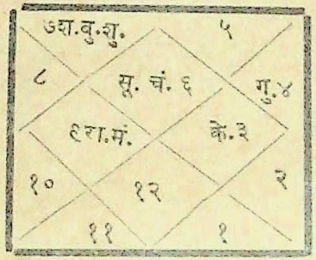

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	८	६	३	६	६	८	२
८	२२	३	२	२३	१४	१७	१७
४३	१९	३	३९	३५	१८	१९	१९
३२	००	३५	२१	३३	४८	४६	४६
५८	३२	७८	८	४७	६	३	३
५३	३१	५२	४६	१०	२०	११	११
मौरः	मा	मा	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा.	पूफा.	चि.	पुनं.	वि.	स्वा	पू.फा.	आर्द्रा
४	३	३	४	२		२	४

ति. १ से ५ तक व ति. ८ से १३ तक उत्तर और पूर्व में कहीं-कहीं वर्षा होवे ।

शकुन विचार—दशमी और एकादशी, और द्वादशी जान । घन गरजे बिजली दिखे, गेहूं तेज पिछान ।।

संवत् २०११ शकः १८७६ आश्विन शुक्लपक्षः १३ | हि. | अं. | म. | चन्द्र | सू. उ. | सू. अ. | नित्यसूर्यस्पष्टः | (२७सितं. से १२ अक्टू. १९५४ ई.) दक्षिणायनगोलौ, शरदृतुः

संवत् २०११ शकः १८७६ आश्विन शुक्लपक्षः १३ (२७सितं. से १२ अक्टू. १९५४ ई.) दक्षिणायनगोलौ, शरदृतुः

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तिवाद खमध्य में और बु. शु. श. पश्चिम में दीखेंगे। गुरु सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				
२९	४२	१	चं.	६०	००	ह.	६०	००	ब्र.	६०	०	कि.	२८	५०	११	२७	२८	कन्यायाम्	६	२१	६	१२	५	९	४२	२९	हस्ते रविः १७।५१, शारद नवरात्रारम्भः, घटस्था०, मातामहश्राद्धम्,
२९	३७	१	मं.	००	३२	ह.	३	३६	ब्र.	०	९	ब.	००	३२	१२	२८	२९	तु. ३६।३३	६	२१	६	११	५	१०	४१	२७	स्वा. बुधः ५१।५० चन्द्रदर्शनम्, ☋११ व्र. स., पञ्चक प्रा. १४।३३,
२९	३२	२	बु.	५	५	चि.	९	३१	ऐं.	१	५	कौ.	५	५	१३	२९	१	तुलायाम्	६	२२	६	१०	५	११	४०	२८	सफर मु. २
२९	२८	३	गु.	१०	९	स्वा.	१५	५६	वै.	२	२८	ग.	१०	९	१४	३०	२	तुलायाम्	६	२३	६	९	५	१२	३९	३१	भ. ४२।४५ उ. पुष्ये १ गुरुः ४८।४२ [+गु. दा. रात्री ल. ४
२९	२३	४	शु.	१५	२२	वि.	२२	२७	वि.	३	५७	वि.	१५	२२	१५	अ१	३	वृ. ५।४९	६	२३	६	८	५	१३	३८	३६	भ. १५।२२ या. अक्टूबर १० ता० ३१, अनु. ।।।।।।ऽऽ।। दिवा ल. ११ +
२९	१९	५	श.	२०	१४	अन.	२८	३७	प्री.	५	१६	बा.	२०	१४	१६	२	४	वृश्चिके	६	२४	६	६	५	१४	३७	४२	जन्मदिन महात्मा गान्धीजी, *स्वतीविसर्जनम्, =दिवाल १०
२९	१५	६	र.	२४	२८	ज्ये.	३४	४	आ.	६	७	तै.	२४	२८	१७	३	५	ध. ३४।४	६	२४	६	५	५	१५	३६	५१	उ. षा. भौमः ४९।४४, मेला माईसरखाना, मू. ।।।।।।ऽऽ।। ल. ४ चं. दा.
२९	१०	७	चं.	२७	३६	मू.	३८	३२	सौ.	६	१६	व.	२७	३६	१८	४	६	धनुषि	६	२४	६	४	५	१६	३६	३	भ. २७।३६ उ. ५८।३९ या. श्री सरस्वत्यावाहनम्, मू. ।।।।।।ऽऽ।। =
२९	५	८	मं.	२९	४२	पू.षा.	४१	५२	शो.	५	३२	ब.	२९	४२	१९	५	७	म. ५७।२३	६	२५	६	३	५	१७	३५	१६	वृश्चिके शुक्रः ८।४, श्री दुर्गा ८, मेला श्री ज्वालामुखी व तारा×
२९	१	९	बु.	३०	२८	उ.षा	४३	५५	अ.	३	५३	बा.	०	५	२०	६	८	मकरे	६	२६	६	१	५	१८	३४	३४	श्री सरस्वती बलिदानम्, [×देवी, श्री सरस्वती पू.,
२८	५७	१०	गु.	२९	५७	श्र.	४४	४५	सु.	५/६०	१४/३३	तै.	०	१२	२१	७	९	मकरे	६	२७	६	००	५	१९	३३	५३	भ. ५९।५ उ. विजया १०, अपराजिता पूः मेला दशहरा, सर-*
२८	५२	११	शु.	२८	१३	ध.	४४	२१	शू.	५२	५५	वि.	२८	१३	२२	८	१०	कु. १४।३३	६	२७	६	००	५	२०	३३	१५	भ. २८।१३ या. पूषा १ राहुः आर्द्रा. ३ केतुः ३०।२३, पापाङ्कुशा☋
२८	४७	१२	श.	२५	२३	श.	४२	५३	गं.	४७	२१	बा.	२५	२३	२३	९	११	कुंभ	६	२८	५	५८	५	२१	३२	३८	मकरे भौमः ३२।३७, शनिप्रदोषव्रतम्,
२८	४२	१३	र.	२१	३४	पू.भा	४०	३६	वृ.	४१	११	तै.	२१	३४	२४	१०	१२	मी. २६।१०	६	२९	५	५७	५	२२	३२	४	चित्रा. रविः ४८।२२. [आकाशदीपदानम्, का. स्ना. प्रा.,
२८	३७	१४	चं.	१६	५४	उभा.	३७	२९	ध्रु.	३४	१८	व.	१६	५४	२५	११	१३	मीन	६	२९	५	५७	५	२३	३१	३१	भ. १६।५४ उ. ४४।१५ या. अनु. शुक्रः १२।३२, सत्यव्रतम्, शरद् १५
२८	३२	१५	मं.	११	३७	रे.	३३	५०	व्या	२६	५६	व.	११	३७	२६	१२	१४	मि. ३३।५८	६	२९	५	५६	५	२४	३१	२	विशाखा. बुधः ४५।३०, पञ्चकसमा. ३३।५०, कोजागरी व्र.,[

आश्विन शु० ८ भौम—इष्टम् ०।० दिनगणः १८३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	६	३	६	६	८	२
१७	२७	१३	३	२९	१५	१६	१६
३५	२०	३७	५२	५५	१७	५१	५१
१६	१७	३४	४४	८	२४	९	९
५९	३४	६२	७	३७	६	३	३
१३	२६	५५	३४	२७	३७	११	११
गतिः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ह.	[illegible]	स्वा	[illegible]	वि.	स्वा	[illegible]	[illegible]
३	१	३	१	३	३	२	४

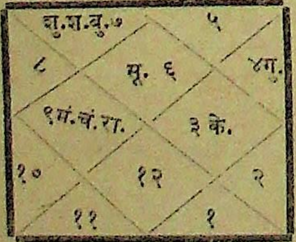

इस पक्ष में गेहूं गुड़ खंड कपास लकड़ी और घास के भाव में रुख तेजी का रहेगा। चांदी के सौदे में घटाबढ़ी होकर मन्दी हो और सफेद वस्तुओं में कुछ तेजी हो। ति० ७ से सब प्रकार का अनाज तथा घृत के भाव में खासी तेजी रहे। ति. १२ से रुई सोना चांदी अलसी तेल और ऊन के भाव में तेजी आवे। ति. १२ के बाद किसी प्रान्त में भूकम्प के धक्कों का अनुभव हो। पक्षान्त में जवाहरात तथा चना में तेजी का रुख हो। कहीं देशों की सीमाओं के विवाद का झगड़ा बढ़ेगा, जगत् में सर्वत्र आन्तरिक अशान्ति का वातावरण रहेगा।

आश्विन शु० १५ भौम—इष्टम् ०।० दिनगणः १९०

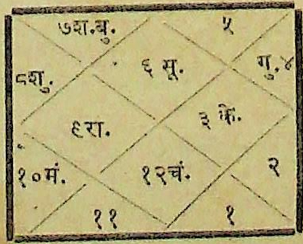

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	९	६	३	७	६	८	२
२४	१	१९	४	३	१६	१६	१६
३१	२८	३२	४१	४२	४	२८	२८
२	३०	७	४३	५२	३०	५३	५३
५९	३६	४०	६	२९	६	३	३
३१	१४	१४	३४	५४	४९	११	११
गतिः	मा.	मा	मा	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चि.	[illegible]	स्वा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	२	४	१	१	३	१	३

ति. ८ से १२ तक और ति. १४,१५ को कहीं २ बादल लाल दिखाई देवे। श० वि०—साते आठे क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ।।१।।

संवत् २०११ शक: १८७६ कार्तिक कृष्णपक्ष १४																हि.	अ.	म.	चन्द्र	सू. उ.		सू. अ.		नित्य सूर्य स्पष्ट:			
दि मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.			अक्टू.		संचार	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाल			
२८	२८	१	बु.	५	५३	अ.	२६	४८	ह.	१६	१८	कौ.	५	५३		२७	१३	१५	मेषे	६	३०	५	५५	५	२५	३०	३३
क्षय		२	बु.	५३	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	२३	३	गु.	५३	४८	भ.	२५	३५	व.	११	२९	व.	२६	५०		२८	१४	१६	वृ. ३६।३३	६	३०	५	५३	५	२६	३०	८
२८	१६	४	शु.	४७	५४	कृ.	२१	२७	सि.	३/५५	३८/५७	ब.	२०	५१		२९	१५	१७	वृषे	६	३१	५	५२	५	२७	२९	४६
२८	१४	५	श.	४२	२०	रो.	१७	३२	व.	४८	३२	कौ.	१५	७		३०	१६	१८	मि४५।४७	६	३२	५	५०	५	२८	२९	२६
२८	९	६	र.	३७	१८	मृ.	१४	३	प.	४१	३५	ग.	९	४९		का१	१७	१९	मिथुने	६	३३	५	४८	५	२९	२९	७
२८	५	७	चं.	३३	१	आ.	११	१५	शि.	३५	१९	वि.	५	९		२	१८	२०	क.५४।४८	६	३४	५	४७	६	०	२८	४९
२८	०	८	मं.	२९	३५	पुन.	९	१९	सि.	२९	४२	बा.	१	१८		३	१९	२१	कर्के	६	३५	५	४६	६	१	२८	३४
२७	५५	९	बु.	२७	१८	पु.	९	१५	सा.	२४	५५	ग.	२७	१८		४	२०	२२	कर्के	६	३६	५	४५	६	२	२८	२३
२७	५०	१०	गु.	२६	११	श्ले.	८	२०	शु.	२१	४	वि.	२६	११		५	२१	२३	सि.८।२०	६	३७	५	४४	६	३	२८	१३
२७	४५	११	शु.	२६	२०	म.	९	३८	शु.	१८	१३	बा.	२६	२०		६	२२	२४	सिंहे	६	३७	५	४३	६	४	२८	५
२७	४१	१२	श.	२७	४८	पू.फा	१३	१४	ब्र.	१६	२१	त.	२७	४८		७	२३	२५	क.२८।५५	६	३७	५	४२	६	५	२७	५९
२७	३६	१३	र.	३०	२७	उ.फा	१६	२	ऐं.	१५	२९	ब.	३०	२७		८	२४	२६	कन्यायाम्	६	३८	५	४१	६	६	२७	५५
२७	३२	१४	चं.	३४	१५	ह.	२०	५८	वै.	१५	२९	वि.	२	२१		९	२५	२७	तु.५३।५२	६	३९	५	४०	६	७	२७	५४
२७	२८	३०	मं.	३८	५५	चि.	२६	४२	वि.	१६	११	च.	६	३५		१०	२६	२८	तुलायाम्	६	४०	५	३९	६	८	२७	५६

(१३अक्टू.से २६अक्टू. १९५४ ई.) द. गो.शरहतु:सा.वृश्चि. ×

ग्रह.—मं. सूर्यास्तबाद खमध्य में शु. पश्चिम में दीखेंगे। ति. १२से बुध पश्चिम में अस्त होगा। गुरु अर्द्धरात्रिबाद पूर्व में दीखेगा। ति.८से श.पश्चिम.मअस्त।

[× हेमन्तर्तुः,

भ. २६।५० उ. ५३।४८ या.

कर्क (कर्वा) ४ व्र., चन्द्रोदय: घं. ८ मि. १८

भ.३७।१८उ.सं.तुलायामर्क:३१।४मु.१५पुण्यं१६।४उ.स्वा.४शनि:८।१७

भ. ५।९ या. वक्रीबुध: १४।५६ अस्त: शनि: ५९।८

अहोई ८,

भ. ५६।४४ उ.

भ. २६।११ या. [$ चन्द्रोदये स्नानादि;

रमा ११ व्र. स., [* व्र., श्रीहनुमज्जयन्ती,

व.स्वा.बुध:३।२६पश्चिमास्तोबुध:३९।५२,सा.वृ.भानु:३९।२८हेमन्तर्तुप्रा.

भ. ३०।२७ उ. स्वा. रवि: १२।३, धन १३, यमाय दीपदानम्, प्रदोप *

भ. २।२१ या. श्रवणे भौम. ३६।११ वक्रीशुक्र: ३३।२०, नरक १४ $

दीपमाला श्रीमहालक्ष्मीपूजनम्, शेष रात्रौ दारिद्र्यनिस्सारणम्,

कार्तिक कृ. ८ भौम—इष्टम् ०।० दिनगण: १९७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
६	९	६	३	७	६	८	२
१	५	२१	५	६	१६	१६	१६
२८	४७	३९	२३	१६	५३	६	६
३४	१९	२०	४५	५७	२	३६	३६
५९	३७	२	५	१५	७	३	३
४५	३१	४०	२८	२४	००	११	११
गति:	मा	व.	मा	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चि.	उ.षा.	वि.	पु.	अनु	स्वा	पू.षा.	आर्द्रा
३	३	१	१	१	४	१	३

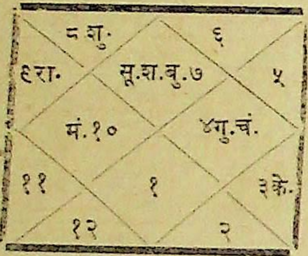

इस पक्ष में अनाज, सोना चांदी मोती तथा रुई गुड़ खंड चना तिल नारियल के भाव में तेजी रहे। बाजरा उड़द मूंग और लोबिया का भाव कुछ नरम रहे। सफेद रंग का कपड़ा-चावल धनियां हल्दी जीरा का भाव तेज हो। ति. ७ से मूंगफली बिनौला सरसों का भाव तेज, रुई शेयर सोने का भाव मन्दा। ति. १३ के बाद रुई के बाजार में एकाएक गर्मी आवे और सोना चाँदी के भाव में भी खासी घटा-बढ़ी होवे। धार्मिक व राजनैतिक मामलों में विशेष उथल-पुथल के कारण जनता में कई प्रकार की नई समस्यायें खड़ी होंगी। ति. ७ से १३ तक बादल-चाल, कहीं पर्वतीय प्रान्त के समीप बूंदाबांदी भी हो।

कार्तिक कृ. ३० भौम—इष्टम् ०।० दिनगण: २०४

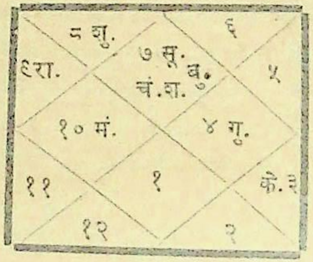

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
६	९	६	३	७	६	८	२
८	१०	१७	५	७	१७	१५	१५
२७	५३	२५	५६	१	४२	४४	४४
५६	३०	१८	५०	९	४९	२०	२०
६०	३९	५९	४	००	७	३	३
२	३	२२	१०	३०	११	११	११
गति:	मा	व.	मा	व.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा	श्र.	स्वा	पु.	अनु	स्वा	पू.षा.	आर्द्रा
१	१	४	१	२	४	१	३

शकुन विचार—कार्तिक बदी एकादशी वर्षा बादल होय । आसाढ़मास वर्षा अधिक [illegible] ॥

संवत् २०११ शक: १८७६ कार्तिकशुक्लपक्ष: १५ | ति | अ | म | चन्द्र | सू. उ. | सू. अ. | नित्यसूर्यस्पष्टः | (२७ अक्ट० से १० नवं० १९५४ ई०) द. अ. गो. हेमन्तर्तुः

संवत् २०११ शकः १८७६ कार्तिकशुक्लपक्षः १५ (२७ अक्टू० से १० नवं० १९५४ ई०) द. अ. गो. हेमन्तर्तुः

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. क्रांति	अं.	मु.	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२७	२४	१	बु.	४४	४	स्वा.	३३	२	प्री.	१७	२२	किं.	११	२६	११	२७	२६	तुलायाम्	६	४०	५	३८	६	९	२७	५६
२७	२१	२	गु.	४६	२२	वि.	३६	३५	आ.	१८	४६	वा.	१६	४३	१२	२८	३०	वृ. २२।५७	६	४१	५	३७	६	१०	२८	४
२७	१७	३	शु.	५४	१०	अनु.	४५	५२	सौ.	२०	८	तै.	२१	४६	१३	२९	१	वृश्चिके	६	४२	५	३७	६	११	२८	१०
२७	१३	४	श.	५८	३८	ज्ये.	५१	२८	शो.	२१	३	व.	२६	२४	१४	३०	२	ध. ५१।२८	६	४२	५	३६	६	१२	२८	२०
२७	९	५	र.	६०	००	मू.	५६	१२	अ.	२१	२३	व.	३०	१४	१५	३१	३	धनुषि	६	४३	५	३५	६	१३	२८	३२
२७	५	५	चं.	१	५१	पू.षा.	५९	५०	सु.	२०	५०	बा.	१	५१	१६	१८	४	धनुषि	६	४४	५	३४	६	१४	२८	४८
२७	२	६	मं.	४	२	उषा.	६०	००	धृ.	१९	१८	तै.	४	२	१७	२	५	म. १५।२६	६	४४	५	३३	६	१५	२९	५
२६	५८	७	बु.	४	५३	उ षा.	२	१४	शू.	१७	३	व.	४	५३	१८	३	६	मकरे	६	४६	५	३२	६	१६	२९	२३
२६	५४	८	गु.	४	२३	श्र.	३	१८	गं.	१३	३५	व.	४	२३	१९	४	७	कुं. ३३।१५	६	४७	५	३१	६	१७	२९	४३
२६	५०	९	शु.	४	४१	ध.	३	१२	वृ.	९	७	कौ.	२	४१	२०	५	८	कुम्भे	६	४८	५	३१	६	१८	३०	५
२६	४६	१०	श.	०	४	श.	५९	५३	ध्रु.	५७	४५	ग.	०	४	२१	६	९	मी. ४५।२५	६	४९	५	३०	६	१९	३०	३०
क्षयम		११	श.	५६	५	०	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	४३	१२	र.	५१	३२	उभा.	५६	५७	ह.	५१	१	ब.	२३	५०	२२	७	१०	मीने	६	५०	५	२९	६	२०	३०	५५
२६	३९	१३	चं.	४६	१८	रे.	५३	२४	व.	४३	४४	कौ.	१८	५५	२३	८	११	मे. ५३।२४	६	५१	५	२८	६	२१	३१	२७
२६	३५	१४	मं.	४०	३९	अ.	४९	२६	सि.	३६	७	ग.	१३	३८	२४	९	१२	मेषे	६	५१	५	२८	६	२२	३१	५१
२६	३१	१५	बु.	३४	४२	भ.	४५	१५	व्य.	२८	१८	वि.	७	४०	२५	१०	१३	वृ. ५६।१२	६	५०	५	२७	६	२३	३२	२१

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद खमध्यसे पश्चिम को आता दीखेगा। ति. ९ से बुध पूवमें उदय, ति. १३ से पश्चिमम शुक्र अस्त होगा। गुरु *

गोवर्धन पू., अन्नकूटम्, वाष्टकाकर्षणम् (रस्साकशी)
चन्द्रदर्शनम्, बलराज महोत्सवः रथकाराणाम्, भाई टक्का २ (यम २)
रविउलावल मु. ३ [*अर्द्धरात्रि में पूर्व में ०। शनि अस्त है।
भ. २६।२४ उ. ५८।३८ या.

नवम्बर ११ ता० ३०

भ. ४।५३ उ. ३४।३८ या., गोपालाष्टमी (सायंकाल व्यापिनी) +
पञ्चक प्रारम्भः ३३।१५, [+सायंकाले गवां पूजाऽलङ्करणञ्च,
व. चित्रा. बुधः ७।२६ पूर्वोदयोबुधः ३३।२६,
भ. २८।६ उ. ५६।९ या. विशा. रविः २९।१६, हरि प्रबोधिनी =
[=११ व्र. स्मा; तुलसी विवाह, भीष्म पञ्चकारम्भः
वैष्णवानां ११ व्र.,[× ३८।२४सोमप्रदोषव्र; पञ्चक समाप्तिः ५३।२४,
मार्गीबुधः २७।५ व. विशा. शुक्रः २०।२३, पश्चिमास्तः शुक्रः ×
भ. ४०।३९ उ. श्री वैकुण्ठ १४ व्र.,
भ. ७।४० या. पुष्ये २ गुरुः ४७।३२, का. स्ना. स. मेला कपाल मोचन,

कार्तिक शु० ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः २१३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	३	७	६	८	२
१३	१६	७	६	५	१८	१५	१५
२९	८	२५	२७	११	४७	१५	१५
४३	४६	२९	८	१५	३७	४२	४२
६०	३९	४७	२	२०	७	३	३
२०	३९	३०	४०	३१	११	११	११
[illegible]	मा	व.	मा	व.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा	श्र.	स्वा	पु.	[illegible]	स्वा	[illegible]	[illegible]
४	२	१	१	१	४	१	३

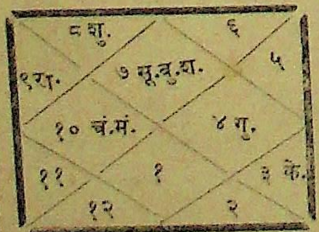

इस पक्ष में पूँजीपति और मजदूरों में कई जगह वैमनस्य हो, कहीं हड़ताल होने की परिस्थिति आवे। गेहूँ गुड़, खंड सरसों बिनौला मिर्च तथा करयाणे के भाव में तेजी आवे। चपड़ा लाख, गुग्गुल, रेशम, बारदाना के भाव में घटा-बढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। ति. ८ के बाद रूई में मन्दी हो। एरण्ड बिनौला अलसी और जौ चना तिल घी लाल मिर्च का भाव तेज रहे। ति. १२ से मूँगफली तेल बिनौला सरसों तोरिया के भाव गिरेंगे, तेजी वाले व्यापारी हानि से बचें। सरकार का सैन्यविभाग में खर्च विशेष हो।

कार्तिक शु० १५ बुध—इष्टम् ०।० दिनगणः २१९

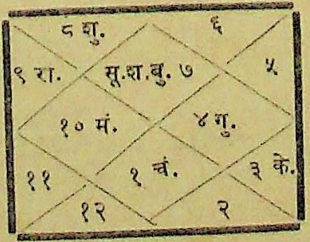

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	३	७	६	८	२
२३	२०	६	६	२	१९	१४	१४
३२	९	०	३८	२८	३०	५६	५६
२१	४१	१४	५९	१५	४२	३७	३७
६०	४०	१३	१	३१	७	३	३
३०	३१	५	२८	४६	११	११	११
[illegible]	मा	मा	मा	व.	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
वि	श्र.	चि.	पु.	[illegible]	स्वा	[illegible]	[illegible]
२	४	४	१	१	४	१	३

ति. ८.९ व १२ से १५ तक कहीं २ आकाश में सुफेद बादल दिखाई देवेंगे।

शकुन विचार—कार्तिक शुदि एकादशी वर्षा बादल होय। चार मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय।

कार्तिक सुदि 2 [illegible] 2022 को प्रातः [illegible]

संवत् २०११ शकः १८७६ मार्गशीर्षकृष्ण पक्षः १६															अं.	मु.	चन्द्र	सू.उ.		सू.अ.		नित्यसूर्यस्पष्टः			
दि.मा.		ति.	वा.	घ.प.		न.	घ.प.		यो.	घ.प.		क.	घ.प.		क्रांति.	नवं.	रबुउल.	संचार	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
२६	२७	१	गु.	२८	४२	कृ.	४१	२	व.	२०	२१	बा.	१	४२	२६	११	१४	वृषे	६	५२	५	२७	६	२४	३२	५३
२६	२४	२	शु.	२२	५३	रो.	३७	२	प.	१२	३५	ग.	२२	५३	२७	१२	१५	वृषे	६	५३	५	२६	६	२५	३३	२८
२६	२०	३	श.	१७	२४	मृ.	३३	२६	शि.	५/६७	७/५४	वि.	१७	२४	२८	१३	१६	मि.५।१४	६	५४	५	२५	६	२६	३४	४
२६	१६	४	र.	१२	२८	आ.	३०	२७	सा.	५१	२१	बा.	१२	२८	२९	१४	१७	मिथुने	६	५४	५	२४	६	२७	३४	४१
२६	१२	५	चं.	८	१९	पुन.	२८	१८	शु.	४५	१५	तै.	८	१९	३०	१५	१८	क.१३।५०	६	५५	५	२४	६	२८	३५	१९
२६	८	६	मं.	४	५९	पु.	२६	५८	शु.	४०	२१	व.	४	५९	१म	१६	१९	कर्के	६	५६	५	२४	६	२९	३५	५९
२६	५	७	बु.	२	४६	श्ले.	२६	४६	ब्र.	३६	८	व.	२	४६	२	१७	२०	सिं२६।४६	६	५८	५	२३	७	०	३६	४३
२६	१	८	गु.	१	४४	म.	२७	४४	ऐं.	३२	५४	कौ.	१	४४	३	१८	२१	सिंहे	६	५९	५	२२	७	१	३७	२८
२५	५७	९	शु.	२	२	पू.	३०	२	वै.	३०	४०	ग.	२	२	४	१९	२२	क.४५।५५	७	०	५	२१	७	२	३८	१४
२५	५३	१०	श.	३	३६	उ.	३३	३४	वि.	२९	२९	वि.	३	३६	५	२०	२३	कन्यायाम्	७	१	५	२१	७	३	३९	३
२५	४९	११	र.	६	२४	ह.	३८	१४	प्री.	२९	७	बा.	६	२४	६	२१	२४	कन्यायाम्	७	२	५	२१	७	४	३९	५३
२५	४६	१२	चं.	१०	२१	चि.	४३	४७	आ.	२९	३५	तै.	१०	२१	७	२२	२५	तु.११। ०	७	३	५	२०	७	५	४०	४६
२५	४३	१३	मं.	१५	७	स्वा.	५०	१	सौ.	३०	३५	व.	१५	७	८	२३	२६	तुलायाम्	७	३	५	२०	७	६	४१	३९
२५	४०	१४	बु.	२०	२४	वि.	५६	३२	शो.	३१	५४	श.	२०	२४	९	२४	२७	वृ.३९।५४	७	३	५	२०	७	७	४२	३४
२५	३९	३०	.	२५	४७	अनु.	६०	००	अ.	३३	१६	ना.	२५	४७	१०	२५	२८	वृश्चिके	७	४	५	२०	७	८	४३	३१

(११ नवं. से २५ नवं. १९५४ ई.) द. अ. गो. हेमन्ततुः

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्त वाद खमध्यसे पश्चिममें, बु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। गुरु पूर्वरात्रि में पूर्व में दीखेगा। ति. १० से शुक्र पूर्व में [उदय, ति. १२ से शनि पूर्व में उदय होगा। ५६

स्वा. बुधः २९।१९

भ. ५०।८ उ.

भ. १७।२४ या. श्री गणेश ४ व्र:

धनि. भौमः ३९।१५ व.तुलायां शुक्रः २।१४ विशाखा.१ शनिः ४।३७

भ. ४।५९ उ. ३३।५२ या.सं. वृश्चिकेऽर्कः २३।४२ मु.३० पुण्यं७।४२ उ.

वक्रीगुरुः ४५।०, श्री महाकाल भैरवाष्टमी (निशीथिनी व्यापिनीत्वात्

भ. ३२।४९ उ. अनु. रविः ४९।१४

भ. ३।३६ या.

पूर्वोदयः शुक्रः २२।४८ उदितः शनिः ५५।५८, उत्पन्ना ११ व्र. स.,

सोमप्रदोष व्र., मला १२, सा. धनुषिभानुः २६।९,

भ. १५।७ उ. ४७।४५ या. विशाखा. बुधः ९।२०,व.पुष्ये १ गुरुः २७।२१

कुम्भे भौमः १९।३४, देविकास्नानं, मेला पुरमण्डल,

मार्ग० कृ० ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः २२७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
७	९	६	३	६	६	८	२
१	२५	१२	६	२७	२०	१४	१४
३७	३७	५८	४४	२९	२७	३१	३१
२८	४०	१९	००	३५	५६	१०	१०
६०	४०	७१	००	३५	७	३	३
४५	१५	२०	१	५०	१६	११	११
क्रांतिः	मा	मा	व.	व.	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
वि	ध.	स्वा	पु.	वि	वि	पू.षा.	आर्द्रा
४	१	२	२	३	१	१	३

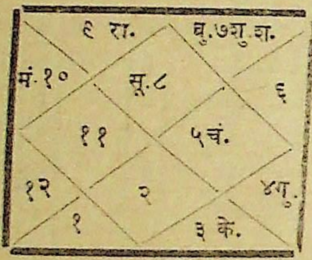

इस पक्ष में मध्यम श्रेणीके पुरुषों में किसी राजनैतिक कारण वश असंतोष हो। सत्ताधारी वा नेताओं को यात्रा में सावधानी चाहिये। राई मद्य सुवर्ण चांदी आदि धातुओं और ऊनी वस्त्रों में खासी तेजी आवे। गुड़ खंड घृत रुई सूत्र में मंदी हो। पक्षारम्भ में चांदी खरीदने से और रुई वेचने से लाभ हो। ति. १० के अनन्तर सरसों विनौला मूंगफली अलसी गेहूं अनाज आदिक में मन्दी हो। लोहा, जिस्त, सीसा, रंग आदिक काले पदार्थ और घास, लकड़ी, गुड़, खंड, नारियल, रंगीन वस्त्रों में तेजी आवे। ति. ८ से ४१ दिन के अन्दर किसी जगविश्रुत महापुरुष की मृत्यु होवे।

मार्ग० कृ० ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः २३४

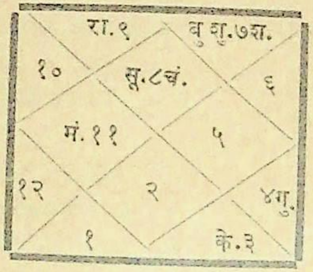

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
७	१०	६	३	६	६	८	२
८	००	२२	६	२३	२१	१४	१४
४३	२८	४१	३७	५८	१७	८	८
३१	६	६	४६	४२	१०	५३	५३
६०	४१	८७	१	२५	६	३	३
५७	४२	४७	३१	५०	५९	११	११
क्रांतिः	मा	मा	व.	व.	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु.	ध.	वि	पु.	वि	वि	पू.षा.	आर्द्रा
२	३	१	१	२	१	१	३

ति. १ और ति. ३ से ८ तक तथा ११, १२ को पश्चिम एवं उत्तर के प्रान्तों में कहीं २ बादल चाल व बून्दाबान्दी हो।

शकुन विचार—मगसिर की तिथि सप्तमी नवमी दिश ईशान। वायु चले बादर दिखे बरसा थोड़ी जान॥

संवत् २०११ शकः १८७६ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः १७ | हि| अं.| मु.| चन्द्र | सू. उ.| सू. अ. | नित्यसूर्यस्पष्टः | (२६ नवं० से ९ दि० १९५४ ई०) द० आ० गो० हेमन्ततुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि	अं.	मु.	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	३७	१	शु.	३०	४८	अनु.	२	५४	सु.	३४	१६	ब.	३०	४८	११	२६	२९	वृश्चिके	७	५	५	२०	७	९	४४	२९
२५	३५	२	श.	३५	९	ज्ये.	८	४४	धृ.	३४	४८	बा.	२	५८	१२	२७	३०	ध. ८।४४	७	५	५	२०	७	१०	४५	२९
२५	३४	३	र.	३८	२३	मू.	१३	४३	शू.	३४	३१	तै.	६	४६	१३	२८	१	धनुषि	७	६	५	२०	७	११	४६	३०
२५	३२	४	चं.	४०	३६	पू.षा.	१७	३५	गं.	३३	२२	ब.	९	२९	१४	२९	२	म. ३३।१६	७	७	५	२०	७	१२	४७	३२
२५	३०	५	मं.	४१	२५	उषा.	२०	१८	वृ.	३१	११	ब.	११	००	१५	३०	३	मकरे	७	७	५	२०	७	१३	४८	३६
२५	२८	६	बु.	४०	५५	श्र.	२१	४४	ध्रु.	२८	००	कौ.	११	१०	१६	दि१	४	कुं. ५१।४९	७	८	५	२०	७	१४	४९	४०
२५	२६	७	गु.	३९	१४	ध.	२१	५५	आ.	२३	५०	ग.	१०	४	१७	२	५	कुम्भे	७	९	५	२०	७	१५	५०	४६
२५	२५	८	शु.	३६	२५	श.	२०	५९	ह.	१८	४५	वि.	७	४९	१८	३	६	कुम्भे	७	१०	५	२०	७	१६	५१	५३
२५	२३	९	श.	३२	३८	पूभा.	१९	४	व.	१२	५५	बा.	४	३१	१९	४	७	मी. ४।३२	७	११	५	२०	७	१७	५३	२
२५	२१	१०	र.	२८	४	उभा.	१६	१९	सि.	६/९	२३/१२	तै.	०	२१	२०	५	८	मीने	७	११	५	२०	७	१८	५४	११
२५	१९	११	चं.	२२	५२	रे.	१२	५४	व.	५१	४२	वि.	२२	५२	२१	६	९	मे. १२।५४	७	११	५	२०	७	१९	५५	२०
२५	१८	१२	मं.	१७	१५	अ.	९	१	प.	४३	५२	बा.	१७	१५	२२	७	१०	मेषे	७	१२	५	२०	७	२०	५६	३१
२५	१६	१३	बु.	११	२४	भ.	४	५३	शि.	३५	५६	तै.	११	२४	२३	८	११	वृ. १८।४९	७	१३	५	२०	७	२१	५७	४४
२५	१५	१४	गु.	५	३०	कृ.	५६	३१/३४	सि.	२८	६	व.	५	३०	२४	९	१२	वृषे	७	१४	५	२०	७	२२	५८	५६
अवम		१५	शु.	५४	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रहदर्शन–मं. सूर्यास्तबाद खमध्यसे पश्चिमको आता दीखेगा ति. ५ से बुध पूर्व म अस्त होगा, गुरु पूर्व रात्रि में पूर्व में शु. श. सूर्योदय से *

* पहिले पूर्व में दीखेंगे ।

चन्द्रदर्शनम्, मू. ।।।।।ऽ अ. ऽ।।। ल. ६ आवश्यके,.

रविउलाखर मु. ४ A ऽऽ।। ल. ६ आवश्यके

भ. ९।२९ उ. ४०।३६ या., वृश्चिके बुधः ५०।३८, उ. षा. ।ऽ।।।ऽ नृ. A

दिसम्बर १२ ता. ३१ पूर्वास्तो बुधः ५१।१० चम्पा ६, पञ्चक प्रा. ५१।४९

भ. ३९।१४ उ. ज्ये. रविः ४८।२१ अनु. बुधः १।०

भ. ७।४९ या. शतेभौम.: ५१।२८

उ. भा. ऽ मं. ।।।।।।।।। ल. ४

भ. ५५।२८ उ.

भ. २२।५२ या. मार्गशुक्ः ९।३४ मोक्षदा ११ व्र. श्रीगीता B

भौमप्रदोष व्र. B जयन्ती, पञ्चक समाप्तिः १२।५४

मध्याह्ने पिशाच मोचन श्राद्धम्,

भ. ५।३० उ. ३२।३७ या. श्री दत्त जयन्ती, सत्यव्रतम्,

मार्ग शु. ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः २४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	३	६	६	८	२
१९	९	४	९	२१	२२	१३	१३
५१	३	५०	१८	३९	१२	४३	४३
५३	५०	४८	२३	११	१५	२६	२६
६१	४२	९२	३	८	६	३	३
७	८	२१	३	१६	४६	११	११
क्रां	मा	मा	व.	व.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये.	ध.	[illegible]	[illegible]	वि	वि	[illegible]	[illegible]
१	४	१	१	१	१	१	३

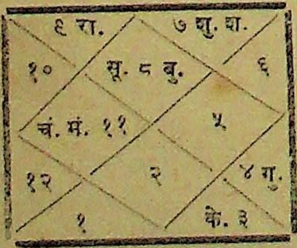

इस पक्ष में कहीं खेती में किसी तरह से हानि हो। स्वार्थपरायण पश्चिमी राष्ट्रों में अनतिक दुर्भावनायें जोर पकड़ें, भारत का गौरव बढ़े। रुई अलसी में काफी घटा-बढ़ी होकर तेजी आवे। सुवर्ण, घृत, तेल के भाव में मन्दी हो। ति. ५ से गेहूं मूंगी, अफीम के भाव में कुछ मन्दी, चांदी का रुख तेज हो। ति. ८ से चावल, अलसी, सरसों, एरण्ड, पारा और गुड़, खंड में तेजी का असर होवे। रुई में कुछ मन्दी। ति. १० के बाद अनाज घृत गुड़ का संग्रह करने से आगे अच्छा लाभ होवे।

ति. ४ से ७ तक और १० से १३ तक कहीं मामूली बादल चाल दिखाई दे।

मार्ग शु. १४ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः २४८

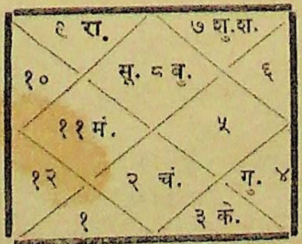

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	३	६	६	८	२
२२	१०	१४	५	२१	२२	१३	१३
५८	१७	१०	५६	३८	५२	२४	२४
५९	४५	००	१६	४	१	२२	२२
६१	४२	९३	४	५	६	३	३
१५	२८	४२	९	३६	३२	११	११
क्रां	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
ज्ये	श.	[illegible]	[illegible]	वि.	वि.	[illegible]	[illegible]
२	२	४	१	१	१	१	३

ति. १४ को आन्धी तूफान से बहुत जगह हानि हो, कहीं २ छप्पर, टीन भी उड़ जावें।

शकुन वि.–मगशिर शुक्ला पक्ष में तिथि की होवे हानि। रोग दोष दुर्भिक्ष हो यह तुम निश्चय जान ॥

संवत् २०११ शकः १८७६ पौष कृष्णपक्षः १८										हिं.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.	सू. अ.	नित्यसूर्य स्पष्टः
वि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	मार्ग.	दिं.	ता.	संचारः	रेल्वे	रेल्वे	उदयकाले
२५ १३	१	शु.	५४ २६	मृ.	५२ ५२	सा.	२० २५	बा.	२७ ५	२५	१०	१३	मि२४।४३	७ १४	५ २०	७ २४ ० १४
२५ ११	२	श.	४९ ४७	आ.	४६ ६	शु.	१३ ६	तै.	२२ १	२६	११	१४	मिथुने	७ १५	५ २०	७ २५ १ २६
२५ १०	३	र.	४५ ३५	पुन.	४७ २२	शु.	६ १९	व.	१७ ३६	२७	१२	१५	क.३२।५७	७ १६	५ २०	७ २६ २ ४६
२५ ८	४	चं.	४२ २५	पु.	४५ ४८	ब्र.	५४ ४७	व.	१४ ०	२८	१३	१६	कर्के	७ १७	५ २०	७ २७ ४ ५
२५ ७	५	मं.	४० २२	श्ले.	४५ १६	वै.	५० ११	कौ.	११ २३	२९	१४	१७	सिं४५।१९	७ १८	५ २०	७ २८ ५ २५
२५ ५	६	बु.	३९ ३०	म.	४६ ४	वि.	४६ ३६	ग.	९ ५६	पौ१	१५	१८	सिंहे	७ १८	५ २०	७ २९ ६ ४५
२५ ३	७	गु.	३९ ५६	पू.फा.	४८ ४	प्री.	४४ १	वि.	९ ४३	२	१६	१९	सिंहे	७ १९	५ २०	८ ० ८ ५
२५ २	८	शु.	४१ ४२	उफा.	५१ २२	आ.	४२ २५	श.	१० ४९	३	१७	२०	क. ३१५३	७ २०	५ २१	८ १ ९ २६
२५ ०	९	श.	४४ ३५	ह.	५५ ४५	सौ.	४१ ४५	तै.	१३ ५	४	१८	२१	कन्यायाम्	७ २१	५ २१	८ २ १० ४८
२४ ५९	१०	र.	४८ ३८	चि.	६० ०	शो.	४१ ५७	व.	१६ ३६	५	१९	२२	तु.२८।२८	७ २१	५ २१	८ ३ १२ १०
२४ ५७	११	चं.	५३ २९	चि.	१ ११	अ.	४२ ४३	ब.	२१ ३	६	२०	२३	तुलायाम्	७ २२	५ २२	८ ४ १३ ३२
२४ ५६	१२	मं.	५८ ५०	स्वा.	७ १८	सु.	४३ ५७	कौ.	२६ ९	७	२१	२४	वृ.५७।११	७ २३	५ २२	८ ५ १४ ५४
२४ ५४	१३	बु.	६० ०	वि.	१३ ४९	धृ.	४५ १९	ग.	३१ ३३	८	२२	२५	वृश्चिके	७ २४	५ २२	८ ६ १६ १८
२४ ५६	१३	गु.	४ १६	अन.	२० १८	शू.	४६ २७	व.	४ १६	९	२३	२६	वृश्चिके	७ २४	५ २२	८ ७ १७ ४२
२४ ५७	१४	शु.	९ १५	ज्ये.	२६ १९	गं.	४७ ८	श.	९ १५	१०	२४	२७	ध.२६।१९	७ २४	५ २३	८ ८ १९ ७
२४ ५९	३०	श.	१३ ३३	मू.	३१ ३५	वृ.	४७ ९	ना.	१३ ३३	११	२५	२८	धनुषि	७ २४	५ २४	८ ९ २० ३३

(१०दिसं०से२५दिसं.१९५४ ई.) द.गो.हेमं.साय.मक.उ.अ.* ५८

ग्रहदर्शन–मं. सूर्यास्तबाद खमध्यसे पश्चिम में और गुरु पूर्व में दीखेंगे। बुध अस्त है। शु. श. सूर्योदय से पहले पूर्व में दीखेंगे। | * शिशिरर्तुः

ज्ये. बुधः ३५।५७ मूले ४ राहु. आर्द्रा. २ केतुः २२।१८

भ. १७।३६ उ. ४५।३५ या.

विशाखायां २ शनिः २१।९ श्रीगणेश ४ व्र.,

भ. ३९।३० उ., सं. मूलेधनुष्यर्कः ५२।७ मु. ३० पुण्यं परदिने ८।७ या., भ. ९।४३ या.

भ. १६।३६ उ. ४८।३८ या. धनुषि मूले बुधः ५१३५

सफला ११ व्र.,

निम्बा. ११व्र., सा. मकरे भानुः ५१।९, उत्तरायणं, शिशिरर्तुप्रारम्भः,

पू. भा. भौमः ३६।१५ प्रदोषव्रतम्,

भ. ४।१६ उ. ३६।४५ या.

पौष–कृ० ८ शुक्र–इष्टम् ०।० दिनगणः २५६

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	७	३	६	६	८	२
१	१५	२६	५	२३	२३	१२	१२
९	५९	४१	१६	४४	४२	५८	५८
२६	२६	५४	४०	५१	४८	५५	५५
६१	४२	९४	५	२३	६	३	३
२१	५६	२०	३६	१	८	११	११
	मा.	मा.	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.		
मू.	श.	ज्ये.	पु.	वि.	वि.	मू.	आर्द्रा
१	३	४	१	२	२	४	२

इस पक्ष में कहीं–मशीनरी से जन-धन की हानि प्रजा में पेट की बीमारी से कष्ट हो। कहीं खड़ी खेतियों में हानि पहुंचे। चावल गेहूं का भाव कुछ तेजी रहे। रुई में मन्दी का रुख और चांदी सोना घृत में तेजी रहेगी। व्यापारियों को चाहिये इस मास में खरीद व फरोखत साथ की साथ करते रहें तो लाभ होगा, संग्रह (स्टाक) करना ठीक नहीं। दूध देनेवाले पशु नारियल मेवा जात किशमिश आदि सस्ते रहें। ति. १० से चांदी में मन्दी का टका आवे, ति. १३ से तिल तेल सुपारी रुई और अलसी में तेजी रहे।

ति. ४ से १२ तक कहीं बून्दाबान्दी के योग पाये जाते हैं।

पौष कृ० ३० शनाविष्टम ०।० दिनगणः २६४

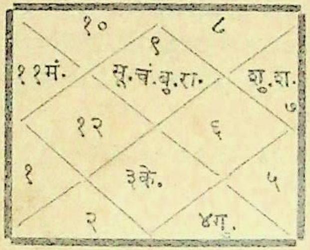

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	८	३	६	६	८	२
९	२१	९	४	२७	२४	१२	१२
२०	४२	२१	२७	४८	३०	३३	३३
३३	४८	३७	२५	५३	२६	२८	२८
६१	४२	९५	६	३५	५	३	३
२६	५५	१४	३६	१९	४६	११	११
	मा.	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू.	पू.भा.	मू.	पु.	वि	वि	मू.	आर्द्रा
३	१	३	१	३	२	४	२

शकुन विचार—पौ. कृ. ८ को जो पूर्व दिशा में बादल हो और गर्जना भी सुनाई दे तो आगे तृण और अनाज तेज होवेगा। तेरस. चौदश-मावसपौष वदी में जान। तीन दिनों में वर्षा हो व्यापार वर्षा जान। ... के पारे भी विचार होगी।

(२६दिसं०से८जनवरी१९५४–५५ ई.,) उ.अ.द.गो.शिशिरतुः

संवत् २०११ शक: १८७६ पौष शुक्लपक्षः १९

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	०	१	र.	१६	४५	पू.षा.	३५	४५	ध्रु.	४६	१५	ब.	१६	४५	१२	२६	२६	म. ५१।३१	७	२५	५	२५	८	१०	२२	०
२५	२	२	चं.	१८	५५	उ.षा	३८	३६	व्या	४४	२६	कौ.	१८	५५	१३	२७	१	मकरे	७	२५	५	२६	८	११	२३	२७
२५	४	३	मं.	१६	३९	श्र.	४०	३३	ह.	४१	३७	ग.	१६	३९	१४	२८	२	मकरे	७	२५	५	२७	८	१२	२४	५३
२५	५	४	बु.	१९	६	ध.	४१	५	व.	३७	४७	व.	१६	६	१५	२९	३	कुं. १०।४९	७	२६	५	२८	८	१३	२६	२०
२५	७	५	गु.	१७	१६	श.	४०	२५	सि.	३३	१	बा.	१७	१६	१६	३०	४	कुम्भे	७	२६	५	२९	८	१४	२७	४६
२५	९	६	शु.	१४	२८	पू.भा	३८	४४	व्य.	२७	२५	तै.	१४	२८	१७	३१	५	मी. २४।१६	७	२६	५	३०	८	१५	२९	१२
२५	११	७	श.	१०	२६	उ.भा	३६	१३	व.	२१	६	व.	१०	३६	१८	ज१	६	मीने	७	२६	५	३०	८	१६	३०	३८
२५	१२	८	र.	६	०	रे.	३२	५७	प.	१४	१४	ब.	६	००	१९	२	७	मि. ३२।५७	७	२६	५	३१	८	१७	३२	४
२५	१४	९	चं.	०	४६	अ.	२९	१४	शि.	५६	५९	कौ.	०	४६	२०	३	८	मेषे	७	२६	५	३२	८	१८	३३	२९
अवम		१०	बु.	५४	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	१५	११	मं.	४९	१८	भ.	२५	८	सा.	५१	१२	ब.	२२	१३	२१	४	९	वृ. ३९।५	७	२७	५	३३	८	१९	३४	५४
२५	१७	१२	बु.	४३	२४	कृ.	२०	५६	शु.	४३	१८	ब.	१६	२१	२२	५	१०	वृषे	७	२७	५	३३	८	२०	३६	२१
२५	१९	१३	ग.	३७	४३	रो.	१६	५०	शु.	३५	३१	कौ.	१०	३३	२३	६	११	मि ४४।५६	७	२७	५	३४	८	२१	३७	४७
२५	२०	१४	श.	३२	२६	मृ.	१३	३	ब्र.	२८	४	ग.	५	४	२४	७	१२	मिथुने	७	२७	५	३५	८	२२	३९	१२
२५	२२	१५	श.	२७	४०	आ.	२९	४९	ऐं	२१	४	वि.	०	३	२५	८	१३	क. ५२।५३	७	२७	५	३६	८	२३	४०	३७

(२६दिसं०से८जनवरी१९५४–५५ ई.,) उ.अ.द.गो.शिशिरर्तुः

ग्रह दर्शन–मं. सूर्यास्तिबाद खमध्यसे पश्चिम में और गुरु पूर्व में दीखेंगे। बु. अस्त है, शु. श. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे।

चन्द्रदर्शनम्, [☬जालन्धर,

पू. षा. बुधः २९।१९ जमादि उलावल मु.५, मेला बाबा हरवल्लभ ☬

भ. ४९।२५ उ. पू.षा. रविः ५३।५० वृश्चिके शुक्रः २४।२५

भ. १९।६ या., पञ्चक प्रा. १०।४९

[*सन् १६५५ ई., जन्मदिन सिक्ख श्री गुरु गोविन्दसिंहजी,

भ. १०।३९ उ. ३८।१९ या., अनु. शुक्रः ५६।३५ जनवरी १ ता. ३१*

पञ्चक स. ३२।५७

व. पुन. ४ गुरुः १९।३९

भ. २२।१३ उ. ४९।१८ या. उ. षा. बुधः ४२।५७, पुत्रदा ११ व्र.

मीने भौमः ३५।२४

मकरेबुधः ४४।४१, प्रदोष व्रतम्,

भ. ३२।२६ उ.

भ. ०।३ या. सत्य व्र., माघ स्नान व्रतनियमाद्यारम्भश्च,

पौष शु. ८ रव्याविष्टम् ०।० दिनगणः २७२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	१०	८	३	७	६	८	२
१७	२३	२२	३	३	२५	१२	१२
३२	३६	१४	३०	२२	१४	८	८
४	०	३१	१०	४१	५३	१	१
६१	४२	९७	७	४६	५	३	३
२९	५२	३३	३८	५९	२१	११	११
क्रां	मा	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा.	पू.भा.	पू.षा.	पु.	ज्ये	विशा.	मू.	आर्द्रा
२	३	३	१	१	२	४	२

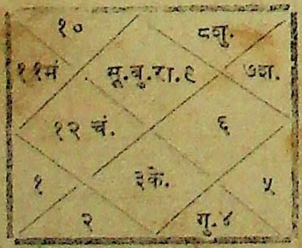

इस पक्ष में पूर्वी पाकिस्तान में उत्पात व प्रजा में शासक वर्ग से मतभेद बढ़े। पश्चिमी पाकिस्तान में साम्य वादियों का जोर बढ़े। रुई सूत के भाव में काफी घटा बढ़ी होकर अन्त में मन्दे का रुख रहे। घृत खण्ड गुड़ तेल सरसों में तेजी की चाल रहे। ति. ११ से सोना, घास, चारा, लकड़ी, रुई, ऊन और पशुओं के भाव में तेजी हो। चांदी में घटा-बढ़ी बहुत हो, उड़द मूंग का भाव कुछ गिरेगा। पूर्णमासी का वायदा तेजी में रहेगा। मिर्च, तोरिया, सुपारी, एल्युमीनियम के भावों में खासी तेजी रहेगी।

इस पक्ष में प्रायः बादल चाल रहेगी।

पौष शु.१५ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः २७८

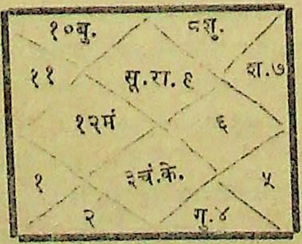

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	९	३	७	६	८	२
२३	१	२	२	८	२५	११	११
४०	४३	४	४३	१८	४५	४८	४८
३७	१०	१५	४६	०	१	५७	५७
६१	४२	९९	७	५०	४	३	३
२५	५२	४	४९	४०	५२	११	११
क्रां	मा	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा.	पू.भा.	उ.षा	पुन.	अनु	वि	मू.	आर्द्रा
४	४	२	४	२	२	४	२

पंजाब एवं यू. पी. के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग में कहीं २ ति. ४ से ८ तक और १२ से १५ तक साधारण वर्षा के योग हैं। श. वि.–पौष सु. चौदश दिना बिजली का घनघोर। शुभ वर्षा आषाढ़ में बोलें दादुर मोर॥ ति. ७।८।९ को जल बर्षे तो आगामी चौमासा उत्तम रहे। यदि ति. १३ को जल बरसे तो गेहूं आगे तेज हो, रोकने में लाभ होवेगा।

संवत् २०११ शकः १८७६ माघकृष्णपक्षः २० | (९ जन० से २३ जन. १९५५ ई०) उ. द. गो. शिशिरतुः

वि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ह.	अं.	सु.	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले				ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद पश्चिम में और गुरु पूर्व में दीखेंगे। ति. ७ से बुध-पश्चिम में उदय होगा। शु. श. अर्द्धरात्रिबाद पूर्व में दीखेंगे।
२५	२४	१	र.	२३	४४	पुन.	७	१४	वै.	१४	४२	कौ.	२३	४४	२६	९	१४	कर्के	७	२८	५	३६	८	२४	४२	२	
२५	२५	२	चं.	२०	४२	पु.	५	३०	वि.	९	००	ग.	२०	४२	२७	१०	१५	कर्के	७	२८	५	३८	८	२५	४३	२७	भ. ४९।४३ उ., उ. षा. रविः ५५।१३ उ. भा. भौमः १५।३२
२५	२७	३	भं.	१८	४५	श्ले.	४	४७	प्री.	४	१०	वि.	१८	४५	२८	११	१६	सिं. ४।४७	७	२८	५	३८	८	२६	४४	५१	भ. १८।४५ या., श्री गणेशजन्म ४ व्र. (सङ्कटहरणी) चन्द्रोदयः ८।४९
२५	२८	४	बु.	१८	००	म.	५	१७	आ.	[illegible]	[illegible]	वा.	१८	००	२९	१२	१७	सिंहे	७	२८	५	३९	८	२७	४६	१५	श्रवणे बुधः ४७।५५
२५	३०	५	गु.	१८	३४	पू.फा	७	००	सौ.	५५	२१	तै.	१८	३४	३०	१३	१८	कं. २२।४५	७	२८	५	३९	८	२८	४७	३८	लोहड़ी महोत्सवः (पञ्जाब देशे)
२५	३२	६	शु.	२०	३०	उ.फा	९	५६	अ.	५४	२३	व.	२०	३०	म१	१४	१९	कन्यायाम्	७	२८	५	४०	८	२९	४९	२	भ. २०।३० उ. ५२।० या. सं. मकरेऽर्कः १०।४५ मु. ३० पुण्यं १०।४५ उ.
२५	३३	७	श.	२३	३१	ह.	१४	७	सु.	५४	१७	व.	२३	३१	२	१५	२०	तु. ४६।४३	७	२८	५	४१	९	०	५०	२५	पश्चिमोदयो बुधः २६।३७, अनन्त श्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती,
२५	३५	८	र.	२७	४३	च.	१९	२०	ध.	५४	५६	कौ.	२७	४३	३	१६	२१	तुलायाम	७	२८	५	४२	९	१	५१	४६	स्वा. ।।।।। अ. ऽऽ।। ल. गोधूलि,
२५	३७	९	चं.	३२	४०	स्वा.	२५	१९	शू.	५६	१	तै.	००	११	४	१७	२२	तुलायाम्	७	२८	५	४२	९	२	५३	६	ज्येष्ठा. शुक्रः २१।२०
२५	३८	१०	मं.	३८	००	वि.	३१	४८	गं.	५७	२८	व.	५	२०	५	१८	२३	वृ. १५।११	७	२८	५	४३	९	३	५४	२४	भ. ५।२० उ. ३८। ० या.
२५	४०	११	बु.	४३	२६	अ.	३८	२१	वृ.	५८	४३	ब.	१०	४३	६	१९	२४	वृश्चिके	७	२७	५	४४	९	४	५५	४३	षट्तिला ११ व्र. स., अनु ।ऽ।।।ऽऽ।। ल. गोधूलि.
२५	४३	१२	गु.	४८	२५	ज्ये.	४४	२९	ध्रु.	५९	३६	कौ.	१६	२५	७	२०	२५	ध. ४४।२९	७	२७	५	४४	९	५	५७	०	अभि. प्र. रविः ४१।५९ विशा. ३ शनिः ३७।४५, सा. कुम्भे भानुः १०।१
२५	४६	१३	शु.	५२	३९	म.	४९	५७	व्या	५९	५६	ग.	२०	३२	८	२१	२६	धनुषि	७	२७	५	४५	९	६	५८	१६	भ. ५२।३९ उ. धनि. बुधः ०।१३, प्रदोषव्रतम्,
२५	४९	१४	श.	५५	४७	पू.षा	५४	२३	ह.	५९	२१	वि.	२४	१३	९	२२	२७	धनुषि	७	२७	५	४६	९	७	५९	३२	भ. २४।१३ या.
२५	५३	३०	र.	५७	४८	उ.षा	५७	४३	व.	५७	५८	च.	२६	४७	१०	२३	२८	म. १०।१३	७	२७	५	४७	९	९	०	४८	श्रवणे रविः ५८।२ द्वापरयुगादि, मौनी ३० प्रयागस्नाने महत्फलम्,

माघ कृ० ८ स्वाविष्टम् ०।० दिनगणः २८६

सू.	.	.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	११	९	३	७	६	८	२
१	७	१५	१	१५	२६	११	११
५१	२६	१७	४०	५४	२१	२३	२३
४६	४	५४	६	१५	१३	३०	३०
६१	४२	९८	८	५५	४	३	३
२१	५२	४५	४	२०	१६	११	११
मार्ग:	मा	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा.	उ.भा.	श्र.	पुनं.	पुनं.	वि	मू.	आर्द्रा
२	२	२	४	४	२	४	२

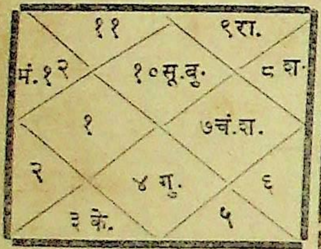

इस पक्ष में राज कर्मचारियों में परस्पर मतभेद हो। राजकीय मामलों में विशेष उलट फेर से प्रजा में असन्तोष। गुड़ सरसों घृत चणा इनमें घटा-बढ़ी होकर अन्त में तेजी का रुख हो। सुगंधित पदार्थ चन्दन कपूर देवदारु और अनाज, रुई, एरंड, मजीठ, अलसी, लकड़ी के भाव में तेजी रहे। लोहा, जिस्त, पीतल, रंग पहले तेज होकर पीछे मन्दा हो। अगर इस पक्ष में चणा और चावल के भाव में मन्दा गिरे तो खरीद करना लाभप्रद है, आगे वैशाख में अच्छा लाभ हो। ति. ६ से ८ तक—व्यापार में अकल्पित घटा-बढ़ी चलेगी सावधान? ति. ९ से सोना-चांदी चावल गेहूं में मन्दे का असर हो। ति. ५ से १३ तक बादल चाल, ठण्डी हवा व कहीं २ मामूली छींटा-छांटी भी हो। ति. , ७, ८ को वायु का जोर ज्यादा रहे।

माघ कृ० ३० स्वाविष्टम् ०।० दिनगणः २९३

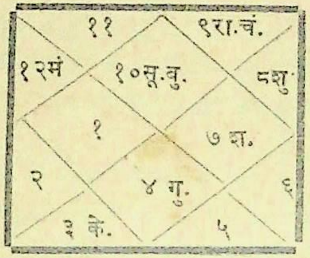

सू.	मं.	.	.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	८	३	७	६	८	२
९	१२	२६	०	२२	२६	११	११
००	२६	१६	४३	४	४८	१	१
४८	२९	४९	३८	१४	५१	१५	१५
६१	४२	८७	७	५८	३	३	३
१६	५२	२१	५४	५५	३९	११	११
मार्ग:	मा	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा	उ.भा.	ध.	पुनं.	ज्ये	वि	मू.	आर्द्रा
४	३	१	४	२	३	४	२

घ. वि.—माघ वदी जो पंचमी बादल होवे जान। वर्षा कछ होवे नहीं भादों वर्षा जान। माघबदी जो ६ को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास।

संवत् २०११ शकः १८७६ माघशुक्ल पक्षः २१

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि	अं.	म.	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्य स्पष्टः उदयकाले			
२५	५७	१	च.	५८	२७	श्र.	५६	४८	सि.	५५	३०	कि.	२८	७	११	२४	२६	मकरे	७	२६	५	४८	६	१०	२	२
२६	१	२	मं.	५७	४६	ध.	६०	००	व्य.	५२	४	बा.	२८	८	१२	२५	३०	कुं. ३०।१२	७	२५	५	४९	६	११	३	१४
२६	५	३	बु.	५५	५६	ध.	०	३६	व.	४७	३७	तै.	२६	५२	१३	२६	१	कुम्भे	७	२५	५	५०	६	१२	४	३६
२६	८	४	गु.	५३	१	श.	[illegible]	[illegible]	प.	४२	२०	व.	२४	२८	१४	२७	२	मी. ४४।६	७	२४	५	५१	६	१३	५	३७
२६	१२	५	शु.	४६	८	उ.भा	५६	२८	शि.	३६	१९	व.	२१	४	१५	२८	३	मीने	७	२४	५	५२	६	१४	६	४६
२६	१६	६	श.	४४	२६	रे.	५३	१६	सि.	२६	३६	कौ.	१६	४७	१६	२९	४	मे. ५३।१८	७	२३	५	५२	६	१५	७	५५
२६	२०	७	र.	३९	९	अ.	४९	४३	सा.	२२	२०	ग.	११	४७	१७	३०	५	मेषे	७	२२	५	५३	६	१६	९	२
२६	२४	८	चं.	३३	३०	भ.	४५	४६	शु.	१४	४५	वि.	६	१६	१८	३१	६	वृ. ५९।४२	७	२१	५	५४	६	१७	१०	७
२६	२७	९	मं.	२७	३७	कृ.	४१	३०	शु.	[illegible]	[illegible]	बा.	०	३३	१९	फ. १	७	वृषे	७	२१	५	५६	६	१८	११	११
२६	३१	१०	बु.	२१	४३	रो.	३७	२४	ऐ.	५१	१५	ग.	२१	४३	२०	२	८	वृषे	७	२१	५	५७	६	१९	१२	१४
२६	३५	११	गु.	१६	३	मृ.	३३	३३	वै.	४३	४५	वि.	१६	३	२१	३	९	मि. ५।२८	७	२०	५	५८	६	२०	१३	१६
२६	३९	१२	शु.	१०	४६	आ.	३०	८	वि.	३६	३४	बा.	१०	४६	२२	४	१०	मिथुने	७	१९	५	५९	६	२१	१४	१५
२६	४३	१३	श.	६	४	पुन.	२७	२४	प्री.	३०	१	तै.	६	४	२३	५	११	क. १३।५	७	१८	५	५९	६	२२	१५	१३
२६	४६	१४	र.	२	१२	पु.	२५	३३	आ.	२४	८	व.	२	१२	२४	६	१२	कर्के	७	१६	६	००	६	२३	१६	१२
अवम		१५	र.	५७	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	२	०	०	०	०	०

(२४ जन० से ६ फरव० १९५५ ई०) उत्त०द० गोशिशिरर्तुः

ग्रहदर्शन–मं. में. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और गुरु पूर्व में दीखेंगे । शु. श. अर्द्धरात्रिबाद पूर्व में दीखेंगे । ति. १४ से बुध पश्चिम में अस्त होगा ।

अभि. नि. रविः ५०।१७, श्री वल्लभ ज.,

कुम्भेबुधः ४०।५६ चन्द्रदर्शनम्, पञ्चकप्रारम्भः ३०।१२,

जमादि उलाखर मु. ६,

भ. २४।२८ उ. ५३।१ या.

रेवत्यांभौमः ५५।३९, व. पुन. ३ मिथुने गुरुः ४०।२१, वसन्त ५, श्री ५,

पञ्चक स. ५३।१६.

भ. ३९।९ उ. धनषि मूले शुक्रः ४२।४६, रथ ७ (अरुणोदय स्नाने D

भ. ६।१९ या. भीष्माष्टमी (भीष्मायजलदानम्)

फरवरी २ ता. २८ [D महत्फलम्,)

भ. ४८।५३ उ.

भ. १६।३ या. वक्रीबुधः २२।६ जया ११ व्र. स.

प्रदोष व्रतम्,

पश्चिमास्तो बुधः ३७।२६,

भ. २।१२ उ. ३०।४३ या. धनि. रविः ३।४६, माघस्नान स., सत्यव्रतम्,

तिथिक्षयः,

माघ शु० ८ चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ३०१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	१०	२	८	६	८	२
१७	१८	५	२९	०	२७	१०	१०
१०	८	६	४२	१८	१४	३५	३५
७	२६	३५	३९	२३	५७	४९	४९
६१	४२	३९	७	६३	२	३	३
५	३९	७	२५	५९	५४	११	११
	मा	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र.	रे.	ध.	पुन.	मू.	वि	मू.	आर्द्रा
३	१	४	३	१	३	४	२

इस पक्ष में मजदूर वर्ग में असन्तोष और यूरोप के किसी मंत्री मंडल में विशेष कारण वश घबराहट उत्पन्न होगी । गेहूँ जौ चावलों के भाव में घटा-बढ़ी होकर रुख मन्दे में रहे । चांदी सुवर्ण मद्य सुपारी लौंग शक्कर में तेजी आवे और अलसी में करीब २ टका की तेजी आवे । ति. ८ से प्रत्येक प्रकार के अनाज में तेजी रहे और शेयरों के भाव भी तेज हों । ति. १० के लगभग बिनौला मूंगफली तिल तेल खरीदने से और रुई बेचने से जल्दी लाभ होवे । ति. १३ को रुई में १५।२० टका की मन्दी आवे और चांदी में तेजी होवे, रेशमी वस्त्र और सूत में मन्दी आवे ।

माघ शु० १४ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ३०७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	११	१०	२	८	६	८	२
२३	२२	५	२८	६	२७	१०	१०
१६	२४	४८	५९	४४	३१	१६	१६
१२	२३	२५	५८	४१	०	४६	४६
६०	४२	१५	६	६४	२	३	३
५९	३९	४४	४८	२८	२९	११	११
	मा	व.	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्र.	रे.	ध.	पुन.	मू.	वि	.	आर्द्रा
४	२	४	३	३	३	४	२

ति. ६, ७, ८ व १० से १५ तक कहीं २ बादल चाल बून्दाबान्दी हो, और ति. १४ को हवा के तूफान से कई जगह हानि हो ।

श. वि.––माघ सुदी सप्तमी बादल बिजली होय । पूर्व उतर बायु चलै संवत अच्छा होय ।। माघ उजाली दूज वा तीज रखो जल धार। चमके दामिनी जानिये चौमासा भयकार ।

संवत् २०११ शकः १८७६ फाल्गुन कृष्णपक्षः २२															हिं.	अं.	मु.	चन्द्र	सू. उ.		सू. अ.		नित्यसूर्यस्पष्टः			
दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	मु.	संचारः	रेल्वे		रेल्वे		उदयकाले			
२२	५०	१	व.	५७	२०	श्ले.	२४	३८	सौ.	१९	२	वा.	२८	१७	२५	७	१३	सिं२४।३८	७	१८	६	१	९	२४	१७	८
२६	५४	२	मं.	५६	४२	म.	२४	५१	शो.	१४	५०	तै.	२७	१	२६	८	१४	सिंहे	७	१७	६	२	९	२५	१८	२
२६	५८	३	बु.	५७	२०	पूफा.	२६	१९	अ.	११	३६	व.	२७	१	२७	९	१५	कं.४१।५९	७	१६	६	२	९	२६	१८	५५
२७	२	४	गु.	५९	२३	उ.	३९	१	सु.	९	२२	व.	२८	२१	२८	१०	१६	कन्यायाम्	७	१५	६	३	९	२७	१९	४६
२७	५	५	शु.	६०	००	ह.	३२	५७	धृ.	७	११	कौ.	३०	५५	२९	११	१७	कन्यायाम्	७	१५	६	४	९	२८	२०	३६
२७	९	५	श.	२	२७	चि.	३७	५८	शू.	७	५०	तै.	२	१७	१फ	१२	१८	तु. ५।२७	७	१४	६	५	९	२९	२१	२५
२७	१३	६	र.	६	४१	स्वा.	४३	५१	ग.	८	२१	व.	६	४१	२	१३	१९	तुलायाम्	७	१३	६	५	१०	०	२२	१४
२७	१७	७	चं.	११	४०	वि.	५०	१७	वृ.	९	२४	व.	११	४०	३	१४	२०	वृ.३३।४१	७	१२	६	६	१०	१	२३	१
२७	२१	८	मं.	१७	३	अ.	५६	५२	ध्रु.	१०	४९	कौ.	१७	३	४	१५	२१	वृश्चिके	७	११	६	७	१०	२	२३	४७
२७	२४	९	बु.	२२	२५	ज्ये.	६०	००	व्या	१२	१५	ग.	२२	२५	५	१६	२२	वृश्चिके	७	११	६	८	१०	३	२४	३१
२७	२८	१०	गु.	२७	१७	ज्ये.	३	१०	हर्ष	१३	२०	वि.	२७	१७	६	१७	२३	ध. ३।१०	७	१०	६	८	१०	४	२५	१२
२७	३२	११	शु.	३१	२४	मू.	८	४९	व.	१३	५६	बा.	३१	२४	७	१८	२४	धनुषि	७	९	६	९	१०	५	२५	५०
२७	३६	१२	श.	३४	२२	पूषा.	१३	३३	सि.	१३	४४	कौ.	२	५३	८	१९	२५	म.२९।२७	७	८	६	१०	१०	६	२६	२८
२७	४१	१३	र.	३६	१५	उ.षा	१७	९	व्य.	१२	४०	ग.	५	१८	९	२०	२६	मकरे	७	७	६	११	१०	७	२७	५
२७	४६	१४	चं.	३६	४४	श्र.	१९	३२	व.	१०	३६	वि.	६	२९	१०	२१	२७	कुं.५०। ३	७	६	६	१२	१०	८	२७	४०
२७	५१	३०	मं.	३५	५९	ध.	२०	३४	प.	७	३१	च.	६	२०	११	२२	२८	कुंभे	७	५	६	१३	१०	९	२८	११

(७ फरवरीसे२२फर० १९५५ई.) उ.अ.व.गो.सा.मीना.वसन्ततु

ग्रहदर्शन–मं. सूर्यास्तबाद पश्चिम में, गुरु पूर्व में दीखेगा। ति. १२ से बुध पूर्व में उदय होगा। शु. श. अर्द्ध रात्रिबाद पूर्व में दीखेंगे। ६२

मघा ।।।। ऽवु. सू. ऽचौ. ऽऽ ।। ल. गोधूलि,

भ. २७।१ उ. ५७।२० या.

श्री गणेश ४ व्र.,

मूले ३ राहुः आर्द्रा १ केतुः १६।२० [× ४७।३८पू. षा. शुक्रः ३।२३

सं. कुम्भेऽर्कः ३८।६ मु. १५ पुण्यं मध्याह्नोत्तरम् व. मकरे बुधः ×

भ. ६।४१ उ. ३९।१० या.

श्री सीता जन्म ८ (अर्धरात्र व्यापिनी होने से), अनु.ऽवृ. ।।।ऽअ. ।ऽ।+

[+ल. १० आवश्यके,

भ. ५४।५१ उ. मेषेऽश्वि. भौम. ४३।४५

भ. २७।१७ या.

विजया ११ व्र. स., सा. मीने भानु :४०।५२, वसन्ततु प्रा.

शतेरविः १३।२५, स. श्रवणे बुधः १९।१२, पूर्वोदयो बुधः ४।५३,

भ. ३६।१५ उ., प्रदोष व्र., श्री महाशिवरात्रि व्र. (अर्धरात्र ÷

भ. ६।२९ या., मेला शिव १४, पञ्चक प्रा. ५०।३

[÷ व्यापिनीहोने से)

फाल्गुन कृ० ८ भौम–इष्टम् ०।० दिनगणः ३१६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	११	९	२	८	६	८	२
२	२८	२७	२८	१६	२७	९	८
२३	४६	३२	४	३५	४८	४८	४८
४७	४८	०	५६	१९	१५	९	९
६०	४२	६६	५	६६	१	३	३
४६	२३	२	३४	३०	२९	११	११
	मा	व.	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	रे.	ध.	पुन.	पूफा.	वि.	मू.	आर्द्रा.
३	४	२	३	१	३	३	१

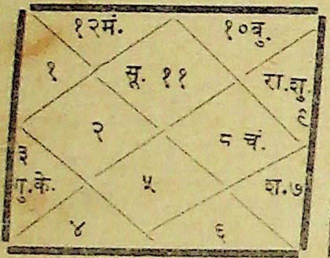

सोना चांदी आदि धातु, मोती, लालमनी आदिक जवाहरात, गेहूं आदि अनाज और नमक मिर्च इनमें तेजी का रुख रहे। अलसी राई तथा सरसों के भाव में मन्दा हो। पशुओं के व्यापार में काले रंग के जानवर से लाभ रहे। गुड़ शक्कर कोयला और लकड़ी का भाव नरम रहेगा ऊन सूत रेशम में एकाएक तेजी अच्छी आवे। ति. ११ से तिल कपास जवार में तेजी। यहां से पहले जो वस्तु मन्दी चलती हो वह तेज और जिनका रुख तेजी पर हो वह मंदी हो कारण इसमें किसी प्रकार की अफवाह होगी।

ति. ३, ९, १० और १२ से ३० तक कहीं २ बून्दाबान्दी हो हवा का भी जोर रहे।

फाल्गुन कृ० ३० भौम–इष्टम् ०।० दिनगणः ३२३

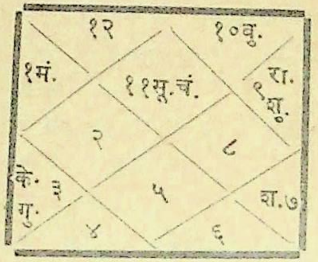

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
१०	०	९	२	८	६	८	२
९	३	२१	२७	२४	२७	९	९
२८	४२	४८	३०	२६	५५	२५	२५
११	१२	२२	२३	५४	४२	४५	४५
६०	४२	२७	४	६७	०	३	३
३१	५	३५	२४	४७	४७	११	११
	मा	व.	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	उफा	श्र.	पुन.	पूफा.	वि	मू.	आर्द्रा.
१	२	४	३	४	३	३	१

घा. वि.–फाल्गुण बदी तीज को जान। दीखे पवन मेघ प्रमान ॥ असोज शुदी में वर्षा होय।
रात दिन बर्षे मन मोय। फाल्गुण कारी दूज दिन निर्मल रहे अकाश। श्रावण भादों जल बहु सचर जाय चौमास।

संवत् २०११ शकः १८७६ फाल्गुन शुक्लपक्षः २३ (२३ फर० से ८ मार्च १९५५ ई.) उ. अ. द. गो. वसन्तर्तुः ।

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद पश्चिम में और गुरु पूर्व में दीखेंगे। बु. शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में और श. अर्धरात्रि में पूर्व में दीखेगा।

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हं. फाल्गुन	अं. फरवरी	मु. रज्जब	चन्द्र संचार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्य सूर्यस्पष्टः उदयकाले				
२७	५६	१	बु.	३३	५५	श.	२०	२७	शि.	३/२८	२६/२६	कि.	४	५७	१२	२३	२९	कुम्भे	७	३	६	१४	१०	१०	२८	४०	उ. षा. शुक्रः ५७।३२ + ३१ उ. ।।।ऽ ल. १० (अश २ उपरान्त)
२८	१	२	गु.	३०	५२	पू.भा	१९	१२	सा.	५२	४३	बा.	२	२३	१३	२४	३०	मी. ४।३१	७	२	६	१४	१०	११	२९	७	चन्द्रदर्शनम्, उ. भा. ।ऽ।।ऽ अ. घ. ३१ या. ऽ।। ल. ६ चं. दा;
२८	६	३	शु.	२६	५५	उ.भा	१७	८	शु.	४६	१५	ग.	२६	५५	१४	२५	१	मीने	७	१	६	१४	१०	१२	२९	३१	भ. ५४।२९ उ., मार्गी बुधः २।५३, रज्जब मु. ७, रेव. ।।।।ऽ नृ.घ. +
२८	११	४	श.	२२	४	रे.	१४	९	शु.	३९	११	वि.	२२	४	१५	२६	२	मे. १४।१९	७	०	६	१५	१०	१३	२९	५३	भ. २२।४ या. मकरेशुक्रः, ५३।२१ पञ्चक स. १४।१९
२८	१६	५	र.	१९	४४	अ.	१०	३६	ब्र.	३१	४६	ब.	१९	४४	१६	२७	३	मेषे	६	५९	६	१६	१०	१४	३०	१३	मेला श्री बाबा सिद्ध बालक नाथ जी,
२८	२१	६	चं.	११	१	भ.	६	३८	ऐं.	२४	००	तै.	११	१	१७	२८	४	वृ. २०।३७	६	५८	६	१७	१०	१५	३०	३२	
२८	२६	७	मं.	५	५	कृ.	२/२८	३६/२६	वै.	१९	११	व.	५	५	१८	१मा	५	वृषे	६	५५	६	१८	१०	१६	३०	५०	भ.५।५उ.३२।७या.,वक्रीशनि.,४०।०मार्च ३ता.३१, होलाष्टकारम्भः,
अवम		८	मं.	५४	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	क्षयतिथिः ,
२८	३०	९	बु.	५३	२९	मृ.	५४	३०	वि.	८	२९	बा.	२९	१९	१९	२	६	मि. २६।२८	६	५३	६	१९	१०	१७	३१	६	
२८	३५	१०	गु.	४८	११	आ.	५१	००	प्री.	३/५८	३/५८	तै.	२०	५०	२०	३	७	मिथुने	६	५२	६	२०	१०	१८	३१	२०	धनि. बुधः ५५।१४
२८	४०	११	शु.	४३	२८	पुन.	४८	७	सौ.	४६	५४	व.	१५	४६	२१	४	८	क. ३३।५०	६	५१	६	२१	१०	१९	३१	३३	भ.१५।४६उ.४३।२८या.,पू.भा.रविः२८।२२,आमला ११ व्र.सर्वेषाम्,
२८	४५	१२	श.	३६	३२	पु.	४६	७	शो.	४०	५१	ब.	११	३०	२२	५	९	कर्के	६	४९	६	२१	१०	२०	३१	४३	‡की जोरदार हवा चले तो राजाओं में युद्ध और प्रजा का नाश होता है।
२८	५०	१३	र.	३६	४०	श्ले.	४४	५६	अ.	३५	३५	कौ.	८	६	२३	६	१०	सिं ४४।५६	६	४८	६	२२	१०	२१	३१	५२	प्रदोष व्रतम्,
२८	५५	१४	चं.	३४	४८	म.	४४	५३	सु.	३१	४	ग.	५	४४	२४	७	११	सिंहे	६	४७	६	२३	१०	२५	३१	५८	भ. ३४।४८ उ. भरि. भौमः ४६।२० श्रवणेशुक्रः ३५।१६
२९	००	१५	मं.	३४	१०	पू.फा	४६	२	धृ.	२७	३८	वि.	४	२९	२५	८	१२	सिंहे	६	४६	६	२४	१०	२३	३२	२	भ. ४।२९ या. सत्यव्रतम्, होलिका दहनम्,

फाल्गुन शु. ७ भौम–इष्टम् ०।० दिनगणः ३३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	००	९	२	९	६	८	२
१६	८	२१	२७	२	२७	९	९
३०	३६	५५	४	२४	५८	३	३
५०	१९	३१	३९	४३	२३	४०	४०
६०	४१	२४	३	६८	०	३	३
१४	२९	६	८	३८	५	११	११
[illegible]	मा	मा	व.	मा	मा	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श.	[illegible]	श्र.	[illegible]	[illegible]	वि	मू.	[illegible]
३	२	४	३	२	३	३	१

× चाहिये। होली के दाह के समय यदि पूर्व की हवा हो तो राजा प्रजा में सुख नैऋत्य कोण की हो तो दुर्भिक्ष, पश्चिम उत्तर और ईशा- *

किसी अफवाह के कारण रुई के भाव में २५।३० टका की घटा-बढ़ी होगी। चांदी में भी घटा-बढ़ी होकर मन्दी खासी आवे। रेशमी वस्त्र तथा ऊनी वस्त्र घृत गेहूं जौ चना आदि अनाज में तेजी आवे। गुड़ खंड शक्कर में कुछ मन्दे का असर होवे। मूंगफली तेल अलसी में ति. ३ से मन्दी होकर फिर ति. ६ से तेजी रहे साथ ही सरसों तमाखू सीमेन्ट के भाव में भी तेजी चले। इस पक्ष के प्रारम्भ में ही रुई की मन्दी का और शेयरों की तेजी का व्यापार करना लाभप्रद है।

इस पक्ष में प्रायः आकाश में बादल चाल रहेगी। ति. ४, ५, ६ और १० से

फाल्गुन शु. १५ भौम–इष्टम् ०।० दिनगणः ३३७

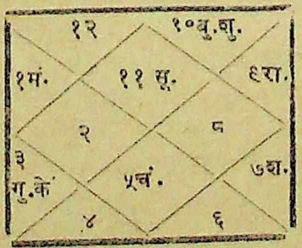

*नकी हो तो सुभिक्ष सुख, अग्नि-कोण की हो तो अग्नि भय, वायव्य की हो तो वायु अधिक ऊपर की हो तो भय और यदि चारों तरफ‡

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	००	९	२	९	६	८	२
२३	१३	२६	२६	१०	२७	८	८
३२	२९	१९	४७	२८	५६	४१	४१
२	३१	२९	५७	४०	६	२६	२६
६०	४१	४८	१	६९	०	३	३
४	४८	२३	४६	३२	३९	११	११
[illegible]	मा	मा	व.	मा	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	भ.	ध.	[illegible]	श्र.	चि	मू.	[illegible]
२	१	१	३	१	३	३	१

१५ तक बहुत जगह कुछ वर्षा होगी कहीं मामूली बून्दाबान्दी हो। वायु का भी जोर रहे। घा. वि.—फाल्गुन सुदी सप्तमी जो वर्षा महाघन छाय। पांचम नव आसोज सुदी जल थल एक कराय ॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय मंहगा होय॥ फा० शु० १५ को शाम के वक्त भद्रा रहित समय में होली का पूजन और हवन करना ×

संवत् २०११ शकः १८७६ चैत्रकृष्णपक्षः २४ (९ मार्च से २४ मार्च १९५५ ई०) उ. द.गो.वसन्तर्त्तुः सा. *

दि. मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हिं. फाल्गुन	अं. मार्च	सु. रमजान	चन्द्र संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२९	५	१	बु.	३४	४७	उ.फा	४८	२८	शू.	२५	९	बा.	४	२८	२६	९	१३	कं. १।३८	६	४४	६	२४	१०	२४	३२	३
२९	१०	२	गु.	३६	५३	ह.	५२	११	गं.	२३	४४	तै.	५	५०	२७	१०	१४	कन्यायाम्	६	४३	६	२५	१०	२५	३२	१
२९	१५	३	शु.	३९	५९	चि.	५६	५१	वृ.	२३	१७	व.	८	२६	२८	११	१५	तु.२४।३५	६	४३	६	२५	१०	२६	३१	५८
२९	२०	४	श.	४४	१२	स्वा.	६०	००	ध्रु.	२३	४०	व.	१२	५	२९	१२	१६	तुलायाम्	६	४२	६	२६	१०	२७	३१	५५
२९	२५	५	र.	४९	७	स्वा.	२	४२	व्या.	२४	१७	कौ.	१६	३९	३०	१३	१७	वृ.५२।२६	६	४१	६	२७	१०	२८	३१	४७
२९	३०	६	चं.	५४	२८	वि.	९	००	ह.	२५	४२	ग.	२१	४७	१चै	१४	१८	वृश्चिके	६	३९	६	२७	१०	२९	३१	३८
२९	३५	७	मं.	५९	४६	अनु.	१५	३९	व.	२७	१४	वि.	२७	७	२	१५	१९	वृश्चिके	६	३८	६	२८	११	०	३१	२८
२९	४०	८	बु.	६०	००	ज्ये.	२२	१	सि.	२८	३१	बा.	३२	८	३	१६	२०	ध. २२।१	६	३८	६	२९	११	१	३१	१६
२९	४५	८	गु.	४	३१	म.	२७	५२	व्य.	२९	३१	कौ.	४	३१	४	१७	२१	धनुषि	६	३७	६	३०	११	२	३१	०
२९	५०	९	शु.	८	३३	पू.षा.	३२	४९	व.	२९	४८	ग.	८	३३	५	१८	२२	म.४८।३२	६	३५	६	३०	११	३	३०	४२
२९	५५	१०	श.	११	२१	उ.षा.	३६	४१	प.	२९	३	वि.	११	२१	६	१९	२३	मकरे	६	३५	६	३१	११	४	३०	२४
३०	००	११	र.	१३	४	श्र.	३९	२०	शि.	२७	१९	व.	१३	४	७	२०	२४	मकरे	६	३३	६	३२	११	५	३०	३
३०	४	१२	चं.	१३	२६	.	४०	४१	सि.	[illegible]	३८	तै.	१३	२६	८	२१	२५	कुं. १०।०	६	३१	६	३२	११	६	२९	३९
३०	९	१३	मं.	१२	२९	श.	४०	५१	सा.	२०	५३	व.	१२	२९	९	२२	२६	कुम्भे	६	३०	६	३३	११	७	२९	१३
३०	१४	१४	बु.	१०	२०	पू.भा	३९	४८	शु.	१६	१३	श.	१०	२०	१०	२३	२७	मी. २५।४	६	३०	६	३४	११	८	२८	४३
३०	१८	३०	गु.	७	८	उ.भा	३७	५४	शु.	१०	४२	ना.	७	८	११	२४	२८	मीने	६	२९	६	३५	११	९	२८	१२

ग्रह.--म. सूर्यास्तवाद पश्चिम में, गुरु पूर्व से खमध्य को आता दीखेगा। बु. शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में, श. अर्द्धरात्रि से पहिले पूर्व में दीखेगा।

आम्र पुष्पप्राशनम्, मेला श्री आनन्दपुर साहिब, हस्त ।ऽ।।।।।।। ल. १०
हस्त ।ऽ।।ऽ रो. ।।।। ल. गोधूलि, [मेशा. उ. गो.
भ. ८।२६ उ. ३९।५९ या. कुम्भे बुधः ५७।२७,
श्रीगणेश ४ व्रतम्,

भ. ५४।२८ उ. सं. मीनेऽर्कः २८।२७ मु. ३० पुण्यं १२।२७ उ.
भ. २७।७ या., श्री शीतला ७.,
मार्गीगुरुः ३६।०,
उ. भा. रविः ४९।१५ शतेबुधः ४९।४०, मेला शीतला कुराली,
भ. ३९।५७ उ.
भ. ११।२१ या. धनिष्ठायां शुक्रः १।१३,
पाप मोचिनी ११ व्र. स., सा. मेषे भानुः ३७।१७
पञ्चकप्रारम्भ १०।०, सोमप्रदोषव्रतम्,
भ. १२।२९ उ. ४१।२४ या., वारुणी पर्व गङ्गास्नाने महत्फलम्,
मेला पृथूदक (पिहोवा) चैत्र १४,
कुम्भे शुक्रः ४०।४८, मन्वादि चान्द्र सँव्वत्सर समाप्तिः।

चैत्र कृ. ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ३४६

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
	११	००	१०	२	९	६	८	२
	२	१९	५	२६	२०	२७	८	८
	३१	४४	४१	४०	५७	४५	१२	१२
	००	३	४७	३६	५४	५४	५०	५०
	५९	४१	७१	००	७०	१	३	३
	४४	२८	५३	३	१३	३१	११	११
गति		मा	मा	व.	मा	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	पू.भा.	भ.	ध.	पुन.	श्र.	वि	मू.	आर्द्रा
	४	२	४	३	४	३	३	१

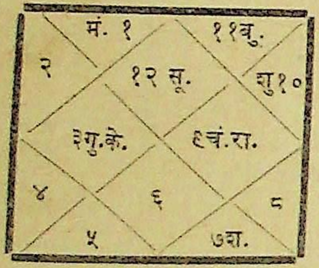

व्यापारी वर्ग की हालत ठीक रहे। किसी ख.न में भीषण--विस्फोट से हानि हो। रुई और चांदी में मन्दी हो। घृत तेल रस कस में तेजी। सूत का भाव सम। ति. ६ के अनन्तर पशु खरीदने से १ मास बाद लाभ हो। ति. ८ से चांदी में खासी मन्दी आवे और अलसी सरसों में तेजी चले। ति. १० से चावल, मद्य, मोठ, उड़द में तेजी का असर रहे। गेहूं भी तेज हो।

ति. ४, ८ व १२ से १४ तक वायु का जोर व कहीं २ मामूली बून्दाबान्दी हो।

शकुन विचार—चैत्र बदी प्रतिपदा को गर्जे मेघ अपार। श्रावण भादव के विषे अनावृष्टि निरधार ॥ चौथ पञ्चमी चैत्र

चैत्र कृ. ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ३५३

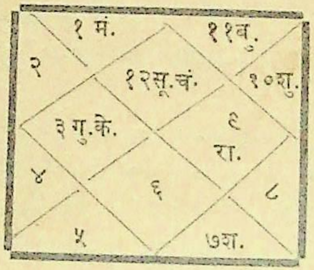

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
	११	००	१०	२	९	६	८	२
	९	२४	१४	२६	२९	२७	७	७
	२८	३३	५७	४५	११	३२	५०	५०
	१२	२४	९	२७	४०	३३	३३	३३
	५९	४१	८४	१	७०	२	३	३
	२९	१३	३१	१५	४८	११	११	११
गति		मा	मा	मा	मा	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	उ.भा.	भ.	श.	पुन.	ध.	वि	मू.	आर्द्रा
	२	४	३	३	२	३	३	१

वदि, वर्षे और चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय॥ चन्द्रमौलि शंकर चरण वार २ शिर नाय। संवत् यह पूर्ण कियो गिरा गणेश मनाय॥ चैत्र कृष्ण १ बुधवार को "आम्रमग्र्यं वसन्तस्य माकन्दकुसुमन्तव। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये" इस मन्त्र से आमकी मञ्जरी खाने और चाण्डाल स्पर्श करने का बड़ा माहात्म्य है।

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घटयादिक इष्ट निकालने की रीति

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले ही तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घन्टे मिन्टों को घटाकर जो घंटे मिन्ट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजेतक जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों के घड़ी पल बना कर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे सूर्योदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बना कर उस दिन के दिनमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घडी द्वारा अभीष्ट दिन को अपने ग्राम का सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रक्खें, या दूसरे दिन मिला ले, फिर जितने घन्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घडी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टेंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट--१ घडी में २४ मिनट, एक मिनट में २॥ पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन

यदि किसी स्थान पर अगरेजी घडी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिए कि सूक्ष्मेष्ट ज्ञानार्थं आर्यभट्टोक्तद्वादशांगलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतला नीचे से मोटा गोलाकार) से इष्टकाल साधन करे---परद्युमानं दिनमानवर्जितं नगघ्नमक्षाप्तमहस्तु मध्यभा। भावार्थ--परमदिनमान (स्वदेशीय सब दिनमानों से बड़ा दिनमान) जो सूर्य की सायन कर्क संक्रांति के दिन होता है, उसमें से इष्ट दिनमान को हीन करे, शेष को सात गुणा करे फिर ५ से भाग दें जो लब्ध मिले सो इष्ट दिन में उसी देश की मध्यभा (मध्याह्न छाया) होती है, अर्थात् बारह अंगुल के शकु की छाया होती है। युमध्यभोना दशयुङ्निजेष्टभा शराहताह्निलिप्तिहृदरेत्तया। क्रमान्मतापूर्वपराह्नलब्धयोर्द्वयोरवाप्ता गतगम्यनाडिका॥ जिस समय का इष्टकाल जानना हो उस समय शंकुकी अंगुल द्व्यंगुल त्मक छाया (इष्टभा) को दश १० में युक्त करें फिर इस योग में पूर्व सिद्ध मध्यभा को घटा दें, जो शेष बचे वह भाजक (जिस का भाग देना है) होता है, अपने घटी पलात्मक दिनमान को पांच गुणा कर देने पर भाज्य (जिस अंक में भाग देना है) होता है, भाज्य में भाजक का भाग देकर दो फल लाना जो फल आवे वह घटी पलात्मक इष्ट काल आता है। परन्तु इसमें यह स्मरण रखें कि यदि मध्याह्न से पहले नापा हो तो इतने घटी पल गत और मध्याह्न से पीछे नापा हो तो, इतने घटी पलशेष दिन है ऐसा जानना।

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्रः

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गोदेवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं धियोयोनः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

स्वरशास्त्र का चमत्कार

(१) प्रातः जागते समय जिस नथने से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ को देखकर श्वास अन्दर खींचे, पुनः देखे, भगवान् को स्मरण कर हाथ चूमे। चलते श्वास वाली ओर का पाद प्रथम पृथ्वी पर रखे। सदैव ऐसा ही करें। सदा सफलता व प्रसन्नता प्राप्त होगी, सभी दुःख दूर होंगे। (२) दिन को बायां और रात को दायां स्वर चलाया करें। भोजन करने के बाद आधा घंटा बाईं करवट लेटे, पाखाना करते और नहाते समय दायां स्वर चलायाकरें जल पीने बाद बाईं करवट लेटे और पेशाब करते समय बायां स्वर चलाया करें। रोग पास न फटकने पायेंगे। (३) जिस से कार्य लेना हो उसे चलते श्वास की ओर रख कर बातचीत करें, काम निकल आयेगा। (४) पीड़ा आरम्भ होते समय जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द कर दें, दूसरा स्वर चलायें, पीड़ा भाग जाएगी। (५) शत्रु, रूठे मित्र, या क्रोधित अफसर के पास जाने से पहले शनैः शनैः श्वास अन्दर खेंच कर नाभी में ठहरायें, उस पुरुष की मूर्ति नाभि में देखें फिर शनैः शनैः श्वास बाहर निकालें, नाभि में बैठी उसकी मूर्ति का ध्यान फिर धरें, श्वास अन्दर खेंचते हुए उस रूठे पुरुष के विचार मन में लिए उसके पास जायें, उसे बन्द नथने की ओर करके बातचीत करें, इच्छाएं पूर्ण होंगी। (६) रोग सरदी से हो तो दायां और गर्मी से हो तो बायां स्वर चलाने से आराम होगा। (७) शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को दायां स्वर चलते समय दृढ़निश्चयपूर्वक पत्र लिखें अवश्य आशा पूर्ण होगी। (८) रात के पिछले पहर पुरुष का दायां और स्त्री का बायां स्वर चलते समय भोग हो तो स्त्री-पुरुष में अटूट प्रेम बढ़े व स्वास्थ्य ठीक रहे। (९) दोनों नथने चलते समय सर्व कार्य छोड़ ईश्वराराधन से इच्छाएँ पूर्ण होंगी।

अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थमंगलादीनां मन्त्राः॥

मंगलामन्त्रः	पिंगलामन्त्रः	धान्यामन्त्रः	भ्रामरीमन्त्रः
ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐ ग्लौं पिंगले वीरकारिणीप्रसादे फट् स्वाहा	ॐ श्रीधनदे धन्ये स्वाहा	ॐ भ्रामरिजगतामधीश्वरि भ्रामरि क्लीं स्वाहा
भद्रिका मन्त्रः	**उल्कामन्त्रः**	**सिद्धामन्त्रः**	**संकटामन्त्रः**
ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय	ॐ उल्के मम रोगं नाशय जंभयस्वाहा	ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय	ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा

प्रहरवशात् भूकम्पफलज्ञानाय चक्रम्

दिने प्र. प्रहर	दिने द्वि. प्रहर	दिने तृ. प्रहर	दिने च. प्रहर	रात्री प्र० प्रहर	रात्री द्वि० प्रहर	रात्री तृ० प्रहर	रात्री च० प्रहर
राजा मृत्यु	मंत्रीभय	पशुभय	अन्नका नाश	अन्नवृद्धि	राज्यभय	प्रजापीड़ा	राजयुद्ध

अथ तेजी मन्दी निकालने की ध्रुवा ।

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ९४	मंगल ८०९
बुध ७०२	बृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुवा		२०८५

अथ तिथि ध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपत ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी ३५७
पंचमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोद० ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	अमावा १६६

अथ नक्षत्र ध्रुवा ॥ ३ ॥

अश्वि १७६	भरणी ६८३	कृत्ति ३७०	रोहि० ७७५	मृग ६८२	आर्द्रा १४६	पुन ५४०
पुष्य ६३४	अश्ले १७०	मघा ७३	पू.फा ८५	उ.फ १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा ७३४	अनु ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू० षा ६१४	उ.षा ६२३
अभि ६८३	श्रव ६५७	धनि ५००	शत० ५६४	पूभा ३३६	उभा १८३	रेवती ७२०

अथ मास ध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशा० ६३	ज्येष्ठ ६५
आषा ६७	श्राव ६९	भाद्र ७१
आश्वि ७३	कार्ति ५१	मार्ग ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गु ६५

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥ ५ ॥

मेष ५२०	वृष ७६२	मिथुन ५१०
कर्क २१८	सिंह ८३०	कन्या २६०
तुला ५०३	वृश्चिक ७११	धनु ५२४
मकर ५५४	कुम्भ २७०	मीन ५८६

अथ देश तथा ग्रामों की ध्रुवा ॥ ६ ॥

कलकत्ता २४७	नागपुर १६६	आसाम ७९१	इटावा ८९०
हरद्वार २७२	बिकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १६८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगून १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थों की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चांदी ७६०	ताम्बा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कांशा २४९	पत्थर १६३	मोती १४२
रूई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हंसिअन ७३८	सुता १०३	तमाकू २४०	सुपारी २५२	लाह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान ७१२	गेहूँ २३२	मूंग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसो ८५८	राहर ३३३	नीमक ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३२	बैल १६२	महिषी ६१२	भेडा ६१८	हाथी ८३०	घोडा ८३५

अथ तेजी मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १	चन्द्र २	भौम ३
तेज	अतिमन्द	तेज
राहु ४	बृहस्पति ५	शनि ६
अतितेज	मन्द	तेज
बुध ७	केतु ८	शुक्र ९
सम	तेज	तेज

॥ अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति ॥

जिस देशकी जिस वस्तुकी, जिस दिन तेजी मन्दी निकालना हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवाओंका योग (जोड़) कर नौ ९ का भाग देकर शेषसे जिस दिनका विचारना हैं उस दिनसे शेष तुल्य कोष्ठमें ८ आठवें चक्रमें देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेना ।

उदाहरण—जैसे कलकत्तेमें वैशाख सुदी तृतीया ३ गुरुवारको कृत्तिका नक्षत्रमें चांदीकी तेजी मन्दी जाननी है। तो कलकत्तेकी ध्रुवा २४७ वैशाखकी ६३ तृतीया ध्रुवा ४८१ गुरुवार ध्रुवा ७१३ कृत्तिका नक्षत्र ध्रुवा ३७० चांदीकी ७६० सूर्य मेष राशिका ध्रुवा ५२० सबका जोड़ ३१५४ इसमें ९ का भाग देनेसे शेष बचा ४ अतः ८वें चक्रमें देखा तो गुरुसे चौथा चक्र तेज हुआ इसका फल आठवें ८ चक्रमें तेज लिखा है। विशेष अधिक तेजी मन्दी जानना हो तो हमारा लिखित [illegible]

सर्वशुभकार्यों के लिये वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय अधिक तथा क्षयमास, गुरु, शुक्र का अस्त तथा इनका बाल-वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां परिघयोग का आधा भाग, शूलयोगके आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदिकी ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पलका पापग्रह, नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मूहूर्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४।८।१२ वां चन्द्रमा तथा पाप ग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभ कार्यों के लिये साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्मलग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हों, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभकार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है ॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान; इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभयाग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन, संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिये ॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन, वृद्धत्व शेष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥ द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप दर्शने	सर्वसुकार्ये	संग्रामे	विद्याभ्यासे	विवाहेचोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूरकृत्ये	एतत् कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः—

ववबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत् ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्मविष्ट्यां तु सिद्ध्यति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥ आवश्यके परिहारः—दिवापरार्द्धजा विष्टिः पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ.	न.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी ५ कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ला शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरुसूर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहे कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः—मघादि पञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि (मकर गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहो प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्वल्लतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे) ॥

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा. मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो॥

चित्रा पुन. पुष्य. अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिये अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रांति का दिन; संध्याकाल; मंगल, रवि, शनिवार; रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; जेष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल. अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४. ८, १२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५, ९, १ लग्नो के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी; निधनतारा; जन्म नक्षत्र,मूल, भरणी अश्विनी,रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग,माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी		मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयका लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चहिये, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं॥

सीमन्तसंस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है॥

गर्भरक्षा के लिये विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिये॥

मेवाजननसंस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिला के "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु घृत चटावें ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़ कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. शु. हों, नक्षत्र मृ. पुन. पु. श्र. रे. मृ. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है॥

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं॥

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्र वार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जल पूजन न करना चाहिये।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रांति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में, जन्म काल से ११वें या १२वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है॥

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन, शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन से रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६ ७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम होता है॥

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. मू. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम, शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजनपूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी बराह का पूजन कर, भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४.३० इन तिथियों को छोड़ कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनीकटिसूत्रबांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्रः—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वंगतं शुभे। आयुःप्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है॥

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़ कर जन्म से १२ वें दिन या १६वें दिन या ६वें, ७वें, ८वें, मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पुष्य अभिजित नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला वृष धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हार्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या का नासिकाछेदन मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिकावेध शुभ है।

मुण्डन का मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्म काल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़ कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये, मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिये निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये॥

मुण्डनकर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुद्ध समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथाकुलधर्मतः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिये जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वेही हजामत बनवाने के लिये शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार हजामत से नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है॥

विशेषफल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है॥ किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं॥ वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७ वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि बुध गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है॥

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० वि० आर्द्रा उ० षा० शत० नक्षत्र शुभ हैं॥

सीने पिरोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त—अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं॥

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त—यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा)-विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उस के बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा रो. आश्ले. स्वा. श्र.ध. मू. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू चं बु (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढशुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोगबाण को छोड़ कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्ष.	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गणः	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटीके म. घ.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा.	पूफा.	५०
भ.	ज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मदुमैत्र	मगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उफा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा.	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनिनाडीगण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञान हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं ॥

मेलापकसारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पडे और वर के खडे स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खडे और पडे स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिन्ह भी हैं। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धनका चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्याके नीचे कोई अंक वा चिन्ह नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरणमें हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिये सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाडीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुकेगोयुग्मम-थांकके। रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत् ॥

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा-विरुद्धे नवपञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, यह मैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं।

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७।।	१७।। ४	२३।। -४	२२।। -४	२५।।	१६।। ३	१७।। ३	२२।। ३	३०।।	२७	२० +५	२४ ५+	१८।। ३५	७।। ३६	१७।। २३६	१२।। ६	२२	२८ -२	२२	१८।। -६	२४।। -६	१३ ३६	१२।। ३५	२४।। +५	२३ ५+	२७	२६	२०	१९।।	१४।। ३	१५।। ३	१४।। ३४	२३।। ५+	२६ ४+
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०६१	२६।। -४	१८।। ३४	१७।। ३	२५।।	२५।।	३०।।	२२।। ३	२८।। १	१९ -१५	१७ ३५	२८ ५+	१९ ६	१०।। ६	३।। १३६	१३ १३	२८	२२ -५	१८।। -१६	१७।। ३६	१९।। १६	१९।। -१५	१७।। ३५	२५।। ५+	२७।।	२६	१० १२३	९।। १३२	१९।। -१	२३ -२	२२।। २४+	१६।। ३४	२५।। ४+
	कृ १	२६।।	२८ १	२८ २	१८ ३४	१० ०१६६	१६।। ४	१९।।	१९।। १	१९।।	२४।।	२६।।	२२।। ३	१५।। ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७।। ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६।। ३६	१९।। -६	२५।। -२	२५ ५+	१९ १२५	१९।। ३१५	१३।। १३	१३।। २३	२५	२४।।	२५।।	१८।। ९	१७।। १४	१९।। १४	१०।। ३४
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१९ १६	१९ ३६	२८ ३	१८।। १३	२६।।	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१।। ३	२४।।	३०।।	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०।। ३५२	२४।। +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	२३।। -४	२३।। -४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६।। ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०।। ३१	२४।।	२७	२५।। ५+	२५।। ५+	१८।। -१५	१७।। -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४।। ३१	२९।।	२३।। १	१३।। १६	१९।। ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२४।। -१	२४ -१	२१	२६	२७	१९ ३
	मृ ।।	२३।। -४	१४।। ३६	१८।। -४	२७।।	३५	२८ ३	१८।। ३४	२३।। ०६	२२।। ४+	२६	१९ ३	२१	१९।।	१५।। ३	२४।।	२३ ५+	२५।। ५+	११।। ३५	१०।। ३६	२४।। -६	१७ -६	२३।।	२१।। ३	२४।।	१४।। ६	२०।। ३६	१६।। २६	२१।। २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७।। ३	२६।।	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ।।	२६।।	२७।। ३	२१।।	१९ +४	२६।। ४+	१९।। ३४	२८ ३	३३ ०	३१।।	१८।। -४	१४।। ३६	१३।। ६	२२।।	१८।। ३	२७।।	३१।।	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९।। ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१४ ३	२५ २+	१९।। -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२।। ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	१८।। ३	२०।।	२१।। १	१९ +१४	२४ +६	२५।। ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०।। -४	१२।। १६	२१।। १	२७।।	२०।। ३	२४।। ३	२४।। ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३।। १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१।। -६	२२।। -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८।। ३	२६	२६
	पुन ।।।	१८।। ३	२५।।	२१।।	१९ ४+	२२ ४+	२१ ०+	३१।।	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ३०	१५।। -४	२१।। +२	२५।। +२	१९।। ३	२३।। ३	२४।। ३	२६।।	१९।। ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४।। ६	२०।। २६	६ ३६	१४ २	२७	२७	२१।। -६	२२।। -६	१६।। -६	१८।। +५	१३ ३५	१६ ३५	१७।। ३	२६।।	२६
कर्क	पुन १	२२।। ३	२८।।	२४।।	२१	२४	२५	१७।। ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८।।	१६।। +२४	२०।। २०	१४।। ३४	१६।। ३	१७।। ३	१९।।	१९	२६।।	२०।।	१९ ५+	२५ ५+	१०।। ३५	७।। ३६	२०।। -६	२०।। -६	२६	२७	२९	१२ ६	५।। ३६	९।। ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४।। १+
	पु १	२९।।	२०।। ३	२६।।	२३	२५	२८ ३	२०।। ३४	१८।। ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८।। +४	१४।। ३४	२३।। ४+	२५।।	२५।।	११।। ३	११ ३	२५	२०।।	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७।। ६	१२।। २३६	२०।। ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७।। ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२५	२३ १	२१।। ३	१८ ३	११ ३१	१६	१२।। ६	१९।। १४	१२ ४	२७।।	२८	२८ ३	१५ ०१४२	१५।। १४२	१७।। १०	१९।। १	१९।।	२४।।	२७	११ ३	१६ ३	१४।। ३५	१९ -५	२५ -५	२२।। ६	१५।। १६	७।। ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७।। १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म १	१९ ४५	१९ २५	१५।। ३५	१६।। ३	२।। ३१	१७।।	२०।।	२१।। १	१९।। -२	१६ +२४	१८।। ४+	१६ ३४२	२० ३	३० ०१	२६।। १	१४।। १४	१४।। ६	१९।। ४	२३।।	१०।। ३	१५।। ३	२४।। ३	२४।।	३२	२४ -५	१९ १५	८।। १३५	३।। ३१६	४।। ३६	१७।। ६	२३।।	२४।।	१७।। १	१७।। १६	१८।। १६	१२ ३६
	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३।।	१५।। ३	१८।। ३	२६।।	२५।। -२	२३।। +२४	१६।। ३४	१६।। -११६	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०।। ६+	५।। १३६	९।। १३	२४।।	१७।। ४	२३।। -१	२२।। १	२४।। -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	११ ६	१८।। ६	५।। १३६	९।। १३	१०।। १	२३।।	२३।। -६	१६।। ३६	२४।। -६
	उफा १	१५।। ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२२	२४।।	२७।।	१९।। ३	१७।। ३	१८।। ३०	२५।। ४+	१८।। -१४	२६।। -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२।। १४२	१६।। १२	२५।।	१६।। १२	२२।। -१२	३०।।	१६।। १३	९।। १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११।। १६	१७।। १	१०।। १३	१५।। ३	१५।। ३६	२६।। -६	२४।। ६-
कन्या	उफा ।।।	११ ३६	२१ ६	१६ १६	२०।। +१५	२५।। ५+	२४ ५+	३१।।	२१।। ३	२३।। ३	१७।। ३	२७।।	२०।। १	१५।। १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४।। १२४	१६।। १२४	२५।। ४+	१६।। १२४	१८ १२	२८	१२ १३	१४ १२	२९।।	२९।।	२४ +५	२४ ५+	१५।। +१५	१६।। -१६	९।। २१६	१४।। ३६	१७ ३	२८	२९
	ह १	११ २३६	१८।। ६	२९ ६	२०।। +५	२३।। ५+	२४।। ५+	३०	२८।। ३	२३।। ३	१८।। ३	२५।।	२४।।	१६ +४	२०।। ४+	१५ ३४	२६	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६।। ४+	१८।। ४+	२०	२२	१३।। ३	१९ ३	२७	२८।।	२३ +	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०।। ३६२	१३।। ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ।।	१२।। २	४।। १३६	१८।। ६	२३ ५+	१८।। १५	१०।। ३५	१४ ३	२२ १	२४।।	१९।।	११।। ३	२५।।	२०।। +४	६।। १३४	१३।। १२४	२४।। १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०४	२५।। ४+	२०	३१	४५	२७	२२ १३	२१ १	१५।। १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६।। १६	१९ १	१० १३२	१६

किञ्चिद्विशेष – रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यक्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥ जीवे शुक्रे बुधे सौम्ये एकराशीश्वरे यदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

न.	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गणः	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटीके म. घ.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा.	पूफा.	५०
भ.	ज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उफा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा.	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रौ.	रौ.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेंढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनिनाड़ीगण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञान हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं ॥

मेलापकसारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिन्ह भी हैं। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धनका चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्याके नीचे कोई अंक वा चिन्ह नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरणमें हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिये सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषवामम्-द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुकेगोयुग्मम-धीकके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत् ॥

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा-विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥
कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, यह मैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं।

कन्याया	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -८	२५॥	१९॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१८॥ ३५	७॥ ३२	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ५+	२६ ४+८
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०८१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२२ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ १६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१८४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१२॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ २६	१९॥ -६	२५॥ -२	२५ ५+	१९ १२५	१९॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ ९	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	१९ ८	१९ १८	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ८+	१७ १४	१७ ८+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२९॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१५ १२६	७ १२६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	२३॥ -८	२३॥ -४	१९ ३४२	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०८	२३ ८+	२२ ८+	२५	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १६	१६॥ ६	१४ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२८॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३
	मृ ।।	२३॥ -८	१६॥ ३६	१८॥ -८	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०८	२२॥ ८+	२६	१९ ३	२१	१६॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२६॥ -६	१७ -१	२३॥	२१॥ ३	२४॥	२४॥ ६	२०॥ ३६	१६॥ २६	२९॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ।।	२६॥	२७॥ ३	२६॥	१९ +६	२६॥ ८+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३४॥	१८॥ -८	११॥ ३६	१३॥ ६	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	१८॥ ३	२१॥	२१॥ २	१९ +१४	२४ .८	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १८	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२९॥ -६	२२॥ -६	१७ +१६	१९ २५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन ।।।	१८॥ ३	२४॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ६+	३४॥	२६ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -८	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३६	१४ २	२७	२७	२९॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
	पुन ।	२५॥ ३	२८॥	२४॥	१९	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २०	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -१	२०॥ -१	२६	२७	२१	१९ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	[illegible]	२०॥	२६॥	२३	२५	२८ ३	२०॥ ३६	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +०	१४॥ ३०	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	१९॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२२॥ ४	२१॥ १४	२३ ६	२७॥	२८ ३	१५ ०१४२	१५॥ १८२	१७॥ १८	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१९ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १२	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१०॥ १५	२० १५	१२ ३५
[illegible]	म १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०॥ ४	१९॥ -२	१६ +२६	१८॥ ६+	१६ ३६२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१८॥ १८	१४॥ ४	१५॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	८॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ६+	५॥ १३६	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ १	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	६॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा ।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०६४	१९ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	१९॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
[illegible]	उफा ।।।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५ २४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२८	२५॥ ६+	१६॥ १२८	१८ १२	२८	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८ ३	२८ ०	२० ०६	२६॥ ६+	१८॥ ६+	२०	२६	१३॥ ३	१४ ३	२७	२८॥	२३ +५	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ।।	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८ ३	१९	१२ ००	२५॥ ६-	२७	३१	१५	२७	२२ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१६

[illegible] एकराशीश्वरे यदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥

मेलापक सारिणी

कन्याया	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -५	२४॥ -६	२३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१९॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ६+	२६ ६+
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -६	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ १६	९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	९॥ १३२	१९॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ६+
	कृ ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१९॥	१९॥ १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१२ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१९ ३	१६॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -२	२५ ५+	१९ १२५	१९॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ ९	१७॥ १४	१९॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१९ १४	१९ ३४	२८ ३	१८॥ १५	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१९ ३	१९ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ ४५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१३॥ १६	१९॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१९ -१५	२६॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३
	मृ ॥	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१५॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -१	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३५	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ॥	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१९ -४	२६॥ ४+	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	१९॥ ३०	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१९॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१९ ३	२५ २+	१९॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	१८॥ ३	२०॥	२१॥ १	१९ +१४	२४ -४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १६	२१॥	२०॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १०१२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१९ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२२ ४-	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३	२१ ५०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१९॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ २६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ ३	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ +२४	२०॥ २८	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	९॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	२९॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	२०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२९ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१९ -५	१७ ३५	२० -५	१७॥ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१८ ३	१२ ३१	१९	१४॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ १४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१९॥ १	१९॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	११ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह	म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	२॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१९॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२७ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२	२४ -५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१९ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ +२८	१६॥ ३४	१६॥ -१२८	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ १	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१४॥ ३	१४॥ ३०	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ।।।	११ ३६	२१ ३	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२१॥ १	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२४	२५॥ ६+	१६॥ १२४	१८ १२	२६	१२ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	९॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२९
	ह १	११ ०३६	१८॥ ६	२९ ५	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३०	२८॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२३॥	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ०	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४	२०	२२	१३॥ ३	१४ ३	२७	२८॥	२३ ५+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ॥	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ३	२३ ५+	१८॥ १५	२०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१९॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ +४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	५	२७	[illegible] १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	३६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१९

ग्रहमेलापकविचार :—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों मंगल हो तो वर का नाशक होता है ।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो, और कन्या की जन्म कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता । एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय, तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें । इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न से ७।८ स्थान तथा वर का२।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये । कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है । अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्तिं विधाय दारहायोगजायायुष्मते वराय दद्यात् ।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शील-स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सम्पन्नता ये सात गुण जिस वरमें उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चहिये ।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये ।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़ मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अति दुर्बल लम्बी व पतली, झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी बोली ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करें ।

वाग्दान—कुड़माई— सगाई से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्न पूर्वक वर्जित करने चाहियें—(१) दारिद्रय, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का अभाव ।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३ रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठ कर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा (गुड़ बताशा) देकर यह मन्त्र पढ़े—"तस्मिन् काले-ऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे । अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति।।' यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता' तुभ्यं प्रदास्यति" कहे ।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. धा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३. अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण सगाई करना चाहिये ।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वष से पहिले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है । अतः रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्व सम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे । तथा "मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत् । विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः ।।" द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है । यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है । "वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता । तस्यास्तारेन्दु लग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः ।।"

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिये । यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिये यह सुखी विवाह का फार्मूला है ।

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है वर का नहीं । कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (–) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—आगे देखो पृष्ठ ७४

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें ।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायकः
हृस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कट्यां	३	साधनादर्थः
चरणे	४	साधनाद्वित्तः

मन्त्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. भा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०। ११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सि. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों, तब मन्त्र-दीक्षालेना उत्तम है ।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये ।।

अनुष्ठानारम्भमुहूर्तम्—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. माघ, फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवाया तिथियंस्य-देवस्य तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुन., पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारानुकूले; गुरुशुक्र के उदय में शुभ लग्न से १८ वांस्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमंन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है । सूर्यनक्षत्र से महाप्रयोगारम्भ दिन नक्षत्र ३ तक अशुभ, ६ तक शुभ, १३ तक शुभ, १७ तक शुभ, २० तक अशुभ, २७ तक शुभ जाने ।

"रास्यभिधानकल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिये। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर ही "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिस में अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारणी आदि देखकर बदलना चाहिए।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ–मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। वर्ज्योऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सब से बड़े (जेठ) लड़के अथवा सब से बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़ कर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावे, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठविचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है, अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़ कर दानादि पूर्वक करे।

षट् मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छे मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के विवाह के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहिले कर ले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पणभी न करे और मुंडन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पल्टने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर ले वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर, विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण में १ साल, स्त्री के मरण में ३ मास, भाई व पुत्र के मरण में १॥ मास, कुल वालों के मरण में २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देख कर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र शुद्ध देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबल शुद्धि कहते हैं। यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाह लग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है। यदि रवि गुरु पूज्य हों तो मध्यम है। यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें ॥ "झषचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु"

(बृह०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः–धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्यांगिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः ॥ (मु० प्र० सा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः–१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः–९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः–४।८।१२
श्रेष्ठरविः–३।६।१०।११
पूज्यरविः–१।२।५।७।९
नेष्टरविः–४।८।१२
नेष्टचन्द्रः–४।८ पूज्यचन्द्रः–१२
श्रेष्ठचन्द्रः–१।२।३।५।६।७।९।१०।११

{ ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बन्न) दिनसंख्या

राशि	१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२
तैलादि ला.	७।५।९।९।५।७।७।९।५।९।५।

अथ विवाहे तिथिवारनक्षत्राणि—रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्भेषरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहिततिथिषु शुभम् ॥

अथ विवाहांग कृत्यारम्भमुहूर्तः—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्द हाथ दलना पीसना कूटना मंगल-कलशादि स्थापन करना घर लीपना आंगन सफाई भूषण गढाना वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोवा बांधना गणेशादि पूजन नान्दीश्राद्ध मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दश दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त अलग दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकारकिया जाता है—

१ लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बंधुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयं	मरणं	फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो. उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ; इत्यादि सब जानें।

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
श्ले	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ
पुन	आ	मृ	आ	मृ	अ	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	चि	उफा	म
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	चि	पूफा
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा

[illegible]

विवाहन. हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. बु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है॥

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

* ऊपर के नक्षत्रका विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

७ एकार्गलदोषः—

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये	ध	पूभा.	उभा.	कृ	मृ.	पुन	उफा.	ह	प्र.न.	

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र है, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

९ क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कुं०

नीच या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थल क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः राशौ अर्कस्य	प्रति ५ कर्म वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः	
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
वह्नि	३।१२।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोःवर्ज्यम्

१० दग्धा तिथिदोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रांतिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनविवाहञ्च कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वेः (उज्जैन प्रान्त) च लत्ताभं त्यजेत विद्धं किल सर्व देशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेषपरिहारः—चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युति दोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभं नैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमः॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो नचान्यपादमादरात् (वसिष्ठः)॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते॥ जामित्रपरिहारः-(व्यवहारसमुच्चये)-स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्र वर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्। मुहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पापः	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श. चं.	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	८		विद्धभुञ्च			गोधूली त्याज्याः

सर्वथा लग्नभंगयोगाः---व्यये शनिः खेऽब्जनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जागुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं वित्तान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादि लग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्यायह्वास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः॥

कर्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी। दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेस्वे रिपुनीचगे वहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥ अपवादांतरम्---उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः। ये दोषान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	च.	मं.	बु	गु.	शु.	श.	रा.	के. ग्रहाः		मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३		स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम्
६	३	६	२	२	२	६	६	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१।		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचार—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यत् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग माघ फाल्गुन सध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टि गोचर होने पर, च. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्ये. आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. आश्वि का. में सूर्य पूर्ण अस्तहोने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोषः---कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्टेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्तः---कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च---सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजित्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः॥

वधूप्रवेश का मूहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधू प्रवेशो व दिवाप्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य म जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु वा शुक्रवार को २, ३, ६, ७, या १२ वीं

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रो में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवासरान्तरे एकादशाहे समवासरेषु। नचात्र ऋक्षं न तिथिर्नयोगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़न आदि उपद्रव तथा दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एव विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वा प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयत्।

प्रथम स्त्री-संगममुहूर्तः—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे। मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे। विशेष गुप्त बात न कहे और विशेषाधिकार भी न दे क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती अपवाद में एक दो हो सकती है। प्रभु कृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है उसे समझना चाहिये उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड भैंस अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववध्वा पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावास्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतदन्तादि-भूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूडीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्य-वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ॥

भूषणघट्टनमुहूर्तः—ह. श्र. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३ रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़ अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठ हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हों तो अत्यन्त शुभ है ॥

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा. ३. भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु भेषु चं. बृ. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र से शुभा-शुभ फल जाने ॥

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नोकरी) मुहूर्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामार-हिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभग्रहे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोर्निमैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु. भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू. चं. बु. बृ. शु. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभ-ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार, संक्रांतिदिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिये। कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य्य क्रयविक्रयाणां कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि. श्रेष्ठ माना गया है।

वस्तु बेचने क नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ल. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचनेवालों को ९५ फी-सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखलाये गये हैं परन्तु संप्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिनभर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करनेवाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त:—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. हो, कृ. आर्द्रा. भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार—

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्रं यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ ७ हस्ति, ८(०)। इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो चार आदि सम संख्या की अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती हैं। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है॥

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को आठ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ विचार:—

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बना कर उसको जल से भर देवें, प्रातःकाल उसको देखें यदि जल युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, विर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है॥

मकान बनवाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा ३॥ साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़; राख, बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो। गृहारम्भ मुहूर्त:—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारंभ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. बृ. शु. श. वारों में रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में प.पग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल [illegible]

गृहारम्भे वत्सचक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभजित् सहित गणना करें		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीडा असत्

विशेष:—पुष्य. उ. ३. रो. मृ. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो इस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्ति दायक होताहै। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। चि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रान्ति मिति दिन पांचवे सप्तम नवमें जोय। दश इक्कीस चौबीस में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार:—

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्रविचार:।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चूल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेशे मुहूर्त:—

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य-(मार्ग) कार्तिक-मासयोः॥ (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, चं. बु. श. इन वारों में २।५।८।११लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों ३।६।११ में क्रूर हों १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो, ४था ८वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८वीं राशि लग्न में न हो चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी व. श्रा. का. और मार्गशीर्ष, फा. मास में शत-पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है॥

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष वृष	मि. क. सिं.	कर्क तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्य	म. कुं. मी.	मि. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खात दिशा ज्ञानं	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों, वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध. मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १६ वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षारजल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तमजल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्र जल	दक्षि. ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृतजल

गणना क्रमः— मध्यपूर्व-आग्नेय दक्षिणादि क्रमेण बोध्यम् ॥

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिम्। गणना-क्रमः—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्यं वारिवाहः।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान क्ष. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व. पुन. पु. श्ले. जलाभावः	आग्नेय म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा. शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पूषा. उषा अमृतजलम्	नैर्ऋत्य. वि. अनु. ज्ये. बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्तः

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेप्यापञ्चमीदिने। मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥ ७६

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३ एततिथौ शुक्ले १।२।३।५। तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११। स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषणलग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेवाश्चरे क्षुद्राद्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठामुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३. पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानि कारक, शेष दो बचने पर पाताल में धन हानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शांतौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगगृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकर्मनृपक्षोभे चक्रं तत्र निरीक्षते ॥

पापग्रहमुखहवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्ति विषाय

गोदद्यात् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । अयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् ॥ गोमूत्र मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ।

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हलप्रवहण मुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह० अश्वि० पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ॥

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)-द्यपादस्थे यदि संजायते रजः ।

तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़ कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ है ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्तः—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पु. पूर्वा ३, ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिनें, ३ तक लाभदायक ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ, (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल सूर्यनक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया) ।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गृहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक	धवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वायकर्म	सुखं	संख्या
शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	फलम्

लतावृक्षाद्यारोपणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो. ह. पुष्य अश्वि. ध. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वार हों, शुक्ल पक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है ॥ तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ४।९।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा. आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेऽपि

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	।४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
१ १	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११। वें पाप ग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६। ८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ७ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो । अन्यच्च—यात्रा यामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमंतु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ॥

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं.श.	चं. बृ.	गुरु	सू. शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. श.	वारा	ज्ये.	पूभा	रोहि.	उफा

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ १ ॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक् ॥ २ ॥

कालज्ञानम्	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेयां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट	

योगिनीवासचक्रम्

पू.	अग्नि.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तरे.	ईशा.	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रामें बायें ओर की ओर सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल मेंपूर्व को, गोधूलिमें पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अंगिरा मुहूर्त—गर्गजी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे, अंगिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषःकालः सप्तपञ्चा (५७) वर्गोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-घट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घट्यात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए।

कुम्भ और मीन क चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसपदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यांति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥ इति ॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रांति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोष चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ॥

सर्वांकसिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादिमुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को और दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत, वा रुपया शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी के घर या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्राके पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे ,पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

घटि	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥।	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.
११।	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.
१८॥।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.
२२॥	ला.	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	चं.	का.
३०	शु.	चं.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.

सूचना यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु-मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र २ अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गो, दधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजल पूर्णघट यात्रा पश्चाद्रिक्तघट यात्रा समय देखने में शुभ है। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट अंगहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रा मुहूर्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के स्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्ध, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त--चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूले सति शुभः।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३ ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ ।तथिषु; ३।५।६।८।९।११। १२ एषु लग्नेषु; १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभः ३।६।११ स्थानेषु पापः।४।८।शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः; सू.मं. वारौ; १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष:—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनं। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथावपि।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.		.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मि.	सिं.	ध.	कुं.	घातचन्द्र
र.		चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	बृ.	श.	घातवार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो	आ.		घातनक्षत्र
मे.	ष.	ध..	मि.	वृश्चि.	वश्चि.	मी.	ध.	कं.	वृश्चि.	मि.	मे.	चन्द्रघा.
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	ऽगं	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभकार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश--

अत्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरठ (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरठ के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली---(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्य	राज्यसबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धु दर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यक्षाणि---यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा च.बु.गु.शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. र. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इतोऽन्यद्भेषु निद्यः॥

पल्लीपात कर्तव्यकर्म---पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिये जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्---छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है मदिरा के योग से अथवा---छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं; पीनस सरदी थांस फल हीनी। छींकि पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाइ भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी॥ अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालिन धोबिन रजस्वला वेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का---आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्काः शुभावहाः॥ एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक॥

तीर्थ में मुण्डन विचार---मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्।

हर प्रकार की पुस्तकें---मिलने का पता---

मोतीलाल बनारसीदास नेपालीखपरा पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस।

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
स्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्र समीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्र पक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुवों में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रह अतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध, महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटे	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हों	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओं में विग्रह	तिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देशक्षय	बनपशु गांव बसे	मनु.शून्य हों
श्वेतमंडल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज्य नाश	उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबी कबूतर-घर में बसे	गृह स्वा.नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश		
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब-अधिक देख पड़े	रोगभय
स्त्रीवध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्र बालकवध	दुर्भिक्ष पड़े		राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सब वस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१६ दिनका पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त-हानि	विपत्ति	सुख सुभोग	फलम्
पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०	पातन

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदाग्राह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांति वैधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च विष्टयां च,तैलाभ्यंगो न पर्वसु

विशेषः—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वात-रोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादी फलम्—मस्तक पर काकस्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है, कमर, कन्धे पर भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है॥ काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृत-छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे, इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं॥

अथ काकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत्॥ लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। निर्दोषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्॥

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोष—निवृत्यर्थं दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

मुष्टिचक्र

अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखवावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि ३।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्यनाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२(०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचारः

स्वप्न ७ प्रकारका होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थप्रार्थित (जागृतावस्थामें इच्छाकी हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)॥ पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न :—राजा विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना। महल, पर्वत, सिंह अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, वेदध्वनि श्रवण रक्त पीत, पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति, दही चावल भोजन, जूआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करना है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखें कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में बहुत गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्रवाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकडी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, मरया नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है, गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना सूर्यमण्डल का दीखना अपना मरना दीखें तो रोगी पुरुष का रोग-नाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्यालाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना श्वेत, चन्दन, श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है राजा गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों, तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दूकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाये बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिये इसको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे। यदि किसी की बहन यह स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शांति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न :—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना ८४
अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना रुई कपास, तेल लोहा मिलना, इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग-कष्टसूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को पराई स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे भैंस पर चढ़कर तेल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना बन्दर, सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत, प्रेत, चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ, रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े, महल ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र, इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक होता है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा ?

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का तीन मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण-भोजनादि करवाना चाहिये। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुर्निर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्म लग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे चरे चरे, स्थिरे-द्विस्स्वभावे-दीर्घायुः। द्विःस्वभाव-द्विस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे स्थिरे। चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११, १, ४, ७, १०, ५, ९. इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है ३।४ में पापग्रह हों; पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु।

३—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

प्रश्न–जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौकार्यगौ युतौ । मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥१॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः ।

कार्य सिद्ध होगा कि नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है । शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने । अशुभ वार में दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होती है । विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहनी ।

क्रय विक्रय प्रश्न—प्रश्नलग्न का स्वामी क्रेता (खरीदने वाला), ग्यारहवें घर का स्वामी विक्रेता (बेचने वाला) और लग्न क्रयाणक (खरीदने योग्य वस्तु) है, ऐसा जानो । यदि लग्न बली हो अर्थात् उसको स्वामी या शुभ ग्रह देखें या शुभ ग्रह उसमें पड़े हों अथवा केन्द्र में शुभ ग्रहों का योग हो तो वस्तु के खरीदने वाले को लाभ रहेगा । यदि ग्यारहवाँ भाव पूर्ववत् बली हो तो बेचने वाले को लाभ जानो । कितना लाभ होगा ? इसके जानने के लिये लाभेश का बल विचारो; यदि वह अपने घर में रहे तो दुगुना, शत्रु के घर में हो तो सवाया, सम घर का हो तो ड्योढ़ा और मित्र का हो तो चतुर्थांश लाभ होगा; इसी प्रकार खरीदने वाले को भी जानना चाहिये । प्रश्न का उत्तर देने में योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिये ॥

क्या यह बात सत्य है ?—प्रश्न काल के वार तात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़ कर वर्तमान तिथि से गुणा दो, फिर उसे ४ से भाग देना शेष १ । ३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचे तो झूठी जानो ॥

स्त्री पुरुष में प्रथम किस की मृत्यु होगी ?

स्त्री पुरुष के नामकी मात्रा को ४से गुणा करें, जो अक्षर होवें उनको दुगुना कर जोड़ देवे फिर ३ का भाग देवे यदि २ शेष रहे तो प्रथम स्त्री की मृत्यु और १ या ० बाकी रहे तो प्रथम पुरुष की मृत्यु जानना । किन्तु मात्रा जोड़ने में भूल न करें ॥

प्रवासी प्रश्न—प्रश्नकर्ता के उच्चारण किये हुए अक्षरों को (वा फल का नाम लेवे तो फलाक्षरों को) ६ से गुणा करके उसमें १ जोड़ दे फिर सात का भाग देने से एक से आदि लेकर जोअङ्क बचे उसे फल कहे । १ शेष रहे तो प्रवासी आना चाहता है । २ शेष रहे तो मार्ग के अर्द्धभाग में है । ३ बचे तो ग्राम के निकट आ गया है । ४ बचे तो घर में लाभ सहित आ गया है । ५ बचे तो रोगी है । ६ बचे तो पीड़ित है । ७ बचे तो आने का यत्न करता है । धनेश वक्री न हो तो प्रवासी कल्याणपूर्वक है ।

देशांतर से पत्र आवेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान में शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा मार्ग में है । स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले । द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले । प्रश्न लग्न में बुध चंद्र हों और शुभग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा ॥

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं ?

साहूकार (जिस से नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दें, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले । २ शेष रहे तो न मिले । तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले ॥

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इस की केवल गत घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ नहीं होवे ॥

पुत्र लाभ होगा कि नहीं ?—तात्कालिक तिथि की संख्या को ४ गुणा करके दो से भाग देना जो लब्धि आवे उसको तीन गुणा करके ४ से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें । १ शेष बचे तो विलम्ब से सन्तान पुत्र लाभ होगा चिरंजीविता के लिये पार्थिव-शिवपूजन करना चाहिए । २ शेष रहे तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंशपुराण का नवाह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवा लक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे । ३ शेष बचे तो शीघ्र लाभ होगा, किसी गरीब की कन्या को विवाह दें या उसके विवाह में गुप्तदान से मदद करें ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा । ४ (०) शेष बचे तो सन्तान सुख शीघ्र होगा ॥

विवाह होगा किनहीं ?—यदि लग्न से २।३।६।७ १०।११ इन स्थानों में चन्द्रमा को बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायगा यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा । यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो यद्वा लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७। इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जावेगा । ८५

अथरोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्

तृतीय नवम द्वादश षष्ठ स्थान में प्रश्नलग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना । यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता । यदि बारहवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष, चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष, सूर्य के होने से देवी दोष, अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रफल का दोष कहे, शनि के होने से अपने गोत्र की देवी (सती) का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थान में हो तो भूतदोष जानना । व्यय तथा अष्टम स्थान में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जल देवी का दोष होता है । परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं । दोषसूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो बलवान् हो तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोषसूचक ग्रह भी नीच शत्रुक्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होता है । बलवान् पापग्रह केन्द्र में हों तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होवे हैं, यदि शुभ ग्रह केन्द्रस्थान में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है ।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़े और ८ का भाग देवे शेष ३।७ बचें तो देवता की, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना । उदयाद् घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता । भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति, क (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) र्काः (१२) नाशं जीवति ॥२॥

अथ सर्वसाधारणोपयोगी प्रश्नः

मित्र मिलाप प्र. १			मुकदमा प्र. २			यात्रा प्र. ३		
७	३	१	४	२	३	५	४	३
३	६	५	३	९	८	१	६	९
४	९	८	६	७	५	२	८	७
पशु लेने का प्र. ४			**लाभालाभ का प्र. ५**			**नौकरी का प्र. ६**		
२	१	३	७	४	५	१	५	८
४	५	६	६	८	९	७	३	६
७	९	८	२	३	१	९	४	२
विद्या परीक्षा प्र. ७			**परदेशी प्र. ८**			**शत्रुनाश प्र. ९**		
७	८	५	९	७	४	६	८	९
४	३	२	३	२	८	२	१	३
९	१	६	१	६	५	४	५	७

प्रश्नकर्ता फूल पुष्प कणिका आदि से पंचांग की पूजा करके जिस विषय का प्रश्न करना चाहे उसी विषय के चक्र के नवघरों में से किसी एक घर पर इष्टस्मरण करता हुआ अंगुली रखे, फिर उसी विषय के फल चक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवे, यथार्थ फल मिलेगा। स्मरण रहे कि प्रश्न एक दिन में एक ही बार करना चाहिये, बार बार जिज्ञासी के प्रश्न करने पर फल न मिलेगा।

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कष्टमय युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी।
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचारके गमनकरो लाभ होगा।
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में सम्मान मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु अब खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो सही।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम।

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे यह दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा।
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षा का फल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते में ठहरा हुआ है।
६ अभी मन में आने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ कष्ट में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है सफल न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जावेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

गुप्त चिंता का प्र० १०			कर्ज लेना देना प्र० ११			खेती करूँ या नहीं प्र० १२		
७	८	२	१	३	२	१	८	३
९	६	१	८	९	६	६	४	७
३	४	५	५	४	७	५	९	२
रोगी का प्र० १३			**गर्भ में क्या है प्र० १४**			**चोरी गई का प्र० १५**		
९	६	२	७	६	१	८	७	३
७	५	८	४	२	८	४	९	६
३	४	१	३	५	९	२	५	१
पुत्र गोद लेना प्र० १६			**अनाज खरीद का प्र० १७**			**विवाह शादी प्र० १८**		
३	५	९	८	७	५	५	४	३
४	१	८	९	४	३	२	१	६
२	६	७	२	१	६	८	९	७

रोजगार का प्र० १९		
६	७	९
२	४	८
१	५	३

गुप्त चिन्ता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट में मन पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)
१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया तो खोया, लिया तो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

खेती करूं या नहीं फल (१२)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१३)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ प्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी हैं।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल (१४)
१ इस गर्भ की सुआशा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ जोड़ी कन्या जनेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

चोरी गई का फल (१५)
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर घर ही है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोरने तेरी वस्तु और को देदी।
७ माल आधा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर छोड़ीजायगी माल मिलेगा।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)
१ गोद लेने से लाभ रहेगा।
२ यह लड़का सपावार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी [illegible]
६ सावध[illegible]
७ बेमुरव्वत [illegible]
८ घर में अनबन रहेगा।
९ सुखदाई नहीं है।

अनाज खरीद फल (१७)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अब के खराब होने का भय है।
५ सावधानी से व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सवाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

विवाह शादी का फल (१८)
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुणवाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (१९)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेषपरिश्रमकरनेसे रोजगारहोगा।
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ कलकिदुकी कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ चोटे पहली दशा है अभी चुप रहो।
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

दिशा में है ?

तिथि शुक्ल प्रतिपदा से, वार सूर्य से, गिने तो और मिलाय लग्न का अंक जोड़ ४ से भाग देवे। शून्य शेष रहे तो पूर्व एक बचे तो दक्षिण, २ बचे तो पश्चिम, ३ बचे तो उत्तर, दिशा कहें। हारजीत के प्रश्न करते समय पूछनेवाला स्वयं अपना स्तन कर्ण शिर हाथ मुख नाक कमर स्पर्श करे तो जीत कहे और अंगस्पर्श करे तो हार होती है।

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशा चान्तर्दशा ज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६.			चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
उ.फा.उ.षा			रो. ह. श्रवण				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येन्तरम्			तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.
०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
१	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पूभा.				पु. अनु. उ. भा.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रे				म. मू. अ.				पूफा.पूषा. भ.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य वि. श.			अ.श्ले.अनुपूभा		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०

भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			सङ्कटा व. ८		
बुध			शनि			शुक्र			केतु		
भ.म.ज्ये.उभा			कृ पूफा मू रे.			रो.उफा.पूषा.			मृ. ह. उषा.		
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

दशा तथा व दशेश ग्रहाः जन्म नक्षत्र

अन्तर्दशा मासादि

शुभदशा- मं. धा. भ. सि.

नेष्टदशा–पि. भ्रा. उ. सं.

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घटयादि को ६० में से घटा कर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घटयादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष. फिर शेषांक को १२ से गुणें भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणा कर भभाग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलबोधकचक्रम्—

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभः	हानिः	कष्ट	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखं	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	[illegible]	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्गति	शत्रुना.	स्त्रीकष्टं	पीड़ा	पुण्योद.	राज्यला.	धनला.	विरो
बुधः	[illegible]	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलहः	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला	सुखला.	[illegible]
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा०	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला.	व्ययः
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्र पी.	जयः	स्त्रीकष्टं	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धमहा.	विजयः	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मन्थाः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा.	लाभः	कष्टम्

❀ अथ वर्षप्रवेश सारणीयम् ❀

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

वर्षफलसाधनप्रकारः—(१) अभीष्ट संवत (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्रसौरात्) इस प्रकार से गतवर्ष लाकर उसीगताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट. घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घटयादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना; ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट-सूर्यवत वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष-कुंडली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेशका सामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारणियों से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकारः—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकी चक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्म-स्थान से होते हैं; परंच राहु केतु को विपरीत जानना॥ फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीड़ा होती है; शुभग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है, इत्यादि ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहें॥

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः		
सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि.	ल.	प.
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा.	ल.	प.

अथ वर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल—सू. १।५, चं० २।४, मं० ९।८।१०, बु० ३।६।, गु० ९।१२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (चं०, बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिन के वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्र शत्रु ज्ञानम्—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वेंहों तोसम, १।४।७।१०वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११वें १० कला ४।१०वें १५ कला, और १७वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचो अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा॥ यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

अथ लग्नपश्चात सूक्ष्म लग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो। फिर सूर्य की राशि, अंश प्रमाण लग्नसारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना; राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठक और अल्पकोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्मस्पष्ट लग्न होता है॥

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुन्थादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	गुरु.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

योगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

॥ लग्न सारणीयम् ॥

पलभा ७।१२

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदयपलानि
	२	२		२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
	३८	४५	५२	५९	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४७
	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३५	४८	५९	११	२३	३५	
	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३५०
	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तु.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४३	५३	२	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	
म.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९९
	२२	३२	४१	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५८	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कु.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	३८	४५	५२	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	३	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

॥ दशमलग्न सारणीयम् ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अं०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	लग्नोदयपलानि
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृ.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
मि.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	३२३
२	४१	५१	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	३२३
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२२	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
क.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	
तु.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२७८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृ.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	२९९
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
८	४१	५१	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
म.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	३२३
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
कु.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्नसारणी में कोष्ठक देखो तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घटचादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए यह इष्ट युक्त किया हुआ लग्नसारणी का कोष्ठक हुआ इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारणी में देखो तो (१७।५१) मीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि के ५ अंश लिये इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० को युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक (१७।५१) का अन्तर किया तो पल २ हुआ इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्धि ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे, इनको ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्धि ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ। अथ दशमलग्नसाधनम्—सूर्योदयात् घटचादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है

११) २(०।१०।५५
६०
१२०
११०
१०
६०
६००
६०५

(यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट का जन्म-कालीन इष्ट मानकर इस दशम-लग्नसारणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी-कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशियुक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि करने से सप्तमभाव होता है।

भावसाधनम्—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीय भाव की आरम्भ सन्धि होगी, फिर उसी आरम्भ सन्धि में षष्ठांशयुक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांशयुक्त करने से चतुर्थ भाव की आरंभ सन्धि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थ भाव की आरम्भसन्धि से लग्न की विराम सन्धि तक १ से ५ पर्यन्त केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धि सहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भ सन्धि में एक राशियुक्त करने से पंचम भाव की आरम्भ सन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशियुक्त करने से पंचम भाव होगा, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धि सहित ६ भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन उपर्युक्त सन्धि सहित छः ही भावों में ६-६ राशियुक्त करने से सन्धि सहित द्वादश भाव होते हैं।

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

(दिनद्वयान्तरकरणात्सूक्ष्मगतिः) मासारम्भे केतक्यहर्गणः ६९३९ चक्र ३ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
चैत्र-शुक्लपक्षः	१	र.	११।२०।३१।२१	८। ३।२३।३८	१०।२३।३०।३२	१।२७।२५।४८	०। ६।१३।३०	६।१४।३३।१८	८।२६।३६।११	२।२५।४४।४९	६। १।५२।४४
	२	चं.	११।२१।३०।२४	८। ३।४८।४६	१०।२४।४५।३९	१।२७।३४।४८	०। ७।२७।३३	६।१४।२९।१९	८।२६।३३। १	२।२५।४५।१८	६। १।५१। ७
	३	मं.	११।२२।२९।२४	८। ४।१३।३२	१०।२६। २।४४	१।२७।४३।५४	०। ८।४१।३४	६।१४।२५।१८	८।२६।२९।५१	२।२५।४५।५१	६। १।४९।३०
	४	बु.	११।२३।२८।२२	८। ४।३७।५६	१०।२७।२१।४५	१।२७।५३। ६	०। ९।५५।३३	६।१४।२१।१५	८।२६।२६।४०	२।२५।४६।२६	६। १।४७।५३
	५	गु.	११।२४।२७।१९	८। ५। १।५८	१०।२८।४२।४३	१।२८। २।२४	०।११। ९।३०	६।१४।१७। ९	८।२६।२३।३०	२।२५।४७। ४	६। १।४६।१६
	७	शु.	११।२५।२६।१४	८। ५।२५।३९	११।००। ५।३७	१।२८।११।५२	०।१२।२३।२६	६।१४।१३। २	८।२६।२०।१९	२।२५।४७।४०	६। १।४४।३८
	८	श.	११।२६।२५। ६	८। ५।४८।५८	११। १।३०।२८	१।२८।२१।२०	०।१३।३७।२०	६।१४। ८।५२	८।२६।१७। ८	२।२५।४८।२७	६। १।४३।००
	९	र.	११।२७।२३।५६	८। ६।११।५५	११। २।५७।१५	१।२८।३१। ०	०।१४।५१।१२	६।१४। ४।४०	८।२६।१३।५८	२।२५।४९।१२	६। १।४१।२२
	१०	चं.	११।२८।२२।४४	८। ६।३४।३०	११। ४।२५।५९	१।२८।४०।४१	०।१६। ५। २	६।१४। ०।२५	८।२६।१०।४७	२।२५।५०। २	६। १।३९।४३
	११	मं.	११।२९।२१।३०	८। ६।५६।४५	११। ५।५६।२८	१।२८।५०।३२	०।१७।१८।५१	६।१३।५६। ९	८।२६। ७।३७	२।२५।५०।५४	६। १।३८। ४
	१२	बु.	०। ०।२०।१४	८। ७।१८।३७	११। ७।२८।३४	१।२९।००।२८	०।१८।३२।३९	६।१३।५१।५०	८।२६। ४।२६	२।२५।५१।४८	६। १।३६।२५
	१३	गु.	०। १।१८।५६	८। ७।४०। ७	११। ९। २।१८	१।२९।१०।३२	०।१९।४६।२५	६।१३।४७।२९	८।२६। १।१५	२।२५।५२।४४	६। १।३४।४५
	१३	शु.	०। २।१७।३७	८। ८। १।१६	११।१०।३७।४१	१।२९।२०।४०	०।२१। ०। ८	६।१३।४३। ५	८।२५।५८। ५	२।२५।५३।४४	६। १।३३। ५
	१४	श.	०। ३।१६।१६	८। ८।२२। ३	११।१२।१४।५६	१।२९।३०।५६	०।२२।१३।५०	६।१३।३८।४०	८।२५।५४।५४	२।२५।५४।४५	६। १।३१।२५
	१५	र.	०। ४।१४।५२	८। ८।४२।२९	११।१३।५३।४८	१।२९।४१।१८	०।२३।२७।३१	६।१३।३४।१२	८।२५।५१।४३	२।२५।५५।५०	६। १।२९।४५
वैशाख-कृष्णपक्षः	१	चं.	०। ५।१३।२६	८। ९। २।३३	११।१५।३४।१८	१।२९।५१।४६	०।२४।४१।१०	६।१३।२९।४२	८।२५।४८।३३	२।२५।५६।५७	६। १।२८। ५
	२	मं.	०। ६।११।५९	८। ९।२२।१६	११।१७।१६।२६	२। ०। २।२०	०।२५।५४।४७	६।१३।२५। ८	८।२५।४५।२२	२।२५।५८। ८	६। १।२६।२४
	३	बु.	०। ७।१०।३०	८। ९।४१।४५	११।१९।००। ६	२। ०।१३। ०	०।२७। ८।२५	६।१३।२०।३३	८।२५।४२।१२	२।२५।५९।२३	६। १।२४।४२
	४	गु.	०। ८। ८।५९	८।१०।००।४३	११।२०।४५।२६	२। ०।२३।४४	०।२८।२२। १	६।१३।१५।५८	८।२५।३९। १	२।२६। ०।४१	६। १।२३। ३
	५	शु.	०। ९। ७।२६	८।१०।१९।११	११।२२।३२।२६	२। ०।३४।३२	०।२९।३५।३५	६।१३।११।२३	८।२५।३५।५१	२।२६। २। १	६। १।२१।२४
	६	श.	०।१०। ५।५१	८।१०।३७। ९	११।२४।२१। ७	२। ०।४५।२६	१। ०।४९। ६	६।१३। ६।४९	८।२५।३२।४०	२।२६। ३।२६	६। १।१९।४६
	७	र.	०।११। ४।१५	८।१०।५४।३७	११।२६।११।२८	२। ०।५६।२४	१। २। २।३५	६।१३। २।१५	८।२५।२९।२९	२।२६। ४।५३	६। १।१८। ८
	८	चं.	०।१२। २।३७	८।११।११।३५	११।२८। ३।३०	२। १। ७।२८	१। ३।१६। ३	६।१२।५७।४२	८।२५।२६।१९	२।२६। ६।२३	६। १।१६।३१
	९	मं.	०।१३। ०।५७	८।११।२८। ३	११।२९।५७।१२	२। १।१८।३६	१। ४।२९।२८	६।१२।५३। ९	८।२५।२३। ९	२।२६। ७।५५	६। १।१४।५४
	१०	बु.	०।१३।५९।१५	८।११।४४। २	०। १।५२।३४	२। १।२९।४९	१। ५।४२।५०	६।१२।४८।३६	८।२५।१९।५८	२।२६। ९।३२	६। १।१३।१९
	११	गु.	०।१४।५७।३२	८।११।५९।४३	०। ३।४९।३१	२। १।४१। ७	१। ६।५६।१०	६।१२।४४। ४	८।२५।१६।४८	२।२६।११।१०	६। १।११।४३
	१२	शु.	०।१५।५५।४७	८।१२।१४।४२	०। ५।४८। २	२। १।५२।३०	१। ८। ९।२९	६।१२।३९।३३	८।२५।१३।३७	२।२६।१२।५२	६। १।१०। ९
	१३	श.	०।१६।५४। ०	८।१२।२९। ९	०। ७।४९। ७	२। २। ३।५७	१। ९।२२।४५	६।१२।३५। २	८।२५।१०।२७	२।२६।१४।३६	६। १। ८।३५
	३०	र.	०।१७।५२।११	८।१२।४२।५५	०। ९।४९।४८	२। २।१५।३०	१।१०।३५।५८	६।१२।३०।३१	८।२५। ७।१६	२।२६।१६।२४	६। १। ७। ४

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः २८ चक्र ४ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
वैशाख-शुक्लपक्षः	१	चं.	०।१८।५०।२१	८।१२।५६।२३	०।११।५३। ३	२। २।२७। ७	१।११।४९। ९	६।१२।२६। १	८।२५। ४। ५	३।२६।१८।१४	६। १। ५।३२
	२	मं.	०।१९।४८।२९	८।१३। ९।२१	०।१३।५७।५२	२। २।३८।५०	१।१३। २।१९	६।१२।२२।३१	८।२५। ०।५४	३।२६।२०। ८	६। १। ४। १
	३	बु.	०।२०।४६।३५	८।१३।२२।४९	०।१६। ४।१५	२। २।५०।३७	१।१४।१५।२६	६।१२।१७। १	८।२४।५७।४३	३।२६।२२। ४	६। १। २।३०
	४	गु.	०।२१।४४।३९	८।१३।३३।४७	०।१८।१२।१४	२। ३। २।२८	१।१५।२८।३०	६।१२।१२।३२	८।२४।५४।३३	३।२६।२४। ४	६। १। १। १
	५	शु.	०।२२।४२।४०	८।१३।४५।२१	०।२०।२४।१७	२। ३।१४।२२	१।१६।४१।३९	६।१२। ८। ०	८।२४।५१।२२	३।२६।२६।१३	६। ०।५९।२८
	६	श.	०।२३।४०।४१	८।१३।५५।२१	०।२२।३६। २	२। ३।२६।१९	१।१७।५४।४५	६।१२। ३।३२	८।२४।४८।११	३।२६।२८।२२	६। ०।५७।५६
	७	र.	०.२४।३८।४०	८।१४। ५। ८	०।२४।४७।३१	२। ३।३८।२०	१।१९। ७।४८	६।११।५९। ६	८।२४।४५।००	३।२६।३०।३३	६। ०।५६।२६
	८	चं.	०।२५।३६।३८	८।१४।१४।१४	०।२६।५८।४४	२। ३।५०।२३	१।२०।२०।४८	६।११।५४।४३	८।२४।४१।४९	३।२६।३२।४६	६। ०।५४।५८
	९	मं.	०।२६।३४।३५	८।१४।२३।४१	०।२९। ९।४१	२। ४। २।३१	१।२१।३३।४५	६।११।५०।२२	८।२४।३८।३९	३।२६।३५।००	६। ०।५३।३२
	१०	बु.	०।२७।३२।२९	८।१४।३०।२७	१। १।२०।२२	२। ४।१४।४१	१।२२।४६।३९	६।११।४६। ४	८।२४।३५।२८	३।२६।३७।१६	६। ०।५२। ६
	११	गु.	०।२८।३०।२३	८।१४।३७।३३	१। ३।३०।४७	२। ४।२६।५५	१।२३।५९।३०	६।११।४१।४८	८।२४।३२।१८	३।२६।३९।३४	६। ०।५०।४२
	१२	शु.	०।२९।२८।१५	८।१४।४३।५९	१। ५।४०।५५	२। ४।३९।११	१।२५।१२।१८	६।११।३७।३४	८।२४।२९। ७	३।२६।४१।५३	६। ०।४९।१९
	१३	श.	१। ०।२६। ६	८।१४।४९।४५	१। ७।५१।४०	२। ४।५१।३२	१।२६।२५। ३	६।११।३३।२३	८।२४।२५।५६	३।२६।४४।१४	६। ०।४७।५८
	१४	र.	१। १।२३।५५	८।१४।५४।५१	१।१०। ०।२०	२। ५। ३।५५	१।२७।३७।४५	६।११।२९।१४	८।२४।२२।४५	३।२६।४६।३६	६। ०।४६।३९
	१५	चं.	१। २।२१।४४	८।१४।५९।१७	१।१२। ६।५४	२। ५।१६।२२	१।२८।५०।२४	६।११।२५। ७	८।२४।१९।३५	३।२६।४९।००	६। ०।४५।२२

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
ज्येष्ठ-कृष्णपक्षः	१	मं.	१। ३।१९।३०	८।१५। ३। २	१।१४।११।२०	२। ५।२८।५३	२। ०। ३। ०	६।११।२२। ३	८।२४।१६।२४	३।२६।५१।२४	६। ०।४४। ६
	२	बु.	१। ४।१७।१५	८।१५। ६। ८	१।१६।१३।४१	२। ५।४१।२८	२। १।१५।३३	६।११।१७। ०	८।२४।१३।१३	३।२६।५३।५०	६। ०।४२।५२
	३	गु.	१। ५।१४।५९	८।१५। ८।३३	१।१८।१३।५४	२। ५।५४। ५	२। २।२८। ३	६।११।१३। २	८।२४।१०। ३	३।२६।५६।१८	६। ०।४१।३९
	३	शु.	१। ६।१२।४१	८।१५।१०।१८	१।२०।१२। १	२। ६। ६।४६	२। ३।४०।३०	६।११। ९। ४	८।२४। ६।५२	३।२६।५८।४८	६, ०।४०।२८
	४	श.	१। ७।१०।२२	८।१५।११।२४	१।२२। ८। २	२। ६।१९।३०	२। ४।५२।५५	६।११। ५।१०	८।२४। ३।४१	३।२७। १।१९	६। ०।३९।१८
	५	र.	१। ८। ८। ०	८।१५।११।५१	१।२४। १।४२	२। ६।३२।२६	२। ६। ५।१७	६।११। १।२०	८।२४। ०।३१	३।२७। ४। ०	६। ०।३७।५७
	७	चं.	१। ९। ५।३७	८।१५।११।३३	१।२५।५२।१७	२। ६।४५।२२	२। ७।१७।३५	६।१०।५७।३५	८।२३।५७।२०	३।२७। ६।४२	६। ०।३६।३९
	८	मं.	१।१०। ३।१४	८।१५।१०।२९	१।२७।३९।४६	२। ६।५८।२०	२। ८।२९।५१	६।१०।५३।५४	८।२३।५४। ९	३।२७। ९।२६	६। ०।३५।२३
	९	बु.	१।११। ०।४९	८।१५। ८।३९	१।२९।२४।११	२। ७।११।१९	२। ९।४२। ५	६।१०।५०।१७	८।२३।५०।५८	३।२७।१२।१२	६। ०।३४। ८
	१०	गु.	१।११।५८।२४	८।१५। ६। ४	२। १। ५।३०	२। ७।२४।२०	२।१०।५४।१६	६।१०।४६।३९	८।२३।४७।४८	३।२७।१५।००	६। ०।३२।५६
	११	शु.	१।१२।५५।५७	८।१५। २।४३	२। २।४३।४३	२। ७।३७।२२	२।१२। ६।२५	६।१०।४३।१५	८।२३।४४।३७	३।२७।१७।५०	६। ०।३१।४५
	१२	श.	१।१३।५३।३०	८।१४।५८।३६	२। ४।१८।५०	२। ७।५०।२६	२।१३।१८।३२	६।१०।३९।५०	८।२३।४१।२६	३।२७।२०।४२	६। ०।३०।३६
	१३	र.	१।१४।५१। १	८।१४।५३।४२	२। ५।५०।५३	२। ८। ३।३२	२।१४।३०।३७	६।१०।३६।२९	८।२३।३८।१५	३।२७।२३।३५	६। ०।२९।२८
	१४	चं.	१।१५।४८।३३	८।१४।४८। ३	२। ७।२१।४३	२। ८।१६।३९	२।१५।४२।३९	६।१०।३३।११	८।२३।३५। ५	३।२७।२६।३१	६। ०।२८।२३
	३०	मं.	१।१६।४६। २	८।१४।४१।३६	२। ८।४९।१०	२। ८।२९।४८	२।१६।५४।३८	६।१०।२९।५९	८।२३।३१।५४	३।२७।२९।२९	६। ०।२७।२०

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ५८।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
ज्येष्ठ-शुक्लपक्षः	१	बु.	१।१७।४३।३१	८।१४।३४।२४	२।१०।१३।१३	२। ८।४२।५९	२।१८। ६।३५	६।१०।२६।५१	८।२३।२८।४३	२।२७।३२।२९	६। ०।२६।१९
	२	गु.	१।१८।४०।५९	८।१४।२२।२४	२।११।३३।५४	२। ८।५६।११	२।१९।१८।३१	६।१०।२३।४७	८।२३।२५।३२	२।२७।३५।३०	६। ०।२५।२०
	४	शु.	१।१९।३८।२८	८।१४।१७।३९	२।१२।५१।१२	२। ९। ९।२५	२।२०।३०।२४	६।१०।२०।४९	८।२३।२२।२१	२।२७।३८।३४	६। ०।२४।२३
	५	श.	१।२०।३५।५५	८।१४। ८। ८	२।१४। ५। ४	२। ९।२२।४०	२।२१।४२।१४	६।१०।१७।५१	८।२३।१९।११	२।२७।४१।३९	६। ०।२३।२८
	६	र.	१।२१।३३।२०	८।१३।५७।५१	२।१५।१५।३४	२। ९।३५।५७	२।२२।५४। २	६।१०।१५। १	८।२३।१६।००	२।२७।४४।४६	६। ०।२२।३५
	७	चं.	१।२२।३०।४२	८।१३।४६।४६	२।१६।२२।४१	२। ९।४९।१६	२।२४। ५।४९	६।१०।१२।११	८।२३।१२।४९	२।२७।४७।५६	६। ०।२१।४३
	८	मं.	१।२३।२८। ४	८।१३।३४।४५	२।१७।२७।१८	२।१०। २।३९	२।२५।१७।३२	६।१०। ९।२८	८।२३। ९।३९	२।२७।५१। १	६। ०।२०।५०
	९	बु.	१।२४।२५।२५	८।१३।२२।२८	२।१८।२७।४७	२।१०।१६। २	२।२६।२९। ९	६।१०। ६।५०	८।२३। ६।२८	२।२७।५४। ७	६। ०।२०। ०
	९	गु.	१।२५।२२।४६	८।१३। ९।५३	२।१९।२४। ६	२।१०।२९।२५	२।२७।४०।४२	६।१०। ४।१८	८।२३। ३।१७	२।२७।५७।१५	६। ०।१९।१२
	१०	शु.	१।२६।२०। ६	८।१२।५७।००	२।२०।१६।१६	२।१०।४२।५०	२।२८।५२।११	६।१०। १।४९	८।२३। ०। ७	२।२८। ०।२५	६। ०।१८।२५
	११	श.	१।२७।१७।२६	८।१२।४४। ८	२।२१। ४।१७	२।१०।५६।१६	३। ०। ३।३६	६। ९।५९।२७	८।२२।५६।५६	२।२८। ३।३७	६। ०।१७।४१
	१२	र.	१।२८।१४।४५	८।१२।३०।२४	२।२१।४८। ९	२।११। ९।४२	३। १।१४।५७	६। ९।५७।१०	८।२२।५३।४५	२।२८। ६।४९	६। ०।१६।५८
	१३	चं.	१।२९।१२। ४	८।१२।१६।५८	२।२२।२७।५१	२।११।२३। ८	३। २।२६।१४	६। ९।५४।५९	८।२२।५०।३४	२।२८।१०। ३	६। ०।१६।१७
	१४	मं.	२। ०। ९।२३	८।१२। २।३८	२।२३। ३।२५	२।११।३६।३६	३। ३।३७।२६	६। ९।५२।५२	८।२२।४७।२३	२।२८।१३।१९	६। ०।१५।३७
	१५	बु.	२। १। ६।४१	८।११।४८।१३	२।२३।३५।५१	२।११।५०। ५	३। ४।४८।३४	६। ९।५०।५१	८।२२।४४।१२	२।२८।१६।३६	६। ०।१४।५९
आषाढ़-कृष्णपक्षः	१	ग.	२। २। ३।५८	८।११।३३।३६	२।२४। ३।५०	२।१२। ३।३५	३। ५।५९।३८	६। ९।४८।५५	८।२२।४१। २	२।२८।१९।५५	६। ०।१४।२४
	२	शु.	२। ३। १।१५	८।११।१८।४५	२।२४।२७।२१	२।१२।१७। ५	३। ७।१०।३७	६। ९।४७। ५	८ २२।३७।५१	२।२८।२३।१६	६। ०।१३।५१
	३	श.	२। ३।५८।३२	८।११। ३।४०	२।२४।४६।२६	२।१२।३०।३६	३। ८।२१।३३	६। ९।४५।१९	८।२२।३४।४०	२।२८।२६।३९	६। ०।१३।१९
	४	र.	२। ४।५५।४८	८।१०।४८। ६	२।२५। १। ३	२।१२।४४। ८	३। ९।३२।२५	६। ९।४३।४०	८।२२।३१।३०	२। ८।३०। ३	६। ०।१२।५०
	५	चं.	२। ५।५३। ४	८।१०।३२।२०	२।२५।११।१४	२।१२।५७।४१	३।१०।४३।१२	६। ९।४२। ५	८।२२।२८।१९	२।२८।३३।२९	६। ०।१२।२२
	६	मं.	२। ६।५०।२०	८।१०।१६।२०	२।२५।१६।५७	२।१३।११।१४	३।११।५३।५५	६। ९।४०।३६	८।२२।२५। ८	२।२८।३६।५७	६। ०।११।५६
	७	बु.	२। ७।४७।३५	८।१०। ०। ७	२।२५।१८।१४	२।१३।२४।५०	३।१३। ४।३४	६। ९।३९।११	८।२२।२१।५७	२।२८।४०।२६	६। ०।११।३१
	८	गु.	२। ८।४४।४९	८। ९।४३।१५	२।२५।१४।३०व	२।१३।३८।२९	३।१४।१५।१७	६। ९।३७।५३	८।२२।१८।४६	२।२८।४३।५८	६। ०।११। ८
	९	शु.	२। ९।४२। २	८। ९।२४।४२	२।२५। ७। ९	२।१३।५२। ७	३।१५।२५।५५	६। ९।३६।४२	८।२२।१५।३५	२।२८।४७।२९	६। ०।१०।४७
	११	श.	२।१०।३९।१५	८। ९। ७।२७	२।२४।५६।१०	२।१४। ५।४५	३।१६।३६।२९	६। ९।३५।३७	८।२२।१२।२४	२।२८।५१। २	६। ०।१०।२८
	१२	र.	२।११।३६।२८	८। ८।५०।३०	२।२४।४१।३५	२।१४।१९।२३	३।१७।४६।५८	६। ९।३४।३८	८।२२। ९।१४	२।२८।५४।३३	६। ०।१०।१२
	१३	चं.	२।१२।३३।४१	८। ८।३३।५२	२।२४।२३।२१	२।१४।३३। १	३।१८।५७।२२	६। ९।३३।३४	८।२२। ६। ३	२।२८।५८। ६	६। ०। ९।५८
	१४	मं.	२।१३।३०।५४	८। ८।१७।३२	२।२४। १।३१	२।१४।४६।३९	३।२०। ७।४१	६। ९।३३।५६	८।२२। २।५२	२।२९। १।३९	६। ०। ९।४५
	३०	बु.	२।१४।२८। ७	८। ८। १।३०	२।२३।३६। ३	२।१५। ०।१७	३।२१।१७।५५	६। ९।३२।१४	८।२१।५९।४१	२।२९। ५।१२	६। ०। ९।३४

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ८७ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आषाढ-शुक्लपक्षः	१	गु.	२।१५।२५।२०	८। ७।४५।४७	२।२३। ६।५८	२।१५।१३।५५	३।२२।२८। ५	६। ९।३१।३७	८।२१।५६।३१	२।२९। ८।४६	६। ०। ९।२५
	२	शु.	२।१६।२२।३३	८। ७।३०।२१	२।२२।३५। ४	२।१५।२७।३४	३।२३।३८।१०	६। ९।३१।०५	८।२१।५३।२०	२।२९।१२।२०	६। ०। ९।१८
	३	श.	२।१७।१९।४६	८। ७।१५।१३	२।२२। २।३२	२।१५।४१।१२	३।२४।४८। ९	६। ९।३०।४०	८।२१।५०। ९	२।२९।१५।५५	६। ०। ९।१३
	४	र.	२।१८।१६।५९	८। ७। ०।२३	२।२१।२९।२४	२।१५।५४।५०	३।२५।५८। ४	६। ९।३०।२१	८।२१।४६।५८	२।२९।१९।३०	६। ०। ९।१०
	५	चं.	२।१९।१४।१२	८। ६।४५।५०	२।२०।५५।३७	२।१६। ८।२९	३।२७। ७।५४	६। ९।३०। ८	८।२१।४३।४७	२।२९।२३। ५	६। ०। ९। ८
	६	मं.	२।२०।११।२५	८। ६।३१।३७	२।२०।२१।१३	२।१६।२२। ७	३।२८।१७।३९	६। ९।३०।००	८।२१।४०।३६	२।२९।२६।४१	६। ०। ९। ९
	७	बु.	२।२१। ८।३८	८। ६।१७।४१	२।१९।४६। ९	२।१६।३५।४६	३।२९।२७।१९	६। ९।२९।५८	८।२१।३७।२५	२।२९।३०।१७	६। ०। ९।११
	८	गु.	२।२२। ५।५१	८। ६। ४। ३	२।१९।१०।२९	२।१६।४९।२५	४। ०।३६।५५	६। ९।३०।२मा.	८।२१।३४।१५	२।२९।३३।५२	६। ०। ९।१५
	९	शु.	२।२३। ३। ३	८। ५।५०।४२	२।१८।३४। ८	२।१७। ३। ४	४। १।४६।२६	६। ९।३०।११	८।२१।३१। ४	२।२९।३७।३०	६। ०। ९।२२
	१०	श.	२।२४। ०।१५	८। ५।३७।४२	२।१७।५९।१३	२।१७।१६।३८	४। २।५५।५२	६। ९।३०।२९	८।२१।२७।५३	२।२९।४१।१०	६। ०। ९।३०
	११	र.	२।२४।५७।२८	८। ५।२५।२४	२।१७।२८।५२	२।१७।३०।१०	४। ४। ५।११	६। ९।३०।५२	८।२१।२४।४२	२।२९।४४।४९	६। ०। ९।४०
	१२	चं.	२।२५।५४।४१	८। ५।१३।४६	२।१७। ३। ३	२।१७।४३।४२	४। ५।१४।२४	६। ९।३१।२१	८।२१।२१।३१	२।२९।४८।२८	६। ०। ९।५२
	१३	मं.	२।२६।५१।५५	८। ५। २।४८	२।१६।४१।४६	२।१७।५७।१२	४। ६।२३।३१	६। ९।३१।५५	८।२१।१८।२०	२।२९।५२। ८	६। ०।१०। ५
	१४	बु.	२।२७।४९। ९	८। ४।५२।३१	२।१६।२५। १	२।१८।१०।४२	४। ७।३२।३२	६। ९।३२।३५	८।२१।१५। ९	२।२९।५५।४७	६। ०।१०।२२
	१५	गु.	२।२८।४६।२४	८। ४।४२।५४	२।१६।१२।४८	२।१८।२४।१०	४। ८।४१।२७	६। ९।३३।२२	८।२१।११।५८	२।२९।५९।२७	६। ०।१०।३८
श्रावण-कृष्णपक्षः	१	शु.	२।२९।४३।३९	८। ४।३३।५७	२।१६। ५। ७	२।१८।३७।३८	४। ९।५०।१६	६। ९।३४।१३	८।२१। ८।४७	३। ०। ३। ७	६। ०।१०।५८
	२	श.	३। ०।४०।५५	८। ४।२५।४१	२।१६। १।५९	२।१८।५१। ४	४।१०।५८।५९	६। ९।३५।१३	८।२१। ५।३६	३। ०। ६।४७	६। ०।११।२०
	३	र.	३। १।३८।११	८। ४।१८। ५	२।१६। ०।२८	२।१९। ४।३०	४।१२। ७।३६	६। ९।३६।१८	८।२१। २।२६	३। ०।१०।२६	६। ०।११।४४
	४	चं.	३। २।३५।२८	८। ४।११।१०	२।१६। ५।२३मा.	२।१९।१७।५४	४।१३।१६। ७	६। ९।३७।२७	८।२०।५९।१५	३। ०।१४। ६	६। ०।१२।१०
	५	मं.	३। ३।३२।४५	८। ४। ४।५५	२।१६।१६।४२	२।१९।३१।१७	४।१४।२४।३२	६। ९।३८।४२	८।२०।५६। ४	३। ०।१७।४६	६। ०।१२।३८
	६	बु.	३। ४।३०। ३	८। ३।५९।२०	२।१६।३४।२६	२।१९।४४।४०	४।१५।३२।५१	६। ९।४०। ३	८।२०।५२।५४	३। ०।२१।२६	६। ०।१३। ७
	७	गु.	३। ५।२७।२१	८। ३।५४।२६	२।१६।५८।३४	२।१९।५८। २	४।१६।४१। ४	६। ९।४१।३०	८।२०।४९।४३	३। ०।२५। ६	६। ०।१३।३९
	८	शु.	३। ६।२४।४०	८। ३।५०।१२	२।१७।२९। ७	२।२०।११।२२	४।१७।४९।११	६। ९।४३। ३	८।२०।४६।३२	३। ०।२८।४६	६। ०।१४।१२
	९	श.	३। ७।२१।५९	८। ३।४६।४८	२।१८। ६। ४	२।२०।२४।४२	४।१८।५७।१२	६। ९।४४।४२	८।२०।४३।२१	३। ०।३२।२६	६। ०।१४।४७
	१०	र.	३। ८।१९।१८	८। ३।४३।४४	२।१८।४९।२६	२।२०।३८। २	४।२०। ५। ६	६। ९।४६।२६	८।२०।४०।१०	३। ०।३६। ७	६। ०।१५।२५
	११	चं.	३। ९।१६।३७	८। ३।४१।३९	२।१९।३७।३५	२।२०।५१।१९	४।२१।१२।५४	६। ९।४८।१५	८।२०।३६।५९	३। ०।३९।४३	६। ०।१६। ४
	१२	मं.	३।१०।१३।५६	८। ३।४०।१७	२।२०।३०।४७	२।२१। ४।३३	४।२२।२०।३२	६। ९।५०। ९	८।२०।३३।४८	३। ०।४३।१७	६। ०।१६।४४
	१४	बु.	३।११।११।१६	८। ३।३९।३९	२।२१।२९। ३	२।२१।१७।४५	४।२३।२८। २	६। ९।५२। ९	८।२०।३०।३७	३। ०।४६।५१	६। ०।१७।२५
	३०	गु.	३।१२। ८।३८	८। ३।३९।४६मा.	२।२२।३२।२४	२।२१।२०।५३	४।२४।३५।२३	६। ९।५४।१४	८।२०।२७।२६	३। ०।५०।२४	६। ०।१८।१०

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ११६ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
श्रावण-शुक्लपक्षः	१	शु.	३।१३। ६।००	८। ३।४०।३७	२।२३।४०।४९	२।२१।४४। ०	४।२५।४२।३५	६। ९।५६।२५	८।२०।२४।१६	३। ०।५३।५८	६। ०।१८।५६
	२	श.	३।१४। ३।२४	८। ३।४२।१३	२।२४।५४।१९	२।२१।५७। ३	४।२६।४९।३८	६। ९।५८।४१	८।२०।२१। ५	३। ०।५७।३१	६। ०।१९।४४
	३	र.	३।१५। ०।४९	८। ३।४४।३३	२।२६।१२।५३	२।२२।१०। ४	४।२७।५६।३२	६।१०। १। ३	८।२०।१७।५४	३। १। १। ४	६। ०।२०।३४
	४	चं.	३।१५।५८।१५	८। ३।४७।३८	२।२७।३६।३२	२।२२।२३। २	४।२९। ३।१८	६।१०। ३।३२	८।२०।१४।४३	३। १। ४।३७	६। ०।२१।२५
	५	मं.	३।१६।५५।४२	८। ३।५१।२७	२।२९। ४।५६	२।२२।३५।५९	५। ०। ९।५५	६।१०। ६। ६	८।२०।११।३२	३। १। ८।१०	६। ०।२२।१९
	६	बु.	३।१७।५३। ९	८। ३।५६। ०	३। ०।३७।११	२।२२।४८।५२	५। १।१६।२२	६।१०। ८।४५	८।२०। ८।२१	३। १।११।४२	६। ०।२३।१४
	६	गु.	३।१८।५०।३८	८। ४। १।१७	३। २।१३।१८	२।२३। १।४३	५। २।२२।४१	६।१०।११।३०	८।२०। ५।१०	३। १।१५।१४	६। ०।२४।११
	७	शु.	३।१९।४८। ८	८। ४। ७।२०	३। ३।५३।१७	२।२३।१४।३१	५। ३।२८।५१	६।१०।१४।२०	८।२०। २। ०	३। १।१८।४४	६। ०।२५।१०
	८	श.	३।२०।४५।३९	८। ४।१४। ७	३। ५।३७। ८	२।२३।२७।१७	५। ४।३४।५२	६।१०।१७।१६	८।१९।५८।४९	३। १।२२।१५	६। ०।२६।११
	९	र.	३।२१।४३।११	८। ४।२१।३८	३। ७।२४।५१	२।२३।४०। ०	५। ५।४०।४४	६।१०।२०।१७	८।१९।५५।३८	३। १।२५।४६	६। ०।२७।१४
	१०	चं.	३।२२।४०।४४	८। ४।२९।५३	३। ९।१६।२६	२।२३।५२।४१	५। ६।४६।२७	६।१०।२३।२४	८।१९।५२।२८	३। १।२९।१७	६। ०।२८।१९
	११	मं.	३।२३।३८।१८	८। ४।३८।५३	३।११।११।५३	२।२४। ५।२०	५। ७।५२। १	६।१०।२६।३८	८।१९।४९।१७	३। १।३२।४६	६। ०।२९।२४
	१२	बु.	३।२४।३५।५२	८। ४।४८।५६	३।१३। ९।५४	२।२४।१७।५५	५। ८।५७।३८	६।१०।२९।५५	८।१९।४६। ६	३। १।३६।१४	६। ०।३०।३१
	१३	गु.	३।२५।३३।२६	८। ४।५९।३६	३।१५। ८।४२	२।२४।३०।२७	५।१०। ३। १	६।१०।३३।१७	८।१९।४२।५५	३। १।३९।४०	६। ०।३१।४०
	१४	शु.	३।२६।३१। २	८। ५।१०।५२	३।१७। ८।१६	२।२४।४२।५५	५।११। ८।१०	६।१०।३६।४३	८।१९।३९।४४	३। १।४३। ४	६। ०।३२।५१
	१५	श.	३।२७।२८।४०	८। ५।२२।४६	३।१९। ८।३८	२।२४।५५।२१	५।१२।१३। ४	६।१०।४०।१५	८।१९।३६।३३	३। १।४६।२८	६। ०।३४। ४
भाद्रपद-कृष्णपक्षः	१	र.	३।२८।२६।२०	८। ५।३५।१६	३।२१। ९।४६	२।२५। ७।४४	५।१३।१७।४४	६।१०।४३।५०	८।१९।३३।२२	३। १।४९।५०	६। ०।३५।१८
	२	चं.	३।२९।२४। ०	८। ५।४८।२४	३।२३।११।४२	२।२५।२०। ३	५।१४।२२। ९	६।१०।४७।३१	८।१९।३०।११	३। १।५३।१०	६। ०।३६।३४
	३	मं.	४। ०।२१।४२	८। ६। २। ८	३।२५।१४।२४	२।२५।३२।१८	५।१५।२६।२०	६।१०।५१।१६	८।१९।२७। ०	३। १।५६।२८	६। ०।३७।५२
	४	बु.	४। १।१९।२५	८। ६।१६।३०	३।२७।१७।५३	२।२५।४४।३१	५।१६।३०।१८	६।१०।५५। ८	८।१९।२३।५०	३। १।५९।४६	६। ०।३९।११
	५	गु.	४। २।१७।१०	८। ६।३१।२८	३।२९।२०।२१	२।२५।५६।४१	५।१७।३४। १	६।१०।५९। २	८।१९।२०।३९	३। २। ३। १	६। ०।४०।३१
	७	शु.	४। ३।१४।५६	८। ६।४७। ३	४। १।२२।४७	२।२६। ८।४७	५।१८।३७।२८	६।११। ३। २	८।१९।१७।२८	३। २। ६।१५	६। ०।४१।५३
	८	श.	४। ४।१२।४४	८। ७। ३।१४	४। ३।२२।१२	२।२६।२०।४९	५।१९।४०।४२	६।११। ७। ६	८।१९।१४।१७	३। २। ९।२७	६। ०।४३।१७
	९	र.	४। ५।१०।३३	८। ७।२०। ४	४। ५।२१।३६	२।२६।३२।४९	५।२०।४३।४२	६।११।११।१५	८।१९।११। ६	३। २।१२।३८	६। ०।४४।४४
	१०	चं.	४। ६। ८।२४	८। ७।३७।३०	४। ७।१९।५९	२।२६।४४।४५	५।२१।४६।२९	६।११।१५।२८	८।१९। ७।५५	३। २।१५।४७	६। ०।४६।१२
	११	मं.	४। ७। ६।१५	८। ७।५५।३३	४। ९।१७।२१	२।२६।५६।३९	५।२२।४८।५९	६।११।१९।४६	८।१९। ४।४४	३। २।१८।५५	६। ०।४७।४१
	१२	बु.	४। ८। ४। ८	८। ८।१४।१२	४।११।१३।४१	२।२७। ८।२९	५।२३।५१।१४	६।११।२४। ८	८।१९। १।३४	३। २।२२। १	६। ०।४९।१२
	१३	गु.	४। ९। २। १	८। ८।३३।२९	४।१३। ९। ०	२।२७।२०।१७	५।२४।५३।१७	६।११।२८।३७	८।१८।५८।२३	३। २।२५। ५	६। ०।५०।४६
	१४	शु.	४। ९।५९।५५	८। ८।५३।२०	४।१५। ३। १	२।२७।३२।५५	५।२५।५५।२५	६।११।३३।१०	८।१८।५५।१२	३। २।२८।१२	६। ०।५२।२०
	३०	श.	४।१०।५७।५२	८। ९।१३।४१	४।१६।५५।४९	२।२७।४३।२७	५।२६।५७। ९	६।११।३७।४८	८।१८।५२। १	३। २।३३।१६	६। ०।५३।५५

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतवयहर्गणः १४६ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
भाद्रपद-शुक्लपक्षः	१	र.	४।११।५५।५१	८। ९।३४।३२	४।१८।४७।२५	२।२७।५४।५५	५।२७।५८।२९	६।११।४२।३०	८।१८।४८।५१	३। २।३४।१८	६। ०।५५।३२
	२	चं.	४।१२।५३।५२	८। ९।५५।५२	४।२०।३७।४८	२।२८। ६।१८	५।२८।५९।२७	६।११।४७।१६	८।१८।४५।४०	३। २।३७।१९	६। ०।५७। ९
	३	मं.	४।१३।५१।५३	८।१०।१७।४३	४।२२।२७।००	२।२८।१७।३७	६। ०। ०। २	६।११।५२। ६	८।१८।४२।२९	३। २।४०।१८	६। ०।५८।४८
	४	बु.	४।१४।४९।५७	८।१०।४०। ३	४।२४।१४।५९	२।२८।२८।४९	६। १। ०।१३	६।११।५७। ०	८।१८।३९।१८	३। २।४३।१४	६। १। ०।२७
	५	गु.	४।१५।४८। ३	८।११। २।५३	४।२६। १।४६	२।२८।३९।५७	६। २। ०। २	६।१२। १।५८	८।१८।३६। ०	३। २।४६। ८	६। १। २। ८
	६	शु.	४।१६।४६।११	८।११।२६।१३	४।२७।४७।२०	२।२८।५१। ०	६। २।५९।२७	६।१२। ७। १	८।१८।३२।५६	३। २।४९। १	६। १। ३।५०
	७	श.	४।१७।४४।२०	८।११।५०। ४	४।२९।३१।४३	२।२९। २। ०	६। ३।५८।३०	६।१२।१२। ८	८।१८।२९।४५	३। २।५१।५२	६। १। ५।३४
	८	र.	४।१८।४२।३१	८।१२।१४।२६	५। १।१५। २	२।२९।१२।५३	६। ४।५७। ८	६।१२।१७।१९	८।१८।२६।३५	३। २।५४।४१	६। १। ७।१८
	९	चं.	४।१९।४०।४४	८।१२।३९।१८	५। २।५७।१५	२।२९।२३।४२	६। ५।५५।२४	६।१२।२२।३४	८।१८।२३।२४	३। २।५७।२८	६। १। ९। ४
	१०	मं.	४।२०।३८।५८	८।१३। ४।४०	५। ४।३८।२४	२।२९।३४।२६	६। ६।५३।१७	६।१२।२७।५४	८।१८।२०।१३	३। ३। ०।१३	६। १।१०।५१
	११	बु.	४।२१।३७।१५	८।१३।३०।३३	५। ६।१८।२७	२।२९।४५। ५	६। ७।५०।३८	६।१२।३३।१७	८।१८।१७। २	३। ३। २।५६	६ १।१२।३९
	१२	गु.	४।२२।३५।३३	८।१३।५६।५६	५। ७।५७।२६	२।२९।५५।३९	६। ८।४७।५४	६।१२।३८।४५	८।१९।१३।५१	३। ३। ५।३७	६। १।१४।२८
	१३	शु.	४।२३।३३।५३	८।१४।२३।४९	५। ९।३५।१९	३। ०। ६। ९	६। ९।४४।३८	६।१२।४४।१७	८।१८।१०।४०	३। ३। ८।१६	६। १।१६।१९
	१४	श.	४।२४।३२।१५	८।१४।५१।१४	५।११।१२। ७	३। ०।१६।३४	६।१०।४०।५९	६।१२।४९।५५	८।१८। ७।२९	३। ३।१०।५५	६। १।१८।११
	१५	र.	४।२५।३०।३८	८।१५।१८।२५	५।१२।४७।४४	३। ०।२६।५२	६।११।३७। ६	६।१२।५५।२७	८।१८। ४।१८	३। ३।१३।३३	६। १।२०। ४
आश्विन-कृष्णपक्षः	१	चं.	४।२६।२९। २	८।१५।४५।५९	५।१४।२२।११	३। ०।३७। २	६।१२।३३।३४	६।१३। १। १	८।१८। १। ७	३। ३।१६। ७	६। १।२२।५८
	२	मं.	४।२७।२७।२८	८।१६।१३।५५	५।१५।५५।३०	३। ०।४७। ६	६।१३।२७।२४	६।१३। ६।३९	८।१७।५७।५७	३। ३।१८।३९	६। १।२३।५२
	३	बु.	४।२८।२५।५५	८।१६।४२।१५	५।१७।२७।४०	३। ०।५७। ३	६।१४।२१।३६	६।१३।१२।२१	८।१७।५४।४६	३। ३।२१। ७	६। १।२५।४९
	४	गु.	४।२९।२४।२५	८।१७।१०।५७	५।१८।५८।४२	३। १। ६।५४	६।१५।१५।१०	६।१३।१८। ७	८।१७।५१।३५	३। ३।२३।३४	६। १।२७।४६
	५	शु.	५। ०।२२।५६	८।१७।४०। ३	५।२०।२८।३३	३। १।१६।३८	६।१६। ८। ४	६।१३।२३।५५	८।१७।४८।२४	३। ३।२५।५७	६। १।२९।४४
	६	श.	५। १।२१।२९	८।१८। ९।३१	५।२१।५७।१६	३। १।२६।१६	६।१७। ०।२०	६।१३।२९।४७	८।१७।४५।१४	३। ३।२८।१८	६। १।३१।४२
	७	र.	५। २।२०। ५	८।१८।३९।२२	५।२३।२४।५०	३। १।३५।४६	६।१७।५१।५८	६।१३।३५।४२	८।१७।४२। ३	३। ३।३०।३६	६। १।३३।४३
	८	चं.	५। ३।१८।४३	८।१९। ९।३६	५।२४।५१।३०	३। १।४५।११	६।१८।४२।५८	६।१३।४१।४२	८।१७।३८।५२	३। ३।३२।५२	६। १।३५।४४
	१०	मं.	५। ४।१७।२२	८।१९।४०।१३	५।२६।१६।३३	३। १।५४।२९	६।१९।३३।१९	६।१३।४७।४४	८।१७।३५।४१	३। ३।३५। ५	६। १।३७।४६
	११	बु.	५। ५।१६। ३	८।२०।११।१२	५।२७।४०।४०	३। २। ३।४१	६।२०।२३।२६	६।१३।५३।५०	८।१७।३२।३०	३। ३।३७।१६	६। १।३९।४८
	१२	गु.	५। ६।१४।४५	८।२०।४२।३५	५।२९। ३।११	३। २।१२।४५	६।२१।१२। ८	६।१३।५९।५८	८।१७।२९।१९	३। ३।३९।२३	६। १।४१।५३
	१३	शु.	५। ७।१३।३०	८।२१।१४।२०	६। ०।२४।३५	३। २।२१।४३	६।२२। ०।३५	६।१४। ६।१२	८।१७।२६। ८	३। ३।४१।२९	६। १।४३।५७
	१४	श.	५। ८।१२।१६	८।२१।४६।२९	६। १।४४।४३	३। २।३०।३५	६।२२।४८।२३	६।१४।१२।२८	८।१७।२२।५७	३। ३।४३।३१	६। १।४६। ४
	३०	र.	५। ९।११। ४	८।२२।१९। ०	६। ३। ३।३५	३। २।३९।२१	६।२३।३५।३३	६।१४।१८।४८	८।१७।१९।४६	३। ३।४५।३१	६। १।४८।११

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः १७५ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आश्विन-शुक्लपक्षः	१	चं.	५।१०। ९।५४	८।२२।५१।५४	६। ४।२१।११	३। २।४८। ०	६।२४।२२। ५	६।१४।२५।१२	८।१७।१६।३५	३। ३।४७।२८	६। १।५०।२०
	१	मं.	५।११। ८।५१	८।२३।२४।३४	६। ५।३७।२१	३। २।५६।३७	६।२५। ७।५८	६।१४।३१।३९	८।१७।१३।२४	३। ३।४९।२५	६। १।५२।२५
	२	बु.	५।१२। ७।५०	८।२३।५७।२८	६। ६।५१।३८	३। ३। ५। ४	६।२५।५२।३७	६।१४।३८। ६	८।१७।१०।१४	३। ३।५१।१८	६। १।५४।३२
	३	गु.	५।१३। ६।५१	८।२४।३०।३८	६। ८। ४। १	३। ३।१३।२३	६।२६।३६। ४	६।१४।४४।३५	८।१७। ७। ३	३। ३।५३। ७	६। १।५६।३९
	४	शु.	५।१४। ५।५३	८।२५। ४। ३	६। ९।१४।३१	३। ३।२१।३२	६।२७।१८।१९	६।१४।५१। ५	८।१७। ३।५२	३। ३।५४।५३	६। १।५८।४७
	५	श.	५।१५। ४।५८	८।२५।३७।४५	६।१०।२३। ७	३। ३।२९।३४	६।२७।५९।२१	६।१४।५७।३७	८।१७। ०।४१	३। ३।५६।३६	६। २। ०।५५
	६	र.	५।१६। ४। ४	८।२६।११।४०	६।११।२९।५०	३। ३।३७।२६	६।२८।३९। ९	५.. .. ४।११	८।१६।५७।३०	३। ३।५८।१६	६। २। ३। ४
	७	चं.	५।१७। ३।१२	८।२६।४५।५१	६।१२।३४।३९	३। ३।४५।१०	६।२९।१७।४१	६।१५।१०।४७	८।१६।५४।२०	३। ३।५९।५२	६। २। ५।१५
	८	मं.	५।१८। २।२१	८।२७।२०।१७	६।१३।३७।३४	३। ३।५२।४४	६।२९।५५। ८	६।१५।१७।२४	८।१६।५१। ९	३। ४। १।२६	६। २। ७।२६
	९	बु.	५।१९। १।३३	८।२७।५५। ०	६।१४।३८।३८	३। ४। ०।१०	७। ०।३१।१९	६।१५।२४। ३	८।१६।४७।५८	३। ४। २।५७	६। २। ९।३७
	१०	गु.	५।२०। ०।४६	८।२८।२९।५६	६।१५।३६।१३	३। ४। ७।२७	७। १। ६।१६	६।१५।३०।४३	८।१६।४४।४८	३। ४। ४।२४	६। २।११।४९
	११	शु.	५।२१। ०। १	८।२९। ५। ८	६।१६।३०।२०	३। ४।१४।३६	७। १।४०। १	६।१५।३७।२५	८।१६।४१।३७	३। ४। ५।४७	६। २।१४। १
	१२	श.	५।२१।५९।१७	८।२९।४०।३५	६।१७।२१। ०	३। ४।२१।३६	७। २।१२।३३	६।१५।४४। ९	८।१६।३८।२६	३। ४। ७। ७	६। २।१६।१५
	१३	र.	५।२२।५८।३६	९। ०।१६।१८	६।१८। ८।११	३। ४।२८।२७	७। २।४३।५२	६।१५।५०।५४	८।१६।३५।१५	३। ४। ८।२४	६। २।१८।२९
	१४	चं.	५।२३।५७।५६	९। ०।५२।१६	६।१८।५१।५३	३। ४।३५। ९	७। ३।१३।५८	६।१५।५७।४१	८।१६।३२। ४	३। ४। ९।३८	६। २।२०।४३
	१५	मं.	५।२४।५७।१८	९। १।२८।३०	६।१९।३२। ७	३। ४।४१।४३	७। ३।४२।५२	६।१६। ४।३०	८।१६।२८।५३	३। ४।१०।४८	६। २।२२।५९
कार्तिक-कृष्णपक्षः	१	बु.	५।२५।५६।४३	९। २। ४।५९	६।२०। ८।५३	३। ४।४८। ७	७। ४।१०।३४	६।१६।११।२०	८।१६।२५।४२	३। ४।११।५६	६। २।२५।१६
	३	गु.	५।२६।५६। ९	९। २।४१।३४	६।२०।४१।४३	३। ४।५४।३४	७। ४।३७।१७	६।१६।१८।१४	८।१६।२२।३१	३। ४।१२।५९	६। २।२७।३१
	४	शु.	५।२७।५७।३६	९। ३।१८।२१	६।२१। ७।२६	३। ५। ०।४५	७। ५। १।४५	६।१६।२५। ८	८।१६।१९।२०	३। ४।१४। २	६। २।२९।४५
	५	श.	५।२८।५५। ५	९। ३।५५।१८	६।२१।२६। ३	३। ५। ६।४७	७। ५।२३।५७	६।१६।३२। ४	८।१६।१६। ९	३। ४।१५। १	६। २।३१।५९
	६	र.	५।२९।५४।३७	९। ४।३२।२७	६।२१।३७।३४	३। ५।१२।३८	७। ५।४३।५३	६।१६।३९। २	८।१६।१२।५८	३। ४।१५।५७	६। २।३४।१३
	७	चं.	६। ०।५४।११	९। ५। ९।४८	६।२१।४२। ०	३। ५।१८।१७	७। ६। १।३३	६।१६।४६। २	८।१६। ९।४७	३। ४।१६।५१	६। २।३६।२७
	८	मं.	६। १।५३।४८	९। ५।४७।१९	६।२१।३९।२०व.	३। ५।२३।४५	७। ६।१६।५७	६।१६।५३। २	८।१६। ६।३६	३। ४।१७।४२	६। २।३८।४१
	९	बु.	६। २।५३।२७	९। ६।२५। २	६।२१।२९।३४	३। ५।२९। १	७। ६।३०। ५	६।१७। ०। ४	८।१६। ३।२५	३। ४।१८।३१	६। २।४०।५५
	१०	गु.	६। ३।५३। ८	९। ७। २।५६	६।२१।१२।४३	३। ५।३४। ८	७। ६।४०।५९	६।१७। ७। ८	८।१६। ०।१४	३। ४।१९।१६	६। २।४३। ८
	११	शु.	६। ४।५२।५२	९। ७।४०।५६	६।२०।४१। ८	३। ५।३९। ३	७। ६।४९।३४	६।१७।१४।१४	८।१५।५७। ३	३। ४।२०। ०	६। २।४५।२२
	१२	श.	६। ५।५२।३८	९। ८।१९।११	६।२०। २।३५	३। ५।४३।४७	७। ६।५५।५२	६।१७।२१।२०	८।१५।५३।५२	३। ४।२०।४१	६। २।४७।३६
	१३	र.	६। ६।५२।२६	९। ८।५७।४२	६।१९।१७। ६	३। ५।४८।१९	७। ६।५९।५४	६।१७।२८।२८	८।१५।५०।४२	३। ४।२१।२०	६। २।४९।४९
	१४	चं.	६। ७।५२।१५	९। ९।३६।२७	६।१८।२४।४०	३। ५।५२।४०	७। ७। १।३९	६।१७।३५।३८	८।१५।४७।३१	३। ४।२१।५५	६। २।५२। ३
	३०	मं.	६। ८।५२। ७	९।१०।१५।३०	६।१७।२५।२८	३। ५।५६।५०	७। ७। १। ९व.	६।१७।४२।४९	८।१५।४४।२०	३। ४।२२।२९	६। २।५४।१६

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे कतव्यहर्गणः २०५ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
कार्तिक-शुक्लपक्षः	१	बु.	६। ९।५२। २	९।१०।५४।४३	६।१६।१८।५९	३। ६। ०।४९	७। ६।५८।२२	६।१७।५०।२	८।१५।४१। ९	३। ४।२२।५९	६। २।५६।३०
	२	गु.	६।१०।५२।५९	९।११।३३।४१	६।१५। ५।५४	३। ६। ४।३६	७। ६।५३।१९	६।१७।५७।१७	८।१५।३७।५८	३। ४।२३।२७	६। २।५८।४४
	३	शु.	६।११।५२।५८	९।१२।१३। १	६।१३।४५।३२	३। ६। ८।१३	७। ६।४५।५८	६।१८। ४।३४	८।१५।३४।४७	३। ४।२३।५३	६। ३। ०।५८
	४	श.	६।१२।५२।५७	९।१२।५२।५७	६।१२।२६।२१	३। ६।११।५१	७। ६।३४।५४	६।१८।११।४५	८।१५।३१।३७	३। ४।२४। ८	६। ३। ३।१४
	५	र.	६।१३।५२।५८	९।१३।३२। २	६।११।१३।३१	३। ६।१५।१८	७। ६।२१।५७	६।१८।१८।५५	८।१५।२८।२६	३। ४।२४।२०	६। ३। ५।२७
	५	चं.	६।१४।५३। ०	९।१४।१२।१५	६।१०। ७। १	३। ६।१८।२३	७। ६। ७। ६	६।१८।२६। ५	८।१५।२५।१५	३। ४।२४।२८	६। ३। ७।४०
	६	मं.	६।१५।५३। ४	९।१४।५२।३७	६। ९। ६।५०	३। ६।२१।३७	७। ५।५०।२३	६।१८।३३।१६	८।१५।२२। ४	३। ४।२४।३४	६। ३। ९।५२
	७	बु.	६।१६।५३।१०	९।१५।३३। ७	६। ८।१२।५९	३। ६।२४।२८	७। ५।३१।४६	६।१८।४०।२६ -	८।१५।१८।५३	३। ४।२४।३६	६। ३।१२। ४
	८	गु.	६।१७।५३।१८	९।१६। ८।४६	६। ७।२५।२९	३। ६।२७। ८	७। ५।११।१५	६।१८।४७।३७	८।१५।१५।४२	३। ४।२४।३६	६। ३।१४।१५
	९	शु.	६।१८।५३।२८	९।१६।४८।३३	६। ६।४४।१९	३। ६।२९।३६	७। ४।४८।५०	६।१८।५४।४८	८।१५।१२।३१	३। ४।२४।३२	६। ३।१६।२६
	१०	श.	६।१९।५३।४०	९।१७।२८।३०	६। ६। ९।२९	३। ६।३१।५२	७। ४।२४।३२	६।१९। १।५९	८।१५। ९।२१	३। ४।२४।२५	६। ३।१८।३६
	१२	र.	६।२०।५३।५३	९।१८। ८।३४	६। ५।५१।४७	३। ६।३३।५७	७। ३।५८।१९	६।१९। ९। ९	८।१५। ६।१०	३। ४।२४।१२	६। ३।२०।४८
	१३	चं.	६।२१।५४। ९	९।१८।४८।४८	६। ५।४४।२०	३। ६।३५।५०	७। ३।३०।१२	६।१९।१६।२०	८।१५। २।५९	३। ४।२४। ०	६। ३।२२।५८
	१४	मं.	६।२२।५४।२७	९।१९।२९।१०	६। ५।४७। ९मा.	३। ६।३७।३१	७। ३। ०।११	६।१९।२३।३१	८।१४।५९।४८	३। ४।२३।४६	६। ३।२५। ६
	१५	बु.	६।२३।५४।४६	९।२०। ९।४१	६। ६। ०।१४	३। ६।३८।५९	७। २।२८।१५	६।१९।३०।४२	८।१४।५६।३७	३। ४।२३।२४	६। ३।२७।१२
मा॰ शीर्ष-कृष्णपक्षः	१	गु.	६।२४।५४। ७	९।२०।५०।२०	६। ६।२३।३५	३। ६।४०।१६	७। १।५४।२६	६।१९।३७।५३	८।१४।५३।२६	३। ४।२३। १	६। ३।२९।१९
	२	शु.	६।२५।५४।३०	९।२१।३१। ८	६। ६।५७।१२	३। ६।४१।२२	७। १।१८।४२	६।१९।४५। ४	८।१४।५०।१५	३। ४।२२।३५	६। ३।३१।२४
	३	श.	६।२६।५४।५६	९।२२।१२। ४	६। ७।४१। ५	३। ६।४२।१६	७। ०।४१। ४	६।१९।५२।१५	८।१४।४७। ४	३। ४।२२। ५	६। ३।३३।३०
	४	र.	६।२७।५५।२३	९।२२।५३।१०	६। ८।३५।१३	३। ६।४२।५८	७। ०। १।३०	६।१९।५९।२७	८।१४।४३।५३	३। ४।२१।३२	६। ३।३५।३८
	५	चं.	६।२८।५५।५०	९।२३।३४।११	६। ९।३५।२७	३। ६।४३।३५	६।२९।२१।२३	६।२०। ६।३६	८।१४।४०।४२	३। ४।२०।५०	६। ३।३७।४३
	६	मं.	६।२९।५६।१८	९।२४।१५।१६	६।१०।३९।२२	३। ६।४३।५४	६।२८।४२।४१	६।२०।१३।४३	८।१४।३७।३२	३। ४।२०। ६	६। ३।३९।४८
	७	बु.	७। ०।५६।४८	९।२४।५६।२५	६।११।४६।५९	३। ६।४४। १	६।२८। ५।२५	६।२०।२०।५०	८।१४।३४।२१	३। ४।१९।२०	६। ३।४१।५१
	८	गु.	७। १।५७।२१	९।२५।३७।४०	६।१२।५८।१९	३। ६।४४। ०व	६।२७।२९।३५	६।२०।२७।५६	८।१४।३१।१०	३। ४।१८।३०	६। ३।४३।५३
	९	शु.	७। २।५७।५५	९।२६।१८।५७	६।१४।१३।२०	३। ६।४३।४४	६।२६।५५।१०	६।२०।३५। २	८।१४।२७।५९	३। ४।१७।३८	६। ३।४५।५४
	१०	श.	७। ३।५८।३०	९।२७। ०।१८	६।१५।३२। ४	३। ६।४३।१६	६।२६।२२।११	६।२०।४२। ५	८।१४।२४।४८	३। ४।१६।४४	६। ३।४७।५४
	११	र.	७। ४।५९। ७	९।२७।४१।४३	६।१६।५४।३०	३। ६।४२।३६	६।२५।५०।३८	६।२०।४९। ८	८।१४।२१।३७	३। ४।१५।४६	६। ३।४९।५२
	१२	चं.	७। ५।५९।४६	९।२८।२३।१३	६।१८।२०।३८	३। ६।४१।४२	६।२५।२०।३१	६।२०।५६।१०	८।१४।१८।२६	३। ४।१४।४६	६। ३।५१।५०
	१३	मं.	७। ७। ०।२६	९।२९। ४।४६	६।१९।४६।३०	३। ६।४०।३६	६।२४।५१।४८	६।२१। ३।१२	८।१४।१५।१५	३। ४।१३।४४	६। ३।५३।४७
	१४	बु.	७। ८। १। ७	९।२९।४६।२४	६।२१।१२।१९	३। ६।३९।१७	६।२४।२४।३२	६।२१।१०।११	८।१४।१२। ४	३। ४।१२।३९	६। ३।५५।४३
	३०	गु.	७। ९। १।५०	१०। ०।२८। ६	६।२२।४१। ६	३। ६।३७।४६	६।२३।५८।४२	६।२१।१७।१०	८।१४। ८।५३	३। ४।११।३२	६। ३।५७।३६

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः २३५।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
मार्गशीर्ष-शुक्लपक्षः	१	शु.	७।१०। २।३५	१०। १। ९।५२	६।२४। ९।५०	३। ६।३६। २	६।२३।३४।१७	६।२१।२४। ८	८।१४। ५।४२	३। ४।१०।२२	६। ३।५९।२९
	२	श.	७।११। ३।२१	१०। १।५१।४२	६।२५।३९।३३	३। ६।३४। ६	६।२३।११।१७	६।२१।३१। ६	८।१४। २।३१	३। ४। ९।१०	६। ४। १।२१
	३	र.	७।१२। ४। ९	१०। २।३३।३६	६।२७।१०।१३	३। ६।३१।५७	६।२२।४९।४४	६।२१।३८। १	८।१३।५९।२१	३। ४। ७।५५	६। ४। ३।१२
	४	चं.	७।१३। ४।५९	१०। ३।१५।३४	६।२८।४१।५१	३। ६।२९।३६	६।२२।२९।३७	६।२१।४४।५६	८।१३।५६।१०	३। ४। ६।३८	६। ४। ५। २
	५	मं.	७।१४। ५।५०	१०। ३।५७।३६	७। ०।१४।२८	३। ६।२७। ०	६।२२।१०।५५	६।२१।५१।५०	८।१३।५२।५९	३। ४। ५।१७	६। ४। ६।५०
	६	बु.	७।१५। ६।४०	१०। ४।३९।३६	७। १।४६।२०	३। ६।२४।१९	६।२१।५८। २	६।२१।५८।४१	८।१३।४९।४८	३। ४। ३।५२	६। ४। ८।४०
	७	गु.	७।१६। ७।३१	१०। ५।२१।४२	७। ३।१८।२७	३। ६।२१।२६	६।२१।४७।२७	६।२२। ५।२९	८।१३।४६।३७	३। ४। २।२५	६। ४।१०।२९
	८	शु.	७।१७। ८।२३	१०। ६। ३।५०	७। ४।५०।४८	३। ६।१८।२३	६।२१।३९।११	६।२२।१२।१५	८।१३।४३।२६	३। ४। ०।५६	६। ४।१२।१६
	९	श.	७।१८। ९।१६	१०। ६।४६। ०	७। ६।२३।२४	३। ६।१५। ९	६।२१।३३।१३	६।२२।१८।५९	८।१३।४०।१६	३। ३।५९।२३	६। ४।१४। २
	१०	र.	७।१९।१०।१०	१०। ७।२८।१५	७। ७।५६।१५	३। ६।११।४४	६।२१।२९।३३	६।२२।२५।४१	८।१३।३७। ५	३। ३।५७।४८	६। ४।१५।४६
	११	चं.	७।२०।११। ६	१०। ८।१०।३२	७। ९।२९।२१	३। ६। ८। ८	६।२१।२८।१३	६।२२।३२।१९	८।१३।३३।५४	३। ३।५६। ९	६। ४।१७।२९
	१२	मं.	७।२१।१२। २	१०। ८।५२।५३	७।११। २।४१	३। ६। ४।२२	६।२१।२९।११मा	६।२२।३८।५५	८।१३।३०।४४	३। ३।५४।२८	६। ४।१९।१०
	१३	बु.	७।२२।१३। ०	१०। ९।३५।१७	७।१२।३६।१८	३। ६। ०।२५	६।२१।३२।२८	६।२२।४५।२९	८।१३।२७।३३	३। ३।५२।४४	६। ४।२०।४९
	१४	गु.	७।२३।१३।५९	१०।१०।१७।४५	७।१४।१०।००	३। ५।५६।१६	६।२१।३८। ४	६।२२।५२। १	८।१३।२४।२२	३। ३।५०।५७	६। ४।२२।३०
पौष-कृष्णपक्षः	१	शु.	७।२४।१४।५८	१०।११। ०।१५	७।१५।४३।४७	३। ५।५१।५७	६।२१।४५।५८	६।२२।५८।३०	८।१३।२१।११	३। ३।४९। ७	६। ४।२४। ७
	२	श.	७।२५।१५।५९	१०।११।४२।४९	७।१७।१७।३७	३। ५।४७।२८	६।२१।५६।१०	६।२३। ४।५७	८।१३।१८।००	३। ३।४७।१५	६। ४।२५।४२
	३	र.	७।२६।१७। २	१०।१२।२५।२६	७।१८।५१।२९	३। ५।४२।४७	६।२२। ८।४१	६।२३।११।२३	८।१३।१४।४९	३। ३।४५।१९	६। ४।२७।१२
	४	चं.	७।२७।१८। ६	१०।१३। ८। ७	७।२०।२५।२५	३। ५।३८।५६	६।२२।२३।३०	६।२३।१७।४६	८।१३।११।३९	३। ३।४३।२१	६। ४।२८।४६
	५	मं.	७।२८।१९।१०	१०।१३।५०।५१	७।२१।५९।२५	३। ५।३३।५३	६।२२।४०।३८	६।२३।२४। ६	८।१३। ८।२८	३। ३।४१।१९	६। ४।३०।१७
	६	बु.	७।२९।२०।१६	१०।१४।३३।३९	७।२३।३३।२८	३। ५।२७।४०	६।२३। ०। ४	६।२३।३०।२४	८।१३। ५।१७	३। ३।३९।१५	६। ४।३१।४६
	७	गु.	८। ०।२१।२३	१०।१५।१६।३०	७।२५। ७।३४	३। ५।२२।१६	६।२३।२१।५०	६।२३।३६।४०	८।१३। २। ६	३। ३।३७। ८	६। ४।३३।११
	८	शु.	८। १।२२।२९	१०।१५।५९।२६	७।२६।४१।५४	३। ५।१६।४०	६।२३।४४।५१	६।२३।४२।४८	८।१२।५८।५५	३। ३।३५। ६	६। ४।३४।३६
	९	श.	८। २।२३।३६	१०।१६।४२।२२	७।२८।१६।३१	३। ५।१०।५७	६।२४।११।१७	६।२३।४८।५४	८।१२।५५।४४	३। ३।३३। ३	६। ४।३५।५९
	१०	र.	८। ३।२४।४३	१०।१७।२५।१८	७।२९।५१।११	३। ५। ५। ६	६।२४।३८। ७	६।२३।५४।५८	८।१२।५२।३३	३। ३।३०।५८	६। ४।३७।२०
	११	चं.	८। ४।२५।५०	१०।१८। ८।१३	८। १।२५।५८	३। ४।५९। ८	६।२५। ६।२४	६।२४। १। १	८।१२।४९।२२	३। ३।२८।५२	६। ४।३८।३९
	१२	मं.	८। ५।२६।५८	१०।१८।५१। ९	८। ३। ०।५३	३। ४।५३। २	६।२५।३६। ४	६।२४। ७। ०	८।१२।४६।११	३। ३।२६।४४	६। ४।३९।५७
	१३	बु.	८। ६।२८। ६	१०।१९।३४। ४	८। ४।३५।२६	३। ४।४६।४९	६।२६। ७। ९	६।२४।१२।५६	८।१२।४३।००	३। ३।२४।३४	६। ४।४१।१३
	१३	गु.	८। ७।२९।१४	१०।२०।१६।५९	८। ६।११। ७	३। ४।४०।२८	६।२६।३९।३८	६।२४।१८।५०	८।१२।३९।४९	३। ३।२२।२२	६। ४।४२।२७
	१४	शु.	८। ८।३०।२३	१०।२०।५९।५३	८। ७।४६।२३	३। ४।३४। १	६।२७।१३।३४	६।२४।२४।४०	८।१२।३६।३९	३। ३।२०। ६	६। ४।४३।४२

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः २६५ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
पौष-शुक्लपक्षः	१	र.	८।१०।३२।४१	१०।२२।२५।४२	८।१०।५७।१०	३। ४।२०।४२	६।२८।२५।३७	६।२४।३६। ९	८।१२।३०।१७	३। ३।१५।३१	६। ४।४६। ३
	२	चं.	८।११।३३।५०	१०।२३। ८।३६	८।१२।३३। १	३। ४।१३।५१	६।२९। ३।४५	६।२४।४१।४९	८।१२।२७। ६	३। ३।१३।११	६। ४।४७।११
	३	मं.	८।१२।३५। ०	१०।२३।५१।३१	८।१४। ९।११	३। ४। ६।५४	६।२९।४३।२०	६।२४।४७।२५	८।१२।२३।५६	३। ३।१०।४८	६। ४।४८।१७
	४	बु.	८।१३।३६।१०	१०।२४।३४।२६	८।१५।४५।४०	३। ३।५९।४८	७। ०।२४।१८	६।२४।५२।५८	८।१२।२०।४५	३। ३। ८।२३	६। ४।४९।२२
	५	गु.	८।१४।३७।२१	१०।२५।१७।२०	८।१७।२२।२६	३। ३।५२।३६	७। १। ६।४१	६।२४।५८।२९	८।१२।१७।३४	३। ३। ५।५७	६। ४।५०।२५
	६	शु.	८।१५।३८।३२	१०।२६। ०।१४	८।१८।५९।३१	३। ३।४५।१६	७। १।५०।२८	६।२५। ३।५७	८।१२।१४।२३	३। ३। ३।२९	६। ४।५१।२६
	७	श.	८।१६।३९।४३	१०।२६।४३। ८	८।२०।३६।५४	३। ३।३७।४८	७। २।३५।४२	६।२५। ९।२२	८।१२।११।१२	३। ३। ०।५८	६। ४।५२।२६
	८	र.	८।१७।४०।५४	१०।२७।२६। ०	८।२२।१४।३१	३। ३।३०।१०	७। ३।२२।४१	६।२५।१४।४३	८।१२। ८। १	३। २।५८।२८	६। ४।५३।२४
	९	चं.	८।१८।४२। ५	१०।२८। ८।५२	८।२३।५२।१७	३। ३।२२।३१	७। ४।१०।३४	६।२५।१९।५७	८।१२। ४।५१	३। २।५५।५७	६। ४।५४।२०
	११	मं.	८।१९।४३।१५	१०।२८।५१।४४	८।२५।३०।११	३। ३।१४।५०	७। ४।५८।५३	६।२५।२५। ७	८।१२। १।४०	३। २।५३।२६	६। ४।५५।१४
	१२	बु.	८।२०।४४।२४	१०।२९।३४।३५	८।२७। ८।१३	३। ३। ७। ७	७। ५।४७।४७	६।२५।३०।१२	८।११।५८।२९	३। २।५०।५४	६। ४।५६। ५
	१३	गु.	८।२१।४५।३४	११। ०।१७।२६	८।२८।४६।३३	३। २।५९।२२	७। ६।३७।१६	६।२५।३५।१३	८।११।५५।१९	३। २।४८।२२	६। ४।५६।५५
	१४	शु.	८।२२।४६।४३	११। १। ०।१८	९। ०।२५।११	३। २।५१।३५	७। ७।२७।२०	६।२५।४०। ९	८।११।५२। ८	३। २।४५।४९	६। ४।५७।४२
	१५	श.	८।२३।४७।५२	११। १।४३।१०	९। २। ४।१५	३। २।४३।४६	७। ८।१८। ०	६।२५।४५। १	८।११।४८।५७	३। २।४३।१६	६। ४।५८।२७
माघ-कृष्णपक्षः	१	र.	८।२४।४९। १	११। २।२६। २	९। ३।४३।४१	३। २।३५।५६	७। ९। ९।१४	६।२५।४९।४८	८।११।४५।४६	३। २।४०।४१	६। ४।५९।१०
	२	चं.	८।२५।५०।१०	११। ३। ८।५४	९। ५।२३।१८	३। २।२८। ३	७।१०। १। ३	६।२५।५४।३१	८।११।४२।३५	३। २।३८। ७	६। ४।५९।५२
	३	मं.	८।२६।५१।१८	११। ३।५१।४६	९। ७। २।४५	३। २।२०। ८	७।१०।५३।२७	६।२५।५९। ९	८।११।३९।२४	३। २।३५।३२	६। ५। ०।३१
	४	बु.	८।२७।५२।२६	११। ४।३४।३८	९। ८।४२। ४	३। २।१२।११	७।११।४६।२७	६।२६। ३।४१	८।११।३६।१३	३। २।३२।५७	६। ५। १। ८
	५	गु.	८।२८।५३।३४	११। ५।१७।२९	९।१०।२१।१४	३। २। ४।१३	७।१२।४०।१६	६।२६। ८।१२	८।११।३३। ३	३। २।३०।२०	६। ५। १।४३
	६	शु.	८।२९।५४।४३	११। ६। ०।२०	९।१२। ०।१६	३। १।५६।१२	७।१३।३४।११	६।२६।१२।३७	८।११।२९।५२	३। २।२७।४४	६। ५। २।१६
	७	श.	९। ०।५५।५०	११। ६।४३।१२	९।१३।३९। ९	३। १।४८।१०	७।१४।२८।५५	६।२६।१६।५७	८।११।२६।४१	३। २।२५। ६	६। ५। २।४७
	८	र.	९। १।५६।५८	११। ७।२६। ४	९।१५।१७।५४	३। १।४०। ६	७।१५।२४।१५	६।२६।२१।१३	८।११।२३।३०	३। २।२२।२८	६। ५। ३।१६
	९	चं.	९। २।५८। ५	११। ८। ८।५६	९।१६।५६।३१	३। १।३१।५९	७।१६।२०।१०	६।२६।२५।२३	८।११।२०।२०	३। २।१९।४८	६। ५। ३।४३
	१०	मं.	९। ३।५९।१२	११। ८।५१।५४	९।१८।३४।५३	३। १।२३।४५	७।१७।१५।५६	६।२६।२९।३३	८।११।१७। ९	३। २।१७। ६	६। ५। ४। ७
	११	बु.	९। ५। ०।१९	११। ९।३४।५३	९।२०।१२।५५	३। १।१५।३६	७।१८।१२।२०	६।२६।३३।३७	८।११।१३।५८	३। २।१४।२६	६। ५। ४।२८
	१२	गु.	९। ६। १।२४	११।१०।१७।४९	९।२१।४७।२७	३। १। ७।३१	७।१९। ९।२२	६।२६।३७।३५	८।११।१०।४७	३। २।११।४६	६। ५। ४।४७
	१३	शु.	९। ७। २।२८	११।११। ०।४४	९।२३।१९।४१	३। ०।५९।३०	७।२०। ७। १	६।२६।४१।२२	८।११। ७।३६	३। २। ९। ८	६। ५। ५। ५
	१४	श.	९। ८। ३।३१	११।११।४३।३७	९।२४।४९।२८	३। ०।५१।३२	७।२१। ५।१९	६।२६।४५।१२	८।११। ४।२५	३। २। ६।३०	६। ५। ५।२०
	३०	र.	९। ९। ४।३३	११।१२।२६।२९	९।२६।१६।४९	३। ०।४३।३८	७।२२। ४।१४	६।२६।४८।५१	८।११। १।१५	३। २। ३।५४	६। ५। ५।३४

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः २३५ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
मार्गशीर्ष-शुक्लपक्षः	१	शु.	७।१०। २।३५	१०। १। ९।५२	६।२४। ९।५०	३। ६।३६। २	६।२३।३४।१७	६।२१।२४। ८	८।१४। ५।४२	३। ४।१०।२२	६। ३।५९।२९
	२	श.	७।११। ३।२१	१०। १।५१।४२	६।२५।३९।३३	३। ६।३४। ६	६।२३।११।१७	६।२१।३१। ६	८।१४। २।३१	३। ४। ९।१०	६। ४। १।२१
	३	र.	७।१२। ४। ९	१०। २।३३।३६	६।२७।१०।१३	३। ६।३१।५७	६।२२।४९।४४	६।२१।३८। १	८।१३।५९।२१	३। ४। ७।५५	६। ४। ३।१२
	४	चं.	७।१३। ४।५९	१०। ३।१५।३४	६।२८।४१।५१	३। ६।२९।३६	६।२२।२९।३७	६।२१।४४।५६	८।१३।५६।१०	३। ४। ६।३८	६। ४। ५। २
	५	मं.	७।१४। ५।५०	१०। ३।५७।३६	७। ०।१४।२८	३। ६।२७। ०	६।२२।१०।५५	६।२१।५१।५०	८।१३।५२।५९	३। ४। ५।१७	६। ४। ६।५०
	६	बु.	७।१५। ६।४०	१०। ४।३९।३६	७। १।४६।२०	३। ६।२४।१९	६।२१।५८। २	६।२१।५८।४१	८।१३।४९।४८	३। ४। ३।५२	६। ४। ८।४०
	७	गु.	७।१६। ७।३१	१०। ५।२१।४२	७। ३।१८।२७	३। ६।२१।२६	६।२१।४७।२७	६।२२। ५।२९	८।१३।४६।३७	३। ४। २।२५	६। ४।१०।२९
	८	शु.	७।१७। ८।२३	१०। ६। ३।५०	७। ४।५०।४८	३। ६।१८।२३	६।२१।३९।११	६।२२।१२।१५	८।१३।४३।२६	३। ४। ०।५६	६। ४।१२।१६
	९	श.	७।१८। ९।१६	१०। ६।४६। ०	७। ६।२३।२४	३। ६।१५। ९	६।२१।३३।१३	६।२२।१८।५९	८।१३।४०।१६	३। ३।५९।२३	६। ४।१४। २
	१०	र.	७।१९।१०।१०	१०। ७।२८।१५	७। ७।५६।१५	३। ६।११।४४	६।२१।२९।३३	६।२२।२५।४१	८।१३।३७। ५	३। ३।५७।४८	६। ४।१५।४६
	११	चं.	७।२०।११। ६	१०। ८।१०।३२	७। ९।२९।२१	३। ६। ८। ८	६।२१।२८।१३	६।२२।३२।१९	८।१३।३३।५४	३। ३।५६। ९	६। ४।१७।२९
	१२	मं.	७।२१।१२। २	१०। ८।५२।५३	७।११। २।४१	३। ६। ४।२२	६।२१।२९।११मा	६।२२।३८।५५	८।१३।३०।४४	३। ३।५४।२८	६। ४।१९।१०
	१३	बु.	७।२२।१३। ०	१०। ९।३५।१७	७।१२।३६।१८	३। ६। ०।२५	६।२१।३२।२८	६।२२।४५।२९	८।१२।२७।३३	३। ३।५२।४४	६। ४।२०।४९
	१४	गु.	७।२३।१३।५९	१०।१०।१७।४५	७।१४।१०।००	३। ५।५६।१६	६।२१।३८। ४	६।२२।५२। १	८।१३।२४।२२	३। ३।५०।५७	६। ४।२२।३०
पौष-कृष्णपक्षः	१	शु.	७।२४।१४।५८	१०।११। ०।१५	७।१५।४३।४७	३। ५।५१।५७	६।२१।४५।५८	६।२२।५८।३०	८।१३।२१।११	३। ३।४९। ७	६। ४।२४। ७
	२	श.	७।२५।१५।५९	१०।११।४२।४९	७।१७।१७।३७	३। ५।४७।२८	६।२१।५६।१०	६।२३। ४।५७	८।१३।१८।००	३। ३।४७।१५	६। ४।२५।४२
	३	र.	७।२६।१७। २	१०।१२।२५।२६	७।१८।५१।२९	३। ५।४२।४७	६।२२। ८।४१	६।२३।११।२३	८।१३।१४।४९	३। ३।४५।१९	६। ४।२७।१२
	४	चं.	७।२७।१८। ६	१०।१३। ८। ७	७।२०।२५।२५	३। ५।३८।५६	६।२२।२३।३०	६।२३।१७।४६	८।१३।११।३९	३। ३।४३।२१	६। ४।२८।४६
	५	मं.	७।२८।१९।१०	१०।१३।५०।५१	७।२१।५९।२५	३। ५।३३।५३	६।२२।४०।३८	६।२३।२४। ६	८।१३। ८।२८	३। ३।४१।१९	६। ४।३०।१७
	६	बु.	७।२९।२०।१६	१०।१४।३३।३९	७।२३।३३।२८	३। ५।२७।४०	६।२३। ०। ४	६।२३।३०।२४	८।१३। ५।१७	३। ३।३९।१५	६। ४।३१।४६
	७	गु.	८। ०।२१।२३	१०।१५।१६।३०	७।२५। ७।३४	३। ५।२२।१६	६।२३।२१।५०	६।२३।३६।४०	८।१३। २। ६	३। ३।३७। ८	६। ४।३३।११
	८	शु.	८। १।२२।२९	१०।१५।५९।२६	७।२६।४१।५४	३। ५।१६।४०	६।२३।४४।५१	६।२३।४२।४८	८।१२।५८।५५	३। ३।३५। ६	६। ४।३४।३६
	९	श.	८। २।२३।३६	१०।१६।४२।२२	७।२८।१६।३१	३। ५।१०।५७	६।२४।११।१७	६।२३।४८।५४	८।१२।५५।४६	३। ३।३३। ३	६। ४।३५।५९
	१०	र.	८। ३।२४।४३	१०।१७।२५।१८	७।२९।५१।११	३। ५। ५। ६	६।२४।३८। ७	६।२३।५४।५८	८।१२।५२।३३	३। ३।३०।५८	६। ४।३७।२०
	११	चं.	८। ४।२५।५०	१०।१८। ८।१३	८। १।२५।५८	३। ४।५९। ८	६।२५। ६।२४	६।२४। १। १	८।१२।४९।२२	३। ३।२८।५२	६। ४।३८।३९
	१२	मं.	८। ५।२६।५८	१०।१८।५१। ९	८। ३। ०।५३	३। ४।५३। २	६।२५।३६। ४	६।२४। ७। ०	८।१२।४६।११	३। ३।२६।४४	६। ४।३९।५७
	१३	बु.	८। ६।२८। ६	१०।१९।३४। ४	८। ४।३५।५६	३। ४।४६।४९	६।२६। ७। ९	६।२४।१२।५६	८।१२।४३।००	३। ३।२४।३४	६। ४।४१।१३
	१३	गु.	८। ७।२९।१४	१०।२०।१६।५९	८। ६।११। ७	३। ४।४०।२८	६।२६।३९।३८	६।२४।१८।५०	८।१२।३९।४९	३। ३।२२।२२	६। ४।४२।२७
	१४	शु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः २६५ ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
पौष-शुक्लपक्षः	१	र.	८।१०।३२।४१	१०।२२।२५।४२	८।१०।५७।१०	३। ४।२०।४२	६।२८।२५।३७	६।२४।३६। ९	८।१२।३०।१७	३। ३।१५।३१	६। ४।४६। ३
	२	चं.	८।११।३३।५०	१०।२३। ८।३६	८।१२।३३। १	३। ४।१३।५१	६।२९। ३।४५	६।२४।४१।४९	८।१२।२७। ६	३। ३।१३।११	६। ४।४७।११
	३	मं.	८।१२।३५। ०	१०।२३।५१।३१	८।१४। ९।११	३। ४। ६।५४	६।२९।४३।२०	६।२४।४७।२५	८।१२।२३।५६	३। ३।१०।४८	६। ४।४८।१७
	४	बु.	८।१३।३६।१०	१०।२४।३४।२६	८।१५।४५।४०	३। ३।५९।४८	७। ०।२४।१८	६।२४।५२।५८	८।१२।२०।४५	३। ३। ८।२३	६। ४।४९।२२
	५	गु.	८।१४।३७।२१	१०।२५।१७।२०	८।१७।२२।२६	३। ३।५२।३६	७। १। ६।४१	६।२४।५८।२९	८।१२।१७।३४	३। ३। ५।५७	६। ४।५०।२५
	६	शु.	८।१५।३८।३२	१०।२६। ०।१४	८।१८।५९।३१	३। ३।४५।१६	७। १।५०।२८	६।२५। ३।५७	८।१२।१४।२३	३। ३। ३।२९	६। ४।५१।२६
	७	श.	८।१६।३९।४३	१०।२६।४३। ८	८।२०।३६।५४	३। ३।३७।४८	७। २।३५।४२	६।२५। ९।२२	८।१२।११।१२	३। ३। ०।५८	६। ४।५२।२६
	८	र.	८।१७।४०।५४	१०।२७।२६। ०	८।२२।१४।३१	३। ३।३०।१०	७। ३।२२।४१	६।२५।१४।४३	८।१२। ८। १	३। २।५८।२८	६। ४।५३।२४
	९	चं.	८।१८।४२। ५	१०।२८। ८।५२	८।२३।५२।१७	३। ३।२२।३१	७। ४।१०।३४	६।२५।१९।५७	८।१२। ४।५१	३। २।५५।५७	६। ४।५४।२०
	११	मं.	८।१९।४३।१५	१०।२८।५१।४४	८।२५।३०।११	३। ३।१४।५०	७। ४।५८।५३	६।२५।२५। ७	८।१२। १।४०	३। २।५३।२६	६। ४।५५।१४
	१२	बु.	८।२०।४४।२४	१०।२९।३४।३५	८।२७। ८।१३	३। ३। ७। ७	७। ५।४७।४७	६।२५।३०।१२	८।११।५८।२९	३। २।५०।५४	६। ४।५६। ५
	१३	गु.	८।२१।४५।३४	११। ०।१७।२६	८।२८।४६।३३	३। २।५९।२२	७। ६।३७।१६	६।२५।३५।१३	८।११।५५।१९	३। २।४८।२२	६। ४।५६।५५
	१४	शु.	८।२२।४६।४३	११। १। ०।१८	९। ०।२५।११	३। २।५१।३५	७। ७।२७।२०	६।२५।४०। ९	८।११।५२। ८	३। २।४५।४९	६। ४।५७।४२
	१५	श.	८।२३।४७।५२	११। १।४३।१०	९। २। ४।१५	३। २।४३।४६	७। ८।१८। ०	६।२५।४५। १	८।११।४८।५७	३। २।४३।१६	६। ४।५८।२७
माघ-कृष्णपक्षः	१	र.	८।२४।४९। १	११। २।२६। २	९। ३।४३।४१	३। २।३५।५६	७। ९। ९।१४	६।२५।४९।४८	८।११।४५।४६	३। २।४०।४१	६। ४।५९।१०
	२	चं.	८।२५।५०।१०	११। ३। ८।५४	९। ५।२३।१८	३। २।२८। ३	७।१०। १। ३	६।२५।५४।३१	८।११।४२।३५	३। २।३८। ७	६। ४।५९।५२
	३	मं.	८।२६।५१।१८	११। ३।५१।४६	९। ७। २।४५	३। २।२०। ८	७।१०।५३।२७	६।२५।५९। ९	८।११।३९।२४	३। २।३५।३२	६। ५। ०।३१
	४	बु.	८।२७।५२।२६	११। ४।३४।३८	९। ८।४२। ४	३। २।१२।११	७।११।४६।२७	६।२६। ३।४१	८।११।३६।१३	३। २।३२।५७	६। ५। १। ८
	५	गु.	८।२८।५३।३४	११। ५।१७।२९	९।१०।२१।१४	३। २। ४।१३	७।१२।४०।१६	६।२६। ८।१२	८।११।३३। ३	३। २।३०।२०	६। ५। १।४३
	६	शु.	८।२९।५४।४३	११। ६। ०।२०	९।१२। ०।१६	३। १।५६।१२	७।१३।३४।११	६।२६।१२।३७	८।११।२९।५२	३। २।२७।४४	६। ५। २।१६
	७	श.	९। ०।५५।५०	११। ६।४३।१२	९।१३।३९। ९	३। १।४८।१०	७।१४।२८।५५	६।२६।१६।५७	८।११।२६।४१	३। २।२५। ६	६। ५। २।४७
	८	र.	९। १।५६।५८	११। ७।२६। ४	९।१५।१७।५४	३। १।४०। ६	७।१५।२४।१५	६।२६।२१।१३	८।११।२३।३०	३। २।२२।२८	६। ५। ३।१६
	९	चं.	९। २।५८। ५	११। ८। ८।५६	९।१६।५६।३१	३। १।३२।५९	७।१६।२०।१०	६।२६।२५।२३	८।११।२०।२०	३। २।१९।४८	६। ५। ३।४३
	१०	मं.	९। ३।५९।१२	११। ८।५१।५४	९।१८।३४।५३	३। १।२३।४५	७।१७।१५।५६	६।२६।२९।३३	८।११।१७। ९	३। २।१७। ६	६। ५। ४। ७
	११	बु.	९। ५। ०।१९	११। ९।३४।५३	९।२०।१२।५५	३। १।१५।३६	७।१८।१२।२०	६।२६।३३।३७	८।११।१३।५८	३। २।१४।२६	६। ५। ४।२८
	१२	गु.	९। ६। १।२४	११।१०।१७।४९	९।२१।४७।२७	३। १। ७।३१	७।१९। ९।२२	६।२६।३७।३५	८।११।१०।४७	३। २।११।४६	६। ५। ४।४७
	१३	शु.	९। ७। २।२८	११।११। ०।४४	९।२३।१९।४१	३। ०।५९।३०	७।२०। ७। १	६।२६।४१।२२	८।११। ७।३६	३। २। ९। ८	६। ५। ५। ५
	१४	श.	९। ८। ३।३१	११।११।४३।३७	९।२४।४९।२८	३। ०।५१।३२	७।२१। ५।१९	६।२६।४५।१२	८।११। ४।२५	३। २। ६।३०	६। ५। ५।२०
	३०	र.	९। ९। ४।३३	११।१२।२६।२९	९।२६।१६।४९	३। ०।४३।३८	७।२२। ४।१४	६।२६।४८।५१	८।११। १।१५	३। २। ३।५४	६। ५। ५।३४

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः २९४।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
माघ-शुक्लपक्षः	१	चं.	९।१०। ५।३३	११।१३। ९।१९	९।२७।४१।४६	३। ०।३५।४८	७।२३। ३।४७	६।२६।५२।२४	८।१०।५८। ४	३। २। १।१८	६। ५। ५।४६
	२	मं.	९।११। ६।३३	११।१३।५२। ८	९।२९। ४।१९	३। ०।२८। १	७।२४। ३।५८	६।२६।५५।५९	८।१०।५४।५४	३। १।५८।४४	६। ५। ५।५६
	३	बु.	९।१२। ७।३२	११।१४।३४।५५	१०। ०।२५।५७	३। ०।२०।१८	७।२५। ४।४८	६।२६।५९।२२	८।१०।५१।४३	३। १।५६।१०	६। ५। ६। ३
	४	गु.	९।१३। ८।३०	११।१५।१७।४०	१०। १।३९। ५	३। ०।१२।३९	७।२६। ६।१५	६।२७। २।४१	८।१०।४८।३३	३। १।४३।३९	६। ५। ६। ९
	५	शु.	९।१४। ९।२६	११।१६। ०।२३	१०। २।४३।४३	३। ०। ५। ४	७।२७। ८।२०	६।२७। ५।५४	८।१०।४५।२२	३। १।५१। ८	६। ५। ६।१३
	६	श.	९।१५।१०।२२	११।१६।४३। ६	१०। ३।३९।५०	२।२९।५७।३२	७।२८।११। ३	६।२७। ९। २	८।१०।४२।११	३। १।४८।३८	६। ५। ६।१५
	७	र.	९।१६।११।१६	११।१७।२५।४७	१०। ४।२७।२८	२।२९।५०। ४	७।२९।१४।२४	६।२७।१२। ३	८।१०।३९।००	३। १।४६। ९	६। ५। ६।१५
	८	चं.	९।१७।१२।१०	११।१८। ८।२६	१०। ५। ६।३५	२।२९।४२।३९	८। ०।१८।२३	६।२७।१४।५७	८।१०।३५।४९	३। १।४३।४१	६। ५। ६।१३
	९	मं.	९।१८।१३। २	११।१८।५१। ३	१०। ५।३७।१२	२।२९।३५।१८	८। १।२३।४०	६।२७।१७।४५	८।१०।३२।२९	३। १।४१।१५	६। ५। ६। ९
	१०	बु.	९।१९।१३।५३	११।१९।३३।४०	१०। ५।५९।२०	२।२९।२८। १	८। २।२८।१६	६।२७।२०।२६	८।१०।२९।२८	३। १।३८।४९	६। ५। ६। ४
	११	गु.	९।२०।१४।४४	११।२०।१६।२६	१०। ६। ९।३७	२।२९।२०।४८	८। ३।३२। १	६।२७।२३।१५	८।१०।२६।१८	३। १।३६।१७	६। ५। ५।५८
	१२	शु.	९।२१।१५।३५	११।२०।५९। ६	१०। ६।११।१३	२।२९।१३।४३	८। ४।३६।००	६।२७।२५।५७	८।१०।२३। ७	३। १।३३।४९	६। ५। ५।५०
	१३	श.	९।२२।१६।२५	११।२१।४१।४४	१०। ६। ४। ९व	२।२९। ६।४६	८। ५।४०।१३	६।२७।२८।३१	८।१०।१९।५७	३। १।३१।२३	६। ५। ५।३९
	१४	र.	९।२३।१७।१२	११।२२।२४।२३	१०। ५।४८।२५	२।२८।५९।५८	८। ६।४४।४१	६।२७।३१।००	८।१०।१६।४६	३। १।२८।५९	६। ५। ५।२७
फाल्गुन-कृष्णपक्षः	१	चं.	९।२४।१७।५७	११।२३। ६।५९	१०। ५।२४। ०	२।२८।५३।१८	८। ७।४९।२२	६।२७।३३।२२	८।१०।१३।३५	३। १।२६।३७	६। ५। ५।११
	२	मं.	९।२५।१८।४२	११।२३।४९।३४	१०। ४।५०।५५	२।२८।४६।४७	८। ८।५४।१८	६।२७।३५।३७	८।१०।१०।२४	३। १।२४।१७	६। ५। ४।५४
	३	बु.	९।२६।१९।२५	११।२४।३२। ७	१०। ४। ९।१०	२।२८।४०।२४	८। ९।५९।२८	६।२७।३७।४६	८।१०। ७।१३	३। १।२२।५९	६। ५। ४।३४
	४	गु.	९।२७।२०। ७	११।२५।१४।३८	१०। ३।१८।४३	२।२८।३४। ८	८।११। ४।५२	६।२७।३९।४७	८।१०। ४। ३	३। १।१९।४४	६। ५। ४।१२
	५	शु.	९।२८।२०।४८	११।२५।५७। ७	१०। २। ६। ३	२।२८।२८। १	८।१२।१०।२५	६।२७।४१।४२	८।१०। ०।५२	३। १।१७।३१	६। ५। ३।४९
	५	श.	९।२९।२१।२७	११।२६।३९।३५	१०। ०।५५। ३	२।२८।२२। ३	८।१३।१६।१६	६।२७।४३।३०	८। ९।५७।४१	३। १।१५।२०	६। ५। ३।२३
	६	र.	१०। ०।२२। ५	११।२७।२२। १	९।२९।४५।४३	२।२८।१६।१३	८।१४।२२।२३	६।२७।४५।१२	८। ९।५४।३१	३। १।१३।११	६। ५। २।५४
	७	चं.	१०। १।२२।४०	११।२८। ४।२५	९।२८।३८। २	२।२८।१०।३०	८।१५।२८।४९	६।२७।४६।४६	८। ९।५१।२०	३। १।११। ५	६। ५। २।२५
	८	मं.	१०। २।२३।१४	११।२८।४६।४८	९।२७।३२। ०	२।२८। ४।५६	८।१६।३५।१९	६।२७।४८।१५	८। ९।४८। ९	३। १। ९। ०	६। ५। १।५२
	९	बु.	१०। ३।२३।४७	११।२९।२९। ९	९।२६।२७।३७	२।२७।५९।३१	८।१७।४२। ६	६।२७।४९।३६	८। ९।४४।५८	३। १। ६।५८	६। ५। १।१७
	१०	गु.	१०। ४।२४।१९	०। ०।११।२८	९।२५।२४।५४	२।२७।५४।१४	८।१८।४९। ९	६।२७।५०।५१	८। ९।४१।४८	३। १। ४।५८	६। ५। ०।४०
	११	शु.	१०। ५।२४।४९	०। ०।५३।४६	९।२४।२३।४९	२।२७।४९। ५	८।१९।५६।३१	६।२७।५१।५८	८। ९।३८।३७	३। १। ३। ०	६। ५। ०। ०
	१२	श.	१०। ६।२५।१८	०। १।३५।५५	९।२३।२३।४१	२।२७।४४। ७	८।२१। ३।५५	६।२७।५३। ३	८। ९।३५।१६	३। १। ०।५४	६। ४।५९।२१
	१३	र.	१०। ७।२५।४५	०। २।१८। १	९।२२।२५।१४	२।२७।३९।२२	८।२२।११।२८	६।२७।५४। २	८। ९।३२। ६	३। ०।५८।५५	६। ४।५८।४१
	१४	चं.	१०। ८।२६।१०	०। ३। ०। ७	९।२१।२५।५७	२।२७।३४।४७	८।२३।१९। ७	६।२७।५४।५५	८। ९।२८।५५	३। ०।५६।५४	६। ४।५७।५९
	३०	मं.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दैनिकाः सूक्ष्माः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ३२४।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
फाल्गुन-शुक्लपक्षः	१	बु.	१०।१०।२६।५६	०। ४।२४।१७	९।२१।२८।१६	२।२७।२६।१०	८।२५।३४।४७	६।२७।५६।२३	८। ९।२२।३४	३। ०।५३। ७	६। ४।५६।२९
	२	गु.	१०।११।२७।१७	०। ५। ६।१९	९।२१।१५।४२	२।२७।२२। ८	८।२६।४२।४८	६।२७।५६।५८	८। ९।१९।२४	३। ०।५१।१८	६। ४।५५।४१
	३	शु.	१०।१२।२७।३६	०। ५।४८।२१	९।२१।१०।३८	२।२७।१८।१६	८।२७।५०।५७	६।२७।५७।२७	८। ९।१६।१३	३। ०।४९।३१	६। ४।५४।५१
	४	श.	१०।१३।२७।५३	०। ६।३०।२२	९।२१।१३। ५	२।२७।१४।३५	८।२८।५८।१३	६।२७।५७।५०	८। ९।१३।१२	३। ०।४७।४६	६। ४।५४। ०
	५	र.	१०।१४।२८। ९	०। ७।१२।२३	९।२१।२२।१५	२।२७।११। ५	९। ०। ७।३५	६।२७।५८। ७	८। ९।१०। २	३। ०।४६। ५	६। ४।५३। ७
	६	चं.	१०।१५।२८।२३	०। ७।५४।२१	९।२१।३६।२४	२।२७। ७।४७	९। १।१६। ५	६।२७।५८।१८	८। ९। ६।५१	३। ०।४४।२७	६। ४।५२।१२
	७	मं.	१०।१६।२८।३५	०। ८।३६।१९	९।२१।५५।३१	२।२७। ४।३९	९। २।२४।४३	६।२७।५८।२३	८। ९। ३।४०	३। ०।४२।५१	६। ४।५१।१५
	९	बु.	१०।१७।२८।४६	०। ९।१८।१६	९।२२।१९।३७	२।२७। १।४१	९। ३।३३।२८	६।२७।५८।२२व	८। ९। ०।३०	३। ०।४१।१८	६। ४।५०।१७
	१०	गु.	१०।१८।२८।५६	०।१०। ०।१२	९।२२।४८।४०	२।२६।५८।५४	९। ४।४२।२०	६।२७।५८।१५	८। ८।५७।१९	३। ०।३९।४८	६। ४।४९।१६
	११	शु.	१०।१९।२९। ३	०।१०।४२। ७	९।२३।२२।४२	२।२६।५६।१९	९। ५।५१।१९	६।२७।५८। २	८। ८।५४। ८	३। ०।३८।२१	६। ४।४८।१४
	१२	श.	१०।२०।२९। ८	०।११।२४। ०	९।२४। १।४२	२।२६।५३।५४	९। ७। ०।२६	६।२७।५७।४३	८। ८।५०।५८	३। ०।३६।५१	६। ४।४७।१०
	१३	र.	१०।२१।२९।१२	०।१२। ५।५३	९।२४।४५।४०	२।२६।५१।४०	९। ८। ९।४०	६।२७।५७।१८	८। ८।४७।४७	३। ०।३५।३५	६। ४।४६। ५
	१४	चं.	१०।२२।२९।१२	०।१२।४७।४३	९।२५।३१। ६	२।२६।४९।४३	९। ९।१९। ८	६।२७।५६।४५	८। ८।४४।३७	३। ०।३४।१४	६। ४।४४।५८
	१५	मं.	१०।२३।२९।११	०।१३।२९।३१	९।२६।१९।२९	२।२६।४७।५७	९।१०।२८।४०	६।२७।५६। ६	८। ८।४१।२६	३। ०।३२।५७	६। ४।४३।५०
चैत्र-कृष्णपक्षः	१	बु.	१०।२४।२९। ८	०।१४।११।१७	९।२७।१०।४८	२।२६।४६।२३	९।११।३८।१६	६।२७।५५।२१	८। ८।३८।१६	३। ०।३१।४२	६। ४।४२।४०
	२	गु.	१०।२५।२९। ३	०।१४।५३। ०	९।२८। ५। ६	२।२६।४४।५९	९।१२।४७।५८	६।२७।५४।३१	८। ८।३५। ५	३। ०।३०।३०	६। ४।४१।३०
	३	शु.	१०।२६।२८।५६	०।१५।३४।४२	९।२९। २।२१	२।२६।४३।४८	९।१३।५७।४६	६।२७।५३।३४	८। ८।३१।५४	३। ०।२९।२१	६। ४।४०।१८
	४	श.	१०।२७।२८।४७	०।१६।१६।२१	१०। ०। २।३३	२।२६।४२।४७	९।१५। ७।३४	६।२७।५२।३२	८। ८।२८।४४	३। ०।२८।१५	६। ४।३९। ६
	५	र.	१०।२८।२८।३६	०।१६।५७।५८	१०। १। ५।४३	२।२६।४१।५८	९।१६।१७।२९	६।२७।५१।२४	८। ८।२५।३३	३। ०।२७।११	६। ४।३७।५२
	६	चं.	१०।२९।२८।२४	०।१७।३९।३२	१०। २।११।४९	२।२६।४१।२०	९।१७।२७।२९	६।२७।५०।१०	८। ८।२२।२२	३। ०।२६।१०	६। ४।३६।३६
	७	मं.	११। ०।२९। ९	०।१८।२१। ५	१०। ३।१९।५९	२।२६।४०।५४	९।१८।३७।२२	६।२७।४८।५०	८। ८।१९।१२	३। ०।२५।११	६। ४।३५।१९
	८	बु.	११। १।२७।५३	०।१९। ३।३५	१०। ४।२९।५४	२।२६।४०।३९	९।१९।४७।४१	६।२७।४७।२५	८। ८।१६। १	३। ०।२४।१७	६। ४।३४। २
	८	गु.	११। २।२७।३५	०।१९।४४। ३	१०। ५।४१।४७	२।२६।४०।३६	९।२०।५७।५४	७।२७।४५।५४	८। ८।१२।५०	३। ०।२३।२५	६। ४।३२।४३
	९	शु.	११। ३।२७।१५	०।२०।२५।३०	१०। ६।५५।३४	२।२६।४०।४३	९।२२। ८।१२	६।२७।४४।१७	८। ८। ९।४०	३। ०।२२।३६	६। ४।३१।२२
	१०	श.	११। ४।२६।५३	०।२१। ६।५५	१०। ८।११।१६	२।२६।४१। ३	९।२३।१८।३४	६।२७।४२।३४	८। ८। ६।२९	३। ०।२१।५०	६। ४।३०। ०
	११	र.	११। ५।२६।२९	०।२१।४८।१७	१०। ९।२८।५०	२।२६।४१।३३	९।२४।२९। १	६।२७।४०।४५	८। ८। ३।१८	३। ०।२१। ७	६। ४।२८।३८
	१२	चं.	११। ६।२६। ४	०।२२।२९।३७	१०।१०।४८।१८	२।२६।४२।१२	९।२५।३९।३२	६।२७।३८।५०	८। ८। ०। ८	३। ०।२०।२६	६। ४।२७।१४
	१३	मं.	११। ७।२५।३७	०।२३।१०।५५	१०।१२। ९।४०	२।२६।४३। ८	९।२६।५०।१०	६।२७।३६।५०	८। ७।५६।५७	३। ०।१९।४८	६। ४।२५।४८
	१४	बु.	११। ८।२५। ७	०।२३।५२।११	१०।१३।३२।३८	२।२६।४४।१२	९।२८। ०।५२	६।२७।३४।४४	८। ७।५३।४७	३। ०।१९।१२	६। ४।२३।२०
	३०	गु.	११। ९।२४।३३	०।२५।३३।२४	१०।१४।५७। ९	२।२६।४५।२७	९।२९।११।४०	६।२७।३२।३३	८। ७।५०।३६	३। ०।१८।३९	६। ४।२०।४९

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
चैत्र-शुक्लपक्षः	१	र.	११।२७।२३। ६	११।२९।४६।१०	०। २। ९।२६	०। ४।३२।४२	०। ६।५५।५९	०। ९।१९।१६
	२	चं.	०।११।४२।३२	०।१४। ५।४२	०।१६।२८।३१	०।१८।५१।२०	०।२१।१४। ९	०।२३।३६।५८
	३	मं.	०।२५।५९।४७	०।२८।२२।५४	१।०।०।४३।४४	१। ३। ५।३५	१। ५।२७।२६	१। ७।४९।१६
	४	बु.	१।१०।११। ०	१।१२।३३।२३	१।१४।५५।४७	१।१७।१२।१०	१।१९।३२।३४	१।२१।५२।५७
	५	गु.	१।२४।१२।३६	१।२६।३१। ०	१।२८।४९।२५	२। १। ७।५०	२। ३।२६।१४	२। ५।४४।३९
	७	शु.	२। ८। १।५५	२।१०।१८।२६	२।१२।३४।५७	२।१४।५१।२८	२।१७। ७।५९	२।१९।२४।३०
	८	श.	२।२१।३९।१०	२।२३।५३।१०	२।२६। ७।१०	२।२८।२१।१०	३। ०।३५।१२	३। २।४९।११
	९	र.	३। ५। १। ७	३। ७।१२।२६	३। ९।२३।४६	३।११।३५।५५	३।१३।४६।२५	३।१५।५७।४४
	१०	चं.	३।१८। ७।२०	३।२०।१६। ५	३।२२।२४।५०	३।२४।३३।३५	३।२६।४२।२१	३।२८।५१।४६
	११	मं.	४। ०।५८।३८	४। ३। ४।४३	४। ५।१०।४८	४। ७।१६।५३	४। ९।२२।५८	४।११।२९। ३
	१२	बु.	४।१३।३४।५२	४।१५।३८।४६	४।१७।४२।४०	४।१९।४६।३४	४।२१।५०।२९	४।२३।५४।२३
	१३	गु.	४।२५।५८।१७	४।२८। ०।५६	५। ०। ३। ३	५। २। ५। ८	५। ४। ७।१२	५। ६। ९।१७
	१३	शु.	५। ८।११।२१	५।१०।१३।१७	५।१२।१४। ६	५।१४।१४।५५	५।१६।१५।४४	५।१८।१६।३३
	१४	श.	५।२०।१७।२२	५।२२।१८।११	५।२४।१८।४१	५।२६।१८।५२	५।२८।१९। ३	६। ०।१९।१४
	१५	र.	६। २।१९।२५	६। ४।१९।३६	६। ६।१९।४७	६। ८।२०। ४	६।१०।२०।२३	६।१२।२०।४३
वैशाख-कृष्णपक्षः	१	च.	६।१४।२१। २	६।१६।२१।२२	६।१८।२१।४१	६।२०।२२।१५	६।२२।२३।३५	६।२४।२४।५५
	२	मं.	६।२६।२६।१५	६।२८।२७।३५	७। ०।२८।५५	७। २।३०।१५	७। ४।३२।२१	७। ६।३४।५१
	३	बु.	७। ८।३७।३७	७।१०।४०।१५	७।१२।४२।५३	७।१४।४५।३१	७।१६।४८।१९	७।१८।५३।१३
	४	गु.	७।२०।५८। ७	७।२३। ३। १	७।२५। ७।५६	७।२७।१२।५०	७।२९।१७।४४	८। १।२४। ८
	५	शु.	८। ३।३१।१७	८। ५।३८।२६	८। ७।४५।३५	८। ९।५२।४४	८।११।५९।५३	८।१४। ८। १
	६	श.	८।१६।१७।४७	८।१८।२७।३३	८।२०।३७।१९	८।२२।४७। ५	८।२४।५६।५१	८।२७। ७। ८
	७	र.	८।२९।१९।३०	९। १।३१।५३	९। ३।४४।१५	९। ५।५६।३८	९। ८। ९। ०	९।१०।२१।५०
	८	चं.	९।१२।३६।५५	९।१४।५२। १	९।१७। ७। ७	९।१९।२२।१२	९।२१।३७।१८	९।२३।५२।५८
	९	मं.	९।२६।१०।१८	९।२८।२७।३९	१०। ०।४४।५९	१०। ३। २।२०	१०। ५।१९।४०	१०। ७।३७।५१
	१०	बु.	१०। ९।५७।१६	१०।१२।१६।४१	१०।१४।३६। ६	१०।१६।५५।३१	१०।१९।१४।५६	१०।२१।३५।२८
	११	गु.	१०।२३।५६।३३	१०।२६।१७।३९	१०।२८।३८।४४	११। ०।५९।५०	११। ३।२०।५७	११। ५।४३।१२
	१२	शु.	११। ८। ५।२८	११।१०।२७।४४	११।१२।४९।५९	११।१५।१२।१५	११।१७।३४।५०	११।१९।५७।५१
	१३	श.	११।२२।२०।५३	११।२४।४३।५४	११।२७। ६।५६	११।२९।२९।५७	०। १।५३।१२	०। ४।१६।२८
	३०	र.	०। ६।३९।४५	०। ९। ३। २	०।११।२६।१८	०।१३।४९।३२	०।१६।१२।२८	०।१८।३५।२५
वैशाख-शुक्लपक्षः	१	चं.	०।२०।५८।२१	०।२३।२१।१८	०।२५।४४।१४	०।२८। ६।३९	१। ०।२८।४२	१। २।५०।४५
	२	मं.	१। ५।१२।४९	१। ७।३४।५२	१। ९।५६।५५	१।१२।१७।४३	१।१४।३८।२८	१।१६।५९।१४
	३	बु.	१।१९।२०। ०	१।२१।४०।४५	१।२४। ०।५८	१।२६।१९।५१	१।२८।३८।४४	२। ०।५७।३७
	४	गु.	२। ३।१६।३१	२। ५।३५।२४	२। ७।५३।१७	२।१०।१०।१६	२।१२।२७।१५	२।१४।४४।१४
	५	शु.	२।१७। १।१३	२।१९।१८।१२	२।२१।३३।३०	२।२३।४८। १	२।२६। २।३३	२।२८।१७। ५
	६	श.	३। ०।३१।३६	३। २।४६। ८	३। ४।५८।४२	३। ७।१०।३६	३। ९।२२।३०	३।११।३४।२५
	७	र.	३।१३।४६।१९	३।१५।५८।१३	३।१८। ८।१२	३।२०।१७।१६	३।२२।२६।२०	३।२४।३५।२४
	८	चं.	३।२६।४४।२८	३।२८।५३।३२	४। १। १।२४	४। ३। ८। १	४। ५।१४।३८	४। ७।२१।१५
	९	मं.	४। ९।२७।५२	४।११।३४।२९	४।१३।४०।४४	४।१५।४५। ९	४।१७।४९।३४	४।१९।५३।५९
	१०	बु.	४।२१।५८।२४	४।२४। २।४९	४।२६। ७।१४	४।२८।१०।१२	५। ०।१२।३९	५। २।१५। ६
	११	गु.	५। ४।१७।३३	५। ६।२०। ०	५। ८।२२।२७	५।१०।२४।३६	५।१२।२५।३७	५।१४।२६।३९
	१२	शु.	५।१६।२७।४१	५।१८।२८।४२	५।२०।२९।४४	५।२२।३०।४६	५।२४।३१।२३	५।२६।३१।४१
	१३	श.	५।२८।३१।५९	६। ०।३२।१७	६। २।३२।३५	६। ४।३२।५३	६। ६।३३।११	६। ८।३३।२९
	१४	र.	६।१०।३३।३३	६।१२।३३।४४	६।१४।३३।५५	६।१६।३४। ६	६।१८।३४।१७	६।२०।३४।४०
	१५	चं.	६।२२।३५।३६	६।२४।३६।३२	६।२६।३७।२८	६।२८।३८।२५	७। ०।३९।२१	७। २।४०।१७

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: १०।०	इष्टघटी: २०।०	इष्टघटी: ३०।०	इष्टघटी: ४०।०	इष्टघटी: ५०।०
ज्येष्ठ-कृष्णपक्षः	१	मं.	७। ४।४२।११	७। ६।४४।३२	७। ८।४६।५३	७।१०।४९।१४	७।१२।५१।३६	७।१४।५३।५७
	२	बु.	७।१६।५६।३५	७।१९। १। ०	७।२१। ५।२५	७।२३। ९।५०	७।२५।१४।१५	७।२७।१८।४०
	३	गु.	७।२९।२३। ५	८। १।२९। २	८। ३।३५।३७	८। ५।४२।१२	८। ७।४८।४७	८। ९।५५।२२
	३	शु.	८।१२। १।५७	८।१४। ९।३२	८।१६।१८।४४	८।१८।२७।५७	८।२०।३७। ९	८।२२।४६।२२
	४	श.	८।२४।५५।३४	८।२७। ५।१६	८।२९।१७। ८	९। १।२९। ०	९। ३।४०।५२	९। ५।५२।४४
	५	र.	९। ८। ४।३६	९।१०।१६।४९	९।१२।३१।१८	९।१४।४५।४८	९।१७। ०।१७	९।१९।१४।४७
	७	चं.	९।२१।२९।१६	९।२३।४४।११	९।२६। १। ३	९।२८।१७।५५	१०। ०।३४।४७	१०। २।५१।३९
	८	मं.	१०। ५। ८।३१	१०। ७।२६। ५	१०। ९।४५। ०	१०।१२। ३।५६	१०।१४।२२।५२	१०।१६।४१।४७
	९	बु.	१०।१९। ०।४३	१०।२१।२०।४१	१०।२३।४१।२४	१०।२६। २। ७	१०।२८।२२।५०	११। ०।४३।३४
	१०	गु.	११। ३। ४।१७	११। ५।२६।१६	११। ७।४८।२४	११।१०।१०।३२	११।१२।३२।४०	११।१४।५४।४९
	११	शु.	११।१७।१७। ९	११।१९।४०। ०	११।२२। २।५१	११।२४।२५।४२	११।२६।४८।३४	११।२९।११।२५
	१२	श.	०। १।३४।३४	०। ३।५७।५०	०। ६।२१। ७	०। ८।४४।२४	०।११। ७।४०	०।१३।३०।५८
	१३	र.	०।१५।५४। २	०।१८।१७। ६	०।२०।४०।१०	०।२३। ३।१५	०।२५।२६।१९	०।२७।४९। १
	१४	चं.	१। ०।११।१९	१। २।३३।३८	१। ४।५५।५६	१। ७।१८।१५	१। ९।४०।३३	१।१२। १।४६
	३०	मं.	१।१४।२२।४९	१।१६।४३।५२	१।१९। ४।५५	१।२१।२५।५९	१।२३।४६।४४	१।२६। ६।१३
ज्येष्ठ-शुक्लपक्षः	१	बु.	१।२८।२५।४३	२। ०।४५।१२	२। ३। ४।४१	२। ५।२४।११	२। ७।४२।४४	२।१०। ०। ६
	२	गु.	२।१२।१७।२९	२।१४।३४।५२	२।१६।५२।१४	२।१९। ९।३७	२।२१।२५।३२	२।२३।४०।३५
	४	शु.	२।२५।५५।३९	२।२८।१०।४२	३। ०।२५।४६	३। २।४०।४९	३। ४।५४। २	३। ७। ६।२९
	५	श.	३। ९।१८।५६	३।११।३१।२३	३।१३।४३।५०	३।१५।५६।१७	३।१८। ६।५८	३।२०।१६।४६
	६	र.	३।२२।२६।३४	३।२४।३६।२२	३।२६।४६।१०	३।२८।५५।५८	४। १। ४।२८	४। ३।११।४३
	७	चं.	४। ५।१८।५८	४। ७।२६।१३	४। ९।२७।२८	४।११।३४।४३	४।१३।४७।३०	४।१५।५५।२८
	८	मं.	४।१७।५७।२६	४।२०। २।२४	४।२२। ७।२२	४।२४।१२।२०	४।२६।१७।१८	४।२८।२०।२८
	९	बु.	५। ०।२३।१३	५। २।२५।५९	५। ४।२८।४५	५। ६।३३।३०	५। ८।३४।१६	५।१०।३६।३७
	९	गु.	५।१२।३७।५९	५।१४।३९।२१	५।१६।४०।४३	५।१८।४२। ५	५।२०।४३।२७	५।२२।४४।४९
	१०	शु.	५।२४।४५।२७	५।२६।४५।४८	५।२८।४६।१०	६। ०।४६।३१	६। २।४६।५३	६। ४।४७।१४
	११	श.	६। ६।४७।३७	६। ८।४७।४८	६।१०।४७।५९	६।१२।४८।१०	६।१४।४८।२१	६।१६।४८।३२
	१२	र.	६।१८।४८।४३	६।२०।४९। ८	६।२२।४९।५७	६।२४।५०।४६	७। ९। ०। ४	७।११। २।१०
	१३	चं.	७। ०।५३।१३	७। २।५४। २	७। ४।५५।५१	७। ६।५७।५७	७। ९। ०। ४	७।११। २।१०
	१४	मं.	७।१३। ४।१७	७।१५। ६।२३	७।१७। ८।५५	७।१९।१२।४९	७।२१।१६।४३	७।२३।२०।३७
	१५	बु.	७।२५।२४।३२	७।२७।२८।२६	७।२९।३२।२०	८। १।३७।५४	८। ३।४३।५७	८। ५।५०। ०
आषाढ़-कृष्णपक्षः	१	गु.	८। ७।५६। २	८।१०। २। ६	८।१२। ८। ९	८।१४।१५।२१	८।१६।२४। ४	८।१८।३३।४७
	२	शु.	८।२०।४१।३०	८।२२।५०।१४	८।२४।५८।५७	८।२७। ८।१४	८।२९।१९।३१	९। १।३०।४८
	३	श.	९। ३।४२। ५	९। ५।५३।२३	९। ८। ४।४०	९।१०।१६।१८	९।१२।३०।२०	९।१४।४४।२३
	४	र.	९।१६।५८।२५	९।१९।१९।२८	९।२१।२६।३०	९।२३।४०।५५	९।२५।५५।२१	९।२८।१३।४८
	५	चं.	१०। ०।३०।१४	१०। २।४६।४१	१०। ५। ३। ७	१०। ७।२०। ९	१०। ९।३८।३६	१०।११।५७। ३
	६	मं.	१०।१४।१५।३०	१०।१६।३३।५७	१०।१८।५२।२४	१०।२१।११।५२	१०।२३।३३।२०	१०।२५।५५।४९
	७	बु.	१०।२८।१३।१७	११। ०।३३।४६	११। २।५४।१४	११। ५।१५।४८	११। ७।३७।३६	११। ९।५९।२४
	८	गु.	११।१२।२१।१२	११।१४।४३। १	११।१७। ५। ०	११।१९।२७।५१	११।२१।५०।४२	११।२४।१३।३३
	९	शु.	११।२६।३६।२४	११।२८।५९।१६	०। १।२२।२५	०। ३।४५।४४	०। ६। ९। ४	०। ८।३२।२३
	११	श.	०।१०।५५।४३	०।१३।१९। २	०।१५।४२।१०	०।१८। ५।१७	०।२०।२८।२४	०।२२।५१।३१
	१२	र.	०।२५।१४।३८	०।२७।३७।३२	१। ०। ०।१०	१। २।२२।४९	१। ४।४५।२७	१। ७। ८। ५
	१३	चं.	१। ९।३०।४४	१।११।५२।२६	१।१४।१३।५१	१।१६।३५।१७	१।१८।५६।४२	१।२१।१८। ७
	१४	मं.	१।२३।३९।२२	१।२५।५९।१८	१।२८।१९।१४	२। ०।३९।१०	२। २।५९। ७	२। ५।१९। ३
	३०	बु.	२। ७।३८। ६	२। ९।५५।५२	२।१२।१३।२९	२।१४।३१।२५	२।१६।४९।१२	२।१९। ६।५९

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: १०।०	इष्टघटी: २०।०	इष्टघटी: ३०।०	इष्टघटी: ४०।०	इष्टघटी: ५०।०
आषाढ़-शुक्लपक्षः	१	गु.	२।२१।२३।२८	२।२३।३९।१०	२।२५।५४।५३	२।२८।१०।३५	३। ०।२६।१८	३। २।४२।
	२	शु.	३। ४।५५।५४	३। ७। ९। ५	३। ९।२२।१६	३।११।३५।२७	३।१३।४८।३८	३।१६। १।४
	३	श.	३।१८।१३।१३	३।२०।२३।५४	३।२२।३४।३५	३।२४।४५।१६	३।२६।५५।५७	३।२९। ६।३
	४	र.	४। १।१५।३९	४। ३।२३।३०	४। ५।३१।२२	४। ७।३९।१४	४। ९।४७। ५	४।११।५४।५
	५	चं.	४।१४। २। ०	४।१६। ७।२३	४।१८।१२।४७	४।२०।१८।१०	४।२२।२३।३४	४।२४।२८।५
	६	मं.	४।२६।३४।२१	४।२८।३७।४०	५। ०।४०।५२	५। २।४४। ४	५। ४।४७।१६	५। ६।५०।२
	७	बु.	५। ८।५३।४१	५।१०।५६।११	५।१२।५७।५३	५।१४।५९।३५	५।१७। १।१७	५।१९। ३।
	८	गु.	५।२१। ४।४२	५।२३। ६।२४	५।२५। ७। ३	५।२७। ७।३३	५।२९। ८। ४	६। १। ८।३
	९	शु.	६। ३। ९। ५	६। ५। ९।३६	६। ७।१०। ४	६। ९।१०।१८	६।११।१०।३३	६।१३।१०।४
	१०	श.	६।१५।११। २	६।१७।११।१६	६।१९।११।३१	६।२१।११।५८	६।२३।१२।३४	६।२५।१३।१
	११	र.	६।२७।१३।४६	६।२९।१४।२३	७। १।१४।५९	७। ३।१५।३५	७। ५।१७।१८	७। ७।१९।
	१२	चं.	७। ९।२०।५०	७।११।२२।३६	७।१३।२४।२२	७।१५।२६। ८	७।१७।२८।३४	७।१९।३२।३
	१३	मं.	७।२१।३५।३२	७।२३।३९। १	७।२५।४२।३१	७।२७।४६। ०	७।२९।४९।२९	८। १।५४।५
	१४	बु.	८। ४। ०।२६	८। ६। ५।५९	८। ८।११।३२	८।१०।१७। ६	८।१२।२२।३९	८।१४।२९।३
	१५	गु.	८।१६।३६।३६	८।१८।४३।५९	८।२०।५१।२२	८।२२।५८।४६	८।२५। ६। ९	८।२७।१४।४०
श्रावण-कृष्णपक्षः	१	शु.	८।२९।२६।१०	९। १।३७।४७	९। ३।४९।२४	९। ६। १। १	९। ८।१२।३८	९।१०।२४।४
	२	श.	९।१२।३८। ०	९।१४।५१।२०	९।१७। ४।४०	९।१९।१८। ०	९।२१।३१।२०	९।२३।४५।१
	३	र.	९।२६। १।११	९।२८।१७।१२	१०। ०।३३।१३	१०। २।४९।१४	१०। ५। ५।१५	१०। ७।२१।५
	४	चं.	१०। ९।३९।४९	१०।११।५७।४७	१०।१४।१५।४५	१०।१६।३३।४४	१०।१८।५१।४२	१०।२१।१०।४
	५	मं.	१०।२३।३०।५४	१०।२५।५१। ३	१०।२८।११।११	११। ०।३१।२०	११। २।५१।२८	११। ५।१२।४
	६	बु.	११। ७।३४।१४	११। ९।५५।४५	११।१२।१७।१५	११।१४।३८।४६	११।१७। ०।२८	११।१९।२३।१
	७	गु.	११।२१।४६। ६	११।२४। ८।५५	११।२६।३१।४४	११।२८।५४।३३	०। १।१७।३४	०। ३।४०।४
	८	शु.	०। ६। ३।५९	०। ८।२७।११	०।१०।५०।२४	०।१३।१३।३६	०।१५।३६।५३	०।१८। ०।१
	९	श.	०।२०।२३।३२	०।२२।४६।५१	०।२५।१०।११	०।२७।३३।२०	०।२९।५६।११	१। २।१९।
	१०	र.	१। ४।४१।५३	१। ७। ४।४५	१। ९।२७।३६	१।११।४९।४०	१।१४।११।२८	१।१६।३३।१
	११	चं.	१।१८।५५। ४	१।२१।१६।५३	१।२३।३८।२८	१।२५।५८।४६	१।२८।१९। ५	२। ०।३९।२
	१२	मं.	२। २।५९।४२	२। ५।२०।००	२। ७।३९।२९	२। ९।५७।४८	२।१२।१६। ८	२।१४।३४।२
	१४	बु.	२।१६।५२।४७	२।१९।११। ६	२।२१।२८। ८	२।२३।४४।२५	२।२६। ०।४२	२।२८।१६।५
	३०	गु.	३। ०।३३।१६	३। २।४९।३३	३। ५। ३।५२	३। ७।१७।३६	३। ९।३१।२१	३।११।४५।
श्रावण-शुक्लपक्षः	१	शु.	३।१३।५८।५०	३।१६।१२।३४	३।१८।२४।१६	३।२०।३५।२५	३।२२।४६।३४	३।२४।५७।४
	२	श.	३।२७। ८।५२	३।२९।२०। १	४। १।२९।२०	४। ३।३७।५३	४। ५।४६।२६	४। ७।५४।५
	३	र.	४।१०। ३।३२	४।१२।१२। ५	४।१४।१९।२४	४।१६।२५।२१	४।१८।३३।१८	४।२०।३७।१५
	४	चं.	४।२२।४३।१२	४।२४।४९। ९	४।२६।५४।५१	४।२८।५८।३५	५। १। २।२०	५। ३। ६। ५
	५	मं.	५। ५। ९।४९	५। ७।१३।३४	५। ९।१७।१९	५।११।१९।५८	५।१३।२२। २	५।१५।२४।
	६	बु.	५।१७।२६।११	५।१९।२८।१६	५।२१।३०।२०	५।२३।३२।१७	५।२५।३३। २	५।२७।३३।४
	६	गु.	५।२९।३४।३३	६। १।३५।१८	६। ३।३६। ३	६। ५।३६।४८	६। ७।३७।२०	६। ९।३७।३
	७	शु.	६।११।३७।५२	६।१३।३८। ८	६।१५।३८।२५	६।१७।३८।४१	६।१९।३८।५७	६।२१।३९।२
	८	श.	६।२३।३९।५३	६।२५।४०।२२	६।२७।४०।५१	६।२९।४१।२०	७। १।४१।४९	७। ३।४२।२
	९	र.	७। ५।४४। ०	७। ७।४५।३१	७। ९।४७। २	७।११।४८।३३	७।१३।५०। ४	७।१५।५१।३
	१०	चं.	७।१७।५४। ०	७।१९।५६।५९	७।२१।५९।५८	७।२४। २।५७	७।२६। ५।५६	७।२८। ८।५
	११	मं.	८। ०।१२। ६	८। २।१७।२०	८। ४।२२।३४	८। ६।२७।४८	८। ८।३३। २	८।१०।३८।१
	१२	बु.	८।१२।४३।३०	८।१४।५०।१७	८।१६।५७।४४	८।१९। ५।११	८।२१।१२।३८	८।२३।२०।
	१३	गु.	८।२५।२०।३३	८।२७।३६।११	८।२९।४६।२०	९। १।५६।२९	९। ४। ६।३८	९। ६।१६।४
	१४	शु.	९। ८।२६।५६	९।१०।३७।५१	९।१२।५०।४०	९।१५।४३।२९	९।१७।१६।१८	९।१९।२९।
	१५	श.	९।२२।४१।५६	९।२३।५५।२५	९।२६।१०।४६	९।२८।२६। ८	१०। ०।४१।३०	१०। २।५६।५

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
भाद्रपद-कृष्णपक्षः	१	र.	१०। ५।१२।१३	१०। ७।२८।२४	१०। ९।४६। ३	१०।१२। ३।४२	१०।१४।२१।२१	१०।१६।३९। ०
	२	चं.	१०।१८।५६।४०	१०।२१।१५।२६	१०।२३।३५। ७	१०।२५।५४।४९	१०।२८।१४।३१	११। ०।३४।१२
	३	मं.	११। २।५३।५४	११। ५।१५। ०	११। ७।३६।२३	११। ९।५७।४६	११।१२।१९। ९	११।१४।४०।३२
	४	बु.	११।१७। २। ५	११।१९।२४।३३	११।२१।४७। २	११।२४। ९।३०	११।२६।३१।५९	११।२८।५४।२७
	५	गु.	०। १।१७।१८	०। ३।४०।२७	०। ६। ३।३६	०। ८।२६।४५	०।१०।४९।५४	०।१३।१३। ३
	७	शु.	०।१५।३६।३४	०।१८। ०। ३	०।२०।२३।३३	०।२२।४७। ३	०।२५।१०।३२	०।२७।३३।५०
	८	श.	०।२९।५६।४६	१। २।१९।४३	१। ४।४२।३९	१। ७। ५।३६	१। ९।२८।३२	१।११।५०।५२
	९	र.	१।१४।१३। ०	१।१६।३५।४८	१।१८।५७।१६	१।२१।१९।२५	१।२३।४१।२२	१।२६। ३।१२
	१०	चं.	१।२८।२३। ३	२। ०।४३।५४	२। ३। ४।४४	२। ५।२५।३५	२। ७।४५।२६	२।१०। ४। ९
	११	मं.	२।१२।२२।५३	२।१४।४१।३७	२।१७। ०।२०	२।१९।१९। ४	२।२१।३६।३१	२।२३।५३।२५
	१२	बु.	२।२६।१०।२०	२।२८।२७।१४	३। ०।४४। ९	३। ३। १। ३	३। ५।१५।५३	३। ७।३०।२२
	१३	गु.	३। ९।४४।५२	३।११।५९।२१	३।१४।१३।५१	३।१६।२८।२०	३।१८।४०।१८	३।२०।५२। १
	१४	शु.	३।२३। ३।४४	३।२५।१५।२७	३।२७।२७।११	३।२९।३८।५४	४। १।४८।३२	४। ३।५७।४४
	३०	श.	४। ६। ६।५७	४। ८।१६। ९	४।१०।२५।२१	४।१२।३४।३४	४।१४।४२। २	४।१६।४८।३३
भाद्रपद-शुक्लपक्षः	१	र.	४।१८।५५। ४	४।२१। १।३५	४।२३। ८। ६	४।२५।१४।३७	४।२७।२०।२५	४।२९।२४।४६
	२	चं.	५। १।२९। ७	५। ३।३३।२८	५। ५।३७।४९	५। ७।४२।१०	५। ९।४६।३१	५।११।४९। ९
	३	मं.	५।१३।५१।३४	५।१५।५३।५९	५।१७।५६।२४	५।१९।५८।४९	५।२२। १।१४	५।२४। ३।१३
	४	बु.	५।२६। ४।२२	५।२८। ५।३१	६। ०। ६।४०	६। २। ७।४९	६। ४। ८।५८	६। ६।१०। ७
	५	गु.	६। ८।१०।३५	६।१०।१०।४९	६।१२।११। ४	६।१४।११।१८	६।१६।११।३३	६।१८।११।४७
	६	शु.	६।२०।१२। २	६।२२।१२।२७	६।२४।१२।५२	६।२६।१३।१७	६।२८।१३।४२	७। ०।१४। ८
	७	श.	७। २।१४।३३	७। ४।१५।२२	७। ६।१६।३६	७। ८।१७।५१	७।१०।१९। ६	७।१२।२०।२०
	८	र.	७।१४।२१।३५	७।१६।२२।५०	७।१८।२५।११	७।२०।२७।४३	७।२२।३०।१६	७।२४।३२।४८
	९	चं.	७।२६।३५।२१	७।२८।३७।५३	८। ०।४१।१०	८। २।४५।५४	८। ४।५०।३९	८। ६।५५।२३
	१०	मं.	८। ९। ०। ८	८।११। ४।५२	८।१३। ९।३७	८।१५।१६।१९	८।१७।२३। २	८।१९।२९।५५
	११	बु.	८।२१।३६।४८	८।२३।४३।४१	८।२५।५०।३४	८।२७।५९।१७	९। ०। ८।५४	९। २।१८।३२
	१२	गु.	९। ४।२८। ९	९। ६।३७।४७	९। ८।४७।२४	९।१०।५८। ९	९।१३।१०।१८	९।१५।२२।२८
	१३	शु.	९।१७।३४।३७	९।१९।४६।४७	९।२१।५८।५६	९।२४।१२। ८	९।२६।२६।५७	९।२८।४१।४७
	१४	श.	१०। ०।५६।३७	१०। ३।११।२६	१०। ५।२६।१६	१०। ७।४२।१२	१०। ९।५९।२५	१०।१२।१६।३८
	१५	र.	१०।१४।३३।५१	१०।१६।५१। ५	१०।१९। ८।१८	१०।२१।२६।४६	१०।२३।४५।५८	१०।२६। ५।११
आश्विन-कृष्णपक्षः	१	चं.	१०।२८।२४।२४	११। ०।४३।३६	११। ३। २।४९	११। ५।२३।३५	११। ७।४४।३३	११।१०। ५।३१
	२	मं.	११।१२।२६।२९	११।१४।४७।२७	११।१७। ८।४२	११।१९।३१। ३	११।२१।५३।२४	११।२४।१५।४५
	३	बु.	११।२६।३८। ६	११।२९। ०।२७	०। १।२३।१६	०। ३।४६।२५	०। ६। ९।३४	०। ८।३३।४३
	४	गु.	०।१०।५५।५२	०।१३।१९। १	०।१५।४२।३०	०।१८। ५।५७	०।२०।२९।२४	०।२२।५२।५१
	५	शु.	०।२५।१६।१८	०।२७।३९।४०	१। ०। २।५२	१। २।२६। ५	१। ४।४९।१७	१। ७।१२।३०
	६	श.	१। ९।३५।४२	१।११।५८।११	१।१४।२०।३४	१।१६।४२।५८	१।१९। ५।२१	१।२१।२७।४५
	७	र.	१।२३।४९।५२	१।२६।१०।५७	१।२८।२२। ३	२। ०।५३। ८	२। ३।१४।१४	२। ५।३५।१९
	८	चं.	२। ७।५५।३२	२।१०।१४।५९	२।१२।३४।२६	२।१४।५३।५४	२।१७।१३।२१	२।१९।३३।४९
	१०	मं.	२।२१।५०।३९	२।२४। ८। ६	२।२६।२५।३३	२।२८।४३। ०	३। १। ०।२७	३। ३।१७।५५
	११	बु.	३। ५।३३। २	३। ७।४८। ५	३।१०। ३। ९	३।१२।१८।१२	३।१४।३३।१६	३।१६।४८।१०
	१२	गु.	३।१९। ०।३२	३।२१।१२।५५	३।२३।२५।१७	३।२५।३७।४०	३।२७।५०। २	४। ०। २।२३
	१३	शु.	४। २।१२। ६	४। ४।२१।५०	४। ६।३३।३४	४। ८।४१।१७	४।१०।५१। १	४।१३। ०।४५
	१४	श.	४।१५। ८।२१	४।१७।१५।३४	४।१९।२२।४७	४।२१।३०। ०	४।२३।३७।१३	४।२५।४४।२६
	३०	र.	४।२७।५०।२१	४।२९।५५।१३	५। २। ०। ५	५। ४। ४।५८	५। ६। ९।५०	५। ८।१४।४२

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: १०।०	इष्टघटी: २०।०	इष्टघटी: ३०।०	इष्टघटी: ४०।०	इष्टघटी: ५०।
आश्विन शुक्लपक्षः	१	चं.	५।१०।१९।१४	५।१२।२१।५९	५।१४।२४।४५	५।१६।२७।३१	५।१८।३०।१६	५।२०।३३।
	१	मं.	५।२२।३५।४८	५।२४।३७।४०	५।२६।३९। २	५।२८।४०।२४	६। ०।४१।४६	६। २।४३।
	२	बु.	६। ४।४४।३०	६। ६।४५।४९	६। ८।४६।१६	६।१०।४६।४३	६।१२।४७।१०	६।१४।४७।
	३	गु.	६।१६।४८। ४	६।१८।४८।३१	६।२०।४८।५५	६।२२।४९।११	६।२४।४९।२७	६।२६।४९।
	४	शु.	६।२८।५०। ०	७। ०।५०।१६	७। २।५०।३२	७। ४।५१।१७	७। ६।५२।११	७। ८।५३।
	५	श.	७।१०।५४। ०	७।१२।५४।५५	७।१४।५५।४९	७।१६।५६।५४	७।१८।५९। ७	७।२१। १।
	६	र.	७।२३। ३।३५	७।२५। ५।४८	७।२७। ८। २	७।२९।१०।१६	८। १।१३।३८	८। ३।१७।
	७	चं.	८। ५।२१।४९	८। ७।२५।५५	८। ९।३०। ०	८।११।३४। ६	८।१३।३८।३२	८।१५।४४।
	८	मं.	८।१७।५१।१०	८।१९।५७।२९	८।२२। ३।४८	८।२४।१०। ७	८।२६।१६।२६	८।२८।२४।
	९	बु.	९। ०।३३।४७	९। २।४२।४३	९। ४।५१।३९	९। ७। ०।३४	९। ९। ९।३०	९।११।२०।
	१०	गु.	९।१३।३१।३०	९।१५।४३। १	९।१७।५४।३१	९।२०। ६। २	९।२२।१७।३२	९।२४।३०।
	११	शु.	९।२६।४४।४१	९।२८।५८।५५	१०। १।१३। ९	१०। ३।२७।२२	१०। ५।४१।३६	१०। ७।५७।
	१२	श.	१०।१०।१३।५३	१०।१२।३०।३४	१०।१४।४७।१४	१०।१७। ३।५५	१०।१९।२०।३५	१०।२१।३८।
	१३	र.	१०।२३।५७।१५	१०।२६।१५।५२	१०।२८।३४।२८	११। ०।५३। ५	११। ३।११।४१	११। ५।३२।
	१४	चं.	११। ७।५२।५०	११।१०।१३।२८	११।१२।३४। ६	११।१४।५४।४५	११।१७।१५।४४	११।१९।३७।
	१५	मं.	११।२१।५९।४०	११।२४।२२।३८	११।२६।४३।३७	११।२९। ५।३५	०। १।२८। ९	०। ३।५१।
कार्तिक कृष्णपक्षः	१	बु.	०। ६।१४। २	०। ८।३६।५८	०।१०।५९।५५	०।१३।२२।५२	०।१५।४६।१६	०।१८। ९।
	३	गु.	०।२०।३३। ६	०।२२।५६।३०	०।२५।१९।५५	०।२७।४३।१५	१। ०। ६।२७	१। २।२९।
	४	शु.	१। ४।५२।५२	१। ७।१६। ५	१। ९।३९।१७	१।१२। १।५८	१।१४।२४।३६	१।१६।४७।
	५	श.	१।१९। ९।५४	१।२१।३२।३२	१।२३।५४।५५	१।२६।१६।२८	१।२८।३८। १	२। ०।५९।
	६	र.	२। ३।२१। ७	२। ५।४२।४०	२। ८। ३।१३	२।१०।२३। ४	२।१२।४२।५६	२।१५।
	७	चं.	२।१७।२२।३९	२।१९।४२।३१	२।२२। ०।३३	२।२४।१८।१९	२।२६।३६। ६	२।२८।५३।
	८	मं.	३। १।११।३९	३। ३।२९।१७	३। ५।४५। २	३। ८। ०।४७	३।१०।१६।३२	३।१२।३२।
	९	बु.	३।१४।४८। २	३।१७। ३।१८	३।१९।१६।२७	३।२१।२९।३६	३।२३।४२।४५	३।२५।५५।
	१०	गु.	३।२८। ९। ३	४। ०।२१।४५	४। २।३३।१५	४। ४।४४।४६	४। ६।५३।१७	४। ९। ३।
	११	शु.	४।११।१४।१७	४।१३।२४।४१	४।१५।३२।२८	४।१७।४०।१६	४।१९।४८। ४	४।२१।५७।
	१२	श.	४।२४। ३।३९	४।२६।११।२७	४।२८।१७।२३	५। ०।२२।४६	५। २।२८।१०	५। ४।३३।
	१३	र.	५। ६।३८।५७	५। ८।४४।२०	५।१०।४८।५२	५।१२।५२। ४	५।१४।५५।१६	५।१६।५८।
	१४	चं.	५।१९। १।४०	५।२१। ४।५३	५।२३। ८। ५	५।२५। ९।५६	५।२७।११।३८	५।२९।१३।
	३०	मं.	६। १।१५। २	६। ३।१६।४५	६। ५।१८।२७	६। ७।१९।४८	६। ९।२०।२४	६।११।२१।
कार्तिक शुक्लपक्षः	१	बु.	६।१३।२२।३६	६।१५।२२।१३	६।१७।२२।४९	६।१९।२३।२५	६।२१।२३।४५	६।२३।२३।
	२	गु.	६।२५।२४।१०	६।२७।२४।२२	६।२९।२४।३५	७। १।२४।४७	७। ३।२५। २	७। ५।२५।
	३	शु.	७। ७।२६।२५	७। ९।२७। ६	७।११।२७।४८	७।१३।२८।२९	७।१५।२९।११	७।१७।३०।
	४	श.	७।१९।३२।२१	७।२१।३४।१८	७।२३।३६।१५	७।२५।३८।१२	७।२७।४०। ९	७।२९।४२।
	५	र.	८। १।४५।२८	८। ३।४९। ३	८। ५।५२।३८	८। ७।५६।१३	८। ९।५९।४८	८।१२। ३।
	५	चं.	८।१४। ७।४६	८।१६।१३।२९	८।१८।१९।१२	८।२०।२४।५५	८।२२।३०।३८	८।२४।३६।
	६	मं.	८।२६।४२। ८	८।२८।५०।२०	९। ०।५८।३२	९। ३। ६।४४	९। ५।१४।५६	९। ७।२३।
	७	बु.	९। ९।३१।२१	९।११।४१।४५	९।१३।५२।४५	९।१६। ३।४५	९।१८।१४।४५	९।२०।२५।
	८	गु.	९।२२।३६।४६	९।२४।४९।२९	९।२७। ३। २	९।२९।१६।३५	१०। १।३०। ८	१०। ३।४३।
	९	शु.	१०। ५।५७।१५	१०। ८।१२।३३	१०।१०।२८।३८	१०।१२।४४।४४	१०।१५। ०।४९	१०।१७।१६।
	१०	श.	१०।१९।३३। ०	१०।२१।५०।४४	१०।२४। ८।५१	१०।२६।२६।५९	१०।२८।४५। ७	११। १। ३।
	१२	र.	११। ३।२२।२४	११। ५।४४।३७	११। ८। १।५१	११।१०।२२। ४	११।१२।४२।१८	११।१५। ३।
	१३	चं.	११।१७।२३।१४	११।१९।४४।५७	११।२२। ६।४०	११।२४।२८।२३	११।२६।५०। ६	११।२९।११।
	१४	मं.	०। १।३४।१४	०। ३।५७। ०	०। ६।१९।४६	०। ८।४२।३२	०।११। ५।१९	०।१३।२८।
	१५	बु.	०।१५।५१।२६	०।१८।१४।४६	०।२०।३८। ५	०।२३। १।२५	०।२५।२४।४४	०।२७।४८।

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: १०।०	इष्टघटी: २०।०	इष्टघटी: ३०।०	इष्टघटी: ४०।०	इष्टघटी: ५०।०
मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः	१	गु.	१। ०।११।३१	१। २।३४।५६	१। ४।५८।२१	१। ७।२१।४५	१। ९।४५।१०	१।१२। ८। ६
	२	शु.	१।१४।३०।५७	१।१६।५३।४८	१।१९।१६।३९	१।२१।३९।३१	१।२४। २। ५	१।२६।२३।५५
	३	श.	१।२८।४५।४६	२। १। ७।३७	२। ३।२९।२७	२। ५।५१।१८	२। ८।१३। ८	२।१०।३३।२६
	४	र.	२।१२।५३।४५	२।१५।१३। ३	२।१७।३३।२२	२।१९।५३।४०	२।२२।१३।२४	२।२४।३०।२१
	५	चं.	२।२६।४८।३८	२।२९। ६।५५	३। १।२५।१३	३। ३।४३।११	३। ५।५९।३२	३। ८।१५।५४
	६	मं.	३।१०।३३।१६	३।१२।४८।३७	३।१५। ४।५९	३।१७।२०।३५	३।१९।३४।२१	३।२१।४८। ८
	७	बु.	३।२४। १।५४	३।२६।१५।४१	३।२८।२९।२८	४। ०।४२।२६	४। २।५३।३९	४। ५। ४।५२
	८	गु.	४। ७।१६। ५	४। ९।२७।१८	४।११।३८।३१	४।१३।४९। ६	४।१५।५७।३०	४।१८। ५।५५
	९	शु.	४।२०।१४।२०	४।२२।२२।४४	४।२४।३१। ९	४।२६।३९।३४	४।२८।४५।३०	५। ०।५१।२५
	१०	श.	५। २।५७।२०	५। ५। ३।१५	५। ७। ९।१०	५।१०।१५। ५	५।१२।१९।३५	५।१३।२३।१८
	११	र.	५।१५।२७। १	५।१७।३०।४४	५।१९।३४।२७	५।२१।३८।१०	५।२३।४१।३४	५।२५।४३।३६
	१२	चं.	५।२७।४५।३९	५।२९।४७।४२	६। १।४९।४४	६। ३।५१।४७	६। ५।५३।५०	६। ७।५५। ५
	१३	मं.	६। ९।५५।५२	६।११।५६।३९	६।१३।५७।२६	६।१५।५८।१४	६।१७।५९। १	६।१९।५९।४८
	१४	बु.	६।२२। ०। ४	६।२४। ०।२०	६।२६। ०।३६	६।२८। ०।५२	७। ०। १। ९	७। २। १।२५
	३०	गु.	७। ४। १।४७	७। ६। २।१९	७। ८। २।५२	७।१०। ३।२४	७।१२। ३।५७	७।१४। ४।२९
मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः	१	शु.	७।१६। ५। २	७।१८। ६।१७	७।२०। ७।४८	७।२२। ९।१९	७।२४।१०।५०	७।२६।१२।२१
	२	श.	७।२८।१३।५२	८। ०।१५।३६	८। २।१८।४२	८। ४।२२।४९	८। ६।२४।५५	८। ८।२८। २
	३	र.	८।१०।३१। ८	८।१२।३४।१५	८।१४।३८।४२	८।१६।४३।५७	८।१८।४९।१३	८।२०।५४।२८
	४	चं.	८।२२।५९।४४	८।२५। ४।५९	८।२७।१०।५०	८।२९।१८।२३	९। १।२५।५७	९। ३।३३।३०
	५	मं.	९। ५।४१। ४	९। ७।४८।३७	९। ९।५६।११	९।१२। ६।१९	९।१४।१६।३२	९।१६।२६।४५
	६	बु.	९।१८।३६।५८	९।२०।४७।१२	९।२२।५७।२५	९।२५। ९।५३	९।२७।२२।४८	९।२९।३५।४४
	७	गु.	१०। १।४८।३९	१०। ४। १।३६	१०। ६।१४।३१	१०। ८।२९।२९	१०।१०।४४।५५	१०।१३। ०।२२
	८	शु.	१०।१५।१५।४८	१०।१७।३१।१५	१०।१९।४६।४१	१०।२२। ४।११	१०।२४।२१।५५	१०।२६।३९।३९
	९	श.	१०।२८।५७।२३	११। १।१५। ७	११। ३।३३। २	११। ५।५२।४६	११। ८।१२।३०	११।१०।३२।१४
	१०	र.	११।१२।५१।५९	११।१५।११।४३	११।१७।३२। ५	११।१९।५३।२८	११।२२।१४।५१	११।२४।३६।१४
	११	चं.	११।२६।५७।३७	११।२९।१९। ०	०। १।४१।१३	०। ४। ३।४६	०। ६।२६।२०	०। ८।४८।५३
	१२	मं.	०।११।११।२७	०।१३।३४। ५	०।१५।५७।१७	०।१८।२०।३०	०।२०।४३।४२	०।२३। ६।५५
	१३	बु.	०।२५।३०। ७	०।२७।५३।२४	१। ०।१६।५१	१। २।४०।१८	१। ५। ३।४५	१। ७।२७।१२
	१४	गु.	१। ९।५०।३९	१।१२।१३।४६	१।१४।३६।५०	१।१६।५९।५४	१।१९।२२।५८	१।२१।४६। ३
पौष कृष्णपक्षः	१	शु.	१।२४। ८।४७	१।२६।३०।५२	१।२८।५२।५८	२। १।१५। ४	२। ३।३७। ९	२। ५।५९।१५
	२	श.	२। ८।२२।२९	२।१०।४३।४४	२।१३। ६। ०	२।१५।२८।१६	२।१७।५०।३१	२।२०।१२।२१
	३	र.	२।२२।२९।३९	२।२४।४६।५७	२।२७। ४।१५	२।२९।२१।३३	३। १।२८।५१	३। ३।५६। ३
	४	चं.	३। ६।१२।५७	३। ८।२९।५२	३।१०।४६।४६	३।१३। ३।४१	३।१५।२०।३५	३।१७।३६।२७
	५	मं.	३।१९।५०।५२	३।२२। ५।१७	३।२४।१९।४२	३।२६।३४। ७	३।२८।४८।३२	४। १। १।४०
	६	बु.	४। ३।१३।२१	४। ५।२५। २	४। ७।३६।४३	४। ९।४८।२५	४।१२। ०। ६	४।१४।१०।४५
	७	गु.	४।१६।११।४७	४।१८।२८।४९	४।२०।३७।५१	४।२२।४६।५३	४।२४।५५।५५	४।२७। ४।२६
	८	शु.	४।२९।१०।४८	५। १।१७।११	५। ३।२३।३४	५। ५।२९।५६	५। ७।३६।१९	५। ९।४२।४२
	९	श.	५।११।४७।१६	५।१३।५१।३१	५।१५।५५।४६	५।१८। ०। १	५।२०। ४।१७	५।२२। ८।३२
	१०	र.	५।२४।११।५८	५।२६।१४।१३	५।२८।१६।२९	६। ०।१८।४५	६। २।२१। ०	६। ४।२३।१६
	११	चं.	६। ६।२५।३२	६। ८।२६।४१	६।१०।२७।४१	६।१२।२८।४१	६।१४।२९।४१	६।१६।३०।४१
	१२	मं.	६।१८।३१।४१	६।२०।३२।२८	६।२२।३२।४४	६।२४।३३। ०	६।२६।३३।१६	६।२८।३३।३३
	१३	बु.	७। ०।३३।४९	७। २।३४। ५	७। ४।३४।२४	७। ६।३४।४३	७। ८।३५। ३	७।१०।३५।२२
	१३	गु.	७।१२।३५।४२	७।१४।३६। ०	७।१६।३६।२१	७।१८।३७।३३	७।२०।३८।४४	७।२२।३९।५५
	१४	शु.	७।२४।४१। ६	७।२६।४२।१७	७।२८।४३।२८	८। ०।४५। ९	८। २।४७।४३	८। ४।५०।१८
	३०	श.	८। ६।५२।५२	८। ८।५५।२७	८।१०।५८। १	८।१३। ०।३६	८।१५। ४।५६	८।१७। ९।३६

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०
पौष शुक्लपक्षः	१	र.	८।१९।१४।१७	८।२१।१८।५७	८।२३।२३।३८	८।२५।२८।१८	८।२७।३४। ३	८।२९।४।…
	२	चं.	९। १।४८।२५	९। ३।५५।३६	९। ६। २।४७	९। ८। ९।५८	९।१०।१७।२७	९।१२।२६…
	३	मं.	९।१४।३५।५६	९।१६।४५।१०	९।१८।५४।२५	९।२१। ३।३९	९।२३।१२।५४	९।२५।२४…
	४	बु.	९।२७।३७। २	९।२९।४९।१२	१०। २। १।२१	१०। ४।१३।३१	१०। ६।२५।४०	१०। ८।४०…
	५	गु.	१०।१०।५५। ३	१०।१३। ९।५३	१०।१५।२४।४३	१०।१७।३९।३२	१०।१९।५४।२२	१०।२२।११…
	६	शु.	१०।२४।२८।३९	१०।२६।४५।५०	१०।२९। ३। १	११। १।२०।१२	११। ३।३७।३८	११। ५।५६…
	७	श.	११। ८।१५।५८	११।१०।३५। ८	११।१२।५४।१९	११।१५।१३।२९	११।१७।३३।२१	११।१९।५४…
	८	र.	११।२२।१५।२२	११।२४।३६।२३	११।२६।५७।२३	११।२९।१८।२४	०। १।४०।१२	०। ४। २…
	९	चं.	०। ६।२४।२८	०। ८।४६।३६	०।११। ८।४४	०।१३।३०।५८	०।१५।५४। ५	०।१८।१७…
	११	मं.	०।२०।४०।१९	०।२३। ३।२६	०।२५।२६।३३	०।२७।४९।४६	१। ०।१३। ८	१। २।३६…
	१२	बु.	१। ४।५९।५२	१। ७।२३।१५	१। ९।४६।३७	१।१२। ९।४५	१।१४।३२।५२	१।१६।५५…
	१३	गु.	१।१९।१९। ६	१।२१।४३।१३	१।२४। ५। ४	१।२६।२७।२२	१।२८।४९।४१	२। १।११…
	१४	शु.	२। ३।३४।१८	२। ५।५६।३६	२। ८।१७।५७	२।१०।३८।५२	२।१२।५९।४८	२।१५।२०…
	१५	श.	२।१७।४१।३९	२।२०। २।३३	२।२२।२१।५३	२।२४।४१।१३	२।२७। ०।३३	२।२९।१९…
माघ कृष्णपक्षः	१	र.	३। १।३९।१३	३। ३।५७।५९	३। ६।१५।१७	३। ८।३२।३५	३।१०।४९।५३	३।१३। ७…
	२	चं.	३।१५।२४।२९	३।१७।४०।४४	३।१९।५५।४०	३।२२।१०।३७	३।२४।२५।३४	३।२६।४०…
	३	मं.	३।२८।५५।२७	४। १। ८।५९	४। ३।२१।१३	४। ५।३३।२७	४। ७।४५।४१	४। ९।५७…
	४	बु.	४।१२।१०। ९	४।१४।२१। ८	४।१६।३०।४५	४।१८।४०।२३	४।२०।५०। ०	४।२२।५९…
	५	गु.	४।२५। ९।१५	४।२७।१८। ६	४।२९।२५। ८	५। १।३२।१०	५। ३।३९।१२	५। ५।४६…
	६	शु.	५। ७।५३।१६	५।१०। ०।१२	५।१२। ४।५६	५।१४। ९।४१	५।१६।१४।२५	५।१८।१९…
	७	श.	५।२०।२३।५४	५।२२।२८।३९	५।२४।३२।१०	५।२६।३४।५०	५।२८।३७।३०	६। ०।४०…
	८	र.	६। २।४२।५०	६। ४।४५।३०	६। ६।४८। ५	६। ८।४९।१९	६।१०।५०।३४	६।१२।५१…
	९	चं.	६।१४।५३। ३	६।१६।५४।१८	६।१८।५५।३३	६।२०।५६।२१	६।२२।५६।४०	६।२४।५७…
	१०	मं.	६।२६।५७।१९	६।२८।५७।३९	७। ०।५७।५८	७। २।५८।१८	७। ४।५८।३४	७। ६।५८…
	११	बु.	७। ८।५८।५९	७।१०।५९।११	७।१२।५९।२४	७।१४।५९।३६	७।१६।५९।५८	७।१९। ०…
	१२	गु.	७।२१। १।५४	७।२३। २।५२	७।२५। ३।५०	७।२७। ४।४८	७।२९। ५।४६	८। १। ७…
	१३	शु.	८। ३। ९।३६	८। ५।११।४८	८। ७।१४। ०	८। ९।१६।११	८।११।१८।२३	८।१३।२०…
	१४	श.	८।१५।२४।४६	८।१७।२८।५६	८।१९।३३। ५	८।२१।३७।१५	८।२३।४१।२४	८।२५।४५…
	३०	र.	८।२७।५०।५७	८।२९।५७।१६	९। २। ३।३५	९। ४। ९।५४	९। ६।१६।१३	९। ८।२२…
माघ शुक्लपक्षः	१	चं.	९।१०।२९।२५	९।१२।३८।१६	९।१४।४७। ८	९।१६।५५।५९	९।१९। ४।५१	९।२१।१३…
	२	मं.	९।२३।२२।३८	९।२५।३४।१२	९।२७।४५।४७	९।२९।५७।२१	१०। २। ८।५६	१०। ४।२०…
	३	बु.	१०। ६।३२। ५	१०। ८।४६। ८	१०।११। ०।१९	१०।१३।१४।३०	१०।१५।२८।४१	१०।१७।४२…
	४	गु.	१०।१९।५७। ४	१०।२२।१३।४५	१०।२४।३०।२७	१०।२६।४७।१०	१०।२९। ३।५३	११। १।२०…
	५	शु.	११। ३।३७।३३	११। ५।५६। ७	११। ८।१४।४१	११।१०।३३।१५	११।१२।५१।४९	११।१५।१०…
	६	श.	११।१७।२९।४३	११।१९।५०।२६	११।२२।११। ९	११।२४।३३।५२	११।२६।५२।३६	११।२९।१३…
	७	र.	०। १।३४।३८	०। ३।५६।३८	०। ६।१८।२९	०। ८।४०।२०	०।११। २।१०	०।१३।२४…
	८	चं.	०।१५।४६।४६	०।१८। ९।३०	०।२०।३२।१४	०।२२।५४।५७	०।२५।१७।४१	०।२७।४०…
	९	मं.	१। ०। ४।१८	१। २।२७।५१	१। ४।५१।२३	१। ७।१४।५६	१। ९।३८।२८	१।१२। १…
	१०	बु.	१।१४।२४।४६	१।१६।४७।५३	१।१९।११।१०	१।२१।३४। ७	१।२३।५७। ३	१।२६।१९…
	११	गु.	१।२८।४२। ०	२। १। ४।२८	२। ३।२६।५७	२। ५।४९।२५	२। ८।११।१२	२।१०।३२…
	१२	शु.	२।१२।५३।५८	२।१५।१५।२१	२।१७।३६।४४	२।१९।५८। ७	२।२२।१७।५०	२।२४।३७…
	१३	श.	२।२६।५७।१३	२।२९।१६।५५	३। १।३६।३६	३। ३।५५।४६	३। ६।१३।२०	३। ८।३०…
	१४	र.	३।१०।४८।२९	३।१३। ६। ४	३।१५।२३।३८	३।१७।४०।१५	३।१९।५५।३९	३।२२।११…

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मास	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
फाल्गुन कृष्णपक्षः	१	चं.	३।२४।२६।२७	३।२६।४१।५१	३।२८।५७।१५	४। १।११।१८	४। ३।२४। ९	४। ५।३७। ०
	२	मं.	४। ७।४९।५१	४।१०। २।४२	४।१२।१५।३३	४।१४।२७। २	४।१६।३७।११	४।१८।४७।२०
	३	बु.	४।२०।५७।२९	४।२३। ७।३८	४।२५।१७।४७	४।२७।२७। ०	४।२९।३४।३५	५। १।४२।११
	४	गु.	५। ३।४९।४६	५। ५।५७।२२	५। ८। ४।५७	५।१०।१२।१८	५।१२।१७।२५	५।१४।२२।३३
	५	शु.	५।१६।२७।४१	५।१८।३२।४८	५।२०।३७।५६	५।२२।४३। ४	५।२४।४६।४५	५।२६।४९।४७
	५	श.	५।२८।५९।५०	६। ०।५५।५३	६। २।५८।५५	६। ५। १।५८	६। ७। ४।४१	६। ९। ६। ६
	६	र.	६।११। ७।३२	६।१३। ८।५७	६।१५।१०।२३	६।१७।११।४८	६।१९।१३।१४	६।२१।१४। ४
	७	चं.	६।२३।१४।२९	६।२५।१४।५४	६।२७।१५।१९	६।२९।१५।४५	७। १।१६।१०	७। ३।१६।३५
	८	मं.	७। ५।१६।४५	७। ७।१६।५४	७। ९।१७। ३	७।११।१७।१२	७।१३।१७।२१	७।१५।१७।३०
	९	बु.	७।१७।१७।४८	७।१९।१८।२८	७।२१।१९। ८	७।२३।१९।४८	७।२५।२०।२८	७।२७।२१। ८
	१०	गु.	७।२९।२२।४८	८। १।२३।१६	८। ३।२५। ७	८। ५।२६।५९	८। ७।२८।५०	८। ९।३०।४२
	११	शु.	८।११।३२।३३	८।१३।३४।३८	८।१५।३८।१३	८।१७।४१।४८	८।१९।४५।२३	८।२१।४८।५८
	१२	श.	८।२३।५२।३३	८।२५।५६। ८	८।२८। १। ८	९। ०। ६।५५	९। २।१२।४२	९। ४।१८।२९
	१३	र.	९। ६।२४।१६	९। ८।३०। ३	९।१०।३६।३३	९।१२।४४।४७	९।१४।५३। २	९।१७। १।१६
	१४	चं.	९।१९। ९।३०	९।२१।१७।४५	९।२३।२६। ७	९।२५।३७।११	९।२७।४८।१६	९।२९।५९।२०
	३०	मं.	१०। २।१०।२५	१०। ४।२२।२९	१०। ६।३३।३४	१०। ८।४६। १	१०।१०।५९।३६	१०।१३।१३।१२
फाल्गुन शुक्लपक्षः	१	बु.	१०।१५।२६।४७	१०।१७।४०।२३	१०।१९।५३।५८	१०।२२।१०। २	१०।२४।२६।१२	१०।२६।४२।२२
	२	गु.	१०।२८।५८।३२	११। १।१४।४३	११। ३।३१। ३	११। ५।४९। ८	११। ८। ७।१३	११।१०।२५।१८
	३	शु.	११।१२।४३।२४	११।१५। १।२९	११।१७।२०।१३	११।१९।४०।३१	११।२२। ०।५०	११।२४।२१। ८
	४	श.	११।२६।४१।१७	११।२९। १।३५	०। १।२२।५०	०। ३।४४।२५	०। ६। ६। १	०। ८।२७।३६
	५	र.	०।१०।४९।१२	०।१३।१०।४७	०।१५।३३।३७	०।१७।५६।३१	०।२०।१९।२५	०।२२।४२।१९
	६	चं.	०।२५। ५।१३	०।२७।२८। ८	०।२९।५१। ७	१। २।१४। ६	१। ४।३७। ५	१। ७। ०। ४
	७	मं.	१। ९।२३। ३	१।११।४६।१४	१।१४। १।२८	१।१६।३३।४३	१।१८।५९।५७	१।२१।२१।१२
	९	बु.	१।२३।४२।२१	१।२६। ५। २	१।२८।२७।४३	२। ०।५०।२४	२। ३।१३। ६	२। ५।३५।४७
	१०	गु.	२। ७।५७।५३	२।१०।१९।२८	२।१२।४१। ४	२।१५। २।३९	२।१७।२४।१५	२।१९।४५।५०
	११	शु.	२।२२। ६। ४	२।२४।२६। ८	२।२६।४६।१२	२।२९। ६।१६	३। १।२६।२१	३। ३।४५।५९
	१२	श.	३। ६। ३।५४	३। ८।२२।५०	३।१०।३९।४६	३।१२।५७।४१	३।१५।१५।३७	३।१७।३२।४९
	१३	र.	३।१९।४८।५०	३।२२। ४।५१	३।२४।२०।५२	३।२६।३६।५३	३।२८।५२।२४	४। १। ७।३७
	१४	चं.	४। ३।२१। ३	४। ५।३४।३०	४। ७।४७।५७	४।१०। १।२३	४।१२।१४।५०	४।१४।२६।५६
	१५	मं.	४।१६।३७।४५	४।१८।४८।३५	४।२०।५९।२४	४।२३।१०।१४	४।२५।२१। ३	४।२७।३०।५०
चैत्र कृष्णपक्षः	१	बु.	४।२९।३८।५८	५। १।४७। ६	५। ३।५५।१४	५। ६। ३।२२	५। ८।११।३१	५।१०।१९।१५
	२	गु.	५।१२।२४।४८	५।१४।३०।२१	५।१६।३५।५४	५।१८।४१।२८	५।२०।४७। १	५।२२।५२।३४
	३	शु.	५।२४।५६।३०	५।२६।५९।५७	५।२९। ३।२४	६। १। ६।५१	६। ३।१०।१९	६। ५।१३।४६
	४	श.	६। ७।१६।४३	६। ९।१८।२७	६।११।२०।११	६।१३।२१।५५	६।१५।२२।३९	६।१७।२५।२४
	५	र.	६।१९।२७। ८	६।२१।२८। ५	६।२३।२८।४५	६।२५।२९।२५	६।२७।३०। ५	६।२९।३०।४५
	६	चं.	७। १।३१।२५	७। ३।३२। ०	७। ५।३२। १	७। ७।३२। ३	७। ९।३२। ५	७।११।३२। ६
	७	मं.	७।१३।३२। ८	७।१५।३२।१०	७।१७।३२।२६	७।१९।३२।५८	७।२१।३३।३१	७।२३।३४। ३
	८	बु.	७।२५।३४।३६	७।२७।३५। ८	७।२९।३६।४१	८। १।३६।५९	८। ३।३८।२८	८। ५।३९।५७
	८	गु.	८। ७।४१।२६	८। ९।४२।५५	८।११।४४।२५	८।१३।४६।१७	८।१५।४९।२७	८।१७।५२।३७
	९	शु.	८।१९।५५।४७	८।२१।५८।५८	८।२४। २। ८	८।२६। ५।१८	८।२८। ८।५९	९। ०।१५।१४
	१०	श.	९। २।२०।३०	९। ४।२५।४५	९। ६।३१। १	९। ८।३६।१६	९।१०।४२।२१	९।१२।५०। २
	११	र.	९।१४।५७।४४	९।१७। ५।२५	९।१९।१३।१८	९।२१।२०।४८	९।२३।२८।४२	९।२५।३९। ६
	१२	चं.	९।२७।४९।३०	९।२९।५९।५४	१०। २।१०।१८	१०। ४।२०।४२	१०। ६।३१। ६	१०। ८।४३।५३
	१३	मं.	१०।१०।५६।५०	१०।१३। ९।४८	१०।१५।२२।४६	१०।१७।३५।४३	१०।१९।४८।४१	१०।२२। ४।१०
	१४	बु.	१०।२४।१९।५२	१०।२६।३५।३५	१०।२८।५१।१७	११। १। ७। ०	११। ३।२२।४५	११। ५।४०।२६
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	११।१०।१५।४९	११।१२।३३।३१	११।१४।५१।१२	११।१७। ९।२१	११।१९।२९। ८

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: १०।०	इष्टघटी: २०।०	इष्टघटी: ३०।०	इष्टघटी: ४०।०	इष्टघटी: ५०।०
पौष शुक्लपक्षः	१	र.	८।१९।१४।१७	८।२१।१८।५७	८।२३।२२।३८	८।२५।२८।१८	८।२७।३४। ३	८।२९।४
	२	चं.	९। १।४८।२५	९। ३।५५।३६	९। ६। २।४७	९। ८। ९।५८	९।१०।१७।२७	९।१२।२
	३	मं.	९।१४।३५।५६	९।१६।४५।१०	९।१८।५४।२५	९।२१। ३।३९	९।२३।१२।५४	९।२५।२
	४	बु.	९।२७।३७। २	९।२९।४९।१२	१०। २। १।२१	१०। ४।१३।३१	१०। ६।२५।४०	१०। ८।४
	५	गु.	१०।१०।५५। ३	१०।१३। ९।५३	१०।१५।२४।४३	१०।१७।३९।३२	१०।१९।५४।२२	१०।२२।१
	६	शु.	१०।२४।२८।३९	१०।२६।४५।५०	१०।२९। ३। १	११। १।२०।१२	११। ३।३७।३८	११। ५।५६
	७	श.	११। ८।१५।५८	११।१०।३५। ८	११।१२।५४।१९	११।१५।१३।२९	११।१७।३३।२१	११।१९।५४
	८	र.	११।२२।१५।२२	११।२४।३६।२३	११।२६।५७।२३	११।२९।१८।२४	०। १।४०।१२	०। ४। २
	९	चं.	०। ६।२४।२८	०। ८।४६।३६	०।११। ८।४४	०।१३।३०।५८	०।१५।५४। ५	०।१८।१७
	११	मं.	०।२०।४०।१९	०।२३। ३।२६	०।२५।२६।३३	०।२७।४९।४६	१। ०।१३। ८	१। २।३६
	१२	बु.	१। ४।५९।५२	१। ७।२३।१५	१। ९।४६।३७	१।१२। ९।४५	१।१४।३२।५२	१।१६।५५
	१३	गु.	१।१९।१९। ६	१।२१।४३।१३	१।२४। ५। ४	१।२६।२७।२२	१।२८।४९।४१	२। १।११
	१४	शु.	२। ३।३४।१८	२। ५।५६।३६	२। ८।१७।५७	२।१०।३८।५२	२।१२।५९।४८	२।१५।२०
	१५	श.	२।१७।४१।३९	२।२०। २।३३	२।२२।२१।५३	२।२४।४१।१३	२।२७। ०।३३	२।२९।१९
माघ कृष्णपक्षः	१	र.	३। १।३९।१३	३। ३।५७।५९	३। ६।१५।१७	३। ८।३३।३५	३।१०।४९।५३	३।१३। ७
	२	चं.	३।१५।२४।२९	३।१७।४०।४४	३।१९।५५।४०	३।२२।१०।३७	३।२४।२५।३४	३।२६।४०
	३	मं.	३।२८।५५।२७	४। १। ८।५९	४। ३।२१।१३	४। ५।३३।२७	४। ७।४५।४१	४। ९।५७
	४	बु.	४।१२।१०। ९	४।१४।२१। ८	४।१६।३०।४५	४।१८।४०।२३	४।२०।५०। ०	४।२२।५९
	५	गु.	४।२५। ९।१५	४।२७।१८। ६	४।२९।२५। ८	५। १।३२।१०	५। ३।३९।१२	५। ५।४६
	६	शु.	५। ७।५३।१६	५।१०। ०।१२	५।१२। ४।५६	५।१४। ९।४१	५।१६।१४।२५	५।१८।१९
	७	श.	५।२०।२३।५४	५।२२।२८।३९	५।२४।३२।१०	५।२६।३४।५०	५।२८।३७।३०	६। ०।४०
	८	र.	६। २।४२।५०	६। ४।४५।३०	६। ६।४८। ५	६। ८।४९।११	६।१०।५०।३४	६।१२।५१
	९	चं.	६।१४।५३। ३	६।१६।५४।१८	६।१८।५५।३३	६।२०।५६।२१	६।२२।५६।४०	६।२४।५७
	१०	मं.	६।२६।५७।१९	६।२८।५७।३९	७। ०।५७।५८	७। २।५८।१८	७। ४।५८।३४	७। ६।५८
	११	बु.	७। ८।५८।५९	७।१०।५९।११	७।१२।५९।२४	७।१४।५९।३६	७।१६।५९।५८	७।१९। ०
	१२	गु.	७।२१। १।५४	७।२३। २।५२	७।२५। ३।५०	७।२७। ४।४८	७।२९। ५।४६	८। १। ७
	१३	शु.	८। ३। ९।३६	८। ५।११।४८	८। ७।१४। ०	८। ९।१६।११	८।११।१८।२३	८।१३।२०
	१४	श.	८।१५।२४।४६	८।१७।२८।५६	८।१९।३३। ५	८।२१।३७।१५	८।२३।४१।२४	८।२५।४५
	३०	र.	८।२७।५०।५७	८।२९।५७।१६	९। २। ३।३५	९। ४। ९।५४	९। ६।१६।१३	९। ८।२२
माघ शुक्लपक्षः	१	चं.	९।१०।२९।२५	९।१२।३८।१६	९।१४।४७। ८	९।१६।५५।५९	९।१९। ४।५१	९।२१।१३
	२	मं.	९।२३।२२।३८	९।२५।३४।१२	९।२७।४५।४७	९।२९।५७।२१	१०। २। ८।५६	१०। ४।२०
	३	बु.	१०। ६।३२। ५	१०। ८।४६। ८	१०।११। ०।१९	१०।१३।१४।३०	१०।१५।२८।४१	१०।१७।४२
	४	गु.	१०।१९।५७। ४	१०।२२।१३।४५	१०।२४।३०।२७	१०।२६।४७।१०	१०।२९। ३।५३	११। १।२०
	५	शु.	११। ३।३७।३३	११। ५।५६। ७	११। ८।१४।४१	११।१०।३३।१५	११।१२।५१।४९	११।१५।१०
	६	श.	११।१७।२९।४३	११।१९।५०।२६	११।२२।११। ९	११।२४।३१।५२	११।२६।५२।३६	११।२९।१
	७	र.	०। १।३४।३८	०। ३।५६।३८	०। ६।१८।२९	०। ८।४०।२०	०।११। २।१०	०।१३।२४
	८	चं.	०।१५।४६।४६	०।१८। १।३०	०।२०।३२।१४	०।२२।५४।५७	०।२५।१७।४१	०।२७।४०
	९	मं.	१। ०। ४।१८	१। २।२७।५१	१। ४।५१।२३	१। ७।१४।५६	१। ९।३८।२८	१।१२।
	१०	बु.	१।१४।२४।४६	१।१६।४७।५३	१।१९।११।१०	१।२१।३४। ७	१।२३।५७। ३	१।२६।१
	११	गु.	१।२८।४२। ०	२। १। ४।२८	२। ३।२६।५७	२। ५।४९।२५	२। ८।११।१२	२।१०।३
	१२	शु.	२।१२।५३।५८	२।१५।१५।२१	२।१७।३६।४४	२।१९।५८। ७	२।२२।१७।५०	२।२४।३
	१३	श.	२।२६।५७।१३	२।२९।१६।५५	३। १।३६।३६	३। ३।५५।४६	३। ६।१३।२०	३। ८।३
	१४	र.	३।१०।४८।२९	३।१३। ६। ४	३।१५।२२।३८	३।१७।४०।१५	३।१९।५५।३९	३।२२।११

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मास	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
फाल्गुन कृष्णपक्षः	१	चं.	३।२४।२६।२७	३।२६।४१।५१	३।२८।५७।१५	४। १।११।२८	४। ३।२४। ९	४। ५।३७। ०
	२	मं.	४। ७।४९।५१	४।१०। २।४२	४।१२।१५।३३	४।१४।२७। २	४।१६।३७।११	४।१८।४७।२०
	३	बु.	४।२०।५७।२९	४।२३। ७।३८	४।२५।१७।४७	४।२७।२७। ०	४।२९।३४।३५	५। १।४२।११
	४	गु.	५। ३।४९।४६	५। ५।५७।२२	५। ८। ४।५७	५।१०।१२।२८	५।१२।१७।२५	५।१४।२२।३३
	५	शु.	५।१६।२७।४१	५।१८।३३।४८	५।२०।३७।५६	५।२२।४३। ४	५।२४।४६।४५	५।२६।४९।४७
	५	श.	५।२८।५२।५०	६। ०।५५।५३	६। २।५८।५५	६। ५। १।५८	६। ७। ४।४१	६। ९। ६। ६
	६	र.	६।११। ७।३२	६।१३। ८।५७	६।१५।१०।२३	६।१७।११।४८	६।१९।१३।१४	६।२१।१४। ४
	७	चं.	६।२३।१४।२९	६।२५।१४।५४	६।२७।१५।१९	६।२९।१५।४५	७। १।१६।१०	७। ३।१६।३५
	८	मं.	७। ५।१६।४५	७। ७।१६।५४	७। ९।१७। ३	७।११।१७।१२	७।१३।१७।२१	७।१५।१७।३०
	९	बु.	७।१७।१७।४८	७।१९।१८।२८	७।२१।१९। ८	७।२३।१९।४८	७।२५।२०।२८	७।२७।२१। ८
	१०	गु.	७।२९।२१।४८	८। १।२३।१६	८। ३।२५। ७	८। ५।२६।५९	८। ७।२८।५०	८। ९।३०।४२
	११	शु.	८।११।३२।३३	८।१३।३४।३८	८।१५।३८।१३	८।१७।४१।४८	८।१९।४५।२३	८।२१।४८।५८
	१२	श.	८।२३।५२।३३	८।२५।५६। ८	८।२८। ११। ८	९। ०। ६।५५	९। २।१२।४२	९। ४।१८।२९
	१३	र.	९। ६।२४।१६	९। ८।३०। ३	९।१०।३६।३३	९।१२।४४।४७	९।१४।५३। २	९।१७। १।१६
	१४	चं.	९।१९। ९।३०	९।२१।१७।४५	९।२३।२६। ७	९।२५।३७।११	९।२७।४८।१६	९।२९।५९।२०
	३०	मं.	१०। २।१०।२५	१०। ४।२२।२९	१०। ६।३३।३४	१०। ८।४६। १	१०।१०।५९।३६	१०।१३।१३।१२
फाल्गुन शुक्लपक्षः	१	बु.	१०।१५।२६।४७	१०।१७।४०।२३	१०।१९।५३।५८	१०।२२।१०। २	१०।२४।२६।१२	१०।२६।४२।२२
	२	गु.	१०।२८।५८।३२	११। १।१४।४३	११। ३।३१। ३	११। ५।४९। ८	११। ८। ७।१३	११।१०।२५।१८
	३	शु.	११।१२।४३।२४	११।१५। १।२९	११।१७।२०।१३	११।१९।४०।३१	११।२२। ०।५०	११।२४।२१। ८
	४	श.	११।२६।४१।१७	११।२९। १।३५	०। १।२२।५०	०। ३।४४।२५	०। ६। ६। १	०। ८।२७।३६
	५	र.	०।१०।४९।१२	०।१३।१०।४७	०।१५।३३।३७	०।१७।५६।३१	०।२०।१९।२५	०।२२।४२।१९
	६	चं.	०।२५। ५।१३	०।२७।२८। ८	०।२९।५१। ७	१। २।१४। ६	१। ४।३७। ५	१। ७। ०। ४
	७	मं.	१। ९।२३। ३	१।११।४६।१४	१।१४। ९।२८	१।१६।३२।४३	१।१८।५५।५७	१।२१।१९।१२
	९	बु.	१।२३।४२।२१	१।२६। ५। २	१।२८।२७।४३	२। ०।५०।२४	२। ३।११। ६	२। ५।३५।४७
	१०	गु.	२। ७।५७।५३	२।१०।१९।२८	२।१२।४१। ४	२।१५। २।३९	२।१७।२४।१५	२।१९।४५।५०
	११	शु.	२।२२। ६। ४	२।२४।२६। ८	२।२६।४६।१२	२।२९। ६।१६	३। १।२६।२१	३। ३।४५।५९
	१२	श.	३। ६। ३।५४	३। ८।२१।५०	३।१०।३९।४६	३।१२।५७।४१	३।१५।१५।३७	३।१७।३३।४९
	१३	र.	३।१९।४८।५०	३।२२। ४।५१	३।२४।२०।५२	३।२६।३६।५३	३।२८।५२।२४	४। १। ७।३७
	१४	चं.	४। ३।२१। ३	४। ५।३४।३०	४। ७।४७।५७	४।१०। १।२३	४।१२।१४।५०	४।१४।२६।५६
	१५	मं.	४।१६।३७।४५	४।१८।४८।३५	४।२०।५९।२४	४।२३।१०।२४	४।२५।२१। ३	४।२७।३०।५०
चैत्र कृष्णपक्षः	१	बु.	४।२९।३८।५८	५। १।४७। ६	५। ३।५५।१४	५। ६। ३।२२	५। ८।११।३१	५।१०।१९।१५
	२	गु.	५।१२।२४।४८	५।१४।३०।२१	५।१६।३५।५४	५।१८।४१।२८	५।२०।४७। १	५।२२।५२।३४
	३	शु.	५।२४।५६।३०	५।२६।५९।५७	५।२९। ३।२४	६। १। ६।५१	६। ३।१०।१९	६। ५।१३।४६
	४	श.	६। ७।१६।४३	६। ९।१८।२७	६।११।२०।११	६।१३।२२।५५	६।१५।२३।३९	६।१७।२५।२४
	५	र.	६।१९।२७। ८	६।२१।२८। ५	६।२३।२८।४५	६।२५।२३।२५	६।२७।३०। ५	६।२९।३०।४५
	६	चं.	७। १।३१।२५	७। ३।३३। ०	७। ५।३२। १	७। ७।३२। ३	७। ९।३२। ५	७।११।३२। ६
	७	मं.	७।१३।३३। ८	७।१५।३३।१०	७।१७।३२।२६	७।१९।३२।५८	७।२१।३३।३१	७।२३।३४। ३
	८	बु.	७।२५।३४।३६	७।२७।३५। ८	७।२९।३५।४१	८। १।३६।५९	८। ३।३८।२८	८। ५।३९।५७
	८	गु.	८। ७।४१।२६	८। ९।४२।५५	८।११।४४।२५	८।१३।४६।१७	८।१५।४९।२७	८।१७।५२।३७
	९	शु.	८।१९।५५।४७	८।२१।५८।५८	८।२४। २। ८	८।२६। ५।१८	८।२८। ९।५९	९। ०।१५।१४
	१०	श.	९। २।२०।३०	९। ४।२५।४५	९। ६।३१। १	९। ८।३६।१६	९।१०।४२।२१	९।१२।५०। २
	११	र.	९।१४।५७।४४	९।१७। ५।२५	९।१९।१३। ७	९।२१।२०।४८	९।२३।२८।४२	९।२५।२९। ६
	१२	चं.	९।२७।४९।३०	९।२९।५९।५४	१०। २।१०।१८	१०। ४।२०।४२	१०। ६।३१। ६	१०। ८।४३।५३
	१३	मं.	१०।१०।५६।५०	१०।१३। १।४८	१०।१५।२२।४६	१०।१७।३५।४३	१०।१९।४८।४१	१०।२२। ४।१०
	१४	बु.	१०।२४।१९।५२	१०।२६।३५।३५	१०।२८।५२।१७	११। १। ७। ०	११। ३।२२।४५	११। ५।४०।२६
	३०	गु.	११। ७।५८। ८	११।१०।१५।४९	११।१२।३२।३१	११।१४।५१।१२	११।१७। १।२१	११।१९।२९। ८

श्री संवत् २०११ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५…
पौष शुक्लपक्षः	१	र.	८।१९।१४।१७	८।२१।१८।५७	८।२३।२३।३८	८।२५।२८।१८	८।२७।३४। ३	८।२९।४…
	२	चं.	९। १।४८।२५	९। ३।५५।३६	९। ६। २।४७	९। ८। ९।५८	९।१०।१७।२७	९।१२।२६…
	३	मं.	९।१४।३५।५६	९।१६।४५।१०	९।१८।५४।२५	९।२१। ३।३९	९।२३।१२।५४	९।२५।२४…
	४	बु.	९।२७।३७। २	९।२९।४९।१२	१०। २। १।२१	१०। ४।१३।३१	१०। ६।२५।४०	१०। ८।४०…
	५	गु.	१०।१०।५५। ३	१०।१३। ९।५३	१०।१५।२४।४३	१०।१७।३९।३२	१०।१९।५४।२२	१०।२२।११…
	६	शु.	१०।२४।२८।३९	१०।२६।४५।५०	१०।२९। ३। १	११। १।२०।१२	११। ३।३७।३८	११। ५।५६…
	७	श.	११। ८।१५।५८	११।१०।३५। ८	११।१२।५४।१९	११।१५।१३।२९	११।१७।३३।२१	११।१९।५४…
	८	र.	११।२२।१५।२२	११।२४।३६।२३	११।२६।५७।२३	११।२९।१८।२४	०। १।४०।१२	०। ४। २…
	९	चं.	०। ६।२४।२८	०। ८।४६।३६	०।११। ८।४४	०।१३।३०।५८	०।१५।५४। ५	०।१८।१७…
	११	मं.	०।२०।४०।१९	०।२३। ३।२६	०।२५।२६।३३	०।२७।४९।४६	१। ०।१३। ८	१। २।३६…
	१२	बु.	१। ४।५९।५२	१। ७।२३।१५	१। ९।४६।३७	१।१२। ९।४५	१।१४।३२।५२	१।१६।५५…
	१३	गु.	१।१९।१९। ६	१।२१।४३।१३	१।२४। ५। ४	१।२६।२७।२२	१।२८।४९।४१	२। १।११…
	१४	शु.	२। ३।३४।१८	२। ५।५६।३६	२। ८।१७।५७	२।१०।३८।५२	२।१२।५९।४८	२।१५।२०…
	१५	श.	२।१७।४१।३९	२।२०। २।३३	२।२२।२१।५३	२।२४।४१।१३	२।२७। ०।३३	२।२९।१९…
माघ कृष्णपक्षः	१	र.	३। १।३९।१३	३। ३।५७।५९	३। ६।१५।१७	३। ८।३२।३५	३।१०।४९।५३	३।१३। ७…
	२	चं.	३।१५।२४।२९	३।१७।४०।४४	३।१९।५५।४०	३।२२।१०।३७	३।२४।२५।३४	३।२६।४०…
	३	मं.	३।२८।५५।२७	४। १। ८।५९	४। ३।२१।१३	४। ५।३३।२७	४। ७।४५।४१	४। ९।५७…
	४	बु.	४।१२।१०। ९	४।१४।२१। ८	४।१६।३०।४५	४।१८।४०।२३	४।२०।५०। ०	४।२२।५९…
	५	गु.	४।२५। ९।१५	४।२७।१८। ६	४।२९।२५। ८	५। १।३२।१०	५। ३।३९।१२	५। ५।४६…
	६	शु.	५। ७।५३।१६	५।१०। ०।१२	५।१२। ४।५६	५।१४। ९।४१	५।१६।१४।२५	५।१८।१९…
	७	श.	५।२०।२३।५४	५।२२।२८।३९	५।२४।३२।१०	५।२६।३४।५०	५।२८।३७।३०	६। ०।४०…
	८	र.	६। २।४२।५०	६। ४।४५।३०	६। ६।४८। ५	६। ८।४९।१९	६।१०।५०।३४	६।१२।५१…
	९	चं.	६।१४।५३। ३	६।१६।५४।१८	६।१८।५५।३३	६।२०।५६।२१	६।२२।५६।४०	६।२४।५७…
	१०	मं.	६।२६।५७।१९	६।२८।५७।३९	७। ०।५७।५८	७। २।५८।१८	७। ४।५८।३४	७। ६।५८…
	११	बु.	७। ८।५८।५९	७।१०।५९।११	७।१२।५९।२४	७।१४।५९।३६	७।१६।५९।५८	७।१९। ०…
	१२	गु.	७।२१। १।५४	७।२३। २।५२	७।२५। ३।५०	७।२७। ४।४८	७।२९। ५।४६	८। १। ७…
	१३	शु.	८। ३। ९।३६	८। ५।११।४८	८। ७।१४। ०	८। ९।१६।११	८।११।१८।२३	८।१३।२०…
	१४	श.	८।१५।२४।४६	८।१७।२८।५६	८।१९।३३। ५	८।२१।३७।१५	८।२३।४१।२४	८।२५।४५…
	३०	र.	८।२७।५०।५७	८।२९।५७।१६	९। २। ३।३५	९। ४। ९।५४	९। ६।१६।१३	९। ८।२२…
माघ शुक्लपक्षः	१	चं.	९।१०।२९।२५	९।१२।३८।१६	९।१४।४७। ८	९।१६।५५।५९	९।१९। ४।५१	९।२१।१३…
	२	मं.	९।२३।२२।३८	९।२५।३४।१२	९।२७।४५।४७	९।२९।५७।२१	१०। २। ८।५६	१०। ४।२०…
	३	बु.	१०। ६।३२। ५	१०। ८।४६। ८	१०।११। ०।१९	१०।१३।१४।३०	१०।१५।२८।४१	१०।१७।४२…
	४	गु.	१०।१९।५७। ४	१०।२२।१३।४५	१०।२४।३०।२७	१०।२६।४७।१०	१०।२९। ३।५३	११। १।२०…
	५	शु.	११। ३।३७।३३	११। ५।५६। ७	११। ८।१४।४१	११।१०।३३।१५	११।१२।५१।४९	११।१५।१०…
	६	श.	११।१७।२९।४३	११।१९।५०।२६	११।२२।११। ९	११।२४।३१।५२	११।२६।५२।३६	११।२९।१३…
	७	र.	०। १।३४।३८	०। ३।५६।३८	०। ६।१८।२९	०। ८।४०।२०	०।११। २।१०	०।१३।२४…
	८	चं.	०।१५।४६।४६	०।१८। ९।३०	०।२०।३२।१४	०।२२।५४।५७	०।२५।१७।४१	०।२७।४०…
	९	मं.	१। ०। ४।१८	१। २।२७।५१	१। ४।५१।२३	१। ७।१४।५६	१। ९।३८।२८	१।१२। १…
	१०	बु.	१।१४।२४।४६	१।१६।४७।५३	१।१९।११।१०	१।२१।३४। ७	१।२३।५७। ३	१।२६।१९…
	११	गु.	१।२८।४२। ०	२। १। ४।२८	२। ३।२६।५७	२। ५।४९।२५	२। ८।११।१२	२।१०।३३…
	१२	शु.	२।१२।५३।५८	२।१५।१५।२१	२।१७।३६।४४	२।१९।५८। ७	२।२२।१७।५०	२।२४।३७…
	१३	श.	२।२६।५७।१३	२।२९।१६।५५	३। १।३६।३६	३। ३।५५।४६	३। ६।१३।२०	३। ८।३०…
	१४	र.	३।१०।४८।२९	३।१३। ६। ४	३।१५।२३।३८	३।१७।४०।१५	३।१९।५५।३९	३।२२।११…

ज्ये. प्र. २७ (ज्ये. शु. ६ बु.) उ. फा. ।।।।ऽचो. घ. ४३ या. ।ऽ।। दि. ल. ५ वा. गोधूलि ।
११ गु. दा. रा. ल. ६ ।
आश्वि. प्र. १७ (आ. शु. ६ र.) मू. ।।।।।ऽऽ।। ल. ४ चं. दा. ।
फा. शु. २ गुरौ पू. फा.
(सूयदानादि)

गृहारम्भ मुहूर्त

श्रा. शु. १५ शनौ ध.ल.५।६
पौ. कृ. १ शुक्रे मृग.
माघ शु. १० बुधे रो.
चै. कृ. १ बुधे उ. फा.
चैत्र कृ. २ गुरौ हस्त.

नू० गृहप्रवेश मुहूर्त

वै. शु. १३ शनौ चि.
ज्ये. कृ. १० गुरौ उ. भा.
ज्ये. कृ.११ (ल.३) शुक्रे रेव.
ज्ये. शु. १० शुक्रे चि.
माघ कृ. ११ बुधे. अनु.
माघ शु. १० बुधे रोहि.

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

चै. शु. १५ रवौ चि. अभिजिति ।
वै. शु. ३ बुधे रोहि. अभिजिति ।
वै. शु.६ श. पुष्ये अभिजिति
वै. शु. ७ र. पुष्ये ल. २ ।
वै. शु. १३ श. चित्रा. अभिजिति ।
ज्ये. कृ. ११ शु. रे. अभिजिति
ज्ये. कृ. १२ श. अश्वि. अभि.
ज्ये. शु. ५ शनौ पुष्ये. अभि.
ज्ये. शु. १० शुक्र. चि.
ज्ये. शु. १३ चन्द्रे अनु. अभि.
माघ कृ. ११ बु. अनु. ल. ११ अभिजितिच
मार्ग शु. ३ बु. शत. अभि.
मार्ग शु. ७ र. अश्वि. अभि.
फा. कृ. ५ श. चि. उत्तराभि.
फा. कृ. र. स्वा. ल. ११
फा. शु. ३ शु. उभा. अभि.
चै. कृ. १ बु. उ. फा. अभि.
चै. कृ. २ गु. ह. अभि.

श्री कात्यायनोक्त विवाहमुहूर्ताः ।

वै. प्र. ५ (चै. शु. १४ श.) चित्रा ।ऽ।।ऽनृ. ।ऽ।। ल. १० ।
वै. प्र. ६ (चै. शु. १५ र.) चि. ।ऽ।।ऽ नृ. ।ऽ।। दि. ल. ४ ।
वै. प्र. १३ (वै. कृ. ७ र.) श्र. ।ऽ।।।।ऽ।। ल. ११ ।
वै. प्र. १४ (वै. कृ. ८ चं.) श्र. ।ऽ।।।।ऽ।। ल. गो. वादि. ल. ४ ।
वै. प्र. १४ (वै. कृ. ८ चं.) ध. ।।।।ऽ नृ. ।ऽ।। ल. ११ ।
वै. प्र. १५ (वै. कृ. ६ मं.) ध. ।।।।ऽनृ. ।ऽ।। ल. अन्य गो. दि. ल. ५ सप्तमे चन्द्र पूज्यः ।
ज्ये. प्र. २ (वै. शु. १३ श.) चि.ऽमृ. ।।।।।।। दि. ल. ४ ।
ज्ये. प्र. १६ (ज्ये. कृ. १२ श.) अश्वि. ऽरा. ।।।।।ऽ।। दि. ल. ४–५ वा अन्य गोधूलि ।
ज्ये. प्र. २६ (ज्ये.शु.१०शु.) चि. ।।।।ऽरो. ।ऽ।। दि. ल.४–५
श्रा. प्र. २ (श्रा. कृ. २ श.) श्र. ऽश ।।ऽशु. ।।।।। दि. ल. ६ निर्दंधकःशुक्रस्यपादवधाद् वेधाऽभावः ।
श्रा. प्र. २० (श्रा. शु. ६ बु.) चि. ।ऽ।।।।।।ऽ ल. अ. गो. आवश्यके ।
श्रा. प्र. २१ (श्रा. शु. ६ गु.) चि. ।ऽ।।।।।।दि. ल. ५।६ । श्रा.
श्रा. प्र. २१ (श्रा. श. १४ गु.) श्र ऽश. ।।।ऽरो. ।ऽ।। दि.ल. ६ ।

भा. प्र. २४ (भा. शु. १२ गु.) श्र. ऽमू. मं. श. ।।।ऽ नृ.।।।। ल. अन्यगो. ४ कर्कचन्द्र ७ पूज्यः ।
भा. प्र. २५ (भा. शु. १३ शु.) श्र. ऽ।।।ऽ नृ.ऽ।।। दि. ल. ६ ।
भा. प्र. २५ (भा. शु. १३ शु.) ध. ।।।।।।।।। अन्यगो. ४ कर्कलग्नेचन्द्रः सप्तमस्थः पूज्यः ।
आश्वि. प्र. २१ (आश्वि. शु. १० गु.) श्र. ऽश. ।।।ऽ अग्नि. ।ऽ।। ल. गोधूलि ।
आश्वि. प्र. २१ (आ. शु. १० गु.) ध. ऽमं. ।।।ऽ अग्नि. ।।।। ल. ४ सप्तमे चन्द्रः पूज्यः ।
आश्वि. प्र. २२ (आश्वि. शु. ११ शु.) ध. ऽमं. ।।।।।।।। ल. अन्यगो. ।
आश्वि. प्र. २६ (आश्वि. शु. १५ मं.) आश्वि. ऽ रा. ऽ।।ऽसू. ।।ऽ।। ल. ५ ।
आश्वि. प्र. २७ (का. कृ. १ बु.) अश्वि. ऽरा. ऽ।।ऽ सू. ।।ऽ।। दि. ल. ११ ।
का. प्र. १९ (का. शु. ८ गु.) ध. ।ऽ।।ऽ रो. ।।।। ल. अन्यगो. दि. ल. ११–१२ ।
मार्ग. प्र. १६ (मार्ग.शु.५मं.) श्र. ।।।ऽवृ. ।।।।। ल. अन्यगो.६ ।
मार्ग. प्र. १६ (मार्ग. शु. ६ बु.) श्र. ।।।। ऽवृ. ऽ चौ. ।।।। दि. ल. १२ घ. १८।४४ या. ।
मार्ग. प्र. २१ (मार्ग. शु. ११ चं.) अश्वि. ऽरा. ।।।ऽ अग्नि. ।।।। ल. अन्यगो. ४ कर्कभौमाष्टमदोषः ।
माघ. प्र. १७ (माघ शु. ७ र.) अश्वि. ।ऽ।।।।ऽ।। दि. ल. ११ अन्यगो. ।

सूचना—इस वर्ष स्थानाभाव के कारण अशुद्धसाहे नहीं लिखे गये। किसी को किसी अशुद्धसाहे के विषय में कोई पूछ-ताछ करनी हो तो जवाबी पत्र भेजकर निर्णय कर लेवें।

नोट—१. यदि साहों में विवाह लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुँच जाना योग्य है। क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी॥

२. विवाहादि मुहूर्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांश पर ही किया जाना शास्त्रसम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और वही जम्मू, पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है। किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्त मार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये 'प्रविष्टों पर से बाण विचार करना चाहिए' ऐसा नहीं लिखा।

३. यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५–७ दिन के भीतर विवाह मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयाँ पेड़े माप हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये।

महर्षि कात्यायनोक्त (अ. चि. श्र. ध.) नक्षत्रों के विषय में काशी की पण्डित सभा का व्यवस्थापत्र तथा अन्य धुरन्धर विद्वानों की सम्मतियाँ आपने इस पंचांग के दूसरे तीसरे पृष्ठ पर पढ़कर भ्रम निवृत्त कर लिया होगा। अब अन्य विशिष्ट विद्वानों की भी कुछ सम्मतियें तथा समर्थकों के नाम पढ़िये।

भारत के प्रसिद्ध कवि-सम्राट् शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री प्रतिवादिभयङ्कर कौल से लिखते हैं—

वेदेगृह्यविधौतदर्थघटकेष्वन्य प्रबन्धेषुच,
सुस्पष्टं त्रिकमुत्तरादि यजुषां प्रोक्तं विवाहे शुभम् ।
वैशिष्टचाद् विधिरेष कालवशतो रुद्धप्रचारोऽभवज,
ज्योतिर्विज्ञमुकुन्दवल्लभबुधैः सोऽयं पुनः स्मारितः ॥१॥
पञ्चाङ्गिभिःसार्वजनीन हेतुना। प्रायेणसामान्यविधिर्निरूप्यते।
विधिर्विशेषो विरलप्रचारता। गतो-मुकुन्देनसमुद्धृतःपुनः ॥२॥
आम्नायवाङ्मयविधावकृतश्रमाणां,
नानाकुतर्कमलदूषितमानसानाम् ।
ईर्ष्यामहाज्वरकषायितमस्तकानां,
मोहान्धकारहरणं भवतान्मदुक्त्या ॥३॥
विद्वज्जन कृपाकांक्षी शुशास्त्रार्थमहारथः ।
शास्त्री श्री माधवाचार्य्यः प्रतिवादिभयङ्करः ।

वशंवदो—माधवाचार्य्यः

प्रमाण्य विवेकः

शाखानुसारं विध्यादिकल्पनदक्षाणां कल्पानां समक्षं ज्यौतिषं न कथमपि गण्यते स्वार्थे प्रमाणमपिसत्। मुहूर्तचिन्तामण्यादयो निबन्धास्तु कल्पाभिमुखं कथमेव प्रामाण्यं गण्येरन्। "विरोधेत्वनपेक्षं स्यात्" "अनुमान व्यवस्थानात्तत्संयुक्तप्रमाणं स्यात्" इति सूत्राभ्यां श्रीजैमिनिना वेदमूलकस्यैव प्रामाण्याऽभ्युपगमात्। यजुर्वेदिनां कृते "त्रिषुत्रिपूत्तरादिषु" इत्युक्त्वा पारस्करगृह्यसूत्रं विवाहे श्रवणधनिष्ठाचित्राऽश्विनीशभानि-मनुते, मुहूर्त चिन्तामणिस्तानि न स्वीकरोतीति किन्तेन, अत्रार्थे शाखानुसारं कल्पसूत्रोक्तैरेव प्रमाणत्वात्। निबन्धग्रथानां स्वार्थे प्रामाण्यानङ्गीकारात्,

खुर्जा २०८७ } कुबेरदत्त शास्त्री उपाचार्य
श्री. रा. कृ. महाविद्यालय

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ।

खचरगतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविधवचनजालाल्लोकयन् शास्त्रसिद्धान् । भरतभुविसमस्तायाञ्च पञ्चापदेशें, करकलनमुहूर्तालीमहं संलिखामि ॥

सं० २०११ मध्ये विवाहादिमुहूर्ताः ।

अथ समयशुद्धिः

गुर्वस्तः—आषाढ़ कृ. २ भृगुवार से आषाढ़ शुक्ल १२ चन्द्रवार तक (सौरमान से आषा. प्र. ५ से आषा. प्र. २९ तक) गुरु का अस्त रहेगा । **शुक्रास्तः**—का. शु. १३ चन्द्रवार से मार्ग. कृ. ११ रविवार तक (सौरमानसे का. प्र. २३ से मार्गशीर्ष प्र. ६ तक) शुक्र का पश्चिम में अस्त होगा ।

ग्रहलाघवकार ने जो शुक्रोदयास्त के दिन लिखे हैं, वह स्थूल रूप से मध्यम मान के हैं । सूक्ष्म-स्पष्ट-मान के तो श्री केतकराचार्य्यकृत ज्योतिर्गणित से निकलते हैं सो हमने वही स्पष्ट करके लिखे हैं । आकाशीय वातावरण ठीक हो तो प्रत्यक्ष दिखा भी सकते हैं ।

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन बृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष विशेष होता है जो अस्त की भांति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है ।

शुद्धानि सपरिहाराणि च विवाहमुहूर्तानि सर्व देशों के लिये—

वै. प्र. ३ (चै. शु. १३ गु.) उ. फा. ऽमू. ।।।।।।।। ल. १०

वै. प्र. ९ (वै. कृ. ३ बु.) अनु. ।ऽ ।।ऽगु.।ऽ।।। लग्न गोधूलि ।

वै. प्र. २३ (वै. शु. ३ बु.) मृ. ।।ऽगु.।।।।।। ल. ११ वा. ल. १० अत्यावश्यकेगुरुदानात् दि. ल. ५ ।

ज्ये. प्र. ५ (ज्ये. कृ. १ मं.) अनु. ।।।।ऽमू. ऽनृ. ४३ घ. उ.-ऽऽ।।दि. ल. ५ रा. ल. ११ वा आवश्यके ल. १२ भौ. दा.

ज्ये. प्र. १४ (ज्ये. कृ. १० गु.) उ. भा. ऽबु.।।।।।ऽ।। ल. ११

ज्ये. प्र. १५ (ज्ये.कृ.११शु.) रे. ।।।।ऽनृ.ऽऽ।। ल. अन्य गो.११

ज्ये. प्र. २४ (ज्ये. शु. ६ र.) म. ।।।।ऽनृ.ऽऽ।। ल. ११ चन्द्रदानम् ।

ज्ये. प्र. २६ (ज्ये. शु. ७ चं.) म. ।।।।ऽनृ.ऽऽ।।ल. गोधूलि ।

ज्ये. प्र. २६ (ज्ये. शु. ८ मं.) उ. फा. ।।।।ऽचौ।ऽ।। ल. ११ चं. दा. ।

ज्ये. प्र. २७ (ज्ये. शु. ९ बु.) उ. फा. ।।।।ऽचौ. घ. ४३ या. ।ऽ।। दि. ल. ५ वा. गोधूलि ।

ज्ये. प्र. २८ (ज्ये. शु. ९ गु.) ह. ।ऽ।। ३ रो. ४६ घ. उ. ऽ।।। ल. १२ चं. दा. ।

मार्ग. प्र. १२ (मार्ग. शु. २ श.) मू. ।।।।ऽअग्नि.ऽ।।। ल. ६ आवश्यके ।

मार्ग. प्र. १४ (मार्ग. शु. ४ चं.) उ. षा. ।ऽ।।ऽनृ.ऽऽ।।ल. ६ आवश्यके ।

मार्ग. प्र. १९ (मार्ग. शु. ९ श.) उ. भा.ऽमं. ।।।।।।।। ल. ४ ।

माघ प्र. ३ (माघ कृ. ८ र.) स्वा. ।।।।।ऽअग्निऽऽ।। ल. गोधूलि ।

माघ प्र. ६ (माघ कृ. ११ बु.) अनु. ।ऽ।।।ऽऽ।। ल. गोधूलि ।

माघ प्र. २५ (फा. कृ. १ चं.) म. ।।।ऽनु. सू. ऽचौ.ऽऽ।। ल. गोधूलि ।

फा. प्र. ३ (फा. कृ. ७ चं.) अनु. ऽनु. ।।।।ऽअग्नि. ।ऽ।। ल. १० आवश्यके ।

फा. प्र. १३ (फा. शु. २ गु.) उ. भा. ।ऽ।।ऽअग्नि. घ. ३१ या. ऽ।।। ल. ६ चं. दा. ।

फा. प्र. २६ (चै. कृ. १ कु.) ह. ।ऽ।।।।।।। ल. १० ।

फा. प्र. २७ (चै. कृ. २ गु.) ह. ।ऽ।।ऽरो. ।।।। ल. गोधूलि ।

देशाचार से केवल पञ्जाब देश के लिये ।

श्रा. प्र. ६ (श्रा. कृ. ६ बु.) रे. ऽचं. बु. ।।।।ऽ नृ. ५२ घ. या. ऽ।।। ल. चि. ।

श्रा. प्र. १० (श्रा. कृ. १० र.) रो. ।।।।ऽ रो. ऽऽ।।ल. १२ वा गोधूलि ।

श्रा. प्र. ११ (श्रा. कृ. ११ चं.) रो. ।।।।ऽरो. घ. ६।१७ या. ऽऽ।। दि. ल. ५ सू. दा. ।

श्रा. प्र. ११ (श्रा. कृ. ११ चं.) मृ. ।।।।।।ऽ।। ल. १२ भृ. दा. आवश्यके ।

श्रा. प्र. १६ (श्रा. शु. २ श.) म. ।ऽ।।।ऽ।।। ल. २ अत्यावश्यके भौ. दा. ।

श्रा. प्र. १९ (श्रा. शु. ५ मं.) ह. ।।।।ऽ रो. ऽऽ।।ल. गोधूलि ।

श्रा. प्र. २८ (श्रा.शु.१३गु.)उ. षा. ऽमं. ।।।ऽगु. ।ऽ।।। ल.चि. ।

भा. प्र. १३ (भा. शु. १ र.) उ. फा. ऽगु. ।।।।ऽ।।। ल. चि. ।

भा. प्र. १४ (भा.शु.१चं.) उ.फा.ऽगु. ।।।।ऽ।।। दि. ल. १० ।

भा. प्र. १४ (भा. शु. २ चं.) ह. ।ऽघ. ५५।४५ या. ।।।ऽनृ. ऽ५५।४५ उ. ।।। ल. ४ आवश्यके ।

भा. प्र. १५ (भा. शु. ३ मं.) ह. ।।।।ऽ नृ.ऽ।।। दि. ल. १०

आश्वि. प्र. १५ (आश्वि. शु. ४ शु.) अनु. ।।।।।ऽऽ।।दि.ल. ११ गु. दा. रा. ल. ४ ।

आश्वि. प्र. १७ (आ. शु. ६ र.) मू. ।।।।।ऽऽ।। ल. ४ चं. दा. ।

आश्वि. प्र. १८ (आ. शु. ७ चं.) मू. ।।।।।ऽऽ।। दिवा. ल. १० ।

का. प्र. ५ (का. कृ. १० गु.) म. ऽबु. ।।।।ऽनृ. ३२ घ. उ. ऽऽ।। ल. गोधूलि ।

द्विरागमन मुहूर्त

चै. शु. १३ गुरौ उ. फा.
वै. कृ. १ चन्द्रे स्वा.
वै. कृ. ५ शुक्रे मूला.
वै. कृ. ७ रवौ. उ. षा.
वै. कृ. ८ चन्द्रे श्र.
वै. कृ. १० बुधे श. भद्रोत्तरम्
वै. शु. ३ बुधे रो. मृ.
वै. शु. ७ र. पुष्य.
मार्ग. शु. ३ र. मृ.
मार्ग. शु. ६ बुधे. श्र.
मार्ग. शु. ८ शुक्रे श. भद्रोत्तरं
पौ. कृ. १ शुक्रे मृ.
पौ. कृ. ३ र. पुन.
(भद्रा से पूर्व)
फा. शु. २ गुरौ उ. भा.
फा. शु. ३ शुक्रे उ. भा.
फा. शु. ५ र. अश्वि.
चैत्र कृ. २ गुरौ ह.

सूचना—यदि विवाह दिन से १६ दिन के अन्दर द्विरागमन हो जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं ।

विशेष—यदि दीपावली को दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर में आवे तो उसमें भी कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे । ऐसे समय पति-गृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है ।

उपनयन मुहूर्त

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में जन्मने वाले बालक प्रायः स्वजात्युक्त गुण ९० फीसदी वीर्यगत प्रभाव के कारण जन्मसे ही साथ लाते हैं । अन्य यज्ञोपवीतादि वैदिक संस्कारों से उनमें उस सत्यशक्ति का क्रमशः विकास होता है, यदि वह संस्कार वर्णोचित आयु और शुभ समय में किये जावें

चै. शु. ४ बुधे. रोहि. ६।५३
मार्ग शु. ३ बुधे शत.
माघ शु. १० बुधे रोहि.
फा. शु. २ गुरौ पू. फा.
फा. शु. ३ शुक्रे उ. भा.
चै. कृ. २ गुरौ हस्त.

नोट—अत्यावश्यकता में चन्द्र बल देखकर सत्तीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है । इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी मंत्र दीक्षा जनेऊ-लिया जा सकता है ।

गृहारम्भ मुहूर्त

चै. शु. १३ गुरौ उ. फा. ल. २
वै. शु. १२ शुक्रे हस्त.
वै. शु. १३ श. चि.
ज्ये. शु. १० शुक्रे चि. ल. ५
(सूर्यदानात्)
ज्ये. शु. १३ चन्द्रे अनु. ल. ५
(सूर्यदानात्)

गृहारम्भ मुहूर्त	नू० गृहप्रवेश मुहूर्त
श्रा. शु. १५ शनौ ध.ल.५।६	वै. शु. १३ शनौ चि.
पौ. कृ. १ शुक्रे मृग.	ज्ये. कृ. १० गुरौ उ. भा.
माघ शु. १० बुधे रो.	ज्ये. कृ.११(ल.३) शुक्रे रेव.
चै. कृ. १ बुधे उ. फा.	ज्ये. शु. १० शुक्रे चि.
चैत्र कृ. २ गुरौ हस्त.	माघ कृ. ११ बुधे. अनु.
	माघ शु. १० बुधे रोहि.

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त

वै. शु. १५ रवौ चि. अभिजिति।	ज्ये. शु. १० शुक्रे. चि.
वै. शु. ३ बुधे रोहि. अभिजिति।	ज्ये. शु. १३ चन्द्रे अनु. अभि.
वै. शु.६ श. पुष्ये अभिजिति	माघ कृ. ११ बु. अनु. ल. ११ अभिजिति च
वै. शु. ७ र. पुष्ये ल. २।	मार्ग शु. ३ बु. शत. अभि.
वै. शु. १३ श. चित्रा. अभिजिति।	मार्ग शु. ७ र. अश्वि. अभि.
ज्ये. कृ. ११ शु. रे. अभिजिति	फा. कृ. ५ श. चि. उत्तराभि.
ज्ये. कृ. १२ श. अश्वि. अभि.	फा. कृ. र. स्वा. ल. ११
ज्ये. शु. ५ शनी पुष्ये. अभि.	फा. शु. ३ शु. उभा. अभि.
	चै. कृ. १ बु. उ. फा. अभि.
	चै. कृ. २ गु. ह. अभि.

श्री कात्यायनोक्त विवाहमुहूर्ताः।

वै. प्र. ५ (चै. शु. १४ श.) चित्रा ।ऽ।।ऽनृ. ।ऽ।। ल. १०।
वै. प्र. ६ (चै. शु. १५ र.) चि. ।ऽ।।ऽ नृ. ।ऽ।। दि. ल. ४।
वै. प्र. १३ (वै. कृ. ७ र.) श्र. ।ऽ।।।।ऽ।। ल. ११।
वै. प्र. १४ (वै. कृ. ८ चं.) श्र. ।ऽ।।।।ऽ।। ल. गो. वादि. ल. ४।
वै. प्र. १४ (वै. कृ. ८ चं.) ध. ।।।।ऽ नृ. ।ऽ।। ल. ११।
वै. प्र. १५ (वै. कृ. ९ मं.) ध. ।।।।ऽनृ. ।ऽ।। ल. अन्य गो. दि. ल. ५ सप्तमे चन्द्र पूज्यः।
ज्ये. प्र. २ (वै. शु. १३ श.) चि.ऽमू. ।।।।।।।। दि. ल. ४।
ज्ये. प्र. १६ (ज्ये. कृ. १२ श.) अश्वि. ऽरा. ।।।।।ऽ।। दि. ल. ४–५ वा अन्य गोधूलि।
ज्ये. प्र. २९ (ज्ये.शु.१०गु.)चि. ।।।।ऽरो. ।ऽ।। दि. ल.४–५
श्रा. प्र. २ (श्रा. कृ. २ श.) श्र. ऽश ।।ऽशु. ।।।।। दि. ल. ६ निरंशकःशुक्रस्यपादवधाद् वेधाऽभावः।
श्रा. प्र. २० (श्रा. शु. ६ बु.) चि. ।ऽ।।।।।।ऽ ल. अ. गो. आवश्यके।
श्रा. प्र. २१ (श्रा. शु. ६ गु.) चि. ।ऽ।।।।।।। दि. ल. ५।६। श्रा.
श्रा. प्र. २९ (श्रा. शु. १४शु.) श्र.ऽश. ।।।।ऽरो. ।ऽ।। दि.ल. ६।

भा. प्र. २४ (भा. शु. १२ गु.) श्र. ऽमू. मं. श. ।।।।ऽ नृ.।।।। ल. अन्यगो. ४ कर्कचन्द्र ७ पूज्यः।
भा. प्र. २५ (भा. शु. १३ शु.) श्र. ऽ।।।ऽ नृ.ऽ।।। दि. ल. ६।
भा. प्र. २५ (भा. शु. १३ शु.) ध. ।।।।।।।।। अन्यगो. ४ कर्कलग्नेचन्द्रः सप्तमस्थः पूज्यः।
आश्वि. प्र. २१ (आश्वि. शु. १० गु.) श्र. ऽश. ।।।।ऽ अग्नि. ।ऽ।। ल. गोधूलि।
आश्वि. प्र. २१ (आ. शु. १० गु.) ध. ऽमं. ।।।।ऽ अग्नि. ।।।। ल. ४ सप्तमे चन्द्रः पूज्यः।
आश्वि. प्र. २२ (आश्वि. शु. ११ शु.) ध. ऽमं. ।।।।।।।। ल. अन्यगो.।
आश्वि. प्र. २६ (आश्वि. शु. १५ मं.) आश्वि. ऽ रा. ऽ।।ऽसू. ।।ऽ।। ल. ५।
आश्वि. प्र. २७ (का. कृ. १ बु.) अश्वि. ऽरा. ऽ।।ऽ सू. ।।ऽ।। दि. ल. ११।
का. प्र. १९ (का. शु. ८ गु.) ध. ।ऽ।।ऽ रो. ।।।। ल. अन्यगो. दि. ल. ११–१२।
मार्ग. प्र. १६ (मार्ग.शु.५मं.) श्र. ।।।ऽवृ. ।।।।। ल. अन्यगो.६।
मार्ग. प्र. १६ (मार्ग. शु. ६ बु.) श्र. ।।।। ऽवृ. ऽ चौ. ।।।। दि. ल. १२ घ. १८।४४ या.।
मार्ग. प्र. २१ (मार्ग. शु. ११ चं.) अश्वि. ऽरा. ।।।।ऽ अग्नि. ।।।। ल. अन्यगो. ४ कर्कभौमाष्टमदोषः।
माघ. प्र. १७ (माघ शु. ७ र.) अश्वि. ।ऽ।।।।ऽ।। दि. ल. ११ अन्यगो.।

सूचना—इस वर्ष स्थानाभाव के कारण अशुद्धसाहे नहीं लिखे गये। किसी को किसी अशुद्धसाहे के विषय में कोई पूछ-ताछ करनी हो तो जवाबी पत्र भेजकर निर्णय कर लेवें।

नोट—१. यदि साहों में विवाह लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुँच जाना योग्य है। क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी॥

२. विवाहादि मुहूर्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांश पर ही किया जाना शास्त्रसम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और वही जम्बू, पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है। किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्त मार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये 'प्रविष्टों पर से बाण विचार करना चाहिए' ऐसा नहीं लिखा।

३. यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५–७ 'दिन के भीतर विवाह मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयाँ पेड़े माष हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये।

महर्षि कात्यायनोक्त (अ. चि. श्र. ध.) नक्षत्रों के विषय में काशी की पण्डित सभा का व्यवस्थापत्र तथा अन्य धुरन्धर विद्वानों की सम्मतियाँ आपने इस पंचांग के दूसरे तीसरे पृष्ठ पर पढ़कर भ्रम निवृत्त कर लिया होगा। अब अन्य विशिष्ट विद्वानों की भी कुछ सम्मतियें तथा समर्थकों के नाम पढ़िये।

भारत के प्रसिद्ध कवि-सम्राट् शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० माधवाचार्य जी शास्त्री प्रतिवादिभयङ्कर कौल से लिखते हैं—

वेदेगृह्यविधौतदर्थघटकेष्वन्य प्रवन्धेषु च,
सुस्पष्टं त्रिकमुत्तरादि यजुषां प्रोक्तं विवाहे शुभम्।
वैशिष्ट्याद् विधिरेष कालवशतो रुद्धप्रचारोऽभवज,
ज्योतिर्विज्ञमुकुन्दवल्लभबुधैः सोऽयं पुनः स्मारितः॥१॥
पञ्चाङ्गिभिःसार्वजनीन हेतुना। प्रायेणसामान्यविधिर्निरूप्यते।
विधिर्विशेषो विरलप्रचारता। गतो-मुकुन्देनसमुद्धृतःपुनः॥२॥
आम्नायवाङ्मयविधावकृतश्रमाणां,
नानाकुतर्कमलदूषितमानसानाम्।
ईर्ष्यामहाज्वरकषायितमस्तकानां,
मोहान्धकारहरणं भवतान्मदुक्त्या॥३॥
विद्वज्जन कृपाकांक्षी सुशास्त्रार्थमहारथः।
शास्त्री श्री माधवाचार्य्यः प्रतिवादिभयङ्करः।

वशंवदो —माधवाचार्य्यः

प्रमाण्य विवेकः

शाखानुसारं विध्यादिकल्पनदक्षाणां कल्पानां समक्षं ज्यौतिषं न कथमपि गण्यते स्वार्थे प्रमाणमपिसत्। मुहूर्तचिन्तामण्यादयो निबन्धास्तु कल्पाभिमुखं कथमेव प्रामाण्यं गण्येरन्। "विरोधेत्वनपेक्षं स्यात्" "अनुमान व्यवस्थानात्तत्संयुक्तप्रमाणं स्यात्" इति सूत्राभ्यां श्रीजैमिनिना वेदमूलकस्यैव प्रामाण्याऽभ्युपगमात्। यजुर्वेदिनां कुले "त्रिषुत्रिपूत्तरादिषु" इत्युक्त्वा पारस्करगृह्यसूत्रं विवाहे श्रवणधनिष्ठाचित्राऽश्विनीशुभानि-मनुते, मुहूर्त चिन्तामणिस्तानि न स्वीकरोतीति किन्तेन, अत्रार्थे शाखानुसारं कल्पसूत्रोक्तेरेव प्रमाणत्वात्। निबन्ध-ग्रयानां स्वार्थे प्रामाण्यानङ्गीकारात्,

खुर्जा ३०८३ } कुवेरदत्त शास्त्री उपाचार्य
श्री. रा. कृ. महाविद्यालय

ऐसे ही अमृतसर के निम्नलिखित विशिष्ट विद्वानों ने भी सम्मतिपत्र भेजकर समर्थन किया है—

श्री पं० मिहिरचन्द्रजी शास्त्री निरुक्तभाष्यकार प्रधानाध्यापक संस्कृत कालेज, श्री पं० लब्धरामजी शास्त्री प्रो० सं० कालेज। श्री पं० रक्षारामजी शर्म्मा प्रिन्सिपल, श्री गागरमल्ल कालेज। श्री पं० देवीदत्त शास्त्री, वाइस प्रि० हिन्दूसभा कालेज। श्री पं० बालकनाथ जी जेतली प्रधान। श्री पं० हलियाराम जी शास्त्री, प्रधानाध्यापक पी० बी० हाईस्कूल। श्री पं० वासुदेवजी वै. रा. कर्मकाण्डकलानिधिः। श्री पं० किशोरीलाल जी वै. क. दैवज्ञ। श्री पं० देवीचन्द्र जी वेदपारङ्गत। श्री पं० सत्यपाल जैतली कर्मठ ज्यो.। श्री पं० हरिकृष्ण शास्त्री ज्योतिष-कर्मकाण्ड पारङ्गत।

विवाह के सूत्रोक्त नक्षत्र

धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः (मनुः २।१३)

विद्वज्जनों! आपको विदित ही है कि वेद-विधि अर्थवाद और मंत्र इन तीन विभागों में विभक्त हैं "विधिमन्त्रयोरैकार्थ्यमैकशब्द्यात् (२।१।३) विधिनात्वेकवाक्यत्वात्स्तुत्यर्थेन विधीनां स्युः (१।२।३) मीमांसा के इन दो सूत्रों में विधि और मंत्र इन दोनों को एकार्थ मानकर अर्थवादों को भी विधि के साथ-साथ एकार्थक होने के कारण धर्म में प्रमाण माना है। हमने गत कुछ वर्षों से अपने श्रीमार्तण्ड पञ्चाङ्ग में वेद के विधि याने कल्प भाग (कल्प्यते समर्थ्यते यागप्रयोगोऽस्मिन्निति कल्पः) कात्यायन सूत्र के "त्रिपुत्रिपूत्तरादिषु" के अनुसार हरिहर गदाधर भाष्यद्वयसम्मत—चि० ध० ध० अश्वि० इन नक्षत्रों में भी विवाह-मुहूर्त लगाने प्रारम्भ किये थे, सं० २००७ के पञ्चाङ्ग में मैंने लिखा था कि "सूत्रोक्त होनेके कारण इनका ग्रहण सर्वथा योग्य है जब कोई गुणवान् नक्षत्र न मिले इनसें विवाह करना आर्षमतानुसार ठीक है"। ऐसे मेरे लिखने पर कई गुणग्राही पञ्चाङ्ग कर्ता भी अपने अपने पञ्चाङ्गों में इन नक्षत्रों में विवाहमुहूर्त लिखने लगे हैं, यह उनका वेदवाक्य विश्वास अन्य पञ्चाङ्ग कर्ताओं को भी अनुकरणीय है। खेद है कि इधर हमारे पंजाब के एक-दो विद्वान् इन आर्ष नक्षत्रों के विरुद्ध वृथा ही हो-हल्ला मचा रहे हैं, एकने तो मुझपर अकारण ही कीचड़ उछालना शुरू किया है, यहाँ तक कि कई अपशब्द भी लिखकर अपने मन को प्रसन्न किया है, जिसके लिये उनका धन्यवाद। अपने लेख में उन्होंने निबन्धोक्त प्रमाण देकर वेदोक्त वाक्य को खण्डन करने का निर्मूल प्रयत्न किया है जो वृथा है। क्योंकि प्रथम तो आचार्य प्रणीत ग्रन्थ, आर्ष वाक्य का खण्डन कर ही नहीं सकते, वल्कि स्वतः प्रमाण आर्ष ग्रन्थों के सामने परतः प्रमाण निबन्ध ग्रन्थ अप्रामाणीक माने जाते हैं "श्रुतियत्र प्रमाणं स्याद्युक्तिणि का तत्र नारद!" अन्यच्च—श्रुति स्मृति विरोधे श्रुति रेव बलीयसी, स्मृति पुराणयोर्विरोधे स्मृतिरेव बलवती। इन नक्षत्रों के विषय में सर्वमान्य धर्मग्रन्थ धर्मसिन्धु के विवाहे मासादिनिर्णयः शीर्षक के नीचे देखिये—"रोहिणी मृग मघास्तिस्र उत्तरा हस्त स्वाती मूलानुराधारेवत्यः सर्वसम्मत नक्षत्राणि हरदत्तमते चित्राश्रवणधनिष्ठाश्विन्य इत्यधिकानि चत्वारि।" लिखकर आचार्य हरदत्त के मत से चित्रादिको विवाह में ग्रहण किया है और सत्कृत्य मुक्तावली आदि में भी इन्हें ग्रहण किया है फिर भी सन्देह क्यों?

ज्योतिर्विदाभरण के निम्नलिखित प्रमाण को आप भी मानते हैं परन्तु आपने इस श्लोक के गूढ़ाशय पर ध्यान नहीं दिया, देखिये—

सविश्वकृच्छौरिवसूडुदास्रं बभाण कश्चित्त्विह वेदभेदः। फलान्यभावादपरागमज्ञैर्मुक्तं तदुक्षं ह्यनुसर्वलोकैः (विवाह प्रकरण)

टीका—सविश्वकृदिति—कश्चिद् वेदभेद इहोद्वाहे दास्रमश्विनीं बभाण जगौ किम्भूतं दास्रं सविश्वेति विश्वकृत् चित्रा शौरि श्रवणः वसूडु धनिष्ठा एभिः सह वर्तमानं अनु पश्चात् हि यस्मात् कारणात् अपरागज्ञै वेदभेदान्यशास्त्रमद्भिः सर्वलोकैस्तदृक्षमश्विन्यादि चतुष्कं मुक्तं वर्जितं कस्मात् फलान्यभावात् फलरहितत्वात्॥

अब ध्यान दीजिए मैंने सं. २००७ के पंचाङ्ग में ही स्पष्ट लिखा था कि—"इस नक्षत्र चतुष्टयी में गुण विशेष नहीं है तो दोष भी किसी ने नहीं कहा" यही भाव उपरोक्त विक्रमादित्य के प्रधान राज पण्डित कविकुलकमलदिवाकर श्रीकालीदास जी की उक्ति से स्पष्ट है "फलान्यभावात्" अर्थात् फलरहित होने के कारण इसे अन्य नारद वसिष्ठवराहादिकों ने नहीं लिखा, और कोई कारण नहीं। फलरहित का भाव यह है कि इन नक्षत्रों में विवाहार्थ शुभाशुभ फल कुछ नहीं अर्थात् यह नक्षत्र विवाह में सम है।

जैसे विवाह लग्न में त्रिकोण केन्द्रस्थ गुरु लाख दोषों को दूर करते हैं (लक्षं सुरगुरु) परन्तु वही गुरु तथा चन्द्रमा केन्द्र के एक सप्तम स्थान में शुभाशुभ फलरहित सम माने जाते हैं (अस्तेऽब्जगुरुसमौ) अर्थात् सातवें चन्द्र गुरु शुभाशुभफलरहित उपरोक्त नक्षत्रों की तरह सम होते हैं। जिसे विद्वज्जन आवश्यकता में सहर्ष ग्रहण करके सदा से लग्न रखते आ रहे हैं। इसी तरह जब कोई विवाहोक्त नक्षत्र उपलब्ध न हो तो इन सूत्रोक्त नक्षत्रों की उपादेयता हो जाती है। इसमें लग्न से सप्तमस्थ गुरु चन्द्र की तरह नक्षत्र जन्य शुभाशुभ फल न मिलने पर भी इन नक्षत्रों पर दस शुभ रेखाओं का तथा अन्य लग्नबलादिक का शुभफल तो मिलेगा ही फिर इन नक्षत्रों में विवाहमुहूर्त रखने में क्या दोष है? यदि इन नक्षत्रों में नेष्ट (अशुभ) फल होता तो श्रीकालीदास जैसे धुरंधर विद्वान् अपने प्रामाणिक ग्रन्थ ज्योतिर्विदाभरण में "फलान्यभावात्" की जगह स्पष्ट "कुदोष सत्वात्" यह शब्द लिखते। जिस निबन्ध ग्रन्थ का प्रमाण देकर आप दोष दिखला रहे हैं, वह दोष वाक्य काल्पनिक व प्रक्षिप्त हैं। यदि दोषसूचक वाक्य दो हजार वर्ष पूर्व श्री कालीदासजी के समय कहीं मिलते तो वह इन नक्षत्रों को फलरहित न लिखकर अवश्य अशुभ फलवाले लिखते इस विचार से स्पष्ट है कि इन आर्ष नक्षत्रों में दोषारोपण किसी ने पीछे से लिख मारा है जो निर्मूल है, सत्य कभी छुप नहीं सकता। कदाचित् दुर्जन तोष न्याय से मान भी लिया जावे कि किसी निबन्ध में इन्हें सदोष लिखा है, तो भी सूत्र आर्ष प्रमाण हैं जो सर्वोपरि मान्य हैं। आर्ष सूत्रों का खण्डन आचार्य प्रणीत वा निबंध ग्रंथ नहीं कर सकते यानी हाईकोर्ट, आर्ष ही हैं, प्रथम सूत्र ग्रंथ हैं द्वितीय दरजे पर स्मृति ग्रंथ हैं, तदनन्तर तीसरे दरजे पर मुहूर्त ग्रन्थों की मान्यता है। जब आर्ष वाक्य और निबन्ध में विरोध हो तो आर्ष वाक्य ही मान्य होता है, यह सिद्धान्त है। जहां श्रुति साक्षात् किसी विषय का प्रतिपादन कर रही हो उसके समक्ष निबन्ध वाक्य की कुछ कीमत नहीं।

देशाचार की दुहाई देनेवालों को चाहिये कि ज्योतिषार्णव का यह श्लोक ध्यान में रक्खें—

देशाचारकुलाचारौ जात्याचारो विशेषतः। कर्तव्यो विदुषातत्र सारासारं विचार्य च॥

अर्थात् देशाचार कुलाचार जात्याचारों में से विद्वानों को विशेषतः वह करना चाहिये कि जिसमें सार विशेष हो, सारासार का विचार सभी प्रथाओं में चाहिये, शास्त्र विहित देशाचारादि श्रेष्ठ हैं शास्त्र विरुद्ध योग्य नहीं है, जहाँ किसी बात के लिये शास्त्र में विधि निषेध नहीं कहा, तहाँ ही देशाचारादि माननीय होते हैं। किसी समय धर्मसंकटादि कारणान्तरों से वा अज्ञानता से कोई अंधपरंपरा चल गई हो (जैसे मलखाने क्षत्रियों में मुर्दादबाने की प्रथा बहुत देर से थी वह स्व० मालवीय जी के प्रयत्न से दूर हुई थी) फिर किसी विद्वान् के जतलाने पर उसी प्रथा को देशाचार कुलाचार कहकर यही ठीक है, ऐसा कहकर करना तो अज्ञानता का ही

द्योतक है। शास्त्रविहित कार्य वा प्रथा मान्य है, शास्त्र विरुद्ध अमान्य है, लकीर के फकीर बन कर गतानुगत रीति से चलना विद्वज्जनों को शोभा नहीं देता ॥ आपका यह लिखना सरासर सत्य पर धूल फेंकना है कि—यह चार नक्षत्र विधवाविवाह के लिये हैं, कृपया पक्षपात का चश्मा उतार कर गृह्यसूत्र देखें। भगवान कात्यायन ने "त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु" सूत्र के पूर्व छठे सूत्र में स्पष्ट लिखा है—

"कुमार्याः पाणिं गृह्णीयात्" जिसको स्पष्ट करते हुए गदाधर भाष्यकार ने "कुमार्या अक्षतयोन्याः पाणिं गृह्णीयात् वक्ष्यमाणेन विधिना विवाहं कुर्यात्" लिखकर स्पष्ट कर दिया है कि इन नक्षत्रों में कुमारी कन्या का ही विवाह होता है, विधवा का नहीं। उस दिन अमृतसर की सभा में एक पण्डित अपने मनमाने व्याकरण की रीति से उक्त सूत्र का अर्थ केवल तीनों उत्तराही सिद्ध करते थे जो व्याकरण एवं भाष्य विरुद्ध होने के कारण अशुद्ध था तभी मैंने उनके पाण्डित्य को चाण्डित्य कहा था। सूत्र में दो वेर त्रिषु त्रिषु कथन का भाव उनकी समझ में नहीं आया, वास्तव में—"उत्तरा आदिर्येषां तान्युत्तरादीनि तेषु कतिषु? त्रिषु त्रिषु" यह सूत्रार्थ यथार्थ है। विद्वज्जन इसमें स्वयं प्रमाण हैं।

महर्षि वसिष्ठ नारद आदियों को यजुर्वेदी या सामवेदी कहना असंगत है क्योंकि एक वेद को यजुऋग् आदि चार विभागों में विभक्त तो द्वापरान्त में महर्षि व्यास ने किया था तो फिर चिरकाल पूर्व के वसिष्ठ नारदादि महर्षियों की यजुर्वेदी सामवेदी आदि संज्ञाएँ कैसे हो सकती हैं? आप स्वयं ही विचार करें, यह तो व्यासजी के पश्चात् जिसने जो वेद ग्रहण किया उसके कुल की उसी वेद के नाम पर यजुर्वेदी सामवेदी आदि संज्ञाएँ पड़ी हैं, यह बात प्रसिद्ध है।

अब मैं अपने सहयोगी विपक्षियों से शिष्टतापूर्वक एक बात पूछता हूँ कि आप मुहूर्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त ग्रन्थों तथा अन्य निबन्ध ग्रन्थों को ही सर्वोपरि प्रामाणिक मानते हो तो पञ्चाद के अन्य सदृश पञ्चाङ्ग कर्ताओं की तरह हरिशयनोत्तर आषाढ़ से तथा श्रावण भाद्रपदादि में आप विवाह मुहूर्त क्यों लिखते हो? जबकि आपके उन मुहूर्त ग्रन्थों में वहाँ विवाहादि शुभ कर्म का निषेध है। जैसे आप कात्यायनोक्त नक्षत्रों में निबन्ध ग्रन्थों से दोष दिखलाते हो, उससे कहीं विशेष दोष आपके सम्मानित राजमार्तण्ड में इन मासों में विवाह का दोष लिखा है। तद्यथा—आषाढ़े धनधान्य भोगरहिता नष्ट प्रजा श्रावणे। वेश्या भाद्रपदे श्विने च मरणं रोगान्विता कार्तिके ॥ अर्थात् हरिशयनोत्तर आषाढ़ में विवाह से कन्या धनधान्यभोगरहित और श्रावण में मृतपुत्रों वाली, भाद्रपद में वेश्या, आश्विन में मरण, कार्तिक में रोगिणी होती है। ऐसा उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट है। इस विषय में अन्य अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं जो विस्तार भय से नहीं लिखे। भला हम तो सदोष नक्षत्र और सदोष श्रावणादि मासों में भी विवाहमुहूर्त लिखते हैं, पर आप तो निर्दोष मुहूर्त देखते हो, फिर ऐसे महा अशुभ मासों में आप अपने पञ्चाङ्ग में विवाहमुहूर्त लिखकर क्यों दोषभागी बनते हो? इसका उत्तर दीजिये। साथ ही श्रावणादि मासों में विवाह का शुभ फल पृथक्-पृथक् सप्रमाण लिखें उपरोक्त राजमार्तण्ड के श्लोक का अर्थ किसी वैसे ही वैयाकरण केसरी से अपने पक्ष में करवाकर दिखलावें ताकि विद्वज्जन आपकी पक्षपात शून्यता देख सकें। आपके लेख से तो यही सिद्ध होता है कि आप जो लिखें वह वेद वाक्य माना जावे, दूसरा कोई उच्च आर्षग्रन्थों के आधार पर भी कुछ लिखे, वह आपको मान्य नहीं। और भी देखिये मुहूर्त ग्रंथों में अनुराधा के निर्बल चन्द्र में भी विवाह शुभ माना है, यह क्यों? जब कि निर्बल चन्द्रमा का फल "चन्द्रहीने गता लक्ष्मी" (निर्धनता) लिखा है, इसका भी उत्तर लिखें।

विद्वज्जनो! पण्डितजीने अपने लेख में अकारण द्वेषबुद्धिवशात् मुझे अपमानित करने के लिये कई बातें अप्रासंगिक कर्मकाण्ड आदिक की तथा इधर उधर की बटोर कर वृथा लिखी हैं जिनका अक्षरशः उत्तर लिखने की सामर्थ्य रखता हुआ भी परस्पर और भी कटुता बढ़ जावेगी, ऐसा विचार कर नहीं लिखना चाहता। जनता तो ब्राह्मणों की ऐसी असामयिक बातों से पहले ही असन्तुष्ट है। फिर मुहूर्त शास्त्र विषयक ऐसा बेतुका पिष्ट पेषण करने से तो और भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। हम भविष्यमें भी अनाप सनाप व्यर्थ वितण्डावाद पूर्ण अशास्त्रीय प्रोपेगण्डा का उत्तर लिखकर वृथा पृष्ठ काले करके विद्वज्जनों का अमूल्य समय नष्ट करना नहीं चाहते। हाँ! यदि आर्षमत विरुद्ध कोई शास्त्रीय अधिकारपूर्ण लेख होगा तो अवश्य उत्तर देंगे अन्यथा नहीं। अन्त में मैं पण्डित जी से निवेदन करता हूँ कि—दुराग्रह छोड़कर आर्षमत के सामने मस्तक झुका देना ही आपके लिये श्रेयस्कर है। किमधिकं विस्तरेण।

निर्मत्सराणांसतामनुचरः—
मकुन्दवल्लभः

आकाशीय कौंसिल

[पृष्ठ ४० का शेष]

अन्यथा—उस मास में वर्षा का अभाव और दुर्भिक्ष हो, यह विचार ग्रहयोग से भी प्रायः प्रबल रहता है। इस वर्ष इसका देखना जरूरी है क्योंकि ग्रहयोग अशुभ हैं। यदि यह शकुन शुभ हो गया तो आपके यहाँ अशुभ फल दूर होकर सुख सुभिक्ष रहेगा अन्यथा—और भी महा अशुभ फल होगा।

आगामी विश्वयुद्ध कब होगा ?

भविष्य में जो युद्ध होगा उसमें शनि भौम राहु की विश्वविरुद्ध स्थिति के कारण महा भयानक नरादि प्राणियों का संहार होगा। तीन ग्रहों के कारण तीन ही राष्ट्र सम्भव है अमरीका और जर्मनी आदि संयुक्त रूप से अपने शत्रु पर आक्रमण करें। उधर क्रूर ग्रह वेधवशात् रूस भी पश्चिम योरोप पर आक्रमण करेगा। इस युद्ध में रूस की विशेष हानि होगी। इस युद्ध के पहिले प्रायः हर तर्फ व्यापारिक मन्दी का वातावरण बनेगा, और आज के कई प्रसिद्ध शत्रु राष्ट्र स्वार्थवश एकाएक साश्चर्य मित्र रूप में होकर युद्ध में सम्मिलित होंगे। इस युद्ध की ज्वाला से सर्वथा कोई देश नहीं बचेगा। न्यूनाधिक रूप में सभी देशों को हानि पहुँचेगी। इस युद्ध के कारण योरोपीय देशों की जनसंख्या ६० प्रतिशत और एशिया के भारतादि की ५५ प्रतिशत नष्ट हो जावेगी। जहाँ इसकी ज्वाला विशेषरूप से चमकेगी वहाँ तो पचासों कोसों में दीपक जलता नहीं दिखाई देगा। शास्त्र में लिखा है, कि जब जिस देश के लोगों में अन्याय दुराचार और धूर्तता अधिक दीख पड़े और अकस्मात् सभी रीति रिवाज विपरीत हो जावें तो समझो कि वह देश नाश की ओर जा रहा है। लिखा भी है—

अन्यायकुसमाचारी पाखण्डाधिकता जने।
सर्वमाकस्मिकं जातं वैकृतं देशनाशनम् ॥

खेद है कि आज कल यह बातें भारत में भी प्रत्यक्ष देखने में आ रही हैं। श्री जगदीश्वर रक्षा करें।

इस तीसरे विश्वयुद्ध का बीजारोपण सन् १९५७, १६ जनवरी के बाद या सन् १९५६ के मध्य में होगा, परन्तु विशेष योग सन् १९५७ में है। इस युद्ध के अनन्तर सभी देशों के शेष मानवों का हृदय बदल जावेगा। प्रेम न्याय तथा सत्यता का प्रचार होगा और सर्वत्र विश्वबन्धुत्व की भावना जागृत होकर फिर सैकड़ों वर्षों तक सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित होगा। इस युद्ध से संसार का कौन भाग (अक्षांश रेखांश) विशेषरूप से बचेगा, इसका ग्रह वेध द्वारा निर्णय करना अभी शेष है। ग्रहगणित द्वारा निश्चय होने पर इस पञ्चाङ्ग द्वारा सूचित किया जावेगा। इस भयानक नरसंहार से बचने के लिये अपने २ स्थानों में महाकाली के रातजागा तथा शतचण्डी सहस्रचण्डी लक्षचण्डी आदि साथ ही क्षेत्रपालपूजन यज्ञादि यथाशक्ति करने चाहिये। अन्यथा उस क्रूर समय के आने पर रोने और भागने के सिवाय कुछ करते धरते न बनेगा। माया यहीं पड़ी रहेगी। निर्धन लोग प्रभु कीर्तन किया करें। वही महाभारत के भयानक रणक्षेत्र में टिटिहरी के अण्डे की तरह रक्षा करने में समर्थ है।

रोगोपद्रव—

इस वर्ष का नाम प्लवंग है, इसका फल—"रोग चौराकुला धरा" अर्थात् पृथ्वी रोग चोरों से व्याकुल हो। इस वर्ष अहोई, दीवाली तथा होलिका यह भी तीनों भौमवारी हैं अतः अनेक रोग, अग्नि धुआँ आदि उपद्रवों से, वा परस्पर विग्रह से पशु, मनुष्य, आदि असंख्य प्राणियों की असामयिक मृत्यु हो, विश्व में कहीं वैशाख के बाद कहीं कार्त्तिक के बाद संहारक महाव्याधि फैले, प्रजा दुःखित हो। स्त्रियों के रोने की आवाज बहुधा सुनने में आवे। भारत में तो श्री काली माता के रातजागा करने से शान्ति रहेगी।

नासिक बार भड़ौंच प्रान्त में दुर्भिक्ष जनहानि हो। इस वर्ष भूमण्डल पर कहीं लोग क्षुधा से व्याकुल होकर घूमते फिरेंगे।

राजस्थान, सिन्ध, बंगाल प्रान्त में कहीं उपद्रव, विग्रह, प्रजा पीड़ा के योग हैं।

स्वाति में शनैश्चर का भ्रमण—(भवत्यत्र नसन्देहो मृत्युः प्रियजनस्य च) प्रजा के किसी बड़े प्रिय पुरुष की मृत्यु देता है। यह योग वर्षारंभ से लेकर मार्गशीर्ष कृ० ४ से पहले है। मार्गशीर्ष कृष्ण ९ के अनन्तर नभचर वा जलचर जहाजों को नुकसान पहुँचेगा। प्रजामें बहुधा नेत्र-रोग तथा उदर-रोग अतिसार आदि से कष्ट होगा। कार्त्तिक के बाद पूर्व में कहीं मारकाट, दक्षिण में उत्पात, गुजरात में हानि के योग हैं। आषाढ़ से वेश्याओं तथा सिनेमा अभिनेत्रियों को दुर्घटना वा रोग से शारीरिक कष्ट हो। राहुगति वशात्—नौकर मालिकों का सामना करेंगे। कारखानों में मजदूर लोगों से मालिकों को भय होगा। वैशाख शुक्ल १५ से ज्येष्ट शु० १२ तक कहीं से कुछ सैनिक–संघर्ष के समाचार मिलेंगे। श्रावण कृ० १ से ३ तक कहीं उल्कापात व भारी एक्सीडेण्ट (दुर्घटना) होने का भय है। कार्त्तिक शुक्ल में भी विश्व में कोई भयानक बात हो वा एक्सीडेण्ट हो। राहु भौम कहीं अग्नि का कहीं टिड्डी का भय भी पूरा देंगे।

मार्गशीर्ष कृष्ण में कहीं युद्ध जैसी स्थिति हो और विश्व में कहीं विग्रह, उपद्रव हो।

फाल्गुन कृष्ण कुम्भ संक्रान्ति शनिवार और अमावस मंगलवार की है अतः कहीं लड़ाई वा किसी उपद्रव से मनुष्यों की हानि हो।

संसार में शान्तिकामनार्थ तथा स्वयं आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक कष्टों से बचने के लिये अपने २ ग्राम व नगरों में प्रतिसप्ताह प्रभुकीर्तन के साथ सम्मिलित शांति प्रार्थनायें करते रहें, भविष्य के कठिन समय में महान् शान्ति लाभ करोगे।

महोदयो ! फलितज्योतिषदृष्ट्या और श्री प्रभुकृपावशात् जो मुझे इस वर्ष में होने वाला संसार का शुभाशुभ फल दृष्टिगोचर हुआ वह मैंने अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार लिख दिया है। आगे "कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तु" समर्थ श्रीप्रभु ही हैं। उनकी अपार, माया के सम्मुख सभी विज्ञान धरे रह जाते हैं। फिर मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति क्या भविष्य लिख सकते हैं। "तत्त्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मिकदाचन"।

धर्मस्य विजयो भूयादधर्मस्य पराभवः।
सद्भावना प्राणभृतां भूयाद्विश्वस्य मङ्गलम्॥

शुभेच्छुः

(कुराली १८।५।५३) श्रीबघाटनरेशाश्रितो मुकुन्दवल्लभः

श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग की भविष्यवाणियों की सत्यता

श्री मार्तण्डपञ्चाङ्ग की शुद्धता एवं भविष्यवाणियों की सत्यता से प्रसन्न होकर बड़े-बड़े सहृदय सज्जन महानुभाव प्रतिवर्ष वारंवार प्रशंसा पत्र भेजते हैं, मैं उनका हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

गत सं० २०१० वर्ष के इस पञ्चाङ्ग की भविष्यवाणियों की सत्यता का कुछेक दिग्दर्शन देखिये :—

(१) भारत के उपराष्ट्रपति सम्मानित—

"इस वर्ष किसी भारतीय व्यक्ति को दूरविदेश में उच्चपदवी का सम्मान मिले" (पृष्ठ ३३ कालम दूसरा) तदनुसार कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के कुलपति लार्ड रेडर ने राष्ट्रमण्डलीय विश्वविद्यालयों की सप्तम कांफ्रेंस में श्री डा. राधाकृष्णन् को "डाक्टर ऑफ लेटर्स" की सम्माननीय पदवी से विभूषित किया।

(२) पैप्सू में मन्त्रीमण्डल का टूटना और राष्ट्रपति का राज :—

"पैप्सू.......प्रधानमण्डल यशस्वी न रहेगा, इनके शासन में केन्द्रीय सरकार का हस्तक्षेप होवे।" (पृ. ३३ कालम दूसरा) तदनुसार १० मार्च १९५३ को पैप्सू में राष्ट्रपति का राज हो गया।

(३) पाकिस्तान में खूनखराबी—

"लूटपाट खूनखराबी की वारदातें अधिक हों" (पृष्ठ ३४ कालम दूसरा) तदनुसार मुसलमानों ने ही अपने कादियानी सम्प्रदाय के मुसलमानों को लूटा मारा और भयंकर खून खराबी हुई यह बात किसी से छिपी नहीं है।

(४) वैशाख ज्येष्ठ के भयङ्कर अग्निकाण्ड:—

"वैशाख ज्येष्ठ में अग्नि लगने तथा कारखानों में बिजली से हानि होगी" (पृष्ठ ३५ कालम दूसरा) तदनुसार हजारों स्थानों पर अग्निकाण्डों से हानि हुई। जैसे २९ अप्रैल को मुँबई की कई फैक्टरियें तेलडिपो प्लास्टिक खिलौनों का कारखाना आदि जलकर खाक हो गये।

(५) अनाज पर से कंट्रोल ढीला हुआ—

"अनाज पर कंट्रोल कुछ कम जोर होवे" (पृष्ठ ४०) तदनुसार अनाज पर से कंट्रोल अनेक स्थलों पर उठाया गया परन्तु कोठे भरने की फिर भी आज्ञा नहीं मिली।

इसी तरह अन्य दैशिक तथा राजनैतिक भविष्य एवं वार्षिक व मासिक तेजी मन्दी आदि की भविष्य वाणियें भी ९५ फी सदी सही उतर रहीं हैं। आशा है कि भविष्य में भी श्री प्रभु कृपा से सत्य ही उतरेंगी॥

श्री दीनानाथ जी दुग्गड़ द्वाराप्राप्त जैनपर्वनिर्णयः—

श्रीवीर सं. २४८०-८१ आत्म सं. ५८—५९ शाका सं. १८७६, वि. सं. २०११ ई. सन् १९५४-५५

श्रीबुद्धि विजय (बूटेराये) जी का स्वर्ग दिन-और श्रीमद्विजय आनन्दसूरी (आत्माराम) [illegible] जन्मदिन	चैत्र शुदि १	रविवार	चैत्रप्र. २२	४ अप्रैल १९५४
श्रीसिद्ध चक्र आम्बिल ओली शुरु	चैत्र शुदि ८	शनिवार	चैत्रप्र, २८	१० अप्रैल १९५४
,, वर्धमान (महावीर) जन्मदिन	,, ,, १३	गुरुवार	वैसाखप्र. ३	१५ ,, १९५४
,, सिद्धचक्र आम्बिल ओली सं० चैत्री पुणम, सिद्धाचल मेला	,, ,, १५	रवि	,, ,, ९	१८ ,, ,,
श्रीऋषभदेव वर्षी तप पारणा अक्षयतृ०	वै० शुदि ३	बुधवार	वै० २३	५ मई ,,
हस्तिनापुर तीर्थ मेला	वै० शुदि १३	शनि	ज्येष्ठ० २	१५ मई ,,
श्रीमद् विजयानंद सूरी (आत्मा.) स्वर्गदिन आत्मसंवत् ५९	ज्ये. शु. ८	मंगल	ज्ये० २६	१९ जून ,,
चौमासी अठाई प्रारम्भ	आ. शुदि ७	बुध.	आ० प्र. २४	७ जुलाई १९५४
चौमासी चौदस	आ. ,, १४	,,	आ० ३१	१४ ,, ,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	आ. ,, १५	गुरु.	आ० ३२	१५ ,, ,,
श्रीनेमनाथ भगवान् का जन्म दिन	श्रा शुदि ५	मंगल	श्रा. १९	३ अगस्त ,,
,, पर्यूषण पर्व अठाई प्रारम्भ	भा. वदि १२	बुध.	भाद्र ९	२५ ,, ,,
,, कल्पसूत्र गृहस्थापनरात्रिजागरण	,, ,, १४	शुक्र.	भाद्र ११	२७ ,, ,,
,, कल्पसूत्र वाँचना प्रारम्भ	,, ,, ३०	शनि	भाद्र १२	२८ ,, ,,
,, वीरजन्म उत्सव	,, शुदि १	रवि.	भाद्र १३	२९ ,, ,,
,, सुवत्सरीपर्व	,, ,, ४	बुध.	भाद्र १६	१ सितम्बर ,,
जगद्गुरु विजयहरि सूरी स्वर्गदिन	,, ,, ११	बुध.	भाद्र २३	८ ,, ,,
श्रीसिद्ध चक्र आंबिल ओली प्रारंभ आश्वि.	,, ७	चंद्र.	आ. १८	४ अक्टूबर ,,
,, सिद्ध चक्र आंबिल ओली संपूर्ण	,, ,, १५	मंगल	आ० २६	१२ ,, ,,
,, वर्धमान (महावीर) निर्वाण दीपावली	का० वदि ३०	मंगल	का० १०	२६ ,, ,,
,, गौतमस्वामीकेवलज्ञानश्रीवीरसं. २४८१ शुरु	का. शु. १	बुध.	का० ११	२७ ,, ,,
भाईदूज श्रीमद्विजय वल्लभसूरी जन्मदिन	,, ,, २	गुरु.	का० १२	२८ ,, ,,
ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	,, ,, ५	चंद्र.	का० १६	१ नवंबर ,,
चौमासी अठाई प्रारंभ	,, ,, ६	मंगल	का० १७	२ ,, ,,
चौमासी चौदस	,, ,, १४	,,	का० २४	९ ,, ,,
चौमासी अठाई संपूर्ण कार्तिकी पुनम श्रीसिद्धाचल, हस्तिनापुर, शौरीपुरमेला	,, ,, १५	बुध.	का० २५	१० ,, ,,
जगद्गुरु विजय हरिसूरी जन्मदिन	मार्गशीर्ष वदि ७	,,	मार्ग २	१७ ,, ,,
मौन एकादशी (१५०) कल्याणकदिन	,, शुदि ११	चंद्र.	,, २१	६ दिसंबर ,,
पौषदशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन	पौष वदि १०	रवि.	पौष ५	१९ ,, ,,
मेरु त्रयोदशी श्रीऋषभदेव मोक्षदिन	माघ ,, १३	शुक्र.	माघ ६	२१ जनवरी १९५५
चौमासी अठाई प्रारम्भ	फाल्गुन शुदि ६	चंद्र.	फा० १७	२८ फरवरी ,,
चौमासी चौदस	,, ,, १४	,,	,, २४	७ मार्च ,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	,, ,, १५	मंगल	,, २५	८ ,, ,,
श्रीऋषभदेव जन्मदीक्षा दिन वर्षीतप	चैत्र वदि ८	गुरु.	चैत्र ४	१७ ,, ,,

हमारे दो अनमोल प्रकाशन—

ऋग्वेदसंहिता

श्री वेङ्कटमाधव कृत 'ऋगर्थ दीपिका' नामक भाष्य सहित। यह भाष्य सायणाचार्य से अत्यन्त प्राचीन है और बिलकुल वैज्ञानिक ढंग से लिखा गया है। संसार भर में केवल एक ही सम्पूर्ण हस्तलिखित प्रति अत्यन्त शुद्ध उपलब्ध हुई है जिससे यह भाष्य छप रहा है ऊपर मूल तथा वेंकटमाधव का प्राचीन भाष्य रखा है नीचे टिप्पणी में यास्क, स्कान्द, ब्राह्मण, सायण तथा ऋग्वेद के मन्त्रों के जो भी प्राचीन भाष्य उपलब्ध हैं और, वह जहां कहीं भी वेंकटमाधव के भाष्य से भिन्न अर्थ दर्शाते हैं, वह सब दे दिये गये हैं अर्थात् इस एक ही संस्करण को लेकर ऋग्वेद के मन्त्रों के अर्थों के ज्ञान के लिये किसी दूसरी पुस्तक की आवश्यकता नहीं रहती। इस महत्त्व के संस्करण का सम्पादन भारत के दिग्गज वैदिक विद्वान **डा० लक्ष्मण-स्वरूप जी एम० ए० डी० फिल** अध्यक्ष पंजाब विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग ने किया है। यह सर्वोत्तम संस्करण लाइब्रेरी का शृङ्गार है। संसार में आजतक जितने भी संस्करण वेदों के निकले हैं उन सबसे बढ़कर इसकी छपाई, कागज तथा जिल्दें हैं। पुस्तक छः बड़ी बड़ी जिल्दों में संपूर्ण होगी। पहले तीन भाग छपकर तैयार हैं चौथा भाग भी छप रहा है शीघ्र ही प्रकाशित हो जावेगा। उसके बाद पांचवा छठा भाग छपेगा। पुस्तक की बहुत थोड़ी कापियाँ छापी गई हैं इसलिये शीघ्रता करें। हरएक भाग का मूल्य ५०) रु० है अर्थात् तीन भाग (जो छप चुके हैं) का मूल्य १५०)

शूद्रक

ले०—आचार्य पं० चन्द्रबली पांडेय

अद्भुत नाटक 'मृच्छकटिक' के प्रतिभा सम्पन्न रचयिता कवि, नाटककार और राजा शूद्रक का पूरा परिचय संसार को आजतक नहीं मिला था। खोजी प्रवृत्ति वाले पाश्चात्य विद्वान् भी कोई पते की बात न बता पाये थे। आचार्य पाण्डेय ने गहरा गोता लगाकर इस बहुत बड़ी कमी को पूरा कर दिया है, अर्थात् इस ग्रंथ में 'शूद्रक' का पूरा पता बता दिया है, यही नहीं, नाटक के प्रमुख पात्र के रूपमें उसे हंसते, बोलते और अन्यायी राज्य का तख्ता उलटते हुए दिखा दिया है। 'शूद्रक' के सम्बन्ध में संसार की किसी भी भाषा में ऐसी सामग्री, आजतक, प्रकाशित नहीं हुई।

आचार्य पाण्डेय के इस ग्रंथ से 'मृच्छकटिक' नाटक पर भी एक अभिनव प्रकाश पड़ता है; नाटक के सब चरित्र स्पष्ट हो जाते हैं, राजनीति के गूढ़रहस्य खुल जाते हैं—मालूम हो जाता है कि 'मृच्छकटिक' में क्या है और क्यों है! ग्रंथ अन्वेषण में रुचि रखनेवालों के लिए जितना उपयोगी है, 'मृच्छकटिक' का अध्ययन करने-कराने वालों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है!

पुराने सिक्के से प्राप्त 'शूद्रक' के प्रभावशाली और भावना व्यञ्जक चित्र से सज्जित, पक्की जिल्द, मनोहर छपाई। मूल्य केवल ४॥)

मोती लाल बनारसी दास

पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता

नैपाली खपरा, पो० बा० नं० ७५, बनारस

धर्मशास्त्र—कर्म-काण्ड

अग्निष्टोम पद्धति—आध्वर्यवपद्धति, औद्गात्रपद्धति, हौत्रपद्धति ४॥)
अर्कविवाह पद्धति =)
अग्निहोत्र चन्द्रिका—वामनशास्त्री ४।॥-)
अन्त्यकर्मदीपक—नित्यानंद ३।
अन्तःकरण-विज्ञान-भाषा ॥)
अन्त्येष्टीय श्राद्ध कर्मपद्धति–चतुर्थीलाल २)
अनुष्ठान प्रकाश—चतुर्थीलाल १२)
अहिर्बुध्न्य संहिता—पांचरात्र १५)
अब्धिनौयान मीमांसा—समुद्रयात्रा २)
आधानपद्धति—वामनशास्त्री ३≡)
अष्टादशस्मृति–मूल गुटका ४)
आचार चन्द्रिका—हिन्दी ॥)
आचारार्क—ऋग्वेदियों का आचार १।)
आचारभूषण—त्र्यम्बक ७।=)
आचारमयूख—नीलकंठ १।)
आचाररत्न—खुलापत्रा २)
आचारादर्श—यजुर्वेदियों के आह्निक १।)
आचारेन्दु—त्र्यम्बक ६॥)
आपस्तम्ब धर्मसूत्र–हिरण्यकेशी व्याख्या ३)
आपस्तम्ब धर्मसूत्र—उज्ज्वलवृत्ति ७।
आभ्युदयिक श्राद्ध पद्धति-जूटिका बन्धन ।=)
आर्याभिविनय—स्वा० दयानंद ।=)
आर्यविद्यासुधाकर—यज्ञेश्वर चिमण-भट्ट रचित, डा० मंगलदेव द्वारा संपादित, अनेकों टिप्पणी सहित १०)
आर्यविधानम्—पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ विरचित भाषाटीका २०)
आश्लेषा-ज्येष्ठा शांति— ।)
अशौचनिर्णय—मूल ।) भाषाटीका ॥)
आह्निक कर्म सूत्रावली—बंबई ५)
आह्निक सूत्रावली-(माध्यन्दिन)—वैद्यनारायणशर्मा ६)
आह्निक सूत्रावली–(माध्यन्दिन)—पं० दौलतराम गौड ८)
आह्निक पद्धति—नव्यचण्डिदास ३)
उत्सर्गमयूख—नीलकंठ ।)
उत्सर्जनापकरण विधि— ।)
उपनयन-पद्धति—मूल ।=)
उपनयन—पद्धति—भाषाटीका १।)
उपनयन पद्धति—पं. विद्याधर गौड १।)
उपनयन मार्तण्ड—भाषाटीका ॥)
उमामहेश्वर—गुटका १॥)
ऋग्वेदोक्तनित्यविधि— १।)
एकोदृष्टश्राद्धपद्धति— ।) मू० ॥)
एकादशी व्रतोद्यापन— २॥)
कर्मकाण्ड क्रमावली—सोमशम्भु ४॥)
कर्मकाण्ड प्रकाशिका— ।=)
कर्मठगुरु—राज्यज्योतिषी पं. मुकुन्द वल्लभ कृत नित्यकर्म के लिए सबसे बढ़िया ग्रन्थ । पंडितजी के द्वारा अनुभूत अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान भी लिखे गये हैं जैसे—सिद्ध पुत्रेष्ठि विधि । कर्मकाण्ड विषय का ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा । ५)
कर्मप्रदीप—छांदोग्य परिशिष्ट २।)
कर्म रहस्य—हिन्दी ॥)
कर्मविपाक—भाषाटीका ४)
कलश प्रतिष्ठा— =)
कात्यायन मत संग्रह— २।)
कात्यायनस्मृति— ४॥)
कात्यायनी तर्पण— =) बड़ा ।)
कात्यायनीशांति— ।)
कातीयेष्टि दीपक (दर्शपौर्णमास पद्धति) नित्यानंद पर्वतीय १॥)
कालतत्व विवेचन—दो भाग, रघुनाथ ३॥)
कालमाधव—माधवकृत ४।)
कालमाधव कारिका— ॥=)
कार्तिक शुक्ल द्वितीया कृत्यनिर्णय ≡)
कार्तिक शुक्ल द्वितीया कृत्य निर्णय ≡)
कालविवेक—जीमूतवाहन ५।)
काश्यपज्ञानकाण्ड—वैखानस ५॥)
कुट्टाकार शिरोमणि—पूना १)
कुण्डमण्डपसिद्धि—भाषा टीका ॥)
कुण्डरत्नावली—सटीक ३)
कुण्डविंशति— २)
कुण्डार्क—सटीक ३।
कुम्भ विवाह =)
कुशकण्डिका भाष्य—कुण्ड आदि विधि ।≡)
कृत्यकल्पतरु—लक्ष्मीधर विरचित—ब्रह्मचारी काण्ड, गृहस्थकाण्ड, नियतकालकाण्ड, श्राद्धकाण्ड, दान-काण्ड, तीर्थ विवेचन काण्ड, शुद्धि-काण्ड, राजधर्म काण्ड, मोक्षकाण्ड छपे हैं मूल्य १०५॥=)
कृत्यरत्नाकर—चण्डेश्वर ६)
कृत्यसार-समुच्चय—अमृतनाथ बंबई १॥)
कृत्यसार-समुच्चय-बृहद्टिप्पणी–काशी ४॥)
क्रमदीपिका— ३)
गया यात्रा पद्धति—पं. सीताराम ।≡)
गया श्राद्ध पद्धति—मूल ।=)
गया श्राद्ध—चतुर्थीलाल भाषाटीका ॥=)
गायत्रीपूजा पद्धति — ≡)
गोदानपद्धति— =)
गौतमधर्म सूत्र–हरदत्त व्याख्या ४।)
गौतमधर्मसूत्र परिशिष्ट—द्वितीयप्रश्न ६)
गदाधरपद्धति आचार—सार ४॥)
गोविन्दार्चन चन्द्रिका—खुलापत्रा १०)
गौड़ीयश्राद्धप्रकाश महानिबंध— ५)
गौरीशंकर गुटका २।)
गृहस्थरत्नाकर—चण्डेश्वर ५।)
ग्रहयज्ञप्रयोग—मूल ॥)
ग्रहयागतत्व— ॥=)
ग्रहप्रयोग—ग्रहशांति—वायुनंदन २॥)
ग्रहशान्ति—भाषाटीका बंबई १।)
चतुर्लिंगतोभद्रचक्र— ≡)
चतुर्वर्गचिन्तामणि—हेमाद्रि,प्रायश्चित १०)
चतुर्वर्गचिन्तामणि—परिशेषखंड-काल निर्णय १५)
चतुर्विंशतिमतसंग्रह—भट्टोजीदीक्षित ३।
चूड़ाकरण पद्धति— ≡)
छन्दोगाह्निक ॥)
जन्मदिन पूजा पद्धति— =), ।)
जयसिंहकल्पद्रुम—श्रीरत्नाकरदीक्षित १४)
जयाख्य संहिता—पांचरात्र १२)
ज्येष्ठाशान्ति—मूल ।)
टोडरानंद—राजाटोडरमल, प्रथमभाग १०)
तिथिनिर्णय— ।)
तिथिनिर्णय—भट्टोजीदीक्षित १॥)
तिथिचिंतामणि— ॥=)
तिथ्यर्क—दिवाकर २)
तीर्थ चिंतामणि—वाचस्पत्ति ३॥)
तीर्थ श्राद्ध =)
तुलसीपूजापद्धति— =)
तुलसीविवाह— ।-)
तुलसी विवाह—काशी १॥)
तुलादानादि पद्धति—नवग्रहहोमपद्धति—प्रायश्चित पद्धति—विष्णुयाग पद्धति । पक्की जिल्द सहित ६।)
दण्डविवेक—वर्द्धमान ८॥)
दत्तक चंद्रिका—कुबेरभट्ट २=)
दशकर्म पद्धति—मूल १) भाषाटीका १॥)
दशकर्मपद्धति भाषाटीका जिलद बंबई २।)
दर्शपूर्णमास प्रकाश—भाष्यवृत्ति ११।=)
दानक्रियाकौमुदी—गोविन्दानंद २।)
दत्तकप्रकाश—राज्याभिषेक कोटीहोम ॥)
दानचंद्रिका—मूल खुला १=)
दानदीपिका—भाषाटीका ॥)
दानमयूख—नीलकंठ— २)
दायभाग-जीमूतवाहन—सटीक जिल्द ३।
दीक्षातत्वमीमांसा—भाषाटीका १॥)
दीक्षाप्रकाशिका—विष्णुभट्ट १)
द्विरागमननिर्णय— =)
द्वादश हरिहरमंडल— ≡)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता:—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक-विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस ।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता:—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक-विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस।

दुर्गापूजन प्रयोग खुलापत्रा	३)
दुर्गापुजा—श्यामापूजा—	।।।)
देवर्षीय पितृतर्पण—	=)
द्वैतनिर्णय सिद्धान्त संग्रह–भानुभट्टप्रणीत	।।)
धर्मतत्वनिर्णय—पूना	१)
धनिष्ठापंचकशांति—	।=)
धर्मतत्व परिशिष्ट—पूना	१।=)
धर्मप्रवेशिका—हिन्दी	।=)
धर्मविज्ञान—हिन्दी, ३ भाग	१३।
धर्मशास्त्र संग्रह—(२६ स्मृति) जिल्द सहित कलकत्ता	१७)
धर्मसिन्धु—काशीनाथ, मूल	५)
धर्मसिन्धु–पं. मिहिरचंद्रकृत भाषाटीका	१२)
धर्मप्रदीप—१२ मास तिथ्यादिनिर्णय	२)
धर्मानुबन्धिश्लोकचतुर्दशी—	।।)
धार्मिकविमर्श समुच्चय—	४)
धर्मोपदेशिका—हिन्दी	।।।)
धर्मादर्श:—नूतनमतमतान्तरपर्यालोचको निबन्ध: श्रीदेवकृष्णशर्माकृत	२०)
नवग्रह चक्र—	-)।।
नवग्रहविधान पद्धति—	।।=)
नवरत्नविवाह पद्धति—भाषा टीका	३।।)
नवरात्र प्रदीप—विनायक	१)
नान्दीमुखश्राद्ध—	१), ।।)
नारदीयमनुसंहिता—सभाष्य	२।।)
नारायणबलि—भाषाटीका	१।)
नित्यकर्म पद्धति—	१), ।=)
नित्यकर्मविधि—पं० बालकृष्ण	१=)
नित्यकर्तव्य—स्वा० शिवानंद	।-)
नित्यकर्म प्रयोगमाला—चतुर्थीलाल	२)
नित्यहवन पद्धति—भाषाटीका	।=)
नित्याचार प्रदीप—नृसिंह बाजपेयी १३ भाग छपा है अपूर्ण	१२।।।)
नित्याचार पद्धति—विद्याकर	५।)
नित्यनैमित्तिक कर्म समुच्चय—शुक्ल यजुर्वेदी	५।।)
नित्योत्सव—उमानंद	४)
निर्णयसिन्धु—कमलाकर, मूल	७), ६)
निर्णयसिन्धु—पं. ज्वालाप्रसादकृत भाषाटीका	१६)
निर्णयसिन्धु—भाषाटीका लखनौ	१५)
निर्णयसिन्धु—कृष्णभट्ट संस्कृत व्याख्या	२२)
निर्णयामृत—मूलमात्र	३।।)
नीतिमयूख—नीलकंठ	१।।)
नूतनगृहप्रवेश हवन पद्धति—	२।।)
नूतन वास्तु प्रबंध—	।।-)
नृसिंहप्रसाद दलपतिविरचित, व्यवहार	२)
नृसिंहप्रसाद—प्रायश्चितसार	१।।=)
नृसिंहप्रसाद—श्राद्धसार	१)
नृसिंहप्रसाद—तीर्थसार	।।।)
परमसंहिता—पांचरात्र	५)
परलोकतत्व—भाषा	।।।≡)
परलोक प्रश्नोतरी भाषा	=)
पशुवालम्भ मीमांसा—वामनशास्त्री	१-)
पंचदान पद्धति—	।=)
पंचमंगल—	।=)
पंचमहायज्ञ—आर्यसमाज	≡)
पंचांग पद्धति—	१), ।=)
पांचरात्ररक्षा—वेदांतदेषिक	४।।)
पार्वणश्राद्ध—भाषाटीका	।=)
पाराशरस्मृति—भाषाटीका	१।।)
पाराशर धर्म संहिता—सायणमाधवाचार्य व्याख्या सहित केवल अन्त के तीन भाग	१४।।)
पितृकर्मनिर्णय—श्रीत्रिलोकनाथ मिश्र	३।
पुण्याहवाचन-दानखंडोवल	१)
पुत्तलविधान पद्धति	।=)
पुराणोक्त ग्रहशांति वास्तु शांति	१।।)
पुराणोक्त विवाह पद्धति—मूल	।।)
पुरुषार्थचिंतामणि—रामकृष्णभट्ट	४)
पूजा समुच्चय—१०५ विषय	२)
पूतनाशांति—	≡), =)
पौरोहित्य कर्मसार—२ भाग	१।।)
प्रायश्चित कदम्ब—भाषाटीका	१।।)
प्रपंचसार विवेक—मूल	१।।।)
प्रायश्चित मयूख—नीलकंठ	२)
प्रायश्चित प्रकाश—चतुर्थीलाल	१।।।)
प्रायश्चित प्रकरण—भट्टभवदेव	३।
प्रायश्चित्तेन्दु शेखर—नागोजी भट्ट	२।।।, १।)
प्रतिष्ठामयूख—नीलकण्ठ	।।)
प्रतिष्ठा महोदधि—वायुनंदन	५)
प्रतिष्ठा संग्रह—पं० रामलाल	७।
प्रेतमंजरी—भा. टी. वायुनन्दन	२।)
प्रेतमंजरी—भाषाटीका बंबई	१)
प्रयोगपरिजातस्यषोडशसंस्कारकाण्डम्	७।
प्रयोगरत्न—नारायणभट्टीय, ऋग्वेदीय	३।।)
पर्वनिर्णय—	।=)
पंचदेवतापूजन—	≡)
पार्थिवपूजन—	१)
पद्यपंचाशिका	।।)
बौधायनधर्म सूत्र—गोविंदस्वामी विवरण	७।
बृहस्पति स्मृति—	१५)
बृहद्गायत्री महामंत्रीय—सरयूपारीण	।।)
ब्रह्मकर्म समुच्चय—ऋग्वेदीय	५)
ब्रह्मकर्मसमुच्चय—हिरण्यकेशी	५)
भारतीयधर्मशास्त्र—चूड़ामणि—	२)
भारतधर्म समन्वय—भाषा	१=)
मंगलाष्टक शाखोच्चार—	≡)
मदन रत्न व्यवहारकाण्ड—मदनसिंह	१२)
मंत्रार्थ दीपिका—शत्रुघ्न कृत	५)
मनुस्मृति—कुल्लूक भट्ट टीका	४), ५)
मनुस्मृति—मेधातिथि भाष्य संपूर्ण	१३।
मनुस्मृति-सान्वय भाषाटीका बंबई	७।
मनुस्मृति—भाषाटीका	३), ३।।), ४), २।।)
मनुस्मृति (२सरा अध्याय) सं. हि. टीका	।।।)
मनुस्मृति (१-४) मणिप्रभा हिन्दी टीका	२)
मनुटीका संग्रह—कलकत्ता	५)
मातृकाविलास—	३।।)
महालक्ष्मीपूजा—	१), ।।)
मानवधर्मसार—	।।)
मांसतत्वविवेक—विश्वनाथ	।≡)
मूलाशांति—	।≡), ।=)
मूलाशान्तिचक्र	≡)
यतिधर्म संग्रह—विश्वेश्वर	३)
यज्ञरहस्य—गोपालचंद	१)
यज्ञमीमांसा—वेणीराम, परिवर्धितसं.	२।।)
यज्ञोपवीत भाषाटीका	।।≡)
यज्ञोपवीत–धारण विधि दीपक-विन्ध्येश्वरीप्रसाद	१)
यात्रातत्व—रघुनंदन	२)
याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरा बंबई	५)
याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरा, वीरमित्रोदय काशी	५)
याज्ञवल्क्यस्मृति—अपरार्क टीका	२२)
याज्ञवल्क्यस्मृति—बालंभट्टी, मिताक्षरा टीका (व्यवहाराध्याय)	१६।।)
याज्ञवल्क्यस्मृति—सुबोधिनी, बालंभट्टी, मिताक्षरा तथा बालक्रीड़ा बंबई	१७)
याज्ञवल्क्यस्मृति—मिताक्षरानुसार भाषा टीका सहित	१२)
याज्ञवल्क्यस्मृति—केवलभाषाटीका,	।।।)
राजधर्मकौस्तुभ—अनंतदेव	१०)
रामविवाह पद्धति—वायुनंदन	१)
रामार्चनचन्द्रिका—आनंदवन	१।।)
रामार्चापद्धति—भाषाटीका	।।)
रुद्रयाग पद्धति—वायुनंदन	२।।)
रुद्रविधान पद्धति—मूल	।।=)
रुद्रस्वाहाकार—	=)।।
लघुदर्पण पद्धति—मूल	६)
लघुपूजानुष्ठान—	।।-)
लंबोदरीहवन पद्धति—मूल	।।)
ललितास्तवमणि माला—	।।)
लक्ष्मीपूजन प्रयोग—बड़ा बंबई	१)
लक्ष्मीपूजा पद्धति भाषाटीका	।=)
वर्षकृत्य—रुद्रधर शर्मा	३)
वर्षकृत्य— इन्दुमती टिप्पणी दो भाग	७)
वर्षकृत्यदीपिक—नित्यानंद	७)
वसन्तपूजन भाषाटीका	।-)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता:—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

बसन्तोत्सव निर्णय— =)
वास्तुचक्र =)
वरुणमण्डल चक्र ≡)
वास्तुपूजा पद्धति गृहप्रवेशपद्धति ।=)
वास्तु प्रतिष्ठासंग्रह—खुला २।।)
वास्तु शांति प्रयोग— ।।–), ।।)
वासिष्ठ धर्मशास्त्र—सटिप्पण १)
वासिष्ठी हवन पद्धति—मूल ।=), ।।=)
वासिष्ठी हवन पद्धति—
भाषाटीका ।।≡), ।।।=)
विजयादशमी पूजन प्रयोग ।)
विधानमाला—नृसिंहभट्ट ७।)
विधान पारिजात—अनंतदेव,१४ भाग १५)
विवादचिन्तामणि— २।।)
विवादरत्नाकर—चण्डेश्वर ६)
विवाहपद्धति—झंगनिवासी पं. गौरी
शंकर कृत भाषा टीका, पंजाब विधि १।।)
विवाहपद्धति—भा. टी. चतुर्थीलाल १), १=)
विवाहपद्धति—मूल वायुनंदन ।।≡)
विवाहसोपांग विधि—भा. टी. ३)
विवाह पद्धति—आर्यसमाज ।।)
विष्णुयाग पद्धति—वायुनंदन २।।)
विज्ञप्तिरत्नावली—विवाह में विनती १)
वीरमित्रोदय-(व्यवहाराध्याय) मित्र
मिश्र कलकत्ता जिल्ददार ७)
वीर मित्रोदय—आह्निकप्रकाश— ६)
वीर मित्रोदय—पूजाप्रकाश— ६)
वीरमित्रोदय—लक्षणप्रकाश— १०।।)
वीरमित्रोदय—राजनीति प्रकाश ७।।)
" —तीर्थप्रकाश ६)
" —व्यवहारप्रकाश ६)
" —श्राद्धप्रकाश ६)
" —समयप्रकाश ४।।)
" —भक्तिप्रकाश ३)
" —शुद्धिप्रकाश ४।।)
वेदोक्त गृहवास्तुपद्धति ।।।=)
वैश्यसंध्याप्रयोग— =)

व्यवहारनिर्णय—वरदराज १५)
व्यवहार मयूख—नीलखंड १।।)
व्यवहार मयूख—नीलकंठ सटिप्पण १०)
व्यवहारमाला— १।।≡)
व्यासस्मृति— २।।)
वृद्धसूर्यार्णव कर्मविपाक—मूल, संपूर्ण १२)
व्रतकोश—जगन्नाथ २)
व्रतचन्द्रिका—हिन्दी १।।)
व्रतराज—भाषाटीका छपता है
व्रतोत्सव—कौमुदी ।।–)
व्रतार्क—भाषाटीका ८)
व्रतोद्यापन कौमुदी—मूल २)
व्रात्यता प्रायश्चित निर्णय—नागेशभट्ट १।।)
शय्यादान पद्धति— ≡)
शांतिकांड प्रदीप— २)
शांतिप्रकाश—चतुर्थीलाल खुला ६।।)
शांतिमयूख—नीलकंठ २।।)
शांतसार—खुला ३।।)
शाश्वतधर्मदीपक— ३)
शिलान्यास पद्धति देहली न्यास ।), ।=)
शिवार्चन पद्धति—वेदोक्त १)
शुक्लयजुःशाखीयकर्मकाण्ड प्रदीप ७)
शुद्धि कौमुदी—गोविन्दानंद ३।।)
शुद्धिमयूख—नीलकंठ १)
शूद्राचार शिरोमणि—शेषकृष्ण १=)
शूद्रदशगात्र—एकादशाह वृषोत्सर्ग ।=)
शूद्रपार्वण एकोदृष्ट ≡)
श्राद्धकल्पलता—नंदपंडित ४।।)
श्राद्धक्रिया कौमुदी—गोविन्दानंद ५।)
श्राद्ध चंद्रिका—दिवाकरभट्ट ३)
श्राद्ध पद्धति—वाचस्पति— १।।।)
श्राद्ध प्रयोगदीपिका—श्रीगोपालशास्त्रि २)
श्राद्धमयूख—नीलकंठ १।।)
श्राद्धमंजरी—बापूभट्ट ३।=)
श्राद्धविवेक—रुद्रधर २)
श्राद्धसंग्रह—वायुनंदन ५)
श्रावणी उपाकर्म—वायुनंदन १।।)

षडशीति—आदित्याचार्य २)
सत्यार्थप्रकाश—स्वा० दयानंद १।।)
संध्याभाष्य समुच्चय—सभाष्य ३।=)
संध्योपासन—भा. टी. –)
संध्योपासन—भा. टी. तर्पणसहित ≡)
संध्योपासन—क्षत्रिय =)
संध्योपासन—वैश्य =)
संध्योपासन—सामवेदीय ≡)
संध्योपासन—ऋग्वेदीय =)।।
संबंध निर्णय— १।)
सचित्रसतर्पणसन्ध्यादर्पण—हिन्दी
भाषानुवाद सहित श्री दामोदर शर्मा
झा विरचित। सन्ध्या विषयक सर्वो-
त्तम पुस्तक २)
समूर्तार्चनाधिकरण—(अत्रिसहिता) ६।।)
सरस्वतीविलास—प्रतापरुद्र २।।)
समय मयूख—नीलकंठ २)
सर्वतोभद्र चक्र— ।)
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश—चतुर्थीलाल ४।।)
सर्वपूजा— ।)
सापिण्डय कल्पलतिका वृत्ति— ।।=)
सापिण्डयदीपक— ।=)
सापिण्डीनिर्णयेष्टिका— ।≡)
संकल्प कल्पना—सवसंकल्प ।।।=)
संस्कार—गणपति रामकृष्ण १५)
संस्कारदीपक—३ भाग नित्यानंद १५)
(प्रथम ४) द्वितीय ५।।) तृतीय ५।।)
पृथक-पृथक भी मिलते हैं)
संस्कार पद्धति—भास्करशास्त्री ४।)

संस्कार प्रकाश—चतुर्थीलाल ४।।)
संस्कारभास्कर— ६), ७)
संस्कारमयूख—नीलकंठ १।।)
संस्काररत्नमाला—दो भाग पूना २१।)
संस्कारविधि—स्वा० दयानंद ।।।=)
संस्कारविधि विमर्श—अत्रिदेवगुप्त ३)
स्मार्तप्रभु—विद्याधर गौड़ दो भाग २।।।)
स्मार्तोल्लास— ३ भाग २।।)
संक्षिप्तदीक्षा तुलादान पद्धति =)।।
स्मृति कौस्तुभ—अनंतदेव ५)
स्मृति चन्द्रिका—६ भाग (देवनभट्ट) १३।।।)
स्मृतितत्व—रघुनंदन भट्ट कृत (२८
स्मृतितत्वसंग्रह) जिल्ददार १५)
स्मृति समुच्चय—२७ स्मृति ८।।)
स्मृतिसारोद्धार—विश्वम्भर ६)
स्मृत्यर्थसार—श्रीधराचार्य २।।।)
स्वस्तिवाचन— ≡)
हरदीमातृपूजा— =)
हरिजनस्मृति— ।।)
हारलता—अनिरुद्धभट्ट २।)
हिन्दुधर्मका स्वरूप— ≡)
होमपद्धति— =)
होमपद्धति और निर्णय— ≡)
त्रिशच्छलोकी— ५)
त्रिपिण्डी श्राद्ध पद्धति— ।।=)
त्रिस्थलीसेतु—नारायणभट्ट ६।–)
त्रिस्थलीसेतु प्रघट्टक—नारायण १।)
त्रिस्थलीसेतु—तीर्थेन्दु शेखर—काशी
मोक्ष विचार ।।।)

सब प्रकार की पुस्तकों का बृहत् सूचीपत्र

संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी में छपी सब प्रकार की पुस्तकों का बृहत् सूचीपत्र तैयार हो रहा है। सूचीपत्र से तीनों भाषाओं के सम्पूर्ण और सर्वाङ्गीण साहित्य का परिचय अनायास मिल जायगा। ऐसे बृहत् सूचीपत्र कभी-कभी ही छपते हैं। डाक खर्च के लिए एक रुपये के टिकट मिलने पर सूचीपत्र निशुल्क भेजा जायगा!

इतिहास, पुराण, व्रतकथा, माहात्म्य-ग्रन्थ

अग्निपुराण—बुकसाइज पक्की जिल्द ६॥)
अग्निवेष रामायण—भाषाटीका ॥=)
अद्भुत रामायण—मूल १) भा. टी. २॥)
अध्यात्मरामायण—मूल, गुटका २)
अध्यात्मरामायण—संस्कृतटीका खुला ७)
अध्यात्मरामायण—तीन संस्कृत टीका, बुकसाइज कलकत्ता १५)
अध्यात्मरामायण—भा. टी. गोरखपुर ३)
अध्यात्म रामायण—भाषावार्तिक ५)
अनन्तव्रत कथा—भाषाटीका ॥)
अक्षयनवमीकथा भाषाटीका =)
आवन्ति क्षेत्र माहात्म्य ७)
अष्टादशपुराणदर्पण—भाषा ६)
आत्मरामायण—भाषा १)
आदित्यव्रत कथा—भाषाटीका ≡)
आदि-पुराण—भाषाटीका ४॥)
आनन्दरामायण—मूल १०)
आर्यमंजुश्री मूल कल्प—केवल दूसरा-तीसरा भाग १०)
इतिहासगुल्खालसा—हिन्दी ५)
ऋषिपंचमी—भाषाटीका ।=)
एकादशीमाहात्म्य—मूल १=) केवलभाषा ॥।)
एकादशीमाहात्म्य—भा. टी. खुलापत्रा २॥), ३)
करवाचतुर्थी—भाषाटीका ।)
कल्किपुराण—मूलबुकसाइजजिल्द १॥।)
कल्किपुराण—भाषाटीका ५)
कृष्णजन्माष्टमी— ।=)
कार्तिकमाहात्म्य—भाषाटीका १॥), २), ३)
कार्तिकमाहात्म्य—३५ अध्याय क्षेमकरी ४॥)
कार्तिकशुक्ल रविषष्ठी— ≡)
काशीखण्ड—खुलापत्रा भा. टी. २०)
काशीखंड केवलभाषा बुकसाइज १०)
काशीयात्रा—भाषा सचित्र ॥।=)
काशीपुरी माहात्म्य—पंचक्रोशी माहात्म्य दोहा चौपाई ।≡)
काशीकेदार माहात्म्य—भाषाटीका ३)
केदारकल्प—रुद्रयामलान्तर्गत ३॥)
केदारखण्ड—मूल १०) केवल भाषा १०)
केदारखण्ड—भाषाटीका २०)
कूर्ममहापुराण—मूल, खुलापत्रा ७)
गया माहात्म्य—मूल ॥।=) भा. टी. १॥।)
गर्गसंहिता—मूल खुलापत्रा ११)
गरुड़ पुराण—१६ अध्याय, भा. टी. २), २॥)
गरुड़ पुराण—३४ अध्याय, भा. टी. २)
गरुड़पुराण—संपूर्ण मूल बुकसाइज जिल्ददार कलकत्ता ५)
चंदनषष्ठी सूर्यषष्ठी ।)
चान्द्रायणव्रत कथा—भा. टी. ।)
चित्रगुप्त कथा ≡)
जगन्नाथ माहात्म्य २॥)
जीवितपुत्रिका व्रतकथा भा. टी ≡)
जैमिनी अश्वमेध—मूल ४।) भा. टी. ११)
ज्येष्ठ मास माहात्म्य भा. टी २)
देवीभागवत—भा. टी. खुलापत्रा ६०)
नृसिंहपुराण—मूल बुकसाइज ३॥)
पद्मपुराण—मूल बुकसाइजमें, ४ भाग में संपूर्ण पूना ३३॥)
पद्मपुराण—मूल, खुलापत्रा, बंबई ५०)
पंचकोशीयात्रा— ।–)
पुराण संहिता—आलमंदार संहिता, बृहत्सदाशिवसंहिता, सनत्कुमारसंहिता ६)
पुरुषोत्तममास (अधिकमास) भा. टी. ३)
पौषमाहात्म्य—मूल ॥=)
प्रणवकल्प—सभाष्य १॥)
प्रेमसागर—भाषा, सचित्र २), २॥), ३)४)
प्रेमसुधासागर—भा. सचित्र. गोरखपुर ३॥)
फाल्गुण माहात्म्य—मूल १)
बहुलाव्रत कथा—भाषाटीका ≡)
बुद्धाष्टमी कथा—भाषाटीका ।–)
ब्रह्मवैवर्तपुराण—बुकसाइज, जिल्ददार६॥–)
ब्रह्मवैवर्तपुराण बुकसाइजदोभागपूना १५॥=)
ब्रह्मवैवर्तपुराण—खुलापत्रा, बंबई १८)
ब्रह्मोत्तरखण्ड—भा. टी. ३॥)
ब्रह्माण्डपुराण—खुलापत्रा, मूल १४)
भक्तमाल—नाभाजी, सटीक ३॥)
भक्तमाल—केवल भाषा १०)
भक्तमाल—मूल संस्कृत खुलापत्रा ५)
भागवत—संपूर्ण, मूल, गुटका, गोरखपुर ३)
भागवत—गुटका बंबई निर्णयसागर ६)
भागवत—मोटाअक्षर, मूल, बड़ासाइज, ६)
भागवत—सचूर्णिका संस्कृत टीका, बढ़िया, खुलापत्रा, बंबई ३४)
भागवत—श्रीधरी संस्कृत टीका, खुला पत्रा, काशी २४)
भागवत—भा टी. खुलापत्रा, रामतेज ३२)
भागवत—भा. टी. खुलापत्रा, दौलतराम कृत सरस्वती भा. टी. प्रकाश टिप्पणी, पृष्ठ संख्या १८५० ३३)
भागवत—शालिगराम कृत भा. टी. खुला पत्रा, मोटा अक्षर, बढ़िया कागज, बंबई ५५)
भागवत—भाषाटीका, बुकसाइज, दो भाग, गोरखपुर १५)
भागवत—भा. टी. दोजिल्द, मथुरा २०)
भागवत—भाषाटीका, बुकसाइज, एक जिल्द, काशी १५)
भागवत—सुधासागर—केवलभाषा, ८॥)
भागवत—केवल भाषा, अनेकों रंगीन चित्र, दोभाग, इलाहाबाद १६)
भागवत—दशमस्कंध, भाषा टीका, खुलापत्रा बंबई ११) काशी ८)
भागवत—एकादशस्कन्ध भाषाटीका खुला बंबई ५॥)
भागवत—एकादशस्कन्ध, प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद, २ भाग ६॥)
भारतसार—मूल खुलापत्रा ३॥)
भाद्रपद गणेशचतुर्थी भाषाटीका ≡)
भीष्मपञ्चक व्रत प्रयोग ।)
मंगलागौरीव्रत कथा—भा. टी. ।)
मत्स्यपुराण—बुकसाइज जिल्ददार ६)
मत्स्यपुराण—खुलापत्रा, मूल १४)
मत्स्यपुराण—बुकसाइज, केवल हिन्दी अनुवाद विस्तृत २०)
महाभागवतदेवी पुराण—मूल २)
महाभारत—नीलकंठीसंस्कृत टीका, संपूर्ण ६ जिल्द पूना ५०)
महाभारत—केवल विराटपर्व, ८ संस्कृत टीका बंबई ५)
महाभारत—केवल उद्योग पर्व, ५ संस्कृत टीका बम्बई १०)
महाभारत—हिन्दी टी. सातवलेकर, आदिपर्व ७)
महाभारत—हिन्दी टी. सातवलेकर, सभापर्व ३॥)
महाभारत—हिन्दी टी. सातवलेकर शांतिपर्व पूर्वभाग १०)
महाभारत—केवल हिन्दी भाषा, छोटा टाइप, १० जिल्दों में संपूर्ण २०)
महाभारत—केवल हिन्दी भाषा, संपूर्ण, मोटे अक्षर, अनेकों रंगीन तथा सादे चित्र, बढ़िया कागज, १० बड़ी जिल्दों में ६०)
महाभारत—केवल भाषा संपूर्ण मोटा अक्षर बड़ी २ आठ जिल्द लखनौ ४५)
महाभारत—छोटा, संक्षिप्त, हिन्दी भा. मोटा अक्षर १०) ६)
महाभारत—गुटका, बारीक ४), २)

महाभारत—सबलसिंह चौहान, दोहा-दोहा-चौपाई लखनऊ ८)
महाभारत—सबलसिंह चौहान, बंबई १३॥)
महाभारत—राधेश्यामकी तर्जपर ८)
महाभारतकी समालोचना—सातवलेकर १॥)
महाभारत तात्पर्यप्रकाश—संस्कृत २॥)
महाभारत तात्पर्य-टीका, ज्ञानदीपिका ४)
महाभारत संग्रह— ।=)
महालक्ष्मीव्रत कथा— ।), ॥)
मन्त्ररामायण— २)
मारकण्डेयपुराण—मूल, बुकसाइज ४।)
माघमाहात्म्य—भा. टी. २।), २॥)
माघभादोगणेशचौथ— =)
मुक्ताभरण सप्तमी—भाषाटीका ।)
मुक्ताफल—बोपदेव ६)
मूलरामायण—भा. टी. -)॥, ।=)
मार्गशीर्ष माहात्म्य—मूल ॥=)
युगपुराण— २)
रासपंचाध्यायी—भा. टी. ४॥)
रामाश्वमेध—मूल ४।) भा. टी. ११)
रामाश्वमेध—केवल भाषावार्तिक ४॥)
रविषष्ठि कथा—भा. टी. =)
रामनवमी कथा भाषाटीका ।)
लघुभागवतामृत—रूपगोस्वामीकृत भाषाटीका ४)
ललितासहस्रनाम—सटीक २॥)
लिङ्गपुराण—बुकसाइज, मूल जिल्ददार ७।)
लिङ्गपुराण—खुलापत्रा, बंबई, मोटा १६)
वटसावित्री कथा— ।=)
वामनद्वादशी— =)
वामनपुराण—खुला पत्रा मूल ६)
वामनपुराण—केवल भाषावार्तिक ६)
वायुपुराण—बुकसाइज, मूल ८)
वायुपुराण—खुलापत्रा, मोटाअक्षर १२)
वायुपुराण—केवल भाषा, विस्तृत १२)

वाराहपुराण—खुलापत्रा १३)
वाल्मीकिरामायण, मूल, खुलापत्रा १७)
वाल्मीकिरामायण—गोविन्दराजीय, (भूषण) रामानुजीतनि श्लोकी माहेश्वर तीर्थीयाख्यव्याख्या चतुष्टय सहित खुलापत्रा ६०) तथा बुकसाइज ३ बड़ी जिल्दों में ६०)
वाल्मीकिरामायण—३ संस्कृतटीका सहित संपूर्ण बारीक ३६)
वाल्मीकि रामायण—पं. ज्वालाप्रसाद कृत भा. टी. खुलापत्रा, बंबई ५०)
वाल्मीकि रामायण—भा. टी. बुकसाइज २४)
वाल्मीकिरामायण—भा. टी. बुकसाइज दस भाग में इलाहाबाद २४)
वाल्मीकिरामायण—मूल, छोटा पाकेट-साइज, आठ भाग, अपूर्ण १२॥)
वाल्मीकिरामायण—केवल बालकाण्ड, भा. टी. सातवलेकर ४)
वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. अयोध्याकांड दो भाग ८)

वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. अरण्यकांड ४)
वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. किष्किंधाकांड ४)
वाल्मीकिरामायण—सातवलेकर भा. टी. सुंदरकांड ४)
वाल्मीकिरामायण—केवल भाषा मोटा अक्षर दो जिल्दों में—पं. ज्वाला प्रसादकृत बंबई ३०)
वाल्मीकि रामायण सुन्दरकांड—मूल गुटका २), २॥) खुला मोटा अक्षर ५)
वाल्मीकि—सुन्दरकाण्ड रामतेज भा. टी. ३)
वाल्मीकिरामायण—सुन्दरकांड भा. टी. खुला पत्रा, बंबई ५॥)
वाल्मीकिरामायण—संपूर्ण, केवल भाषा, इलाहाबाद १३)
वाल्मीकि—संपूर्ण केवलभाषा, मथुरा १०)
विष्णुपुराण—बुकसाइज श्रीधर व्याख्या ६)
विष्णुपुराण—खुलापत्रा, सटीक ६)
विष्णुपुराण—भाषाटीका गोरखपुर ४)

छप गई !   छप गई !!

रामभक्तों के विशेष आग्रह पर—असली बंबई की

गोस्वामी तुलसीदास कृत

रामायण

[सम्पूर्ण आठों काण्ड]

विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्र की संजीवनी हिन्दी टीका सहित—अनेकों कथाओं से संयुक्त—नयनाभिराम रंगीन चित्रोंसे सज्जित—ग्लेज कागज—बड़ा साइज—मोटा टाइप—सुनहरी लाल जिल्द + बिल्कुल नया संस्करण ! मूल्य ३४) रुपये—ग्राहकोंको विशेष रियायत से २५) में भेजी जायगी।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण—मूल, खुलापत्रा १८)
वैशाख माहात्म्य—भा. टी. २), ३)
व्यतिपातकथा—भाषाटीका ।)
शनिप्रदोषव्रत—भा. टी. ।)
शिवपुराण—मूल, खुलापत्रा, संपूर्ण १८)
शिवपुराण—केवलभाषा, १०)
शिवभारत—संस्कृत २।)
शिवरात्रि माहात्म्य—भाषा टीका ॥।),
श्रावणमाहात्म्य—भाषाटीका ४)
श्रीसुबोधिनी—श्रीवल्लभाचार्य ४॥)
संकट चतुर्थी संपूर्ण मूल ।=) भा. टी. ॥।), १।)
सत्यनारायण कथा—भा. टी. ५ अध्याय ।-)
सत्यनारायणकथा—भा. टी. ७ अध्याय ॥)
सत्यनारायण कथा— ५ अध्याय वायु 'दन भा' टी. ॥=)
सत्यनारायण—इतिहास, समुच्चय ॥-)
सत्यनारायण—भाषा राधेश्याम ॥)
स्कंदमहापुराण—मूल, संपूर्ण, खुलापत्रा बबई ३००)
सुखसागर (भागवत)—सरलभाषा, मोटाअक्षर सचित्र, लखनऊ २५)
सुखसागर—मोटा अक्षर, मथुरा १६), १२)
सुखसागर—मध्यम, सफेद लखनऊ १३)
सुखसागर—मध्यम, मथुरा ८)
शुकसागर—सरलभाषा, ला. शालिग रामकृत, सफेद कागज, बड़ा साइज, बंबई बढ़िया ३६)
शुकसागर—गुटका, बारीक टाइप १२)
शुकोक्तिसुधासागर (भागवत भाषा) १२)
सोमावती कथा—भाषाटीका ॥)
सौरपुराण—मूल पूना ५)
सावित्री व्रतकथा भाषाटीका ॥)
हरितालिकाव्रत कथा—भा. टी. ।=)
हरिलीला अमृत—बोपदेव १॥)
हरिवंश—संस्कृत टीका, बुकसाइज १२)
हलषष्ठी व्रत कथा भाषा टीका =)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता:— मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं ७५, बनारस।

ज्योतिष-ग्रन्थ

अध्यात्म ज्योतिष—कारवे, भाषा १०)
अद्भुत सागर—श्रीवल्लालसेन, मूल १०)
अवकहडाचक्र—भाषाटीका बड़ा बंबई ।।।=)
" " " छोटा ।-)
" " व्यवहारविवेक-सीताराम ।≡)
अर्घ प्रकाश ज्योतिष—भाषाटीका ।।=)
अर्घमार्तण्ड—पं० मुकुन्दवल्लभजी कृत-भाषा में। तेजीमंदी पर ऐसा ग्रंथ अब तक नहीं छपा। ज्योतिषियों के लिए तो जीवनदाता ही है। १०)
अहिबल चक्र—भाषाटीका ।-)
आर्यभट्टीय—नीलकंठ कृत भाष्य सहित ४।)
आर्यमहोदय—भाषाटीका २।।)
आशुबोध ज्योतिष—संस्कृत ।=)
आर्यासप्तति—भट्टोत्पलकृत सटीक ।।)
उपपतीन्दुशेखर—संस्कृत १०)
करलक्षण—(सामुद्रिक) प्राकृत जैन १)
करण कुतूहल—भास्कराचार्य संस्कृतटीका १।)
करणकौस्तुभ—कृष्णदैवज्ञकृत १)
करणपद्धति—मूल यज्वविरचित ।=)
करणप्रकाश—ब्रह्मदेव संस्कृत १।।)
कर्मविपाक-नक्षत्रचरणगत-भाषाटीका ४।।)
कुण्डलीदर्पण—भाषा १)
केतकी ग्रहगणित सपरिमल भाष्य सहित १५)
केरलप्रश्न संग्रह—भाषा टीका ।।)
केरलीयजातक—भाषाछंदबद्ध ।।)
केवलज्ञानप्रश्न चूडामणि—भाषानुवाद, विस्तृत विवेचन सहित ४)
केशवी जातक—सं. हिं. टीका पं. सीताराम २।।)
केशवीजातक—सान्वयसोदाहरणभाषा टीका बंबई ३।।)
खण्डखाद्यक—ब्रह्मगुप्त कृत तथा पृथूदक स्वा. कृत विवरण भाष्य सहित २।।)
खेट कौतुक—भाषाटीका—खानखाना ।=), ≡)
गणक तरंगिणी—सुधाकर द्विवेदी १।।।)
गणित कौमुदी—नारायण पंडित दो भाग ३।-)
गणित कौमुदी—भाषा काशी २)
गणित का इतिहास—भाषा, सुधाकर २)
गणित मुक्तावलि—संपूर्ण १।)
गणित तिलक—(श्रीपति) सटीक ४)
गणित सोपान—पं० सीताराम ।=)
गर्गमनोरमा—भाषाटीका ≡)।।, ।=)
गर्गजातक—भाषाटीका सहित ।-)
गोल परिभाषा—पं. सीताराम ।), ≡)
गोलाध्याय—मरीचि संस्कृत ४।)
गोलीय रेखागणित—सटीक १।।)
ग्रहगणिताध्याय—वासनाभाष्य शिरोमणि प्रकाश टीकोपेत (भास्कराचार्य) दो भाग पूना ७।-)
ग्रहगोचर—भाषाटीका ।),
ग्रहणफल दर्पण—भाषाटीका १)
ग्रहरत्नभूषण—वास्तु प्रबंध ।।=)
ग्रहलाघवकरण—मल्लारि—विश्वनाथ संस्कृत व्याख्या ७।
ग्रहलाघव—हिन्दीटीका सहित ३।।)
ग्रहलाघव सारणि—बहुत सरल १।।।)
चन्द्रासारिणी—हिन्दी २)
चक्रावलीसंग्रह—संस्कृतटीका ४।।)
चमत्कार चिन्तामणि—भाषा टीका ।।), ।।-)
चलन-कलन—१-६ अध्याय सुधाकर २।।)
चलन-कलन प्रश्नोत्तर विवरण ।।।)
चलराशिकलन—सुधाकर द्विवेदी विरचित दो भाग १।-)
चापीयत्रिकोण गणित—सटीक १।।)
जन्मपत्र व्यवस्था—भाषा टीका ।।)
जन्मपत्रिका विधान—संस्कृत टीका १।।)
जन्मपत्र निर्माण करने के कुण्डली फार्म ५) रु० सैंकडा
जन्मपत्र दीपक—सोदाहरण भाषा टीका १।)
जातकालंकार—सं. हिन्दी टीका ।।=, १)
जातकतत्व—भाषा टीका रतलाम ६।।)
जातक पारिजात—सं. हिन्दी टीका सहित रफ १०) ग्लेज १२)
जातकशिरोमणि—भाषाटीका ३।।)
जातकसंग्रह—मूल १।।) भाषाटीका ५)
जातक सान्दीप—नृसिंह विरचित— १४)
जातकाभरण—भाषाटीका, काशी ५), ७)
जैमिनी पद्यामृत—मूलकन्दली वृत्ति कारिका सहित १।।)
जैमिनीसूत्र—सं. हिन्दी टीका सोदाहरण, सीताराम १।।)
जैमिनीसूत्र—विमला सं. हिं. टीका २)
ज्योतिषसर्वसंग्रह—भाषाटीका २)
ज्योतिष चन्द्रार्क—संस्कृत पूर्वखंड ३।
ज्योतिष चमत्कार—भाषा बद्रीप्रसाद ३।।=)
ज्योतिष श्यामसंग्रह—भाषाटीका ७)
ज्योतिष तत्वविवेक—भाषाटीका २।।)
ज्योतिषतत्व सुधार्णव—भाषाटीका ७)
ज्योतिष कल्पद्रुम—भाषा म. ईश्वरीसिंह २।।=)
ज्योतिषसार—भाषाटीका बंबई ३।।)
ज्योतिर्निबंध—शिवराज कृत मूल ६।।।)
ज्योतिषवेदांग—सुधाकर भाष्य १।।।)
ज्योतिर्विवेकरत्नाकर—लक्ष्मीप्रसाद ६)
तत्वप्रदीप जातक भाषाटीका ।)
ताजिक नीलकण्ठी—संस्कृत टीका २।), २)
ताजिक नीलकण्ठी—सं. हिन्दी टीका सोदाहरण, सीताराम ३।।)
ताजिक नीलकण्ठी—संस्कृत तथा भाषा टीका जलदगर्जन ४।।)
ताजिक नीलकण्ठी—भाषाटीका बंबई ४)
ताजिकभूषण—भाषाटीका १)
ताजिकसंग्रह—भाषाटीका ।।।)
तिथिचिन्तामणि—(गणेश) भाषाटीका ।।)
तिलविचार—भाषा, रतलाम १)
तेजीमंदीविचार रतलाम भाषा १।।)
दीपिका या शुद्धि दीपिका—भाषाटीका १।।)
दैवज्ञवल्लभ—भाषाटीका ।।।=)
दीर्घवृतलक्षण—सुधाकर द्विवेदी १।।)
देवकेरल—मूल चन्द्रकलानाडी प्राचीन ११।)
दशाफल दर्पण—रतलाम संस्कृत ४)
दैवज्ञ कामधेनु—संस्कृत ४।।)
द्वात्रिंशद्योगावली—संस्कृत =)
द्विरागमनव्यवस्था ।=)
दशवर्षीय पंचांग—२००५ से २०१४ ५।।)
दशवर्षीय पंचांग—२०११ से २०२० ६)
धराचक्र—भाषाटीका ≡), ।-)
धराभ्रम—सटीक सुधाकर द्विवेदी ।।)
नरपतिजय चर्या—सटीक संपूर्ण ४।)
नरपतिजयचर्या—स्वरोदयाध्याय १।)
नन्हिदत्तपंचविंशतिका भा. टी =)
नारदसंहिता—भा. टी. सहित ३।।)
नष्टजन्मांगदीपिका और पंचांगदीपिका ।≡)
निधि-प्रदीप—संस्कृत ।=)
नेपच्यून—भाषा रतलाम ।।)
परमसिद्धांत ज्योतिष—प्रेमवल्लभ मूल ७)
परीक्षा चक्रावली—भाषाटीका ।≡)
पल्लीपतन—भाषाटीका ≡)
पद्मीमार्गप्रदीपिका और वर्षदीपक भाषाटीका २।।)
प्रश्नशिरोमणि—भाषाटीका ३।।)
पद्मकोष—भाषाटीका ।=)
प्रतिभाबोधक—पं. गंगाधर सटीक ।।)
प्रश्नांक चूडामणि—ध्वजादि प्रश्न =)
प्रस्तारचक्र—भाषाटीका =)
पंचस्वरा—सुबोधिनीटीका १।।।)
पंचपक्षी—सं., भाषाटीका सहित ।।।=)
पंचांगविज्ञान—भाषाटीका सहित ।=)
परवलय क्षेत्र—मुरलीधर ठक्कुर ।।)
प्रश्नवैष्णव—मूल ।।) भाषाटीका १।।)
प्रश्नपयोनिधि भाषाटीका ≡)
पंचांगपद्धति ।=)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

पंचांगमंजूषा—भाषाटीका ।।।)
प्रश्नभूषण—भाषाटीका ।।।), ।।।=)
पंचांगदर्पण—बंगला २)
परीक्षाविचार—रतलाम =)
फलितसंग्रह—भाषाटीका रामयत्न १।)
फलितप्रकाश—पं. मातृकाप्रसाद भा.टी. २)
फलदीपिका—संस्कृत ५)
बालबोध ज्योतिष—भाषाटीका १।।)
बृहज्जातक—दशाध्यायी नौकाटीका २।।)
बृहज्जातक—सं. हिन्दी टीका सोदाहरण, सीताराम ३।।) विमला हिन्दी ४) तथा भाषाटीका बम्बई ४)
बृहत्पाराशर होरा—पूर्वभाग मूल, उत्तरभाग भाषाटीका सहित, बंबई १६)
बृहत्पाराशरहोरा—पं. सीतारामकृत भाषाटीका, संपूर्ण रफ १२) ग्लेज १५)
बृहद्वकहडाचक्र—भाषाटीका बंबई ।।।=)
बृहद्दैवज्ञरंजन—संस्कृत ५।)
बृहत्सिद्धखेटी १।।)
बृहत् ज्योतिषसार—भाषाटीका ४), २।।)
बीजगणित—भाषाटीका, लखनऊ २।।)
बीजगणित—संस्कृत-हिन्दीटीका ५)
बीजगणित—सटीक, पूना ३।=)
बृहद्होडाचक्रविवरण—भाषा टीका ।)
बीजवासना—गंगाधर ।।=)
बृहद् वास्तुमाला—भाषाटीका २)
बृहत्संहिता (वाराही संहिता) मूल ३) भाषाटीका ६)
भद्रबाहुसंहिता—जैनग्रंथ मूल ५।।।)
भारतीय ज्योतिष—भाषा, नेमिचन्द्रजैन ६)
भृगुसंहिता—योगावलीखंड, संस्कृत ५।)
भार्गवनाडिका—मूल प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ पहली बार छपा है ६)
भाभ्रमबोध—दयानंद ।।)
भाभ्रम रेखानिरूपण—सुधाकर ।।)
भावप्रकाश ज्योतिष भाषाटीकासहित १।)
भावकलाध्याय—भाषाटीका १)

भाव कुतूहल—भाषाटीका ३)
भाग्यरहस्य—भाषा १=)
भविष्यफल संवत् २०११ बंबई का १।।)
भृगुसंहितापद्धति—सरलभाषामें । श्रीभगवानदास ज्योतिषी ने हर कुण्डली का फलादेश भृगु संहितावत प्रत्यक्ष कर दिखाया है। नवग्रह-जन्मांग कुण्डली १२९६ संख्या १०)
भृगुसंहिता संपूर्ण ११ खंड मेरठवाली ५०)
महाभास्करीय—संस्कृत २=)
मनुष्यजातक—संस्कृत टीका सहित २)
मयूरचित्रक—मूल (वराहमिहराचार्य) ।=)
मुहूर्तप्रकाश—भाषाटीका पं. चतुर्थीलाल ४।।)
मुहूर्तदीपक—संस्कृत टीका सहित ।=)
मुहूर्त मंजरी—भाषा टीका ।।=)
मुहूर्तकल्पद्रुम—संस्कृत विट्ठल दीक्षित ।।।)
मुहूर्तगणपति भाषाटीका सहित ८)
मुहूर्तचिन्तामणि—पीयूषधारा सं. व्याख्या ५)
मुहूर्त चिन्तामणि—प्रमिताक्षरा सं.टीका ३)
मुहूर्त चिन्तामणि—भा. टी. २।।), ३)
महासिद्धांत—आर्यभट्ट मूल ४।।)
मुहूर्तमार्तण्ड—सं. हिन्दी टीका २।।), ३)
मानसागरी—भाषाटीका सहित ७), ६)
मानसप्रश्नदीपिका—भाषा ।=)
महावीर प्रश्नावली—भाषा -)।।
योगिनी जातक—भाषाटीका ।-)
यवनजातक—मूल ।)
यंत्रराज-यंत्रशिरोमणि—महेन्द्रकृत २)
रमलशास्त्र—भाषा, बेचनपांडे २।।)
रमल-रहस्य—संस्कृत ६)
रमलनवरत्न—भाषाटीका २)
रमलमार्तण्ड—सरल हिन्दी भाषा ।।=)
रत्नद्योत—भाषाटीका ।।=, ।।।)
रत्नपरीक्षा—भाषा =)
रणदीपिका—मूल ।=)
रावसिद्धांतमंजरी—संस्कृत ।।।)
रत्नदीपरत्नशास्त्र—संस्कृत २।)

रत्नगर्भाचक्र =)
रेखागणित—११-१२ अध्याय १।।)
रेखागणित—५-६ ठा अध्याय ।=)
राशीमाला—भाषा =)
रेखागणित—संपूर्ण दो भाग २१)
लघुभास्करीय—संस्कृत २=)
लघुमानस—संस्कृत ।।=)
लघुमानस—कलकत्ता ५)
लीलावती—सटीक मुरलीधर ठाकुर ३)
लीलावती—सटीक पूना ४।।)
लीलावती—भाषाटीका २।।)
लग्नचंद्रिका—भाषाटीका २)
लग्नजातक—भाषाटीका ।=)
लग्नप्रदीप प्रथमभाग ।-)
लग्नरत्नाकर—भाषाटीका ।=)
लग्नवाराही— =)
लघुजातक—सं. हिं. टी. सीताराम १।।)
लघुजातक—भाषाटीका सहित बंबई १)
लग्नसारिणी समुच्चय—चिमनलाल २)
लघुपराशरी, मध्यपराशरी—भाषा टी. १।)
लघुपाराशरी—पं. रामेश्वरभट्ट भा.टी. ।।-)
लघुसंग्रह—भाषाटीका सहित १।।)
वास्तवचन्द्र शृंगोन्नति—संस्कृतटीका १।।)
वर्षपद्धति—मूलसंस्कृत २)
वर्षदीपक पत्रीमार्गप्रदीपिका—पं. श्रीनिवासकृत सरल भाषाटीका तथा उदाहरण ३)
विश्वहितम् १)
विद्यामाध्वीय (मुहूर्तदीपिका) ३भाग ५।।)
वृद्धसूर्यार्णवकर्मविपाक—मूल संस्कृत १२)
वरवधू नक्षत्र मेलापक—पं. श्रीनिवास ३।)
वनमाला—भाषाटीका जीवनाथ ।)
वास्तुरत्नावली—संस्कृत-हिन्दीटीका २।।)
विवाह वृन्दावन—संस्कृत-हिन्दीटीका २।।)
विवाह वृन्दावन—भाषाटीका बंबई ३।।)
वसन्तराजशकुन—सं. तथा भा. टी. ६)
वशिष्ठ संहिता—वृद्धवासिष्ठकृतमूल ३।।)

वृन्दावली—भाषाटीका ।।)
विश्वकर्मा प्रकाश (शिल्पशास्त्र)—भाषा टीका खुलापत्रा ३।।)
वास्तुराजवल्लभ—भाषाटीका २)
वास्तुसारणी—भाषाटीका ३)
वास्तुप्रबन्ध—भाषाटीकासहित ।।=)
वास्तुमाणिक्यरत्नाकर—भाषाटीका २।)
षट्पंचाशिका—भाषाटीका ।=), ।।)
शीघ्रबोध—भाषाटीका ।।।)
शिशुबोध—भाषाटीका ।।=)
शिवजातक—भाषाटीका =)
शकुनविचार— =)
शनिविचार—रतलाम ।।।)
शम्भुहोराप्रकाश—भाषाटीका ४।।)
समरसार—संस्कृत टीका, भाषाटीका १।।।)
सर्वसंग्रह—भाषाटीका सहित ४।।)
सिद्धांतदैवज्ञविनोद—सं. तथा भा.टी. ५।)
सूर्यसिद्धांत—संस्कृतहिन्दी दो टीका ५।)
सूर्यसिद्धांत—तत्वामृतभाष्य ४।)
संकेतनिधि—भाषाटीका ३।।)
संवत्सरनिर्णय—अर्घकाण्ड सहित ।।।=)
स्कान्दशरीर—सामुद्रिक, संस्कृत २।।=)
संग्राम विजय—संस्कृत २।=)
सूर्यसारणी— २)
सर्वतोभद्र—भाषाटीका १)
सर्वार्थचिन्तामणि—मूलमात्र खुला १।।।)
संतति समयविचार—रतलाम १)
स्त्रीजातक—वृद्धयवनोक्त भाषाटीका ।।।=)
स्त्रीजातक—भाषाटीका पं. सीताराम १।)
स्वप्न प्रकाशिका—भाषाटीका ।-)
स्वप्नाध्याय—भाषाटीका =)
सिद्धांतयोगाकर—भाषाटीका ।=)
सामुद्रिक—भाषाटीका ।।)
सामुद्रिक शास्त्र—राधाकृष्णकृत भाषा. टीका, बंबई ३।।)
सामुद्रिक कुञ्चिका— ।।=)
सामुद्रिक दर्पण— ।।।)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

सामुद्रिकरहस्य—भाषाटीका ३)
सामुद्रिकदीपिका—दोभाग, सचित्र ११)
सिद्धांतशिरोमणि—वासनाभाष्यसंपूर्ण ६)
सिद्धांतशिरोमणि—नवीन वैज्ञानिक उपपत्ति टीका सहित पं. मुरलीधर, स्पष्टाधिकारान्त ५)
सिद्धांतशिरोमणि—गणिताध्याय, भाषा टीका लखनऊ २॥)
सिद्धांतशिरोमणि—गोलाध्याय, भा.टी. २)
सिद्धांत तत्वविवेक—दोभाग ७)
सिद्धांतशेखर—श्रीपति, सटीक दो भाग २२॥)
सारावली—मूल २॥) भाषाटीका ६),८)
सरल त्रिकोणमिति—बापुदेव ४॥)
सरलरेखागणित—१-२ अध्याय १)
हर्षल—भाषा रतलाम ॥)
हनुमानज्योतिष— ॥)
हायनरत्नमूल—खुलापत्रा ३॥)
हायनबोध—भाषाटीका ॥-)
हायनफलरत्न—भाषाटीका ॥।)
होराशास्त्र—वाराहमिहिर, (१-१०) प्रथम भाग १२)
हरिहरचतुरंग—मूल संस्कृत ६॥)
हस्तपरीक्षा—भाषा, रतलाम (हिन्दी पामिस्ट्री) ६॥)

श्री वेंकटेश बापूजी केतकर विरचित दुर्लभ ग्रन्थ

केतकी पंचांग के प्रवर्तक श्रीवेंकटेश बापूजी केतकरने अपनी प्रकांड प्रतिभा से भारतीय ज्योतिर्गणित को आधुनिक और प्रभावशाली स्वरूप में उपस्थित किया था। उनके अमूल्य ग्रन्थ ऐसे अप्राप्य हो गये थे कि लोग इधर-उधर पुरानी प्रतियों की खोज करने लगे थे। प्रसन्नता की बात है कि बापूजी के सुयोग्य पुत्र दत्तात्रेय वेंकटेश केतकर ने भारी धनराशि व्यय करके उन सब ग्रंथों को, संशोधन परिवर्धन करके फिर प्रकाशित करवा दिया है जिससे वेंकटेश बापूजी केतकर के दुर्लभ ग्रंथ सुलभ हो गये हैं।

ज्योतिर्गणितम्—श्रीवेंकटेश रामकृष्णकेतकरैर्विरचितम्। स्वकृत व्याख्योदाहरण-कोष्टकादिभिः समलंकृतम्। सहसंशोधकः—श्री दत्तात्रेय वेंकटेश केतकर: बी. ए.बी. टी.। मूल्य ३०)

केतकीग्रहगणितम्—केतकरोपाह्व श्रीरामकृष्णसूनुर्श्रीवेंकटेश विरचितम्। स्वकृतया अंकविवृतिव्याख्यया सहितम्। सपरिशिष्टं। श्री वेंकटेशतनय श्री दत्तराज-विरचितेन केतकीपरिमलेन वासनाभाष्येण समुल्लसितम्। मूल्य १५)

वैजयन्तीनाम पंचांगगणितम्—सूक्ष्मतिथ्यादि-साधकम्। सोदाहरणम्। मू० ५)

सौरार्यब्राह्मपक्षीय-तिथिगणितम् मूल्य ४)

शास्त्रशुद्ध पंचांग—अयनांश-निर्णयः—तथा च केतकीग्रहगणितभाष्यदिग्दर्शनिका। श्रीवेंकटेशस्वीकृततत्वानुसारम् तत्तनय श्री दत्तराज विरचितः। मू० २)

गोलद्वयप्रश्नविमर्श—(आकर्षणशास्त्र) श्रीवेंकटेश बापूजी केतकर रचित (मराठी) मूल्य १०)

नक्षत्र-विज्ञान—लेखक वेंकटेश बापूजी केतकर। (मराठी) मूल्य ४)

विद्यार्थी वर्ग के कठोरतम परिश्रम को सरलतम कर देने वाले
शत प्रतिशत सफलता दायक, हमारे निजी संस्कृत प्रकाशन

वैयाकरण सिद्धान्त-कौमुदी

श्री भट्टवासुदेव दीक्षित प्रणीत बालमनोरमा तथा श्री ज्ञानेन्द्र सरस्वती विरचित तत्वबोधिनी—दो सरल तथा सुविस्तृत प्राचीन संस्कृत टीकाओं सहित।

व्याकरण के दिग्गज विद्वान महामहोपाध्याय पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी तथा महामहोपाध्याय प्रिंसिपल परमेश्वरानंद शर्मा द्वारा संशोधित।

सिद्धान्तकौमुदी जैसे कठिन ग्रन्थ को समझने के लिये यह दोनों व्याख्या नितान्त आव-
श्यक हैं। इन दोनों टीकाओं के सहारे छात्र इस दुरूह ग्रन्थ को अनायास ही स्वयं लगा
सकते हैं। इसलिये सब छात्रवर्ग से हमारा सप्रेम अनुरोध है कि अगर परीक्षा में उत्तीर्ण
होना चाहते हैं तो उपर्युक्त बालमनोरमातत्त्वबोधिनी दोनों टीकाओंवाले संस्करण को ही
उपयोग में लावें ताकि अनायास ही उत्तीर्ण हो जावें। प्रथमखण्ड (कारकान्तभाग) ६२०
पृष्ठों का मूल्य ४) द्वितीय खण्ड (समास प्रभृति तद्धितप्रकरणान्त) ६१८ पृष्ठों का मूल्य
४) पूर्वार्द्ध दोनों खण्डों में समाप्त है। उत्तरार्द्धका तृतीय खण्ड (भ्वादि प्रभृति लकारार्थ
प्रकरणान्त) ६१८ पृष्ठों का मूल्य ४) चौथा खण्ड ४) संपूर्ण पुस्तक दो पक्की जिल्द १८) रु.।

लघुसिद्धान्तकौमुदी

टीकाकार—पं० श्री विश्वनाथशास्त्री 'प्रभाकर' प्रिंसिपल, सरस्वती संस्कृत कालिज
खन्ना। (१) ह्रस्वदीर्घप्लुत भेदों के चक्र (२) आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों के दो चित्र
(३) प्रयोगों का सन्धिविच्छेद (४) प्रयोगों की सिद्धि का प्रकार (५) सूत्रविषयक सुभा-
षितों का उल्लेख (६) अकर्मक और सकर्मक धातुओं का निर्णय (७) कर्ता और कर्म आदि
का उक्त और अनुक्त का विचार (८) कोष्ठक में प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष का विचार
(९) चित्र में परस्मैपद और आत्मनेपद की व्यवस्था (१०) चक्र में धातुओं के अनुबन्ध की
इत्संज्ञा का फल (११) धातुओं के मूल में न दिये गये रूपों के विशेष उच्चारण और उनकी
सिद्धि (१२) इनके अतिरिक्त परिशिष्ट में (१३) लघुलिङ्गानुशासन (१४) व्याकरण,
सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य और व्याख्यान के सोदाहरण लक्षण दिये गये हैं (१५) व्याकरण के
चार अनुबन्ध, पांच सन्धियों का विवरण (१६) लेखोपयोगी नियम और चिह्न (१७)
अशुद्धि संशोधन (१८) उपसर्ग साथ लग जाने से धातुओं का अर्थ भेद (१९) लघुकौमुदी
में आए हुए समस्त प्रयोगों का संग्रह तथा उनका भाषा में अर्थ (२०) अव्यय, धातुपाठ में
हिन्दी भाषा में अर्थ। इस आवृत्ति में भाषा टीका भी दे दी है। काशी, बिहार तथा पंजाब
की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी साथ हैं। उपर्युक्त विशेषताओं से ही आप अनुभव करेंगे
कि पुस्तक छात्रों के लिये कितनी उपयोगी हो सकती है। मोटा अक्षर। ग्लेज कागज।
मूल्य २)
छठा संस्करण

लघुसिद्धान्तकौमुदी

सुप्रसिद्ध टीकाकार **व्याकरणाचार्य श्री प० श्रीधरानन्दजी शास्त्री** विरचित अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित। सब रूपसिद्धि इसमें दी है। अनुवाद इतना सरल है कि बिना गुरु के ही छात्र समझ सकते हैं। संपूर्ण पुस्तक १००० पृष्ठों में समाप्त हुई है। मूल्य ७)

आदर्श लघुकौमुदी

सिद्धहस्त लेखक **म. म. पं० मथुराप्रसाद जी दीक्षित** विरचित। पंडितजी ने लघुकौमदी को इतना सरल कर दिया है कि देखते ही बनता है। अब इस लघु कौमुदी से ऋजुमति-छात्र एक साल में ही व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर प्रतिभासम्पन्न बन सकते हैं। मूल्य १॥)

संस्कृत व्याकरण का मानचित्र

लेखक—**प्रो० धर्मेन्द्रनाथशास्त्री तर्कशिरोमणि एम० ए०, एम० ओ० एल०**। प्रोफेसर साहिब ने अपने जीवन पर्यन्त अध्ययन तथा अध्यापन के निचोड़ से विलक्षण प्रकार का यह मानचित्र तैयार किया है। उनका दावा है कि इस मानचित्र को याद कर लेने से संस्कृत का बोध हो जाता है। वह इसी मानचित्र द्वारा अपने छात्रों को पठन-पाठन सफलतापूर्वक करवा रहे हैं। हर संस्कृत सीखनेवाले को इसे अवश्य अपने पास रखना चाहिये। मूल्य १)

प्रारम्भिक-पाणिनीय

सम्पादक—**प० विश्वनाथ शास्त्री**। पण्डितजी ने लघुकौमुदी को "परम लघुकौमुदी" के रूप में सम्पादन कर छात्रों का परम कल्याण साधन किया है। इसके अध्ययन से शास्त्रान्तर के शिक्षार्थी भी स्वल्प समय में व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य १)

सुगम-संस्कृतव्याकरण

लेखक—**आनन्दस्वरूप गुप्त, एम० ए०**। यह पुस्तक स्कूलों तथा कालेजों दोनों प्रकार के छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर लिखी गई है। इसमें उत्तरप्रदेशीय शिक्षा-बोर्ड द्वारा हाई-स्कूल तथा इंटरमीडिएट परीक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम का पूर्णरूप से अनुसरण किया गया है। उपर्युक्त पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित सभी शब्दरूप तथा धातुरूप एवं आवश्यक बातें इस पुस्तक में दिये हुए हैं। मूल्य २॥) रु०

संस्कृत व्याकरणसार

प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम० ए० कृत। हिन्दी भाषा द्वारा संस्कृत सीखने के लिये उच्च कक्षाओं के लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ६)

अनुवाद-चन्द्रिका

लेखक—प० चक्राधर 'हंस' नौटियाल, एम० ए० एल० टी० शास्त्री

यह पुस्तक हाई स्कूल तथा इंटरमीडियेट कक्षाओं के छात्रों को सरल तथा वैज्ञानिक ढंग से संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सिखाने के उद्देश्य से लिखी गई है। इसमें बहुत ही सरल पद्धति द्वारा अनुवाद के मूलभूत नियमों का विवेचन किया गया है। व्याकरण तथा अनुवाद दोनों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होने से इस पुस्तक में व्याकरण के नियमों का भी रोचक वर्णन है। आवश्यक शब्द-रूप तथा धातु-रूप भी साथ में दिये हुए हैं। जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। प्रत्येक पाठ के साथ अनुवादोपयोगी शब्दावली दी हुई है। संस्कृत भाषा से हिन्दी भाषा के अनुवाद करने के लिए संस्कृत-साहित्य से बहुत ही उत्तम तथा उपयुक्त अंशों का संकलन किया गया है जिनके अनुशीलन से विद्यार्थियों को शुद्ध तथा आकृष्ट शैली में संस्कृत लिखने का अभ्यास हो सकता है। पुस्तक के अन्त में यू० पी० तथा पंजाब की परीक्षाओं के अनुवाद सम्बन्धी प्रश्नपत्र भी दिये गये हैं, और अन्त में उपयोगी टिप्पणियाँ जोड़ कर पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपादेय बना दिया गया है। आशा है विद्यार्थीगण इससे अवश्य ही लाभ उठायेंगे। नवां संस्करण, मूल्य २)

अनुवादकला

श्री चारुदेवशास्त्री एम० ए० एम० ओ० एल० अध्यक्ष-संस्कृत विभाग, श्री दयानन्द कालेज, अम्बाला द्वारा प्रणीत 'अनुवाद-कला अथवा वाग्व्यवहारादर्श' में अनुवाद-कला को सरल और सुगम बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है—जो अध्यापकों एवं शिक्षार्थियों—दोनों के लिये परम उपयोगी और व्यावहारिक है। विशारद, मध्यमा, शास्त्री आदि उच्च परीक्षाओं के लिए कोई बढ़िया अनुवाद की पुस्तक नहीं थी। यह पुस्तक इन्हीं परीक्षार्थियों के लिये लिखी गई है। ऐसी उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन से अनुवाद-कला की एक बड़ी कमी की पूर्ति हो गई है। इतना होने पर भी मूल्य २॥) है।

संस्कृतानुवाद-निबन्धादर्शः

लेखक—**पूर्णानन्द आचार्य**। यह पुस्तक हाईस्कूल तथा इण्टर के छात्रों के लिये लिखी गई है। इसमें अनुवाद सीखने के वैज्ञानिक तथा सरल तरीके बताये गये हैं और निबन्धोपयोगी बातों के साथ २ परीक्षाओं में आनेवाले प्रश्नों के ऊपर सरल शब्दों में निबन्ध लिखकर दिखाये गये हैं जो छात्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इस पुस्तक के प्रकाशन से शिक्षा-जगत की एक कमी पूरी हो गई है। मूल्य १॥) मात्र

बालनिबन्धादर्श

सम्पादक—**पं० विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर**। लेखक ने प्रथम परीक्षोपयोगी लेखों से युक्त इस पुस्तक का सम्पादन कर परीक्षार्थी सुकुमारमति बालकों के लिए बड़ी उदारता दिखाई है। निबन्ध किस प्रकार लिखना चाहिए, निबन्ध लिखने के समय किन-किन बातों की अपेक्षा होती है, आदि विषयों की भूमिका लिखकर सोने में सुगन्ध भर दी है। मूल्य १॥)

आदर्शप्रस्ताव-रत्नमाला

सम्पादक—**पं० श्रीविश्वनाथशास्त्री प्रभाकर**। यह बात सर्वमान्य है कि भारतीयों की उन्नति करनेवाली यदि कोई भाषा है तो वह है एकमात्र संस्कृत। जो विदेशी शासनकाल में एकदम कुचली जाकर "मृतभाषा" कहलाने लगी थी। किन्तु आज भारतीय शासन होते ही चारों तरफ से संस्कृत को ऊपर उठाने की चेष्टा की जा रही है और प्रत्येक परीक्षाधिकारी अपनी अपनी नियमावली में संस्कृत को स्थान दे रहे हैं।

आज शताब्दियों से इसकी पाठ्य प्रणाली में परिवर्त्तन हो जाने के कारण इसके सेवक अत्यन्त दीनदशा को प्राप्त हो चुके हैं किन्तु आज की सरकार उनकी स्थिति सुधारकर उनमें व्यावहारिकता लाने के लिये कटिबद्ध है। वह व्यावहारिकता अध्ययन के साथ बगैर लेखन कलाके आने की नहीं। अतः यह पुस्तक उन्हीं संस्कृत के अध्ययनशील छात्रों की लेखनकला बढ़ाने के लिये लिखी गई है।

इस पुस्तक में लगभग १०० निबन्ध (प्रस्ताव) भिन्न-भिन्न लेखकों के संगृहीत हैं, जो धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक विषयों लेकर सरल, सुबोध और प्राञ्जल भाषा में लिखे गये हैं। यद्यपि दो चार प्रस्ताव, निबन्ध की पुस्तकें, प्रकाशित हो चुकी हैं किन्तु जिस प्रकार के अपेक्षित लेखों का संकलन इस पुस्तक में हुआ है वैसा अन्यत्र देखने में नहीं आता, जो आज के युग में अत्यन्त आवश्यक है। अतः इसकी प्रति प्रत्येक संस्कृत प्रेमी छात्र को अपने पास अवश्य रखनी चाहिये। उत्तम कागज, स्वच्छ छपाई के साथ लगभग ४५० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ४) रु० मात्र रखा गया है।

मेघदूत

संजीवनी तथा गवेषणात्मक हिन्दी टीकाओं से सुशोभित।

व्याख्याता—**संसारचन्द्र एम०ए०**। यद्यपि मेघदूत पर अनेकों टीकायें निकली हैं किन्तु प्रस्तुत टीका गूढ़ रहस्यों को बताने वाली अन्वेषणात्मक विवेचनाओं से युक्त छात्र-मनोहारिणी परीक्षोपयोगी निकली है जिसे देखकर विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। आज ही अपनी कापी सुरक्षित कर लें अन्यथा संस्करणान्तर की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, मूल्य पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध ५)

हितोपदेश (मित्रलाभ)

टीकाकार—**प० विश्वनाथ झा व्याकरणाचार्य**। यह पुस्तक उन कोमलबुद्धि बालकों के लिये लिखी गई है जिन्हें प्रथमा परीक्षा देनी है। इसमें प्रत्येक पद की सरल शब्दों में व्याख्या, कठिन पदों का समास, विग्रह, कोश आदि दिखाये गये हैं। प्रत्येक अनुच्छेद तथा प्रत्येक श्लोक का अन्वय एवं व्याख्या अलग अलग दिये हैं जिससे परीक्षार्थी अनायास ही इसे तैयार कर सकते हैं प्रथमापरीक्षार्थियों से हमारा अनुरोध है कि वे इसकी प्रति अवश्य मंगा कर लाभ उठावें। मूल्य १) मात्र।

न्याय–सिद्धान्तमुक्तावली प्रश्नोत्तरी

विद्वान लेखक ने इस प्रश्नोत्तरी को लिखकर मुक्तावली को मानो वास्तव में छात्रों के लिये 'मुक्तावली' बना दिया है। छात्रोपयोगी हर एक प्रश्न जो परीक्षा में पूछे जा सकते हैं सब उत्तर सहित सुबोध और सरल भाषा में दिये हैं। मूल्य १॥)

साहित्यदर्पण-प्रश्नोत्तरी

साहित्यदर्पण के जितने भी प्रश्न परीक्षा में पूछे जा सकते हैं वे सब इसमें उत्तरसहित दिये गये हैं। साहित्यिक छात्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। पहला संस्करण तो हाथों हाथ ही बिक गया है। अब नया संस्करण छपा है। मूल्य १)

भारत-विजय

लेखक—**म० म० मथुराप्रसाद दीक्षित**। इसके लेखक से तथा इनकी लेखनी से आप स्वयं परिचित हैं। भारत विजय में आपने कम्पनी के समय इस देववन्द्यभू पर किये गये अत्याचारों का अनूठा वर्णन किया है। मूल्य २॥) मात्र।

संस्कृत रत्नावली

श्री मुकुन्द शास्त्री खिस्ते साहित्याचार्य तथा **श्री चन्द्रकान्त शास्त्री बी० ए०** द्वारा सम्पादित। उत्तरप्रदेशीय हाईस्कूल परीक्षा के लिये अनिवार्य संस्कृत पुस्तक। बहुत रोचक है। मूल्य १॥)

संस्कृतरत्नावली—प्रवेशिका

ले०—**प्रो० आनन्द स्वरूप गुप्त, एम० ए०**। इस पुस्तक को लेखक ने सभी तरह से छात्रोपयोगी बना कर वास्तव में पुस्तक का नाम सार्थक रखा है। संस्कृत रत्नावली में आये हुए पाठों का परिचय, कठिन शब्दों के सन्धि-विग्रह, समास, शब्दार्थ, व्युत्पत्तितया रूप एवं श्लोकों के भावार्थ आदि देकर सोने में सुगन्ध पैदा कर दी है। मूल्य ३)

आर्यविद्यासुधाकरः।

प्राचीनार्वाचीनार्यजनसंपादितानां विविधविद्यानीतिधर्मादिविचाराणां विज्ञानस्य प्रकाशकः सुरतपत्तननिवासिना महाराष्ट्राभिजनेन **चिमण भट्ट** सूनुना **भट्टयज्ञेश्वरशर्मणा** विरचितः। स चायं महामहोपाध्याय श्री पं० शिवदत्तकृत टिप्पणीभिः नूतनटिप्पणीभिश्च काशिकराजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयस्याध्यक्षपदमधितिष्ठता **डाक्टर श्रीमङ्गलदेव शास्त्री एम० ए० डी० फिल (आक्सफोर्ड)** इत्येतेन सपरिश्रमं संशोध्य सम्पादितः। तृतीयं संस्करणम्। १०) रु०

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—**मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तकविक्रेता, नैपाली खपरा, पो० बक्स नं० ७५, बनारस**

हिन्दी साहित्य और परीक्षाओं के अध्ययनमें पूर्ण सहायक पुस्तकें

हिन्दी काव्यशैली का विकास

ले० डा० श्री हरदेव बाहरी एम० ए० पी० एच० डी०

इस उपादेय ग्रंथ में विषय प्रतिपादन, भावाभिव्यक्ति, काव्य की टेकनीक, भाषा-प्रयोग, छंद-योजना और अलंकार विधान आदि की दृष्टि से हिन्दी की काव्यशैलियों के इतिहास का विवेचन किया गया है; शैलियां उदाहरणों द्वारा भी समझाई गई हैं।

ग्रंथ कई वर्ष तक पंजाब विश्वविद्यालय में पाठ्यग्रंथ रहा है। अबतक इसके कई संस्करण हो चुके हैं। मूल्य ४)

ब्रजभाषा की विभूतियां

ले० प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा, एम० ए० साहित्याचार्य

सूरदास, नंददास, रसखान, विहारी, घनानंद, हरिश्चन्द्र, जगन्नाथदास रत्नाकर और सत्यनारायणकविरत्न की कविता का मर्म सरलतम रूपमें उपस्थित किया गया है। मूल्य ३॥)

हिन्दी कवियों का मूल्यांकन

ले० प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा, एम० ए० साहित्याचार्य

विद्यापति, कबीर, जायसी, सूर, मीरा, तुलसी, रसखान, केशव, विहारी, भूषण, देव, घनानंद,पद्माकर और हरिश्चन्द्र की कविता सम्बंधी सारी ज्ञातव्य सामग्री सरल रूपमें दे दी गई है। वृहदाकार और दुरूह ग्रंथों का भार उठाने की आवश्यकता नहीं रही। ३॥)

'प्रसाद' और उनके नाटक

ले० प्रो० केसरी कुमार एम० ए०

'प्रसाद' जी के नाटकों की उन विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला गया है जिन्हें अन्य आलोचक छोड़ गये हैं। मू० ३॥)

हास्य के सिद्धांत और 'मानस' में हास्य

लेखक प्रो० जगदीश पाण्डेय

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं : "हिन्दीमें हास्यरस की ऐसी सर्वाङ्गीण और विवेचनापूर्ण पुस्तक मैंने नहीं देखी थी। रामायण से उद्धरण देकर लेखक ने अपने वक्तव्य को अत्यन्त परिचित प्रसंगों के सहारे से स्पष्ट किया है"।

हास्यरस को समझने के लिए इस ग्रंथ का सहारा लेना ही पड़ेगा। मू० ३॥)

'पंत' और उनका गुंजन

ले० प्रो० केसरी कुमार एम० ए०

कविवर 'अंचल' के शब्दों में इस कृति को पढ़े बिना पंतजी की कविता का अध्ययन अधूरा ही रह जायगा। मू० ३=)

सत्य हरिश्चन्द्र नाटक

ले० प्रो० रामायणशरण एम० ए० बी० एल०

विद्वान् लेखक ने प्राचीन नाटक से सम्बन्धित प्रस्तावना, नांदीपाठ, सूत्रधार, नेपथ्य, यवनिका, रंगमंच, अंकावतार, अंक, भरतवाक्य, अभिनय, नायक, वस्तु आदि सभी रहस्यों का उद्घाटन कर बिन्दु में सिन्धु के दर्शन करा दिए हैं। प्रत्येक अंक को स्पष्ट करने वाली टिप्पणियां हैं और विशेष प्रश्नों के उत्तर लिखे हैं। मू० १=)

रामचरित मानस (बालकांड)

टीकाकार—पं० रामचन्द्र शास्त्री पणशीकर, एम० ए० एम० ओ० एल०

प्रवाहपूर्ण और मर्मस्पर्शी टीका तथा प्रमुखविषयों की आलोचना के साथ-साथ प्रायः सभी संभावित प्रश्नों के उत्तर संकेत दिए गये हैं। मू० ३)

रूप और शैली

संकलयिता—श्री ब्रजकिशोर 'नारायण'

हिन्दी साहित्य के विभिन्न रूपों द्वारा शैलियों को समझाने के लिए कहानियों, नाटकों, निबंधों और कविताओं का संकलन किया गया है। विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। मूल्य २॥=)

हिन्दी मुहावरे और कहावतें

प्रो० रामायणशरण एम० ए० बी० एल०

चुभती हुई कहावतों और मार्मिक मुहावरों का संकलन तथा प्रयोग। थोड़े दिनों में ही तीन संस्करण हो चुके हैं। मू० १)

हिन्दी के कहानीकार

ले० प्रो० केसरी कुमार एम० ए०

कहानीकला का विहंगावलोकन एवं प्रमुख कहानी लेखकों की कला और शैली का सूक्ष्म विवेचन। मू० २॥)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता:— मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

साहित्य और समीक्षा

ले० प्रो० केसरी कुमार एम० ए०

साहित्य और समीक्षा के व्यापक विषयों पर लिखे गये गंभीर परंतु सुबोध निबंध। मू. ३)

'हरिऔध' और उनका काव्य

ले० प्रो० केसरी कुमार एम० ए०

महाकवि और शैलीकार 'हरिऔध' के 'प्रियप्रवास' का मार्मिक विवेचन। मू० २॥)

एक अनुभवी प्रोफेसर की देन

'प्रेमी' जी और उनका रक्षाबंधन	२)
'स्वप्नभंग' की समीक्षा	२)
'प्रसाद' और 'राज्यश्री'	१।=)
'निर्मला'—एकसमीक्षा	॥।=)
'ब्रजमाधुरीसार'—व्याख्या	२॥=)
संक्षिप्त कवि परिचय—२० प्रमुख कवि	॥।=)
'स्मृतिकी रेखाएँ'—प्रश्नोत्तर के रूपमें	१=)
'पथिक'—एकसमीक्षा	१॥=)

संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण

श्रीमती ऊषा भटनागर बी० ए० और **श्री गणपतराय** बी. ए. द्वारा लिखित इस पुस्तक में व्याकरण सम्बन्धी सभी प्रारंभिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला गया है और इस विषय को बड़े सरल ढंग से समझाया गया है। व्याकरण प्रारंभ करने वालों के लिए उपयोगी है। मूल्य १)

अनुवाद कौमुदी

प्रो० दुर्गादत्त पंत शास्त्री और **प्रो० प्रकाशचंद शास्त्री** ने इस उपादेय पुस्तक में संस्कृत से अनुवाद करने का सरल ढंग बतलाया है और व्याकरण के गूढ़ रहस्य स्पष्ट कर दिए हैं। मूल्य १॥)

'अच्युत' ग्रन्थमाला के बहुमूल्य ग्रंथ

भगवन्नामकौमुदी—(भगवन्नामकी महिमा का प्रतिपादक अनुपम ग्रन्थ) मीमांसा के धुरन्धर विद्वान् **श्रीलक्ष्मीधर** की कृति, **अनन्तदेव**रचित 'प्रकाश' टीकासहित। सम्पादक—आचार्यवर गोस्वामी पं० श्रीदामोदरशास्त्री पृष्ठ सं० १३८+२० मू.—आ. १२

शुल्वसूत्र—(कात्यायनश्रौतसूत्रका परिशिष्ट अंश) **म० म० वेदाचार्य पं० श्रीविद्याधर गौड़** द्वारा विरचित सरल वृत्ति से विभूषित। सं०—महामहोपाध्याय वेदाचार्य पं० श्रीविद्याधर गौड़। पृ० सं० ६०, मू.—आ. ६

कात्यायनश्रौत्रसूत्र—(इसमें दर्शपूर्णमास से लेकर अश्वमेध, पितृमेधपर्यन्त कितने ही यज्ञों की विधियाँ साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं) महर्षि**कात्यायन**प्रणीत। **म० म० वेदाचार्य पं० श्रीविद्याधर गौड़** द्वारा रचित सुसरल वृत्ति से अलंकृत। सं०—वेदाचार्य पं० श्रीविद्याधर गौड़। (२२—२९—८ पेजी बड़ा आकार) पृ० सं० लगभग १०००, मू.—रु. ८

प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि—(प्रथम भाग) (शाङ्करभाष्यानुसार वेदान्त का सुसरल पद्यमय ग्रन्थ) **श्रीसदानन्दव्यास**विरचित, ग्रन्थकाररचित सरल संस्कृतटीकासहित। सं०—साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। पृ० सं० ३४०, मू०—रु० २ आ० ६

भक्तिरसामृतसिन्धु—(भक्तिरससे परिपूर्ण यह ग्रन्थ सचमुच पीयूषसिन्धु है) श्री **श्रीरूपगोस्वामी**प्रणीत। श्री **श्रीजीवगोस्वामी**प्रणीत दुर्गमसङ्गमनी टीकासहित। सं०—आचार्यवर गोस्वामी पं० श्रीदामोदरशास्त्री। पृ० सं० ६२५, मू.—रु. ४

प्रत्यक्तत्त्वचिन्तामणि—(द्वितीय भाग)। पृ० सं० ४५०, मू.—रु. २ आ. १०

तिथ्यर्क—(तिथियों के निर्णय आदि पर अपूर्व एवं प्रामाणिक ग्रन्थ) **श्रीदिवाकर**विरचित। सं०—साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्तशास्त्री। पृ० सं० ३४०, मू.—रु. २

परमार्थसार—(वेदान्त का अति प्राचीन ग्रन्थ) श्रीपतञ्जलि भगवान् की कृति, प्राचीन टीका तथा **न्याय व्याकरणाचार्य पं० सूर्यनारायण शुक्ल** विरचित टिप्पणी से विभूषित। सं०—न्यायव्याकरणाचार्य पं० श्री सूर्यनारायणशुक्ल। पृ० सं० १००, मू.—आ. ८

प्रेमपत्तन—(श्रीकृष्ण भक्ति से सराबोर चैतन्य सम्प्रदाय का अपूर्व सरस ग्रन्थ) **भक्तवर श्रीरसिकोत्तंस** की कृति तथा **अद्भुत**प्रणीत टीका से अलंकृत। सं०—साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। पृ० सं० २३०, मू०—रु. १ आ. ४

माध्यन्दिनशतपथ ब्राह्मण—(प्रथम भाग) (इसमें दर्शपूर्णमाससे लेकर अश्वमेध, प्रवर्ग्य, जातकर्म, वंशब्राह्मण पर्यन्त अनेकों यज्ञों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है।) सं०—म० म० वेदाचार्य पं० श्रीविद्याधर गौड़ तथा पं० श्रीचन्द्रधर चौधरी वेदाचार्य। पृ०सं० ७८१०, मू.—रु० ५

माध्यन्दशतपथ ब्राह्मण—(द्वितीय भाग) सं०—वेदाचार्य पं० श्रीवंशीधर मिश्र गौड़। पृ० सं० लगभग १००० से ऊपर, मूल्य—केवल रु० ५

शतपथब्राह्मणकण्डिका—अकारादि वर्णानुक्रमणी। मू.—रु. १)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—**मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा, पो० बक्स ७५, बनारस**

काशी-केदार-माहात्म्य—(ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत) साहित्यरञ्जन **पं० श्रीविजयानन्द त्रिपाठी** द्वारा विरचित भाषानुवादसहित। सं०—साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। पृ० सं० २६+६०४, मू०—रु० ३)

सिद्धान्तबिन्दु—(वेदान्तका प्रमेय बहुल अपूर्व ग्रन्थ) आचार्यप्रवर **श्रीमधुसूदन-सरस्वती** विरचित। भाषानुवाद तथा टिप्पणी से विभूषित। सं०—साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्तशास्त्री। पृ० सं० २८०, मू०—रु० २)

प्रकरणपञ्चक—भगवान् शङ्कराचार्य के आत्मबोध, प्रौढ़ानुभूति, तत्त्वोपदेश आदि पाँच प्रकरण ग्रन्थों का भाषानुवाद सहित संग्रह, सं०—साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। पृ० सं० १३२, मू०—आ० १२

ब्रह्मसूत्र—शाङ्करभाष्य—रत्नप्रभा—भाषानुवादसहित (श्रीसदाशिवेन्द्रसरस्वती-कृत ब्रह्मतत्त्वप्रकाशिकावृत्ति के अनुसार सूत्रों का पदच्छेद, पदार्थोक्ति और सुविशद भावार्थ एवं वैयासिकन्यायमाला के सन्देह, पूर्वपक्ष तथा सिद्धान्त निर्देशपुरस्सर सुस्पष्ट और विशद भावार्थ से विभूषित, वेदान्तप्रेमियों के लिए अत्यन्त उपादेय और अनुपम ग्रन्थ) अनुवादक—**यतिवर श्रीभोलेबाबाजी**। सं०—पं० श्रीचण्डीप्रसाद शुक्ल तथा पं० श्रीकृष्ण-पन्त साहित्याचार्य। कपड़े की पक्की तीन जिल्दों में प्रकाशित छपाई, सफाई सभी मनोहर। पृ० संख्या २६०० के लगभग, मूल्य—(तीनों खण्डों का) रु० १८। प्रथम भाग (प्रथमाध्यायात्मक) मू०—रु० ६ आ० ४ द्वितीय भाग (द्वितीयाध्याय तथा ३ याध्याय २ यपादान्त) मू०—रु० ६ आ० ४

तृतीय भाग (तृतीयाध्याय के ३ य पाद से समाप्तिपर्यन्त) मू०—रु० ५ आ० ८

विवरणप्रमेयसंग्रह—(चतुःसूत्री के ऊपर विविध मतमतान्तरों के निरूपणपूर्वक अद्वैत-तत्त्व का प्रतिपादक प्रमेयबहुल एक अनुपम ग्रन्थ) **सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्रीविद्यारण्यमुनिविरचित**। व्याकरणाचार्य वेदान्तमर्मज्ञ **पं० श्रीललिताप्रसादडबराल** विरचित हिन्दीभाषानुवाद से विभूषित। सं०—पं० चण्डीप्रसाद शुक्ल तथा साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। सुन्दर कपड़े की पक्की जिल्द। पृ० सं० ६०० से ऊपर मू.०—रु० ६

वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली—(अद्वैतसिद्धान्त में प्रतिपादित भिन्न-भिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादक अनुपम ग्रन्थ) **योगिराज श्रीसदाशिवेन्द्रसरस्वती** विरचित। **महामहोपाध्याय पं० श्रीहाथीभाई शास्त्री** विरचित हिन्दीभाषानुवाद से विभूषित। सं०—पं० श्रीचण्डी प्रसाद शुक्ल तथा साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। पृ० सं० १३०, मू०—आ० १२

वृहदारण्यकवार्तिकसार—(दो भागों में) **श्रीसुरेश्वराचार्य** विरचित वृहदारण्यक वार्तिक-का संक्षेप। **सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्रीविद्यारण्यमुनि** विरचित। **ब्रह्मनिष्ठ श्रीमदच्युतमुनि महाराज** तथा **महामहोपाध्याय पं० श्रीहरिहरकृपालु द्विवेदी** विरचित भाषानुवाद से विभूषित। सं०—पं० श्रीकृष्णपन्तशास्त्री तथा पं० मूलशङ्कर व्यास। पृष्ठ संख्या लगभग २५००, मूल्य—रु० १२

(परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए केवल प्रमेयपरीक्षान्त भाग की पृथक् जिल्द बनवाई गई है। मू०—रु० ३

अच्युत-लेखमाला—(अच्युतमासिक में निकले हुए महात्माओं एवं अन्यान्य विशिष्ट विद्वानों के सुन्दर लेखों का संग्रह) पृ० सं०—४००, मूल्य—रु० २

श्रीमद्भगवद्गीता—परमहंसपरिव्राजकाचार्य **श्रीशङ्करानन्दसरस्वती** विरचित गीतातात्पर्यबोधिनी (शङ्करानन्दी) तथा **यतिवर श्रीभोलेबाबाविरचित** तदनुवाद से विभूषित। सं० साहित्याचार्य पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री तथा वेदान्ताचार्य ०मूलशङ्कर व्यास। पृ० सं० १०५० मूल्य—रु० ६

योगवासिष्ठ—(पाँच वृहत्काय भागों में) आदि कवि महर्षि श्रीवाल्मीकि विरचित।

१—प्रथम भाग (वैराग्य-मुमुक्षुव्यवहार-उत्पत्तिप्रकरणात्मक) **पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री** विरचित भाषानुवाद से विभूषित। पृ० सं० १४+१५८२, मूल्य—रु० १०

२—द्वितीय भाग (स्थिति-उपशमप्रकरणात्मक) पृ०सं० १०+१४२८, मूल्य—रु. १०

३—तृतीय भाग (पूर्वार्द्धनिर्वाण प्रकरणात्मक)। **पं० श्रीमूलशंकरव्यास** विरचित भाषानुवाद से विभूषित। पृ० सं० १०+१२५०, मूल्य—रु० १०

४—चतुर्थ भाग (निर्वाणप्रकरणोत्तरार्द्ध का प्रथम खण्डरूप) पृ०सं० १२००, मू०—रु० १०

५—पञ्चम भाग (निर्वाणप्रकरणोत्तरार्द्ध द्वितीय खण्डरूप) पृ०सं० ८००, मूल्य—रु० ८

श्रीमद्भागव एकादशस्कन्ध—(प्रथम भाग) सा० आ० पं० श्रीकृष्णपन्तशास्त्री तथा धर्म शा० आ० पं० प्रेमवल्लभ त्रिपाठी शास्त्री द्वारा विरचित प्रत्येक पद के अनुवाद तथा भावानुवाद से युक्त। पृ० सं० ८+३२०, मू०—रु० २ आ० ८

(द्वितीय भाग) धर्म शा० आ० पं० प्रेमवल्लभ त्रिपाठी शास्त्री विरचित प्रत्येक पद के अनुवाद तथा भावानुवाद से संयुक्त। सं०—सा० आ० पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। पृ० सं० ६००, मूल्य—रु० ४

नैष्कर्म्यसिद्धि—**सर्वतन्त्रस्वतन्त्र श्रीमत्सुरेश्वराचार्य** विरचित। धर्मशा० आ० पं० प्रेमवल्लभ त्रिपाठी शास्त्री विरचित भाषानुवाद से युक्त। सं०—सा० आ० पं० श्रीकृष्णपन्त शास्त्री। पृ० सं० २००, मू०—रु० १ आ० १२

शिवस्तुति—(भगवान् श्रीशङ्कर की भक्ति-भावपूर्ण काव्यमय स्तुति) **विद्वद्वर श्री गोकुलनाथ उपाध्याय** विरचित। **पण्डित श्रीजीवनकृत** संस्कृत टीका तथा धर्मशास्त्राचार्य पं० प्रेमवल्लभ त्रिपाठि शास्त्रि विरचित भाषानुवाद से विभूषित, पृ०सं० ८०, मू०—।।=)

हमारे द्वारा प्रकाशित चिकित्सा-साहित्य

यूनानी चिकित्सा सागर (हिन्दी)

लेखक—श्री हकीम मनसारामजी शुक्ल,

(वाइस प्रिंसिपल, तिब्बया कालिज, दिल्ली)

बढ़िया कागज-मोटे अक्षरों में-नए टाइप, पक्की कपड़े की जिल्द सहित मू० केवल १०)

यूनानी चिकित्सा वास्तव में आयुर्वेद से ही ली गई है। इस में अनेक अचूक नुस्खे है जो रोगों पर बड़ा अपूर्व असर रखते हैं। यही कारण है कि दिल्ली के सुप्रसिद्ध हकीम अजमल खाँ साहिब ससार में एक प्रसिद्ध हकीम हो गये हैं। उनके तथा अन्य यूनानी के नामी हकीमों के प्रायः सभी गुप्त नुस्खे पहली बार इस पुस्तक में छाप दिये गये हैं। ये नुस्खे इतने सरल तथा इतने अचूक है कि इन के बलपर हकीम लोग हजारों रुपये कमा रहे हैं। इस पुस्तक में अतिसार (संग्रहणी) पर २६ योग, अनिद्रा पर ७, मृगी पर १८, लकवा (अर्दित) पर १४, बवासीर पर २५, गुर्दो के रोग पर १६, आनाह (कब्ज) पर ३१, आमवात पर १५, उदर रोग (इसराजमहदा) पर ८८; उन्माद (मालीखोलिया) पर २०, उपदंश (आतशक) पर १६, उष्णवात (सुजाक) पर १७, कण्ठमाल पर ८, कण्ठरोग पर ३, कर्ण रोग पर ५, कृमि रोग पर ५, केशबल्य पर ५, कास-श्वास (खांसी दमा) पर ५६, कुष्ठ रोग पर ५, चर्म रोग पर ४, जलोदर पर ६, ज्वर (बुखार) पर २६, दंतरोग पर १६, नेत्र रोग पर ३६, पित्त रोग पर २१, पाण्डु (यरकान) पर ६, प्रतिश्याय (जुकाम नजला) पर २४, प्रवाहिका (पेचिश) पर १०, प्रमेह (जरयान) पर ३३, प्लीहा पर १२, प्लेग महामारी पर ४, बालरोग पर १०, बल्य तथा वाजीकरण (General Tonios and Sescual Tonics) पर १२०, व्रण (जखम) पर १५, मुखरोग पर ७, मूत्रविकार, पर १०, मेदरोग (मोटापा) पर २, मधुमेह पर ७, मस्तिष्कविकार पर ३१, यकृतरोग पर ३६, रक्त पित्त पर ६, रक्तविकार पर २६, वातरोग पर ५३, वातरक्त पर ५, विषविकार पर ७, विसूचिका (हैजा) पर ४, वृक्कविकारपर १२, वमन (कै) पर १८, शीतला (चेचक) पर ३, शिरोरोग पर १४, शूलरोग पर २०, शोथरोग पर १७, स्त्रीरोग पर ४७, हृदयरोग पर १०३, हिचकी पर ३, क्षय (तपेदिक) पर १७, क्षुद्ररोग पर २८, अर्थात् सब प्रकारके रोगों पर लगभग १२०० योग दिये हैं। रोगों में काम आनेवाले हर एक प्रकार के अतरीफल, अवलेह, माजून, याकूती नोशदारू मफरदात, मुरब्बा, माल जोबन, मरहम, चटनी, लबूब, गुलकन्द, भस्म (कुश्ता जात) मुरब्बे, लेप, टिकिया, अर्क, तिल्ला, शयाफ, शरबत, मंजन, सकंजबीन, सफूफ, सिरका, रोगन, खमीरे, हलवे, चूर्ण आदि यूनानी चिकित्सा पद्धति में जो भी जानने योग्य दवाइयां हैं सब के बनाने और इस्तमाल करने के तरीके भी बताये गये हैं। अन्त में यूनानी औषधियों का विस्तृत परिचय भी सरल हिन्दी में है जिसे वैद्य लोग नहीं जानते। बढ़िया छपाई। पक्की कपड़े की जिल्द १०)

रसतरंगिणी (हिन्दी टीका सहित)

(पक्की कपड़े की जिल्द सहित, सफेद बढ़िया कागज पांचवां संस्करण मूल्य १०) रु०)

आयुर्वेद में रस शास्त्र की कितनी महत्ता है यह बात आज कल के प्रतिदिन के व्यवहार में आने वाली रसचिकित्सा पद्धति के अनुसरण करनेवाले किसी से छिपी नहीं। यही नहीं रसशास्त्र में धातुविद्या का भी विशद वर्णन पाया जाता है। परन्तु रसचिकित्सा में व्यवहार में आने वाले खनिज द्रव्यों का शोधन मारण आदि किस विधि के अनुसार किया जाना चाहिये जिससे वह अत्यन्त गुणदायक हो सके यह एक बड़ी भीतरी कठिनाई वैद्य समाज के आगे थी। इसी कठिनाई को अनुभव करते हुये लाहौर के सुप्रसिद्ध तथा सिद्धहस्त कविराज श्रीनरेन्द्रनाथजी मित्र के आदेशानुसार उनके सुयोग्य शिष्य प्राणाचार्य श्रीसदानंदजी ने उक्त पुस्तकमूल श्लोकों में तैयार की थी। इसकी विशेषता यह है कि इसमें केवल वही तरीके दिये गये हैं जो उनके अनुभव में आ चुके थे। ग्रन्थ की उपादेयता का इसी से पता चलता है कि प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यह पुस्तक पाठ्य क्रम में नियत है। इस संस्करण में मूल पुस्तक तथा आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्त जी शास्त्रीकृत संस्कृत टीका तथा रसविशेषज्ञ श्रीधर्मानन्दजी कृत सरल तथा विस्तृत रसविज्ञान नामक हिन्दी अनुवाद साथ दिया गया है। अब इस संस्करण से साधारण से साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है।

लगभग आठ सौ पृष्ठों का ग्रंथ चौबीस अध्यायों में बिभक्त है। अध्यायों में स्वर्ण, रजत, ताम्र, बंग, लौह, सीस, पारद, गंधक, अभ्रक, हिंगुल, क्षार और नवसादर आदि का इतना व्यापक और विस्तृत वर्णन दिया गया है कि उनकी सूची देने में ही, दो कालमों में बिभक्त २७ पृष्ठ लग गये हैं। पारद की शुद्धि, मूर्च्छना, मारण और स्वरूप तथा भेद आदि का वर्णन तीन बड़े अध्यायों में पूरी गहराईमें उतर कर हुआ है। रसशाला, परिभाषा, मूषा और यंत्रों आदि का वर्णन भी इसी प्रकार विस्तार के साथ दिया गया है। एक शब्दमें रसशास्त्र से सम्बन्ध रखने वाली कोई भी बात मर्मज्ञ लेखक की पैनी दृष्टि से नहीं छूटी।

ग्रंथका पांचवां संस्करण अभी प्रकाशित हुआ है, जो इस तथ्य का प्रबल प्रमाण है कि चिकित्सा संसार ने 'रसतरंगिणी' को रसशास्त्र का अनुपम, प्रामाणिक तथा 'अत्यन्त उपयोगी ग्रंथ मान लिया है।

चरक संहिता—दो संस्कृत टीकाओं सहित

श्री चक्रपाणिदत्त कृत आयुर्वेददीपिका तथा जज्जट कृत निरन्तर पद दो प्राचीन संस्कृत व्याख्यासहित बहुत बढ़िया बंबई निर्णयसागरीटाइप में छपा है। आयुर्वेदाचार्य श्री पं० हरिदत्तजी शास्त्री कृत अनेकों उपयोगी टिप्पणियों सहित। संपूर्ण दो पक्की कपड़े की जिल्दों में मूल्य १५)

चरक संहिता हिन्दी अनुवाद सहित

सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेवजी विद्यालंकारकृत तंत्रार्थ दीपिका नामक विवेचानात्मक तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ के समझने के लिये उक्त वैद्यजी का यह अनुवाद इतना लोकोपयोगी सिद्ध हुआ है कि ऐसा हिन्दी अनुवाद आज तक कहीं भी किसी भाषा में नहीं छपा। यही कारण है कि इतने थोड़े समय में यह इसका चौथा संस्करण छप चुका है। कागज की कठिनाई के कारण यह बहुत थोड़ा छपा है जो पुस्तक की मांग को देखते हुवे आशा है शीघ्र ही समाप्त हो जावेगा। इसलिये शीघ्रता करें ताकि फिर अगले संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े। दो बढ़िया पक्की कपड़े की जिल्दों में बड़े साईज में छपा है। मूल्य संपूर्ण ग्रन्थ का ३२) ५०।

रसशास्त्र में हलचल मचा देनेवाला एकदम नवीन ग्रन्थ

रसामृत

आयुर्वेद शास्त्र के धुरन्धर विद्वान् वैद्य श्रीयादवजी त्रिक्रमजी आचार्य महाराज की उद्भट लेखनी से लिखा हुआ रसशास्त्र का बेजोड़ ग्रन्थ

हाल में ही बंबई के सुविख्यात निर्णयसागर प्रेस में छपकर प्रकाशित हुआ है। ग्लेज कागज—कपड़े की जिल्द सहित—मूल्य ५)

यह रसामृत ग्रन्थ विद्यार्थियों को सरल से सरल तरीके से रसशास्त्र के पाठ्यग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रसयोग आदि के निर्माण में उपयुक्त—मार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। रस ग्रन्थों में एक एक द्रव्य की अनेक शोधन और मारण विधियां लिखी गई हैं। उनमें से जो विधियां प्रायः सर्वसम्मत, वैद्यों में प्रचलित, सुकर तथा आचार्यजी के स्वयं अनुभूत हैं उनको ही इस ग्रन्थ में स्थान दिया गया है।

ग्रन्थ में आयुर्वेद की रसौषधियों में काम आने वाले गंधक, लौह, ताम्र, सुवर्ण, रजत, पित्तल, कांस्य, सुवर्णमाक्षिक, तुथ्थ, खंगार, सिंदूर, सौवीरांजन, शिलाजतु आदि सभी खनिज पदार्थों क्षारों और रत्नों का विशदवर्णन तो किया ही गया है, आचार्यजी ने यूनानी औषधियों के ऐसे तत्वों पर भी पूर्ण प्रकाश डाल दिया है। एवं वैद्यों के नित्य प्रयोग में आने वाले ६६ रस योग भी दे दिए हैं और उद्भिजकी शोधनविधि भी बता दी है। आचार्यजीने कई विवादास्पद प्रश्नों की भी सुलझी हुई मीमांसा कर दी है और सप्रमाणसिद्धकर दिया है कि वटी का निर्माण प्राचीन ऋषियों में भी प्रचलित था—भारत ने यह वस्तु यूनान से नहीं ली।

प्रत्येक द्रव्य का वर्णन करते समय उस द्रव्य के प्रधान संस्कृत नाम, उत्तर भारत की प्रधान भाषा—हिन्दी, बंगाली, मराठी और गुजराती के नाम, यूनानी वैद्यक में प्रचलित अरबी—फारसी नाम तथा अंग्रेजी नाम दियें हैं। पीछे उस द्रव्य का संक्षिप्त परिचय, गुण, सामान्य और विशेष शोधनविधि तथा मारण विधि लिखी है। इस प्रकार इस ग्रन्थ को पाठ्य ग्रन्थ तथा उपयुक्त बनाने का यथाशक्य प्रयत्न किया गया है।

आचार्य यादवजी का छात्रोपयोगी अनुपम ग्रन्थ

द्रव्य-गुण-विज्ञान

आजकल आयुर्वेद के पठन-पाठन के लिए विषय-प्रधान पाठ्यप्रणाली का प्रचलन हो रहा है परन्तु पाठ्य क्रम के अनुसार सब विषयों पर पुस्तकें न मिलने से बड़ी असुविधा होती है। आयुर्वेद जगत् के महान् स्तम्भ आचार्य यादवजी त्रिक्रमजी महाराज ने इस कमी को पूरा करने के लिए अपनी समर्थ लेखनी उठाई है और छात्रों की आवश्यकता एवं ग्रहण शक्ति को सामने रखकर द्रव्य गुणपर यह ग्रन्थ उपस्थित कर दिया है।

आचार्यवर ने द्रव्यगुण विज्ञान को दो बड़े भागों में विभक्त किया है—यह पहला भाग अर्थात् पूर्वार्ध है। इसमें द्रव्य, गुण, रस, विपाक और वीर्यप्रभाव विज्ञानीय नामक पांच अध्याय हैं जिनमें द्रव्य गुण विज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों का साधिकार साथ ही साथ सरल, प्रांजल तथा प्रवाहपूर्ण हिन्दी भाषा में विशद विवेचन किया गया है। द्रव्यगुण के आधारभूत सिद्धांतों के सम्बन्ध में आयुर्वेदिक ग्रंथों में जितनी भी सामग्री है, वह सब की सब इस पूर्वार्ध में एकत्रित हो गई है। ग्रंथों के वचन पादटिप्पण में रख दिए गये हैं। प्राचीन और आधुनिक विचारधाराओं का अंतर और सामंजस्य समझाने के लिए काशी विश्वविद्यालय के आयुर्वेदिक कालेज के प्रिंसिपल डा० बालकृष्ण अमरजी पाठक का लिखा हुआ "आयुर्वेदिक तथा आधुनिक द्रव्यगुण विज्ञान पर तुलनात्मक विचार" शीर्षक निबंध संयुक्त किया गया है॥

संहिता तथा निघंटु ग्रंथों में द्रव्यों के जो गुण-कर्म संक्षेप में लिखे गये हैं उनको समझने के लिए सिद्धांतों का पूर्ण ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। आचार्यजी का विश्वास है कि संस्कृत न जानने वालों को भी इस ग्रंथ से द्रव्यगुण के आधारभूत सिद्धांत समझने में विशेष सहायता मिलेगी—क्योंकि यह सरल हिन्दी में लिखा गया है।

निर्णयसागर प्रेस बंबई की सुंदर छपाई मूल्य केवल ५)

श्रीमेघमुनि प्रणीत—मेघविनोद

का सौदामिनी भाषाभाष्य

भाष्यकर्ता–आयुर्वेद–विद्यावारिधि—

कविराज श्रीनरेन्द्रनाथ शास्त्री आयुर्वेदाचार्य

द्वितीय संस्करण-बढ़िया छपाई-कागज २८+१५ पृष्ठसंख्या ७५२ मू० केवल ६)

श्रीमेघमुनि जैन धर्मावलम्बी पंजाब में बड़े प्रसिद्ध तथा अनुभवी वैद्य हो गये हैं। इस पुस्तक में उन्होंने हर प्रकार की बिमारी के ऊपर अपने अनुभव से अजमाए हुये बहुत बढ़िया तथा सस्ते नुस्खे (योग) दिये हैं। औषधी भी वह दी हैं जो बाजार में पैसों से बड़ी आसानी से मिल सकती हैं। यही कारण है कि पंजाब के देहातों (गांवों-कस्बों) में आज भी इसी एक पुस्तक के सहारे लोग चिकित्सा करते हैं। पुस्तक छन्दोबद्ध भाषा में लिखी गई थी पर सर्वसाधारण को उससे कोई लाभ नहीं था, इसीलिये हमने उक्त वैद्य जी से इसका सरल

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पताः—**मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपालीखपरा पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस**

हिन्दी भाषा में अनुवाद करवा कर छापा है। अब यह पुस्तक साधारण से साधारण मनुष्य के लिये भी उपयोगी हो गई है। सब धातुओं का संशोधन, मारण, भस्म आदि बनाने के इसमें सरल तरीके दिये गये हैं, जिससे सब कोई आसानी से बना सकते हैं। हमारा दावा हैं कि इस एक ही पुस्तक से साधारण से साधारण मनुष्य भी हर रोग की चिकित्सा घर में ही स्वयं बड़ी आसानी से कर सकता है। पुस्तक इतनी उपादेय है कि इसका पहला संस्करण हाथों हाथ ही बिक गया था। अब यह दूसरा संस्करण मोटे टाईप तथा ग्लेज कागज पर बहुत बढ़िया छापा गया है। हमारा सप्रेम अनुरोध है कि इसकी एक प्रति अवश्य अपने घर में रखें, जिससे आप स्वयं अनुभव करेंगे कि आपके धन तथा चिन्ता की कितनी बचत होती है। इसके योग सब अचुक हैं और निदान भी इतने सरल तरीके से दिये हैं कि सब समझ सकें। मूल्य केवल ६) रु०।

परिवर्द्धित ! प्रथम भाग नया संस्करण !!

व्याधि-विज्ञान

लेखक अनेक ग्रन्थों के रचयिता तथा अनुभवी विद्वान्

डा० आशानन्द पञ्चरत्न

एम्० बी० बी० एस, बी० एम० एस० आयुर्वेदाचार्य प्रिंसिपल आ० पोद्दार मेडिकल (आयुर्वेदिक) कालिज बम्बई

चतुर्थ संस्करण परिवर्द्धित तथा संशोधित-पृष्ठ संख्या लगभग ६०० अनेकों सादे तथा रंगीन चित्रों सहित। बढ़िया मोनोटाईप की छपाई तथा पक्की कपड़े की जिल्द सहित मूल्य ६) रु०।

निदानविषयक यह अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ उक्त डाक्टर साहिब के अनेकों वर्षों के अनुभव का फल है। इससे पाश्चात्य निदान का भी ज्ञान होगा और यह भी ज्ञात होगा कि सफलता पूर्वक आयुर्वेद मतानुसार चिकित्सा किस प्रकार की जा सकती है। इसीलिए संक्षेप्तः आयुर्वेद और पाश्चात्य चिकित्सा भी लिख दी गई है। पुस्तक कितना उपादेय है यह इसी से पता लगता है कि अनेकों विद्यालयों के पाठ्य क्रम में यह चली आ रही है और इसका यह अब बहुत परिवर्द्धित तथा संशोधित चौथा संस्करण निकला है। पुस्तक की उपयोगिता के कारण लेखक को दो पारितोषिक तथा स्वर्णपदक भी मिल चुके हैं।

ग्रंथ के पहले ६ अध्यायों में रोग, पोषण संस्थान, श्वास संस्थान, रक्त व रक्त वाहक संस्थान एवं मूत्र आदि की परीक्षा का विषय विस्तार के साथ समझाया गया है। उसके उपरांत सूक्ष्म जंतुओं और उनके संक्रमण पर विचार किया गया है और फिर निम्न लिखित रोगों का ब्योरेवार वर्णन किया गया है—ज्वर, संक्रमण की विशेष अवस्था, संतप्त ज्वर, दुष्टाहार जन्य संक्रामकरोग, पीड़िकायुक्त ज्वर, श्वासमार्गकी संक्रामक व्याधियां, क्षयरोग, वातसंस्थाओं के संक्रामक रोग, स्थानिक संक्रामकरोग, संसर्गिकरोग, कुष्ट, सूक्ष्मप्रणालियोंद्वारा उत्पन्न होने वाले रोग, अंशुघात, मधुमेह तथा विटामिन और उसके अभाव से उत्पन्न रोग! पहले ही कहा जा चुका है कि वैद्य बंधुओं को चिकित्सा का क्रम समझाने के लिए निदान सम्बन्धी इस ग्रंथ में संक्षेपमें आयुर्वेद और पाश्चात्य चिकित्सा भी लिख दी गई है।

राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टण्डन की आज्ञा से प्रकाशित होनेवाला ग्रंथ

क्लीनिकल मेडीसिन

लेखक—चिकित्सा संसार के ख्यातनामा लेखक और व्याख्याता

श्री अत्रिदेव गुप्त (काशी विश्वविद्यालय)

एम० बी० बी० एस० तथा पोस्ट ग्रेजुएट के छात्रों को रोग निदान और चिकित्सा का विषय पढ़ाने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी में यही पहला और अद्वितीय ग्रंथ है !

विद्वान् लेखकने पाश्चात्य चिकित्सा-शास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक शैवल की क्लीनिकल मेडीसिन, मजूमदार की बेड साइड मेडीसिन, और चेम्बरलेन की क्लीनिकल मेडीसिन के आधार पर इस उपादेय ग्रंथ की रचना की है; साथ ही साथ आयुर्वेदीय संहिताओं से तुलनात्मक और बहुमूल्य उद्धरण दे दिए हैं जिससे एक ही ग्रन्थ से रोग का निदान और उसकी पाश्चात्य तथा आयुर्वेदिक पद्धति से चिकित्सा का ज्ञान हो जाता है। प्रत्येक रोग के लिये चुने हुए डाक्टरी और देशी नुस्खों की उपस्थिति ने ग्रंथ का महत्व और भी बढ़ा दिया है।

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि जब भारतीय जनता के हृदय सम्राट् राजर्षि श्री पुरुषोत्तम दास जी टण्डन को दिखाई गई थी तब उन्होंने इसका महत्व और इसकी उपयोगिता समझी थी और आज्ञा दी थी कि इसे तुरंत प्रकाशित कर दिया जाय।

राजस्थान सरकार के भूतपूर्व डिप्टी डायरेक्टर आफ़ आयुर्वेद एवं वर्तमान काल में राजकुमार आयुर्वेद कालेज इंदौर के प्रिंसिपल कविराज श्री प्रतापसिंह जी ग्रंथ के कुछ छपे हुए फ़ार्म देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए थे और कह गये थे कि इसके छपे हुये फार्म हमें बराबर भेजते जाइये जिससे हम आज से ही विद्यार्थियों को इसका लाभ देना प्रारंभ कर दें।

ग्रंथ की भाषा सरल, पारिभाषिक शब्दों के अर्थ सुगम तथा स्पष्ट और शैली तुलनात्मक है। किंग जार्ज मेडिकल कालेज, लखनऊ के रीडर डा० **हरिश्चन्द्र वर्मा** ने ग्रंथ का संपादन करके सोने में सुगन्ध मिला दी है!

मोनो टाइप की सुन्दर छपाई, बढ़िया कागज; मूल्य लागत मात्र!

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता:—**मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस**

राष्ट्रभाषा हिन्दी में आधुनिक शरीर विज्ञान का सर्व प्रथम,
सर्वसम्मानित, प्रामाणिक ग्रंथ

हमारे शरीर की रचना

लेखक—लंदन, डबलिन, ग्लासगो और लिवरपुल आदि विश्वविद्यालयों से सम्मानित, संयुक्तप्रांत के सिविलसर्जन, शरीरविज्ञान के व्याख्याता—स्वर्गीय

डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा

स्वर्गीय डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा के इस ग्रंथ का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यही वह ग्रंथ है जिसकी रचना करने के बाद डाक्टरसाहब का नाम चिकित्सा से साधारण सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति के पास भी पहुंच गया था और हिन्दी जगत् की कांग्रेस अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक भेंट दिया था तथा काशी की नागरीप्रचारिणी सभा ने, 'रेडिचे पदक' दिया था। ग्रंथ की मांग इतनी हुई कि एक बार एक ही वर्ष में इतने बड़े ग्रंथ के दो संस्करण छापने पड़े।

डा० त्रिलोकीनाथ के देहावसान के उपरान्त उनके अनुज, 'एलोपैथिक गाइड' और 'एलोपैथिक चिकित्सा आदि लोकप्रिय ग्रंथों के यशस्वी लेखक डा० रामनाथ वर्मा ने पारिभाषिक शब्दों के तुल्यार्थ शब्द भी साथ ही लिख दिए। कुछ दिन बाद स्वर्गीय लेखक के सुयोग्य पुत्र, मेडिकल कालेज लखनऊ में शरीरविज्ञान के व्याख्याता (अब रीडर) डा० हरिश्चन्द्र वर्मा ने ग्रंथ को आद्योपांत दुहरा कर इसे और भी संवार दिया तथा हर हिन्दी के पारिभाषिक शब्द के साथ उसका अंग्रेजी नाम देकर इसे अप-टू-डेट बना दिया है।

हमारे चिकित्सा संबंधी प्रकाशनों की माला में यह ग्रंथ इस प्रकार संशोधित और परिवर्धित स्वरूप में, अपना द्विगुणित गौरव प्रकट कर रहा है।

मोनो की साफ-सुथरी छपाई, दूध-जैसा सफेद चिकना कागज, अनेकों रंगीन और सादे चित्रों सहित संशोधित परिवर्धित संस्करण, दो भाग—मू० प्रथम भाग १०=), द्वितीय भाग १५॥=)

(हरीतक्यादि) भावप्रकाशनिघण्टु

पं० विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालंकार, प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वेदिक कालिज कृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित।

इसमें हर एक बूटी (वनस्पति) के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर) तना, काष्ठ आदि का पूर्ण वर्णन है। वनस्पति कब फूलती है, उसे किस भूमि में, किस ऋतु में, किस काल में संग्रह करना चाहिये; औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं। यद्यपि वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये वनस्पति के पर्याय होते हैं किन्तु उसे हर एक व्यक्ति नहीं समझ सकता इसलिये उन्हें भी व्यक्त कर दिया है; जहां जहां आवश्यक समझा गया है औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। वंशलोचन एलवा, मुसब्बर आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है। हर एक वनस्पति के नाम भिन्न-भिन्न भाषाओं में दिये हैं। जहाँ आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहीं पाश्चात्य वनस्पतिवेत्ताओं के भी विचार दिये हैं। यूनानी हकीमों के विचार भी यथा स्थान हैं जिससे अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियों के गुण और शक्ति का पता भी लग जावेगा। एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमोंके सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियां प्रायः वैद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है। अतः उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया गया है। एक बहुत बड़ी विशेषता इस में यह है कि प्रायः प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई है तथा बताया है कि औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्पनाशन के लिये क्या देना चाहिये। अतः यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है। कोई भी बात जो निघंटु में समझने लायक है इस में छूटी नहीं है। यू० पी० इण्डियन मेडिसन बोर्ड ने जो आलुबुखारा, हरमल, औलिव आँयल आदि अन्य चीजें भी परीक्षा में निर्धारित की हुई हैं उन सब का वर्णन भी इस संस्करण में किया है। छात्रों के लिये यह नितान्त उपयोगी पुस्तक हो गई है। अनुरोध है कि पं० विश्वनाथजी का नाम देखकर पुस्तक खरीदें। पक्की कपड़े की जिल्द, परिवर्धित संस्करण: दाम केवल ७)रु०।

मार्डनमेडिकल ट्रीटमेंट (हिन्दीमें)

लेखक—लखनऊ मेडिकल कालेज के फार्माकालोजी विभाग के अध्यक्ष

डा० एस० एल० गुजराल

एलोपैथिक चिकित्सा प्रणाली विकास के पथपर है। उसमें नित नये आविष्कार होते रहते हैं। उन आविष्कारों से असाध्य समझे जाने वाले रोग भी सहज-साध्य हो जाते हैं। डाक्टरों को इन आविष्कारों का पूरा लाभ पहुंचाने के लिए डा० गुजराल ने अंग्रेजी भाषा में 'मार्डन मेडिकल ट्रीटमेंट' नामका ग्रंथ लिखा है। अनुभवी डाक्टर साहब ने संसार भर के जर्नलों का अध्ययन किया और एलोपैथिक प्रणालीसे सब रोगोंकी तथा सब प्रकार की आधुनिकतम चिकित्सा अपने ग्रंथ में उपस्थिति कर दी।

हमने डा० गुजराल का ध्यान इस दिशा में आकर्षित किया कि आजकल कितने ही वैद्य बंधु भी एलोपैथिक चिकित्सा, विशेषतः उसके नये आविष्कारों को अपनाने लगे हैं। उनके उपयोग के लिए यह ग्रंथ हिन्दी में भी होना चाहिए। डाक्टरसाहब सहमत हो गये और उनके विशाल अध्ययन का परिणाम हिन्दी में भी आ गया है जिससे वैद्यबंधु पूरा लाभ उठा सकते हैं।

ग्रंथ खुले पत्रों में इस प्रकार छापा गया है कि प्रतिवर्ष में होने वाले नये आविष्कारों का समावेश उसमें आसानी के साथ किया जाता है और ग्रंथ का ग्राहक घर बैठे ही नये-नये आविष्कारों से पूर्ण परिचित होता रहता है। इस काम के लिए उसे दुनिया भर के चिकित्सा सम्बन्धी जर्नलों तथा अन्य सामयिक पत्रों की खाक नहीं छाननी पड़ती। मजेकी बात यह है कि इसके लिए ग्रंथ के ग्राहक को लंबी-चौड़ी रकम भी खर्च नहीं करनी पड़ती।

मोनोटाइप की छपाई, मजबूत कागज, छप रही है।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पताः— **मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस**

सूचीवेध विज्ञान

ले० आयुर्वेदाचार्य, डा० रमेशचन्द्र वर्मा,

एम. एस. सी. ए. डी. आई. एम. एस.

अध्यापक आयुर्वेद विश्व-विद्यालय, झांसी।

संशोधित तथा परिवर्धित चतुर्थ संस्करण—शीघ्र प्रकाशित हो रहा है—पृष्ठ संख्या १२००, सजिल्द, सुन्दर छपाई, सफेद चिकना कागज, लगभग ३० चित्रों सहित। मूल्य केवल १०) यह भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त इन्जेक्शन विषय (Injection Therapy) की अमूल्य पुस्तक है।

प्रथम खण्ड—में सूचीवेध देने के स्थान, विशोधन कर्म (Sterlization) इन्जेक्शन देने के स्थानों की शारीरिक रचना, (General Anatomy) और इन्जेक्शन के सम्पूर्ण प्रकार उनके देने की विधियां, हृजे में से लाइन देने की विधि, पर भी प्रकाश दिया है। तथा रक्त प्रसेपण करने का विधान, और किन २ दशाओं में सूचीवेध से उपद्रव होते हैं, उनकी सामान्य तथा विशेष चिकित्सा, आदि बातों का विस्तृत वर्णन है।

द्वितीय खण्ड—में इन्जेक्शन में प्रयुक्त होने वाली औषधियों का गुण कार्य तथा रोग प्रयोग विधि—(Materia Medica and the Theurapatic of Parentral Medicies) यथा एड्रिनेलिन, कोरामिन पिच्यूट्रीन, पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, क्लोरोमाइ से टीन, आरोमाइसिन, टेरामाइसिन (P. A. S.) सल्फोन, (Arsenic Compounds) विस्मथ थेरापि, सल्फेनामाइड थेरापि, (Iergapyrin) हार-मोन्स, प्रोटीन थेरापि, अन्जन (Antimony.) के योग, स्वर्ण के योग, क्लीनीन के इन्जेक्शन, सल्फोन, कुष्ठनाशक इन्जक्शन (E. C. C. O.) चाल मोगरा आयल, लेपरायल, डिजिटेलिस, डिजीटाक्सिफेरोनिकम, विटामिन थेरापि (Vitamin therapy) पारद के योग (Mersalyal Neptal) मूत्रल औषधियां (Hexamine, Direytin) एन्टी हिस्टेमाइन औषधियां (Benedral) आदि अनेक प्रचलित इन्जेक्शनों का सुन्दर विस्तृत वर्णन किया गया है इनके अलावा सीर; वैक्सीन फाइलो कोजन, इमूनोजन, आदि का भी समावेश किया गया है।

तृतीय खण्ड—में प्रत्येक रोगानुसार इन्जेक्शन किस प्रकार व्यवहार करते हैं, और किस २ दशा में सूचीवेध करना आवश्यक है या नहीं आदि बातों की विशद विवेचना की गई है। और इन्जेक्शन द्वारा उत्पन्न दुस्टप्रभावों (Complication) के प्रतिकार करने का भी वर्णन है इन एलोपैथी औषधियों के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा किस प्रकार करना आदि ज्ञातव्य बातों का समुल्लेख है। पुस्तक में ३० (Blocks) या चित्र यथा स्थान दिये गये हैं जिससे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। आयुर्वेद छात्रों को तथा वैद्य समुदाय को अभी से अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लेनी चाहिये, अन्यथा अन्य संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

डाक्टर रमेश वर्मा की निदान सम्बन्धी एलोपैथिक पुस्तकें
(Clinical and Pathological Books)

हृदय परीक्षा

(Examination of the Heart)

पुस्तक में हृदय की शारीरिक रचना, तथा हृद्रोगियों के प्रधान और उप प्रधान लक्षण (Cardinal Symptom) भौतिक परीक्षण ((Inspection) स्पर्शन (Palpation) ठेपन विधि (Percussion) तथा स्टेथेस्कोप द्वारा हृदनाद, (Heart Sound) की स्वस्थ और विकृत दशाओं का ज्ञान, साथ ही हृदय के नाद (Murmursound) तथा संकोचीय और प्रसारीय नाद (Systolic diastolic) और (Reurgitant) आदि का १२ चित्रों सहित वर्णन किया गया है मूल्यलागत मात्र २) पृष्ठ १२०

फुफ्फुस परीक्षा

(Examination of the lungs)

का द्वितीय परिवर्धित संस्करण में फुफ्फुस का शारीरिक ज्ञान तथा श्वास प्रश्वास संस्थान के रोगियों के प्रधान और उप प्रधान लक्षण (Cardinal Symptoms) और इसके अलावा दर्शन विधि (Inspection) स्पर्शण (Palpation) ठेपन विधि (Peacussiou) तथा स्टेथस्कोप न्यूमोनिया, राजयक्ष्मा, जीर्णकास, और अन्य फुफ्फुस सम्बन्धी विकृतियों को समझाने वाला यह अनमोल ग्रन्थ १२ चित्रों सहित है। पृष्ठ १२५ मूल्य १॥)

कफ परीक्षा

(Sputum-Examination)

विकृति विज्ञान का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कराने वाला हिन्दी भाषा में यह ग्रन्थ प्रथम ही प्रकाशित किया गया है, यथा स्थान आवश्यक चित्रों सहित कफ की सम्पूर्ण परीक्ष्य विधियों पर प्रकाश डाला गया है। सबसे पूर्व भौतिक परीक्षण रासायनिक परीक्षण और अणुवीक्षय परीक्षण पद्धति (Microscopic Examination) का विस्तृत वर्णन है साथ ही रंजक आदि जांचने की रंजक विधियों (Staining methods) का भी प्रकाश किया गया है। राजयक्ष्मा, इनफ्लुएन्जा, स्टेफिलो को काई आदि अणु जीवों को यथा स्थान १३ चित्र हैं। मूल्य १) मात्र पृष्ठ ६८

मल परीक्षा

(Stool-Examination)

यह पुस्तक (Practical Pathology) विषय की है। जिसमें रोगी के मल में उपस्थित एमीबा, कृमि रक्त फल, (Ameobicyst) आदि बातों का ज्ञान होता है।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता:— **मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस**

राष्ट्रभाषा हिन्दी में आधुनिक शरीर विज्ञान का सर्व प्रथम, सर्वसम्मानित, प्रामाणिक ग्रंथ

हमारे शरीर की रचना

लेखक—लंदन, डबलिन, ग्लासगो और लिवरपुल आदि विश्वविद्यालयों से सम्मानित, संयुक्तप्रांत के सिविलसर्जन, शरीरविज्ञान के व्याख्याता–स्वर्गीय

डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा

स्वर्गीय डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा के इस ग्रंथ का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यही वह ग्रंथ है जिसकी रचना करने के बाद डाक्टरसाहब का नाम चिकित्सा से साधारण सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति के पास भी पहुंच गया था और हिन्दी जगत् की कांग्रेस अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक भेंट दिया था तथा काशी की नागरीप्रचारिणी सभा ने, 'रेडिचे पदक' दिया था। ग्रंथ की मांग इतनी हुई कि एक बार एक ही वर्ष में इतने बड़े ग्रंथ के दो संस्करण छापने पड़े।

डा० त्रिलोकीनाथ के देहावसान के उपरान्त उनके अनुज, 'एलोपैथिक गाइड' और 'एलोपैथिक चिकित्सा आदि लोकप्रिय ग्रंथों के यशस्वी लेखक डा० रामनाथ वर्मा ने पारिभाषिक शब्दों के तुल्यार्थ शब्द भी साथ ही लिख दिए। कुछ दिन बाद स्वर्गीय लेखक के सुयोग्य पुत्र, मेडिकल कालेज लखनऊ में शरीरविज्ञान के व्याख्याता (अब रीडर) डा० हरिश्चन्द्र वर्मा ने ग्रंथ को आद्योपांत दुहरा कर इसे और भी संवार दिया तथा हर हिन्दी के पारिभाषिक शब्द के साथ उसका अंग्रेजी नाम देकर इसे अप-टू-डेट बना दिया है।

हमारे चिकित्सा संबंधी प्रकाशनों की माला में यह ग्रंथ इस प्रकार संशोधित और परिवर्धित स्वरूप में, अपना द्विगुणित गौरव प्रकट कर रहा है।

मोनो की साफ-सुथरी छपाई, दूध-जैसा सफेद चिकना कागज, अनेकों रंगीन और सादे चित्रों सहित संशोधित परिवर्धित संस्करण, दो भाग—मू० प्रथम भाग १०=), द्वितीय भाग १४॥=)

(हरीतक्यादि) भावप्रकाशनिघण्टु

पं० विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालंकार, प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वेदिक कालिज कृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित।

इसमें हर एक बूटी (वनस्पति) के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर) तना, काष्ठ आदि का पूर्ण वर्णन है। वनस्पति कब फूलती है, उसे किस भूमि में, किस ऋतु में, किस काल में संग्रह करना चाहिये; औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं। यद्यपि वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये वनस्पति के पर्याय होते हैं किन्तु उसे हर एक व्यक्ति नहीं समझ सकता इसलिये उन्हें भी व्यक्त कर दिया है; जहां जहां आवश्यक समझा गया है औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। वंशलोचन एलवा, मस्तगी आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है। हर एक वनस्पति के नाम भिन्न-भिन्न भाषाओं में दिये हैं। जहाँ आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहीं पाश्चात्य वनस्पतिवेत्ताओं के भी विचार दिये हैं। यूनानी हकीमों के विचार भी यथा स्थान हैं जिससे अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियों के गुण और शक्ति का पता भी लग जावेगा। एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमोंके सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियां प्रायः वैद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है। अतः उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया गया है। एक बहुत बड़ी विशेषता इस में यह है कि प्रायः प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई है तथा बताया है कि औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्पनाशन के लिये क्या देना चाहिये। अतः यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है। कोई भी बात जो निघंटु में समझने लायक है इस में छूटी नहीं है। यू० पी० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड ने जो आलुबुखारा, हरमल, ऑलिव आॅयल आदि अन्य चीजें भी परीक्षामें निर्धारित की हुई हैं उन सब का वर्णन भी इस संस्करण में किया है। छात्रों के लिये यह नितान्त उपयोगी पुस्तक हो गई है। अनुरोध है कि पं० विश्वनाथजी का नाम देखकर पुस्तक खरीदें। पक्की कपड़े की जिल्द, परिवर्धित संस्करण: दाम केवल ७) रु०।

मार्डनमेडिकल ट्रीटमेंट (हिन्दीमें)

लेखक—लखनऊ मेडिकल कालेज के फार्माकालोजी विभाग के अध्यक्ष

डा० एम० एल० गुजराल

एलोपैथिक-चिकित्सा प्रणाली विकास के पथपर है। उसमें नित नये आविष्कार होते रहते हैं। उन आविष्कारों से असाध्य समझे जाने वाले रोग भी सहज-साध्य हो जाते हैं। डाक्टरों को इन आविष्कारों का पूरा लाभ पहुंचाने के लिए डा० गुजराल ने अंग्रेजी भाषा में 'मार्डन मेडिकल ट्रीटमेंट' नामका ग्रंथ लिखा है। अनुभवी डाक्टर साहब ने संसार भर के जर्नलों का अध्ययन किया और एलोपैथिक प्रणालीसे सब रोगोंकी तथा सब प्रकार की आधुनिकतम चिकित्सा अपने ग्रंथ में उपस्थिति कर दी।

हमने डा० गुजराल का ध्यान इस दिशा में आकर्षित किया कि आजकल कितने ही वैद्य बंधु भी एलोपैथिक चिकित्सा, विशेषतः उसके नये आविष्कारों को अपनाने लगे हैं। उनके उपयोग के लिए यह ग्रंथ हिन्दी में भी होना चाहिए। डाक्टरसाहब सहमत हो गये और उनके विशाल अध्ययन का परिणाम हिन्दी में भी आ गया है जिससे वैद्यबंधु पूरा लाभ उठा सकते हैं।

ग्रंथ खुले पत्रों में इस प्रकार छापा गया है कि प्रतिवर्ष में होने वाले नये आविष्कारों का समावेश उसमें आसानी के साथ किया जाता है और ग्रंथ का ग्राहक घर बैठे ही नये-नये आविष्कारों से पूर्ण परिचित होता रहता है। इस काम के लिए उसे दुनिया भर के चिकित्सा सम्बन्धी जर्नलों तथा अन्य सामयिक पत्रों की खाक नहीं छाननी पड़ती। मजेकी बात यह है कि इसके लिए ग्रंथ के ग्राहक को लंबी-चौड़ी रकम भी खर्च नहीं करनी पड़ती।

मोनोटाइप की छपाई, मजबूत कागज, छप रही है।

सूचीवेध विज्ञान

ले० आयुर्वेदाचार्य, डा० रमेशचन्द्र वर्मा, एम. एस. सी. ए. डी. आई. एम. एस.

अध्यापक आयुर्वेद विश्व-विद्यालय, झांसी।

संशोधित तथा परिवर्धित चतुर्थ संस्करण—शीघ्र प्रकाशित हो रहा है—पृष्ठ संख्या १२००, सजिल्द, सुन्दर छपाई, सफेद चिकना कागज, लगभग ३० चित्रों सहित। मूल्य केवल १०) यह भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त इन्जेक्शन विषय (Injection Therapy) की अमूल्य पुस्तक है।

प्रथम खण्ड—में सूचीवेध देने के स्थान, विशोधन कर्म (Sterlization) इन्जेक्शन देने के स्थानों की शारीरिक रचना, (General Anatomy) और इन्जेक्शन के सम्पूर्ण प्रकार उनके देने की विधियाँ, हेंजे में से लाइन देने की विधि, पर भी प्रकाश दिया है। तथा रक्त प्रसेपण करने का विधान, और किन २ दशाओं में सूचीवेध से उपद्रव होते हैं, उनकी सामान्य तथा विशेष चिकित्सा, आदि बातों का विस्तृत वर्णन है।

द्वितीय खण्ड—में इन्जेक्शन में प्रयुक्त होने वाली औषधियों का गुण कार्य तथा रोग प्रयोग विधि—(Materia Medica and the Theurapatic of Parentral Medicies) यथा एड्रिनेलिन, कोरामिन पिच्यूट्रीन, पेनिसेलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, क्लोरोमाइ से टीन, आरोमाइसिन, टेरामाइसिन (P. A. S.) सल्फोन, (Arsenic Compounds) विस्मथ थेरापि, सल्फेनामाइड थेरापि, (Iergapyrin) हारमोन्स, प्रोटीन थेरापि, अन्जन (Antimony.) के योग, स्वर्ण के योग, क्लीनीन के इन्जेक्शन, सल्फोन, कुष्ठनाशक इन्जक्शन (E. C. C. O.) चाल मोगरा आयल, लेपरायंल, डिजिटेलिस, डिजीटाविसफेरोनिकम, विटामिन थेरापि (Vitamin therapy) पारद के योग (Mersalyal Neptal) मूत्रल औषधियां (Hexamine, Direytin) एन्टी हिस्टेमाइन औषधियां (Benedral) आदि अनेक प्रचलित इन्जेक्शनों का सुन्दर विस्तृत वर्णन किया गया है इनके अलावा सीर; वैक्सीन फाइलो कोजन, इमुनोजन, आदि का भी समावेश किया गया है।

तृतीय खण्ड—में प्रत्येक रोगानुसार इन्जेक्शन किस प्रकार व्यवहार करते हैं, और किस २ दशा में सूचीवेध करना आवश्यक है या नहीं आदि बातों की विशद विवेचना की गई है। और इन्जेक्शन द्वारा उत्पन्न दुष्टप्रभावों (Complication) के प्रतिकार करने का भी वर्णन है इन एलोपैथी औषधियों के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा किस प्रकार करना आदि ज्ञातव्य बातों का समुल्लेख है। पुस्तक में ३० (Blocks) या चित्र यथा स्थान दिये गये हैं जिससे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। आयुर्वेद छात्रों को तथा वैद्य समुदाय को अभी से अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लेनी चाहिये, अन्यथा अन्य संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

डाक्टर रमेश वर्मा की निदान सम्बन्धी एलोपैथिक पुस्तकें (Clinical and Pathological Books)

हृदय परीक्षा

(Examination of the Heart)

पुस्तक में हृदय की शारीरिक रचना, तथा हृद्रोगियों के प्रधान और उप प्रधान लक्षण (Cardinal Symptom) भौतिक परीक्षण ((Inspection) स्पर्शन (Palpation) ठेपन विधि (Percussion) तथा स्टेथेस्कोप द्वारा हृदनाद, (Heart Sound) की स्वस्थ और विकृत दशाओं का ज्ञान, साथ ही हृदय के नाद (Murmursound) तथा संकोचीय और प्रसारीय नाद (Systolic diastolic) और (Recurgitant) आदि का १२ चित्रों सहित वर्णन किया गया है मूल्यलागत मात्र २) पृष्ठ १२०

फुफ्फुस परीक्षा

(Examination of the lungs)

का द्वितीय परिवर्धित संस्करण में फुफ्फुस का शारीरिक ज्ञान तथा श्वास प्रश्वास संस्थान के रोगियों के प्रधान और उप प्रधान लक्षण (Cardinal Symptoms) और इसके अलावा दर्शन विधि (Inspection) स्पर्शण (Palpation) ठेपन विधि (Peacussiou) तथा स्टेथस्कोप न्यूमोनिया, राजयक्ष्मा, जीर्णकास, और अन्य फुफ्फुस सम्बन्धी विकृतियों को समझाने वाला यह अनमोल ग्रन्थ १२ चित्रों सहित है। पृष्ठ १२५ मूल्य १॥)

कफ परीक्षा

(Sputum-Examination)

विकृति विज्ञान का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कराने वाला हिन्दी भाषा में यह ग्रन्थ प्रथम ही प्रकाशित किया गया है, यथा स्थान आवश्यक चित्रों सहित कफ की सम्पूर्ण परीक्ष्य विधियों पर प्रकाश डाला गया है। सबसे पूर्व भौतिक परीक्षण रासायनिक परीक्षण और अणुवीक्षय परीक्षण पद्धति (Microscopic Examination) का विस्तृत वर्णन है साथ ही पंक आदि जांचने की रंजक विधियां (Staining methods) का भी प्रकाश किया गया है। राजयक्ष्मा, इनफ्लुएन्जा, स्टेफिलो को कोई आदि अणु जीवों को यथा स्थान १२ चित्र हैं। मूल्य १) मात्र पृष्ठ ६८

मल परीक्षा

(Stool-Examination)

यह पुस्तक (Practical Pathology) विषय की है। जिसमें रोगी के मल में उपस्थित एमीबा, कृमि रक्त फल, (Amcobicyst) आदि बातों का ज्ञान होता है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी में आधुनिक शरीर विज्ञान का सर्व प्रथम,
सर्वसम्मानित, प्रामाणिक ग्रंथ

हमारे शरीर की रचना

लेखक—लंदन, डबलिन, ग्लासगो और लिवरपुल आदि विश्वविद्यालयों से सम्मानित, संयुक्तप्रांत के सिविलसर्जन, शरीरविज्ञान के व्याख्याता–स्वर्गीय

डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा

स्वर्गीय डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा के इस ग्रंथ का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यही वह ग्रंथ है जिसकी रचना करने के बाद डाक्टरसाहब का नाम चिकित्सा से साधारण सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति के पास भी पहुंच गया था और हिन्दी जगत् की कांग्रेस अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हें अपना सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक भेंट दिया था तथा काशी की नागरीप्रचारिणी सभा ने, 'रेडिचे पदक' दिया था। ग्रंथ की मांग इतनी हुई कि एक बार एक ही वर्ष में इतने बड़े ग्रंथ के दो संस्करण छापने पड़े।

डा० त्रिलोकीनाथ के देहावसान के उपरान्त उनके अनुज, 'एलोपैथिक गाइड' और 'एलोपैथिक चिकित्सा आदि लोकप्रिय ग्रंथों के यशस्वी लेखक डा० रामनाथ वर्मा ने पारिभाषिक शब्दों के तुल्यार्थ शब्द भी साथ ही लिख दिए। कुछ दिन बाद स्वर्गीय लेखक के सुयोग्य पुत्र, मेडिकल कालेज लखनऊ में शरीरविज्ञान के व्याख्याता (अब रीडर) डा० हरिश्चन्द्र वर्मा ने ग्रंथ को आद्योपांत दुहरा कर इसे और भी संवार दिया तथा हर हिन्दी के पारिभाषिक शब्द के साथ उसका अंग्रेजी नाम देकर इसे अप-टू-डेट बना दिया है।

हमारे चिकित्सा संबंधी प्रकाशनों की माला में यह ग्रंथ इस प्रकार संशोधित और परिवर्धित स्वरूप में, अपना द्विगुणित गौरव प्रकट कर रहा है।

मोनो की साफ-सुथरी छपाई, दूध-जैसा सफेद चिकना कागज, अनेकों रंगीन और सादे चित्रों सहित संशोधित परिवर्धित संस्करण, दो भाग—मू० प्रथम भाग १०=), द्वितीय भाग १५॥=)

(हरीतक्यादि) भावप्रकाशनिघण्टु

पं० विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदशास्त्राचार्य, साहित्यालंकार, प्रिन्सिपल ललित-हरि आयुर्वेदिक कालिज कृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित।

इसमें हर एक बूटी (वनस्पति) के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर) तना, काष्ठ आदि का पूर्ण वर्णन है। वनस्पति कब फूलती है, उसे किस भूमि में, किस ऋतु में, किस काल में संग्रह करना चाहिये; औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं। यद्यपि वनस्पति के पर्यालोचनात्मक विवरण के लिये वनस्पति के पर्याय होते हैं किन्तु उसे हर एक व्यक्ति नहीं समझ सकता इसलिये उन्हें भी व्यक्त कर दिया है; जहां जहां आवश्यक समझा गया है औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। वंशलोचन एलवा, मुसब्बर आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है। हर एक वनस्पति के नाम भिन्न-भिन्न भाषाओं में दिये हैं। जहां आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहीं पाश्चात्य वनस्पति-वेत्ताओं के भी विचार दिये हैं। यूनानी हकीमों के विचार भी यथा स्थान हैं जिससे अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियों के गुण और शक्ति का पता भी लग जावेगा। एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमोंके सहयोग में रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियां प्रायः वैद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उनका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है। अतः उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया गया है। एक बहुत बड़ी विशेषता इस में यह है कि प्रायः प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई है तथा बताया है कि औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्पनाशन के लिये क्या देना चाहिये। अतः यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है। कोई भी बात जो निघंटु में समझने लायक है इस में छूटी नहीं है। यू० पी० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड ने जो आलुबुखारा, हरमल, औलिव आँयल आदि अन्य चीजें भी परीक्षामें निर्धारित की हुई हैं उन सब का वर्णन भी इस संस्करण में किया है। छात्रों के लिये यह नितान्त उपयोगी पुस्तक हो गई है। अनुरोध है कि पं० विश्वनाथजी का नाम देखकर पुस्तक खरीदें। पक्की कपड़े की जिल्द, परिवर्धित संस्करण: दाम केवल ७) रु०।

मार्डनमेडिकल ट्रीटमेंट (हिन्दीमें)

लेखक—लखनऊ मेडिकल कालेज के फार्माकालोजी विभाग के अध्यक्ष

डा० एम० एल० गुजराल

एलोपैथिक चिकित्सा प्रणाली विकास के पथपर है। उसमें नित नये आविष्कार होते रहते हैं। उन आविष्कारों से असाध्य समझे जाने वाले रोग भी सहज-साध्य हो जाते हैं। डाक्टरों को इन आविष्कारों का पूरा लाभ पहुंचाने के लिए डा० गुजराल ने अंग्रेजी भाषा में 'मार्डन मेडिकल ट्रीटमेंट' नामका ग्रंथ लिखा है। अनुभवी डाक्टर साहब ने संसार भर के जर्नलों का अध्ययन किया और एलोपैथिक प्रणालीसे सब रोगोंकी तथा सब प्रकार की आधुनिकतम चिकित्सा अपने ग्रंथ में उपस्थिति कर दी।

हमने डा० गुजराल का ध्यान इस दिशा में आकर्षित किया कि आजकल कितने ही वैद्य वंधु भी एलोपैथिक चिकित्सा, विशेषतः उसके नये आविष्कारों को अपनाने लगे हैं। उनके उपयोग के लिए यह ग्रंथ हिन्दी में भी होना चाहिए। डाक्टरसाहब सहमत हो गये और उनके विशाल अध्ययन का परिणाम हिन्दी में भी आ गया है जिससे वैद्यवंधु पूरा लाभ उठा सकते हैं।

ग्रंथ खुले पत्रों में इस प्रकार छापा गया है कि प्रतिवर्ष में होने वाले नये आविष्कारों का समावेश उसमें आसानी के साथ किया जाता है और ग्रंथ का ग्राहक घर बैठे ही नये-नये आविष्कारों से पूर्ण परिचित होता रहता है। इस काम के लिए उसे दुनिया भर के चिकित्सा सम्बन्धी जर्नलों तथा अन्य सामयिक पत्रों की खाक नहीं छाननी पड़ती। मजे की बात यह है कि इसके लिए ग्रंथ के ग्राहक को लंबी-चौड़ी रकम भी खर्च नहीं करनी पड़ती।

मोनोटाइप की छपाई, मजबूत कागज, छप रही है।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता:— **मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नैपाली खपरा पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस**

सूचीवेध विज्ञान

ले० आयुर्वेदाचार्य, डा० रमेशचन्द्र वर्मा, एम. एस. सी. ए. डी. आई. एम. एस.

अध्यापक आयुर्वेद विश्व-विद्यालय, झांसी।

संशोधित तथा परिवर्धित चतुर्थ संस्करण—शीघ्र प्रकाशित हो रहा है—पृष्ठ संख्या १२००, सजिल्द, सुन्दर छपाई, सफेद चिकना कागज, लगभग ३० चित्रों सहित। मूल्य केवल १०) यह भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त इन्जेक्शन विषय (Injection Therapy) की अमूल्य पुस्तक है।

प्रथम खण्ड—में सूचीवेध देने के स्थान, विशोधन कर्म (Sterlization) इन्जेक्शन देने के स्थानों की शारीरिक रचना, (General Anatomy) और इन्जेक्शन के सम्पूर्ण प्रकार उनके देने की विधियाँ, हृंजे में से लाइन देने की विधि, पर भी प्रकाश दिया है। तथा रक्त प्रक्षेपण करने का विधान, और किन २ दशाओं में सूचीवेध से उपद्रव होते हैं, उनकी सामान्य तथा विशेष चिकित्सा, आदि बातों का विस्तृत वर्णन है।

द्वितीय खण्ड—में इन्जेक्शन में प्रयुक्त होने वाली औषधियों का गुण कार्य तथा रोग प्रयोग विधि—(Materia Medica and the Theurapatic of Parentral Medicies) यथा एड्रिनेलिन, कोरामिन पिच्यूट्रीन, पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, क्लोरोमाइ से टीन, आरोमाइसिन, टेरामाइसिन (P. A. S.) सल्फोन, (Arsenic Compounds) विस्मथ थेरापि, सल्फेनामाइड थेरापि, (Iergapyrin) हारमोन्स, प्रोटीन थेरापि, अन्जन (Antimony.) के योग, स्वर्ण के योग, क्वीनीन के इन्जेक्शन, सल्फोन, कुष्ठनाशक इन्जक्शन (E. C. C. O.) चालमोगरा आयल, लेपरायंल, डिजिटेलिस, डिओटाक्सिफेरोनिकम, विटामिन थेरापि (Vitamin therapy) पारद के योग (Mersalyal Neptal) मूत्रल औषधियाँ (Hexamine, Direytin) एन्टी हिस्टेमाइन औषधियाँ (Benedral) आदि अनेक प्रचलित इन्जेक्शनों का सुन्दर विस्तृत वर्णन किया गया है इनके अलावा सीर; वैक्सीन फाइलो कोजन, इमूनोजन, आदि का भी समावेश किया गया है।

तृतीय खण्ड—में प्रत्येक रोगानुसार इन्जेक्शन किस प्रकार व्यवहार करते हैं, और किस २ दशा में सूचीवेध करना आवश्यक है या नहीं आदि बातों की विशद विवेचना की गई है। और इन्जेक्शन द्वारा उत्पन्न दुष्टप्रभावों (Complication) के प्रतिकार करने का भी वर्णन है इन एलोपैथी औषधियों के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा किस प्रकार करना आदि ज्ञातव्य बातों का समुल्लेख है। पुस्तक में ३० (Blocks) या चित्र यथा स्थान दिये गये हैं जिससे पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। आयुर्वेद छात्रों को तथा वैद्य समुदाय को अभी से अपनी प्रतियाँ सुरक्षित करा लेनी चाहिये, अन्यथा अन्य संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी।

डाक्टर रमेश वर्मा की निदान सम्बन्धी एलोपैथिक पुस्तकें

(Clinical and Pathological Books)

हृदय परीक्षा

(Examination of the Heart)

पुस्तक में हृदय की शारीरिक रचना, तथा हृद्रोगियों के प्रधान और उप प्रधान लक्षण (Cardinal Symptom) भौतिक परीक्षण ((Inspection) स्पर्शन (Palpation) ठेपन विधि (Percussion) तथा स्टेथेस्कोप द्वारा हृदनाद, (Heart Sound) की स्वस्थ और विकृत दशाओं का ज्ञान, साथ ही हृदय के नाद (Murmursound) तथा संकोचीय और प्रसारीय नाद (Systolic diastolic) और (Recurgitant) आदि का १२ चित्रों सहित वर्णन किया गया है मूल्यलागत मात्र २) पृष्ठ १२०

फुफ्फुस परीक्षा

(Examination of the lungs)

का द्वितीय परिवर्धित संस्करण में फुफ्फुस का शारीरिक ज्ञान तथा श्वास प्रश्वास संस्थान के रोगियों के प्रधान और उप प्रधान लक्षण (Cardinal Symptoms) और इसके अलावा दर्शन विधि (Inspection) स्पर्शण (Palpation) ठेपन विधि (Peacussiou) तथा स्टेथस्कोप न्यूमोनिया, राजयक्ष्मा, जीर्णकास, और अन्य फुफ्फुस सम्बन्धी विकृतियों को समझाने वाला यह अनमोल ग्रन्थ १२ चित्रों सहित है। पृष्ठ १२५ मूल्य १॥)

कफ परीक्षा

(Sputum-Examination)

विकृति विज्ञान का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कराने वाला हिन्दी भाषा में यह ग्रन्थ प्रथम ही प्रकाशित किया गया है, यथा स्थान आवश्यक चित्रों सहित कफ की सम्पूर्ण परीक्ष्य विधियों पर प्रकाश डाला गया है। सबसे पूर्व भौतिक परीक्षण रासायनिक परीक्षण और अणुवीक्षण परीक्षण पद्धति (Microscopic Examination) का विस्तृत वर्णन है साथ ही पंक आदि जांचने की रंजक विधियों (Staining methods) का भी प्रकाश किया गया है। राजयक्ष्मा, इनफ्लुएन्जा, स्टेफिलो को कोई आदि अणु जीवों को यथा स्थान १३ चित्र हैं। मूल्य १) मात्र पृष्ठ ६८

मल परीक्षा

(Stool-Examination)

यह पुस्तक (Practical Pathology) विषय की है। जिसमें रोगी के मल में उपस्थित एमीबा, कृमि रक्त फल, (Ameobicyst) आदि बातों का ज्ञान होता है।

साथ ही भौतिक रासायनिक तथा अणुवीक्ष्य परीक्ष्य पद्धतियों (Microsco Pical) का समन्वय है। यह IV तथा V year के विद्यार्थियों के लिये अत्यावश्यक है और यथा स्थान प्रत्येक अणु जीवों के (Slides) का चित्र भी दिया गया है मूल्य १॥) पृष्ठ ८०

रक्त परीक्षा

(Blood-Examination)

पुस्तक में रक्तकणों के सम्पूर्ण भेदों का वर्णन और उनके पहिचानने की विधि रक्तकण विभेदन की (Diffrentil counting) हेमोग्लोबिन गणना, तथा अणुवीक्ष्य परीक्षा द्वारा कालाजार, पाण्डु, विषमज्वर, उपदंश, कुष्ठ, पीतज्वर आदि रोगों में रक्त परीक्षण का ज्ञान, तथा (Khan-test), (Agglutination-test) तथा (W, R. Test), आदि का चित्रों सहित वर्णन है। शीघ्र प्रकाशित होगी। पृष्ठ २०० मूल्य २॥)

एण्टी बायोटिक्स

(Antibioticis)

इस पुस्तक में नवीन तथा प्रचलित तृणाणुनाशक औषधियाँ यथा पेनिसिलीन, क्लोरोमाय सेटीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, स्ट्रेप्टोकेन, इस्पोटोपेन, आरोमाइसिन, `रामाइसिन, (Seclomycin) डाइक्स्टेसिन, आदि का इतिहास, गुण धर्म, तथा रोगानुसार प्रयोग और मात्रा आदि का विस्तृत और विवेचनात्मक, वर्णन है साथ ही कीटाणुओं के परिज्ञान (Bacteriology) का भी वर्णन किया गया है छपाई स्वच्छ तथा कागज सफेद। पृष्ठ २५० मूल्य २॥) छप रही है।

मलेरिया (एलोपैथिक)

लेखक—डा० मनमोहन धूप मूल्य २।)

यह मलेरिया के ऊपर बड़ा उपयोगी ग्रन्थ है। इसमें सर्व प्रकार की नवीनतम औषधियां तथा उनके उपयोग, दोष आदि सब विषय दिये हैं। जैसे :—

वर्णन, ज्वर, इतिहास, मलेरिया के कारण, कीटाणु, (प्लाजमोडियम, मलेरिया, प्लाजमोडियम वाई वेक्स, प्लाजमोडियम फाल्सी पारम) मलेरिया से प्रतिवर्ष देश का नुकसान, ज्वर किस प्रकार होता है, मच्छर में साइकील, पैथालॉजी, मलेरिया के लक्षण प्रथमज्वर, ज्वर आरम्भ होने के लक्षण, प्राड्रोमेटा, कोल्ड स्टेज, हॉटस्टेज, पसीने की अवस्था-बिलीयस रेमिटेंट फीवर, सीरीब्रल मलेरिया, मलेरिया का अन्धापन, एलजिडो, कारडायक, रक्तपात परप्यूरिक, मलेरिया रीलेप्स, काकेक्सीया, काम्प्लीकेशन्स, मलेरिया के लक्षणों का चित्र, निदान, अन्य ज्वरों से अन्तर, परिणाम, चिकित्सा, साधारण चिकित्सा, आहार (खान पान) कुनीन मुंह के रास्ते सेवन करने की विधि, कुनीन उबलने वाली, कुनीन बिना कड़ुवापन, कुनीन की कुछ जानने लायक बातें, पुराना मलेरिया, परनीशियसमलेरिया, कुनीन, हृदय पर कुनीन का प्रभाव, कुनीन का रक्त में प्रवेश, और शरीर से बाहर निकास, मलेरिया नाशक औषधियां, विषैले प्रभाव, पालूड्रीन, पामाक्वीन, नवीन मलेरिया नाशक, मैपाक्रीन हाइड्रोक्लोराइड अटाब्रीन, मैपाक्रीन का टीका, पालूड्रीन प्रोगुनील, क्रानिक मलेरिया-ज्वर-अनीमिया, मलेरिया से बढ़ी हुई तिल्ली, तिल्ली के बड़ा होने का कारण, ब्लैक वाटर फीवर, लक्षण, परिणाम, चिकित्सा।

एलोपैथिक निघंटु

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा, दूसरा परिवर्द्धित संस्करण १०)

जिसमें औषधियां तैयार करने की भिन्न-भिन्न विधियां, नाप तौल (ग्रेन, ड्राम, औंस, पौंड, मिनिम, सी० सी०, किलोग्राम, स्टोन टीकपफुल, क्वार्ट, मन, सेर, तोले इत्यादि। ब्रिटिश फार्मेकोपिया में वर्णित औषधियों के भिन्न-भिन्न रूप (एसिटा, ऐसिड्स इलिक्सर्स, ऐक्सट्रैक्ट्स, डिकौक्शन्स, लिनिमेन्ट्स, स्पिरिट्स, टिंचर्स, सीरप्स, टैब्लेट्स इत्यादि), एम्प्यूल्स, बाथ्स, चेट्स, कैप्स्यूल्स, डूश, एनिमा, आइस बैग, पिग्मेन्ट्स इत्यादि का वर्णन, औषधियों को शरीर में प्रविष्ट करने के भिन्न-भिन्न तरीके, औषधियों की मात्रा निश्चित करना, परस्पर विरोधी गुण रखनेवाली औषधियाँ, विस्फोटक संयोग, औषधियों की सेवन विधि, बच्चों के नुस्खे, बच्चों के लिये भिन्न-भिन्न औषधियों की मात्रा, औषधियों की घुलनशीलता, भांति-भांति के लोशन तैयार करना, सैकड़ों पारिभाषिक शब्द, शरीर के विभिन्न अङ्गों पर विभिन्न औषधियों का क्या प्रभाव पड़ता है, भिन्न-भिन्न कार के ऐसिड्स, ऐसिड्स, ऐक्वा, इमलशन्स, लिनीमिन्ट्स, लिकर्स, लोशन्स, मिक्सचर्स, पाउडर्स इत्यादि तैयार करने के तरीके, तथा लगभग २००० एलोपैथिक पेटन्ट तथा साधारण औषधियों का वर्णन (मात्रा, मुख्य अवयव, गुण आदि लिखा हुआ है)। यह पुस्तक वैद्यों, हकीमों तथा ग्राम चिकित्सकों के लिये अनिवार्य और आयुर्वेदिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा जन साधारण के लिए अत्युपयोगी है। आप इस पुस्तक की एक प्रति शीघ्र खरीदें पहला संस्करण केवल छ महीनेमें समाप्त हुआ।

यूनानी तिब्ब का फार्मोकोपिया (सरल हिन्दी में)

मसीह—उल-मुल्क हकीम अजमल खाँ साहिब केवल भारत के लीडर होने की वजह से मशहूर थे लेकिन वह एक चमत्कारी हकीम भी थे। इनके पास अनेकों विदेशों के निराश रोगी आकर स्वास्थ्य लाभ करते थे। हकीम साहिब और उनके परिवार तथा दिल्ली के अन्य हकीमों के नित्य उपयोग में आनेवाले अद्भुत एवं चमत्कारी नुस्खों को श्री हकीम मनसारामजी शुक्ल वाईस प्रिंसिपल, तिब्बिया कालेज दिल्ली ने इस पुस्तक में लिख दिया है तथा हर रोग का खुलासा तथा पथ्य भी साथ दिया है। पुस्तक सर्वसाधारण के अत्यन्त उपयोगी है तथा नुस्खे भी बड़ी आसानी से मिलने वाले हैं। मूल्य ५) रु०।

सुश्रुत—उत्तरतंत्र

टीकाकार—लखनऊ मेडिकल कालेज के ख्यातिप्राप्त

डाक्टर जे. डी. शर्मा

प्राचीन भारत की इस विभूति में चिकित्सा विज्ञान की सब शाखाओं और उपशाखाओं का समावेश है—जिनमें शल्य, शालाक्य तथा स्त्री रोग, बालरोग और मानसरोग आदि सभी कुछ आ गया है। विज्ञान और अनुभवी टीकाकार ने आधुनिक और प्राचीन सामग्रीसे सबकी तुलनात्मक व्याख्या की है जिसमें कारण, निदान और चिकित्सा आदि सब कुछ आ गया है।

व्याख्याकार ने ग्रंथ में एक बहुत बड़ी विशेषता यह उत्पन्न कर दी है कि रोगों की प्राचीन नामावली—नेत्र, मुख और कर्ण रोगों की नामावली की भी आधुनिक व्याख्या कर दी है। ऐसा प्रयत्न आज तक किसी ने भी न किया था। यही नहीं, ऐसी कितनी ही बातों को पूर्ण वैज्ञानिक स्वरूप में सिद्ध कर दिया है जिन्हें आधुनिक चिकित्सक भी नहीं जानते।

विद्यार्थियों, नवीन एवं प्राचीन चिकित्सकों तथा पुस्तकालयों के लिए उत्तरतंत्र की यह व्याख्या परमावश्यक है क्योंकि जो इसे न देखेगा—वह आयुर्वेद के कितने ही गूढ़ रहस्यों से सर्वथा अपरिचित रह जायगा। पुस्तक तैयार हो रही है।

सुश्रुतसंहिता—शरीरस्थान

डाक्टर जे. डी. शर्मा

प्राचीन और नवीन शरीर शास्त्र का ऊहापोह करते हुए विद्वान व्याख्याकार ने प्राचीन शरीर विज्ञान का चमत्कार कागज पर उतार कर रख दिया है और उन सब शंकाओं का वैज्ञानिक समाधान कर दिया है जो आयुर्वेदिक शरीर शास्त्र पर उठाई जाती हैं। व्याख्या यह भी बताती है कि भारत के प्राचीन शरीर शास्त्र के कई सिद्धांत रूसी शरीर विज्ञान से भी पुष्ट होते हैं।

आधुनिक और प्राचीन शरीरशास्त्र का समन्वय करते हुए व्याख्याकार के पाण्डित्य ने शिरा, धमनी और शरीर शास्त्र की पारिभाषिक शब्दावली को वैज्ञानिक आधार दे दिया है और सिद्ध कर दिया है कि आधुनिक शरीर शास्त्र प्राचीन की किसी चीज को काट नहीं पाता।

शारीरिक वेदना के कारण और अनुभव आदि आधुनिक शरीरशास्त्र की कई बातें ऐसी हैं जिनकी पूरी व्याख्या वह स्वयं भी नहीं कर पाता। शरीर शास्त्र की इस व्याख्यामें वे बातें भी स्पष्ट हो गई हैं इसीलिए कई विख्यात शरीर शास्त्रज्ञों ने मुक्तकण्ठ से इस व्याख्या की प्रशंसा की है और कहा है कि आधुनिक शरीर शास्त्र भी प्राचीन के इस प्रकाश से अपने अंधेरे घर में उजाला कर सकता है!

मोनोटाइप की मनोहर छपाई, ग्लेज टिकाऊ कागज, सुदृढ़ जिल्द—अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कर लें।

सुश्रुतसंहिता सरल हिन्दी अनुवाद सहित सम्पूर्ण

सुश्रुत संहिता का हिन्दी अनुवाद आजकल कोई भी नहीं मिलता। इस कमी को पूरा करने के लिये कविराज श्री अत्रिदेवजी गुप्त विद्यालंकार ने सरल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण पुस्तक का किया है। सुविख्यात डा० घाणेकर जी ने इसकी भूमिका लिखी है। पुस्तक बहुत बढ़िया है। बढ़िया छपाई ग्लेज कागज पक्की कपड़े की जिल्द सहित सम्पूर्ण मूल्य २०) रु०।

गंगयति निदान

मूल लेखक पंजाब निवासी जैन यति गङ्गाराम। हिन्दी अनुवादकर्ता आयुर्वेदाचार्य श्री नरेन्द्रनाथजी शास्त्री। पक्की कपड़े की जिल्द मूल्य ६) रु०।

पंजाब के गांवों में प्रायः वैद्य लोग इसी पुस्तक के आधार से रोगों का निदान करते हैं। भाषा इतनी सरल है कि सर्वसाधारण भी बड़ी आसानीसे समझ सकता है। इसमें रोग जानने के उपाय, लक्षण, पूर्वरूप, उपशम, सम्प्राप्ति के लक्षण, भेद, स्वरूप, मिथ्याहार-विहार के लक्षण, ज्वर के पूर्वरूप, वात, पित्त, कफ, वातपित्त, वातकफ, सन्निपात आदि लक्षण ५२ प्रकार के सन्निपात का सविस्तार वर्णन है। विषमज्वर की संप्राप्ति, लक्षण, भेद, साध्यासाध्य, अर्थात् हर प्रकार के ज्वर का सविस्तर वर्णन है। स्थान स्थान पर पाश्चात्य मतानुसार भी वर्णन किया गया है। संग्रहणी रोग, अर्श (बवासीर) अजीर्णरोग, क्रिमिरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्तरोग, राजयक्ष्मा, कासरोग, श्वासरोग, स्वरभेद, अरोचक-रोग, छर्दिरोग, तृष्णारोग, मूर्छारोग, मदात्ययरोग, दाहरोग, उन्मादरोग, भूतोन्माद, अपस्माररोग, वातरोग, शूलरोग, उदावर्तरोग, गुल्मरोग, हृद्रोग, मूत्राघात, अश्मरीरोग, प्रमेहरोग, मेदारोग, उदररोग, शोथरोग, वृद्धिरोग, अर्बुदरोग, श्लीपदरोग, विद्रधिरोग, व्रणशोथरोग, शारीरव्रणरोग, सद्योव्रणरोग, नाड़ीव्रणरोग, भगन्दररोग, उपदंश, शूकरोग, कुष्ठरोग, अम्लपित्तरोग, विसर्परोग, विस्फोट, मसूरिकारोग मन्थर (टायफायड) ज्वर, स्नायुकारोग, क्षुद्ररोग, प्लेग, विष (चंडा) रोग, कुनखरोग, मुखरोग, ओष्ठरोग, दन्तरोग, जिह्वारोग, तालुरोग, कंठरोग, सर्वसररोग, कर्णरोग, नासारोग, शिररोग, शीर्षकलाशोथरोग, मस्तिष्करोग, बायगंठियारोग, हस्तमैथुनरोग, प्रदररोग, योनि-व्यापदरोग, बाधकरोग, हिस्टीरिया, गर्भरोग, योनिसंवरण गर्भिणी परिचर्या, प्रसूतरोग, स्तनरोग, दुग्धरोग, बाल-रोग, विषरोग, जंगमविषरोग, नाड़ीविज्ञान, मूत्रविज्ञान, शारीरिकविज्ञान, ज्वररोग, उरोग्रह, पार्श्वशूलरोग, आदि प्राचीन काल तथा आजकल में होनेवाले हर एक प्रकार के रोगों के पूर्वरूप, भेद, संप्राप्ति, लक्षण, सामान्यनिदान विशेष लक्षण, वातज, पित्तज, कफज तथा साध्यासाध्य तथा पाश्चात्य मतानुसार सविस्तर वर्णन किया गया है। इस एक ही पुस्तक से सर्वसाधारण मनुष्य हर प्रकार के रोगों का ठीक ठीक निदान कर सकता है।

श्री गोविन्ददास विरचित—कविराज नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा संशोधित और परिवर्धित—सरल हिन्दी अनवाद सहित—

भैषज्य रत्नावली

संशोधित–परिवर्धित ६ ठा संस्करण—बड़े साइज के आठ सौ पृष्ठ—ग्लेज कागज—बढ़िया छपाई—मूल्य १०॥)

आयुर्वेद के दिग्गज विद्वान और पीयूषपाणि चिकित्सक कविराज नरेन्द्रनाथजी मित्र द्वारा संशोधित, परिवर्धित और गंभीर विद्वान श्री जयदेवजी विद्यालंकार द्वारा सरल हिन्दी में किये गये अनुवाद सहित 'भैषज्यरत्नावली' का पहला संस्करण हमने आज से बीस वर्ष पहले प्रकाशित किया था। गोविन्ददासजी ने अपने जीवन भरके अनुभव से सिद्ध योगों को इस रत्नहार में गूंथ दिया था, इसलिए चिकित्सा-जगत् में इसका आदर पहले ही हो गया था परंतु ग्रंथ की रचना लगभग सौ वर्ष पहले हुई थी। समय ने मनुष्यों के रहन-सहन आदि में आकाश-पाताल का अंतर कर दिया था जिससे ग्रंथ में दी गई औषधियों की मात्राएँ अनुपयुक्त हो गई थीं। प्रवीणचिकित्सक तो इस त्रुटि को संभाल लेते थे परंतु नवीन और अभ्यास आरंभ करने वाले चूक जाते थे। कविराजजी ने अपने विशाल अनुभव के बलपर काल और पात्र के अनुसार मात्राएँ ठीक कर दीं तथा अपने अनेक सिद्ध योग सम्मिलित करके रत्नहार में कई लड़ियां बढ़ा दीं। विद्यालंकार जी के सुबोध अनुवाद ने ग्रंथ को सर्वसाधारण के लिए भी परमोपयोगी बना दिया। यही कारण है कि जब हमारी 'भैषज्यरत्नावली' प्रकाशित हुई तब चिकित्सा-जगत् आनन्दमग्न हो गया। इतने बड़े ग्रंथ के संस्करण, भारी संख्या में छापने के बाद भी, हाथोंहाथ समाप्त होने लगे। चिकित्सा के मर्मज्ञ आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्तजीने इसी बीच में अपने विशेषवचन जोड़कर ग्रंथ की शोभा और भी बढ़ा दी थी।

प्रसन्नता की बात है कि हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का इतना आदरमान देखकर कुछ प्रकाशक मित्र भी उत्साहित हुए और यत्र-तत्र अन्य 'भैषज्यरत्नावलियां' भी दीख पड़ीं। परंतु दुख की बात है कि उनके टीकाकारों ने कुछ ऐसी भूलें कर दी हैं जिनमें रोगियों का अनिष्ट हो सकता है और चिकित्सकों को अपयश मिल सकता है। इन लोगों की भूलों को हमारे इस छठे संस्करण में यत्र तत्र बता दिया है और उनके जो ठीक अनुभव सिद्ध अर्थ थे वह अर्थ दे दिये गये हैं।

हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का परिवर्धित छठा संस्करण उपस्थित है। अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय काशी के प्रधानाचार्य, परम प्रवीण और सहस्रों रोगियों को आरोग्य प्रदान करने वाले पं० लालचन्द्रजी वैद्यने इस संस्करण में पथ्यापथ्य, त्रयोदश शीताङ्गों की चिकित्सा, के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के चिकित्सक परममाननीय श्री सत्यनारायणजी शास्त्री के अनुभव आदि और बढ़ा दिए हैं। साथ ही साथ, कालाजार, निमोनिया, एस्प्रीन, एक्स-रे, थर्मामीटर और मेडिकल सर्टिफिकेट आदि के वर्णन देकर ग्रंथ को सर्वविधि से सर्वांगपूर्ण एवं अद्यतनीय (अप-टू-डेट) कर दिया है।

परिवर्द्धित चतुर्थ संस्करण

एलोपैथिक गाइड

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा, मूल्य १०) मात्र १३६

पुस्तक क्या है। गागर में सागर। आज जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा बन गई है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तककी अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हरएक वैद्य, हकीम के काम आसके और वह रोगों का एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज कर सकें। इसी कमी का अनुभव करते हुए डाक्टरजी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड़ इस पुस्तक में दे दिया है हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा वह इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा, डाक्टरजी ने एलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न-भिन्न तन्तुओं का वर्णन, दन्तोदगम, टीका लगवाना बच्चों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें, रक्तसंचार, नाड़ी परीक्षा, रक्तभार, लसीका वाहिनियाँ, प्रणाली विहीन ग्रन्थियाँ, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रासायनिक संगठन भोजन बनाने के संबंध में कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न-भिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्रपरीक्षा, मूत्र से स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न भिन्न आयु में का परिमाण विटेमिन्स, भिन्न भिन्न खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डुरोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाड़ी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वायु, टाइफाइड रोगियों के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, संक्रामकरोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर में प्रवेश करनके भिन्न भिन्न मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूची भेद चिकित्सामें प्रायः सभी प्रकार के इन्जेकशन्स का वर्णन है, किन किन बीमारियों में और कौन कौन से) वैक्सीन थैरेपी, सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे लिंक्टस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्चर्स आइन्टमेन्ट्स, पिगमेन्ट, पल्प पाऊडर्स। रोग, और उनमें प्रयोग किये जानेवाले इन्जेक्शन्स और कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनेसिलीन, सल्फोनेमाइड आदि उनके गुण दोष,प्रयोग, उपचार,औषधियों का हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषयों का इस पुस्तक में वर्णन कर दिया है। इसकी उपयोगिता का इसीसे पता लगता है कि दो वर्ष में तीन संस्करण इस पुस्तक के बिक चुके हैं। परिवर्धित चतुर्थ संस्करण में प्रसूति और इंजेक्शन और कई आवश्यक विषय बढ़ाये गये हैं। मूल्य १०)

ऐसी सर्वांग सुंदर, परमोपयोगी और सर्वांग संपूर्ण 'भैषज्यरत्नावली' आपको अन्यत्र नहीं मिल सकती। आज की आर्थिक अवस्था को देखते हुए मूल्य भी हमने सबसे कम—लागतमात्र रख दिया है।

... विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

ज्यौतिष-कार्यालय के नियम

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाए जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का सुख दुःख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछनेवालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त और अपना जन्म दिन, संवत् या उमर का अन्दाज तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्र की फीस ५।) रु० से ५०) रु० तक। वर्षफल २।।) से २५) रु० तक। टेवा २।) रु०। शुद्ध विवाह-मुहूर्त प्रश्न और ग्रह-मेलापक (कुण्डली मिलान) की फीस २।) रु०। भारत से बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, ब्रह्मा, जापान, अमेरिका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्नकुंडली बनाने की फीस ७) रु०। आयुर्निर्णय (अंशायुर्गणित मारकेश रोगविचारादि) २५) से १००) रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजनेवाले पत्र के साथ ही आधी फीस भेज दें। आधी फीस पेशगी आए बिना कार्यारंभ नहीं होता। पत्र-व्यवहार जहाँ तक हो सके हिन्दी राष्ट्रभाषा में होना चाहिए। वैरंग-पत्र-वापस किए जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है।

व्यापार के चांस-अनुभवसिद्ध एक तरफ के पक्के चांस कभी-कभी आते हैं। प्राचीन ढंग से तेजी मन्दी पूरी नहीं मिलती, प्रत्येक वर्ष में आनेवाले सोना, चाँदी, बाजरा, गेहूँ, रुई के २।४ चांस पूछना हो तो पेशगी ११) रु० भेजिए और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिये।

नोट—जो सज्जन हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें वो यह जवाबी कार्ड भेजकर मिलने की तारीख निश्चित कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना अम्बाला के मध्य सरहन्द [illegible] पड़ती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय-ग्रीष्म में ८ से ११ तक, [illegible] शीतकाल में १० बजे से शाम को ४ बजे तक। बाहर [illegible] ६ से ६ तक। [illegible] से एक ही [illegible]। हमारा ज्योतिष कार्यालय (मार्तण्ड [illegible]) [illegible] के पास है। निरीक्षक—मैनेजर पं० हरिनन्दशर्मा द्विवेदी शास्त्री।

पता—राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य
अध्यक्ष—श्रीमार्तण्ड ज्योतिषकार्यालय,
कुराली (पूर्वी पंजाब)

ज्योतिष शास्त्र का अद्भुत आविष्कार

भृगुसंहिता-पद्धति

सरल भाषा में

श्रीभगवानदासजी मित्तल, नया बाजार मथुरा
की

नवीन रचना

उक्त ज्योतिषी जी ने ९ ग्रहों की गति के अनुसार जितनी भी कुण्डलियाँ बन सकती हैं, वैसी १२९६ कुण्डलियाँ बनाकर उनके फलादेश इस पुस्तक में दे दिए हैं, जो प्रायः ठीक मिलते हैं।

वैसे तो ज्योतिष सम्बन्धी फलादेश के जितने प्राप्त ग्रन्थ हैं, सभी अपने अपने ढंग के अद्वितीय हैं किन्तु उक्त ग्रंथ सबसे निराला है।

पुस्तक उपादेय है। धड़ाधड़ बिक रही है। शीघ्रता करें अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य केवल १०)

स्तवसार्वभौम

इस अभूतपूर्व स्तोत्र के पाठ करने से भक्तों की सम्पूर्ण विपत्तियाँ दूर होकर सब शुभ कामनाएँ पूर्ण होती हैं। निष्काम पाठ करने से अति उत्तम फल की सद्यः प्राप्ति होती है। प्रभु कृपा से यह स्तोत्र १६ वर्ष की अल्पायु में ही एक बालक द्वारा श्लोक बद्ध निर्माण हुआ था। मूल्य ।)

सर्वविधपुस्तक प्राप्ति-स्थान—
मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, बनारस।

श्री गोविन्ददास विरचित–कविराज नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा संशोधित और परिवर्धित–सरल हिन्दी अनवाद सहित—

भैषज्य रत्नावली

संशोधित–परिवर्धित ६ ठा संस्करण—बड़े साइज के आठ सौ पृष्ठ–ग्लेज कागज–बढ़िया छपाई–मूल्य १०॥)

आयुर्वेद के दिग्गज विद्वान और पीयूषपाणि चिकित्सक कविराज नरेन्द्रनाथजी मित्र द्वारा संशोधित, परिवर्धित और गंभीर विद्वान श्री जयदेवजी विद्यालंकार द्वारा सरल हिन्दी में किये गये अनुवाद सहित 'भैषज्यरत्नावली' का पहला संस्करण हमने आज से बीस वर्ष पहले प्रकाशित किया था। गोविन्ददासजी ने अपने जीवन भरके अनुभव से सिद्ध योगों को इस रत्नहार में गूंथ दिया था, इसलिए चिकित्सा-जगत् में इसका आदर पहले ही हो गया था परंतु ग्रंथ की रचना लगभग सौ वर्ष पहले हुई थी। समय ने मनुष्यों के रहन-सहन आदि में आकाश-पाताल का अंतर कर दिया था जिससे ग्रंथ में दी गई औषधियों की मात्राएं अनुपयुक्त हो गई थीं। प्रवीणचिकित्सक तो इस त्रुटि को संभाल लेते थे परंतु नवीन और अभ्यास आरंभ करने वाले चूक जाते थे। कविराजजी ने अपने विशाल अनुभव के बलपर काल और पात्र के अनुसार मात्राएं ठीक कर दीं तथा अपने अनेक सिद्ध योग सम्मिलित करके रत्नहार में कई लडियां बढ़ा दीं। विद्यालंकार जी के सुबोध अनुवाद ने ग्रंथ को सर्वसाधारण के लिए भी परमोपयोगी बना दिया। यही कारण है कि जब हमारी 'भैषज्यरत्नावली' प्रकाशित हुई तब चिकित्सा-जगत् आनन्दमग्न हो गया। इतने बड़े ग्रंथ के संस्करण, भारी संख्या में छापने के बाद भी, हाथोंहाथ समाप्त होने लगे। चिकित्सा के मर्मज्ञ आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्तजीने इसी बीच में अपने विशेषवचन जोड़कर ग्रंथ की शोभा और भी बढ़ा दी थी।

प्रसन्नता की बात है कि हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का इतना आदरमान देखकर कुछ प्रकाशक मित्र भी उत्साहित हुए और यत्र-तत्र अन्य 'भैषज्यरत्नावलियां' भी दीख पड़ीं। परंतु दुख की बात है कि उनके टीकाकारों ने कुछ ऐसी भूलें कर दी हैं जिनमें रोगियों का अनिष्ट हो सकता है और चिकित्सकों को अपयश मिल सकता है। इन लोगों की भूलों को हमारे इस छठे संस्करण में यत्र तत्र बना दिया है और उनके जो ठीक अनुभव सिद्ध अर्थ थे वह अर्थ दे दिये गये हैं।

हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का परिवर्धित छठा संस्करण उपस्थित है। अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय काशी के प्रधानाचार्य, परम प्रवीण और सहस्रों रोगियों को आरोग्य प्रदान करने वाले पं० लालचन्द्रजी वैद्यने इस संस्करण में पथ्यापथ्य, त्रयोदश शीताङ्गों की चिकित्सा, के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के चिकित्सक परममाननीय श्री सत्यनारायणजी शास्त्री के अनुभव आदि और बढ़ा दिए हैं। साथ ही साथ, कालाजार, निमोनिया, एस्प्रीन, एक्स-रे, थर्मा-मीटर और मेडिकल सर्टिफिकेट आदि के वर्णन देकर ग्रंथ को सर्वविधि से सर्वांगपूर्ण एवं अद्यतनीय (अप-टू-डेट) कर दिया है।

परिवर्द्धित — चतुर्थ संस्करण

एलोपैथिक गाइड

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा, मूल्य १०) मात्र

पुस्तक क्या है। गागर में सागर। आज जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा बन गई है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तककी अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हरएक वैद्य, हकीम के काम आसके और वह रोगों का एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज कर सकें। इसी कमी का अनुभव करते हुए डाक्टरजी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड़ इस पुस्तक में दे दिया है हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा वह इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा, डाक्टरजी ने एलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न-भिन्न तन्तुओं का वर्णन, दन्तोदगम, टीका लगवाना बच्चों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें, रक्तसंचार, नाड़ी परीक्षा, रक्तभार, लसीका वाहिनियाँ, प्रणाली विहीन ग्रन्थियाँ, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रासायनिक संगठन भोजन बनाने के संबंध में कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न-भिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्रपरीक्षा, मूत्र से स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न भिन्न आयु में का परिमाण विटेमिन्स, भिन्न भिन्न खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डुरोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाड़ी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वायु, टाइफाइड रोगियों के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, संक्रामकरोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर में प्रवेश करनके भिन्न भिन्न मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूची भेद चिकित्सामें प्रायः सभी प्रकार के इन्जेक्शन्स का वर्णन है, किन किन बीमारियों में और कौन कौन से) वैक्सीन थैरेपी, सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे लिक्टस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्चर्स आइन्टमेन्टस्, पिग्मेन्ट, पल्प पाऊडर्स। रोग, और उनमें प्रयोग किये जानेवाले इन्जेक्शन्स और कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनेसिलीन, सल्फोनेमाइड आदि उनके गुण दोष,प्रयोग, उपचार,औषधियों का हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषयों का इस पुस्तक में वर्णन कर दिया हैं। इसकी उपयोगिता का इसीसे पता लगता है कि दो वर्ष में तीन संस्करण इस पुस्तक के बिक चुके हैं। परिवर्धित चतुर्थ संस्करण में प्रसूति और इंजेक्शन और कई आवश्यक विषय बढ़ाये गये हैं। मूल्य १०)

ऐसी सर्वांग सुंदर, परमोपयोगी और सर्वांग संपूर्ण 'भैषज्यरत्नावली' आपको अन्यत्र नहीं मिल सकती। आज की आर्थिक अवस्था को देखते हुए मूल्य भी हमने सबसे कम—लागतमात्र रख दिया है।

... की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता:—**मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस**

ज्योतिष-कार्यालय के नियम

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाए जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का सुख दुःख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछनेवालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त और अपना जन्म दिन, संवत् या उमर का अन्दाज तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्र की फीस ५१) रु० से २५०) रु० तक। वर्षफल २११) से २५) रु० तक। टेवा २१) रु०। शुद्ध विवाह-मुहूर्त प्रश्न और ग्रह-मेलापक (कुण्डली मिलान) की फीस २१) रु०। भारत से बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, ब्रह्मा, जापान, अमेरिका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्नकुंडली बनाने की फीस ७) रु०। आयुनिर्णय (अंशायुर्गणित मारकेश रोगविचारादि) २५) से १००) रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजनेवाले पत्र के साथ ही आधी फीस भेज दें। आधी फीस पेशगी आए बिना कार्यारंभ नहीं होता। पत्र-व्यवहार जहाँ तक हो सके हिन्दी राष्ट्रभाषा में होना चाहिए। बैरंग-पत्र-वापस किए जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है।

व्यापार के खास-अनुभवसिद्ध एक तरफ के पक्के खास कभी-कभी आते हैं। प्राचीन ढंग से तेजी मन्दी पूरी नहीं मिलती, प्रत्येक वर्ष में आनेवाले सोना, चाँदी, बाजरा, गेहूँ, रूई के २।४ खास पूछना हो तो पेशगी ११) रु० भेजिए और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिये।

नोट—जो सज्जन हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें वा वह जवाबी कार्ड भेजकर मिलने की तारीख निश्चित कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना, अम्बाला के मध्य सरहिन्द जंकशन से गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय—ग्रीष्म में ८ से ११ तक, मध्याह्नोत्तर ३ से ६ तक। शीतकाल में १० बजे से शाम को ४ बजे तक। बाहर से आकर सोम दिन में एक ही प्रश्न करें। हमारा ज्योतिष कार्यालय (मार्तण्ड ...) रेलवे स्टेशन के पास है। निवेदक—मैनेजर पं० हरिदत्तशर्मा द्विवेदी शास्त्री

ज्योतिष शास्त्र का अद्भुत आविष्कार

भृगुसंहिता-पद्धति

सरल भाषा में

श्रीभगवानदासजी मित्तल, नया बाजार मथुरा

की

नवीन रचना

उक्त ज्योतिषी जी ने ९ ग्रहों की गति के अनुसार जितनी भी कुण्डलियाँ बन सकती हैं, वैसी १२९६ कुण्डलियाँ बनाकर उनके फलादेश इस पुस्तक में दे दिए हैं, जो प्रायः ठीक मिलते हैं।

वैसे तो ज्योतिष सम्बन्धी फलादेश के जितने प्राप्त ग्रन्थ हैं, सभी अपने अपने ढंग के अद्वितीय हैं किन्तु उक्त ग्रन्थ सबसे निराला है।

पुस्तक उपादेय है। धड़ाधड़ बिक रही है। शीघ्रता करें अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य केवल १०)

स्तवसार्वभौम

इस अभूतपूर्व स्तोत्र के पाठ करने से भक्तों की सम्पूर्ण विपत्तियाँ दूर होकर सर्व शुभ कामनाएं पूर्ण होती हैं। निष्काम पाठ करने से अति उत्तम फल की सद्यः प्राप्ति होती है। प्रभु कृपा से यह स्तोत्र १६ वर्ष की अल्पायु में ही एक बालक द्वारा श्लोक बद्ध निर्माण हुआ था। मूल्य ।)

श्री गोविन्ददास विरचित—कविराज नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा संशोधित और परिवर्धित—सरल हिन्दी अनवाद सहित—

भैषज्य रत्नावली

संशोधित—परिवर्धित ६ ठा संस्करण—बड़े साइज के आठ सौ पृष्ठ—ग्लेज कागज—बढ़िया छपाई—मूल्य १०॥)

आयुर्वेद के दिग्गज विद्वान और पीयूषपाणि चिकित्सक कविराज नरेन्द्रनाथजी मित्र द्वारा संशोधित, परिवर्धित और गंभीर विद्वान श्री जयदेवजी विद्यालंकार द्वारा सरल हिन्दी में किये गये अनुवाद सहित 'भैषज्यरत्नावली' का पहला संस्करण हमने आज से बीस वर्ष पहले प्रकाशित किया था। गोविन्ददासजी ने अपने जीवन भरके अनुभव से सिद्ध योगों को इस रत्नहार में गूंथ दिया था, इसलिए चिकित्सा-जगत् में इसका आदर पहले ही हो गया था परंतु ग्रंथ की रचना लगभग सौ वर्ष पहले हुई थी। समय ने मनुष्यों के रहन-सहन आदि में आकाश-पाताल का अंतर कर दिया था जिससे ग्रंथ में दी गई औषधियों की मात्राएं अनुपयुक्त हो गई थीं। प्रवीणचिकित्सक तो इस त्रुटि को संभाल लेते थे परंतु नवीन और अभ्यास आरंभ करने वाले चूक जाते थे। कविराजजी ने अपने विशाल अनुभव के बलपर काल और पात्र के अनुसार मात्राएँ ठीक कर दीं तथा अपने अनेक सिद्ध योग सम्मिलित करके रत्नहार में कई लडियां बढ़ा दीं। विद्यालंकार जी के सुबोध अनुवाद ने ग्रंथ को सर्वसाधारण के लिए भी परमोपयोगी बना दिया। यही कारण है कि जब हमारी 'भैषज्यरत्नावली' प्रकाशित हुई तब चिकित्सा-जगत् आनन्दमग्न हो गया। इतने बड़े ग्रंथ के संस्करण, भारी संख्या में छापने के बाद भी, हाथोंहाथ समाप्त होने लगे। चिकित्सा के मर्मज्ञ आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्तजीने इसी बीच में अपने विशेषवचन जोड़कर ग्रंथ की शोभा और भी बढ़ा दी थी।

प्रसन्नता की बात है कि हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का इतना आदरमान देखकर कुछ प्रकाशक मित्र भी उत्साहित हुए और यत्र-तत्र अन्य 'भैषज्यरत्नावलियां' भी दीख पड़ीं। परंतु दुख की बात है कि उनके टीकाकारों ने कुछ ऐसी भूलें कर दी हैं जिनमें रोगियों का अनिष्ट हो सकता है और चिकित्सकों को अपयश मिल सकता है। इन लोगों की भूलों को हमारे इस छठे संस्करण में यत्र तत्र बना दिया है और उनके जो ठीक अनुभव सिद्ध अर्थ थे वह अर्थ दे दिये गये हैं।

हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का परिवर्धित छठा संस्करण उपस्थित है। अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय काशी के प्रधानाचार्य, परम प्रवीण और सहस्रों रोगियों को आरोग्य प्रदान करने वाले पं० लालचन्द्रजी वैद्यने इस संस्करण में पथ्यापथ्य, त्रयोदश शीताङ्गों की चिकित्सा, के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के चिकित्सक परममाननीय श्री सत्यनारायणजी शास्त्री के अनुभव आदि और बढ़ा दिए हैं। साथ ही साथ, कालाजार, निमोनिया, एस्प्रीन, एक्स-रे, थर्मामीटर और मेडिकल सर्टिफिकेट आदि के वर्णन देकर ग्रंथ को सर्वविधि से सर्वांगपूर्ण एवं अद्यतनीय (अप-टु-डेट) कर दिया है।

परिवर्द्धित — चतुर्थ संस्करण

एलोपैथिक गाइड

लेखक—डा० रामनाथ वर्मा, मूल्य १०) मात्र

पुस्तक क्या है। गागर में सागर। आज जब भारत स्वतंत्र हो चुका है और हिन्दी भाषा राष्ट्रभाषा बन गई है। आधुनिक ढंग से लिखी हुई डाक्टरी चिकित्सा की पुस्तककी अत्यन्त आवश्यकता थी जो सर्व साधारण तथा हरएक वैद्य, हकीम के काम आसके और वह रोगों का एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा पद्धति से बड़ी सरलता से इलाज कर सकें। इसी कमी का अनुभव करते हुए डाक्टरजी ने अपनी सारी आयु के अनुभव का निचोड़ इस पुस्तक में दे दिया है हमारा तो यह दावा है कि जो साधारण से साधारण व्यक्ति भी इसे एक बार देखेगा वह इसे अवश्य अपने पास सदा के लिये रखने का प्रयत्न करेगा, डाक्टरजी ने एलोपैथिक (डाक्टरी) सिद्धान्तानुसार शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों का वर्णन तथा उनका कार्य, शरीर की सूक्ष्म रचना तथा भिन्न-भिन्न तन्तुओं का वर्णन, दन्तोदगम, टीका लगवाना बच्चों के विषय में कुछ जानने योग्य बातें, रक्तसंचार, नाड़ी परीक्षा, रक्तभार, लसीका वाहिनियाँ, प्रणाली विहीन ग्रन्थियाँ, हमारा भोजन, खाद्य पदार्थों का रासायनिक संगठन भोजन बनाने के संबंध में कुछ जानने योग्य बातें, भिन्न-भिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, भोजन से रक्त की उत्पत्ति, भोजन किस स्थान पर कितनी देर रहता है, पाखाना, मूत्रपरीक्षा, मूत्र से स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव, भिन्न भिन्न आयु में का परिमाण विटेमिन्स, भिन्न भिन्न खाद्य पदार्थ और उनकी विटेमिन्स, खाद्य तालिका, पाण्डुरोग और दौर्बल्य, कब्ज, मधुमेह, अतिसार, अजीर्ण, ज्वर, गठिया, सूजाक, नाड़ी दौर्बल्य, मोटापा, क्षयरोग, गर्भावस्था, वायु, टाइफाइड रोगियों के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के आहार, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि का वर्णन, संक्रामकरोग और उनसे बचने के उपाय, औषधियों को शरीर में प्रवेश करनके भिन्न भिन्न मार्ग, व्यवस्था पत्रलेखन, औषधालय के संबंध में कुछ आवश्यक बातें, इन्जेक्शन्स (सूची भेद चिकित्सामें प्रायः सभी प्रकार के इन्जेकशन्स का वर्णन है, किन किन बीमारियों में और कौन कौन से) वैक्सीन थैरेपी, सीरम चिकित्सा, मुख्य २ रोग और उनके पूर्ण अनुभूत नुस्खे, अन्य उपयोगी नुस्खे इन्हेलेशन्स स्प्रे लिंक्टस, लिनिमेन्ट्स लोशन्स, मिक्चर्स आइन्टमेन्टस्, पिग्मेन्ट, पल्प पाऊडर्स। रोग, और उनमें प्रयोग किये जानेवाले इन्जेक्शन्स और कुछ पेटन्ट औषधियों का वर्णन, नवीन औषधियां जैसे पैनेसिलीन, सल्फोनेमाइड आदि उनके गुण दोष, प्रयोग, उपचार, औषधियों का हिन्दी अंग्रेजी नाम आदि अनेकों विषयों का इस पुस्तक में वर्णन कर दिया हैं। इसकी उपयोगिता का इसीसे पता लगता है कि दो वर्ष में तीन संस्करण इस पुस्तक के बिक चुके हैं। परिवर्धित चतुर्थ संस्करण में प्रसूति और इंजेक्शन और कई आवश्यक विषय बढ़ाये गये हैं। मूल्य १०)

ऐसी सर्वांग सुंदर, परमोपयोगी और सर्वांग संपूर्ण 'भैषज्यरत्नावली' आपको अन्यत्र नहीं मिल सकती। आज की आर्थिक अवस्था को देखते हुए मूल्य भी हमने सबसे कम—लागतमात्र रख दिया है।

... मिलने का एक मात्र पता:—मोतीलाल बनारसीदास, पुस्तक विक्रेता, नेपाली खपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस

ज्योतिष-कार्यालय के नियम

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाए जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का सुख दुःख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछनेवालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त और अपना जन्म दिन, संवत् या उमर का अन्दाज तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्र की फीस ५।) रु० से २५०) रु० तक। वर्षफल २।।) से २५) रु० तक। टेवा २।) रु०। शुद्ध विवाह-मुहूर्त प्रश्न और ग्रह-मेलापक (कुण्डली मिलान) की फीस २।) रु०। भारत से बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, ब्रह्मा, जापान, अमेरिका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्नकुंडली बनाने की फीस ७) रु०। आयुनिर्णय (अंशायुर्गणित मारकेश रोगविचारादि) २५) से १००) रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजनेवाले पत्र के साथ ही आधी फीस भेज दें। आधी फीस पेशगी आए बिना कार्यारंभ नहीं होता। पत्र-व्यवहार जहाँ तक हो सके हिन्दी राष्ट्रभाषा में होना चाहिए। बैरंग-पत्र-वापस किए जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है।

व्यापार के चांस-अनुभवसिद्ध एक तरफ के पक्के चांस कभी-कभी आते हैं। प्राचीन ढंग से तेजी मन्दी पूरी नहीं मिलती, प्रत्येक वर्ष में आनेवाले सोना, चाँदी, बाजरा, गेहूँ, रूई के २१४ चांस पूछना हों तो पेशगी ११) रु० भेजिए और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिये।

नोट—जो सज्जन हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें तो वह जवाबी कार्ड भेजकर मिलने की तारीख निश्चित कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना अम्बाला के मध्य सरहिन्द जंक्शन से गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय—ग्रीष्म में ८ से ११ तक, मध्याह्नोत्तर ४ से ६ तक। शीतकाल में १० बजे से शाम को ४ बजे तक। बाहर के [illegible] पत्र से एक ही प्रश्न करें। हमारा ज्योतिष कार्यालय (मार्तण्ड [illegible]) रेलवे स्टेशन के पास है। निवेदक—मैनेजर पं० हरिदत्तशर्मा द्विवेदी शास्त्री.

पता—राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य

अध्यक्ष—श्रीमार्तण्ड ज्योतिषकार्यालय,

कुराली (पूर्वी पंजाब)

ज्योतिष शास्त्र का अद्भुत आविष्कार

भृगुसंहिता-पद्धति

सरल भाषा में

श्रीभगवानदासजी मित्तल, नया बाजार मथुरा

की

नवीन रचना

उक्त ज्योतिषी जी ने ९ ग्रहों की गति के अनुसार जितनी भी कुण्डलियाँ बन सकती हैं, वैसी १२९६ कुण्डलियाँ बनाकर उनके फलादेश इस पुस्तक में दे दिए हैं, जो प्रायः ठीक मिलते हैं।

देश की ज्योतिष सम्बन्धी फलादेश के जितने प्राचीन ग्रन्थ हैं, सभी अपने अपने ढंग के अद्वितीय हैं किन्तु उक्त ग्रंथ सबसे निराला है।

पुस्तक उपादेय है। धड़ाधड़ बिक रही है। शीघ्रता करें अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। मूल्य केवल १०)

स्तवसार्वभौम

इस अभूतपूर्व स्तोत्र के पाठ करने से भक्तों की सम्पूर्ण विपत्तियाँ दूर होकर सब शुभ कामनाएँ पूर्ण होती हैं। निष्काम पाठ करने से अति उत्तम फल की सद्यः प्राप्ति होती है। प्रभु कृपा से यह स्तोत्र १६ वर्ष की अल्पायु में ही एक बालक द्वारा श्लोक बद्ध निर्माण हुआ था। मूल्य ।)

सर्वविधपुस्तक प्राप्ति-स्थान—

मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, बनारस।

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा

चिकित्सा-साहित्य में अभूतपूर्व ग्रन्थ डा० रामनाथ वर्मा की नई रचना

३० वर्ष की चिकित्सा का महत्वपूर्ण अनुभव रखनेवाले डा० रामनाथ वर्मा की 'एलोपैथिक गाइड' और 'एलोपैथिक निघंटु' ने चिकित्सा-साहित्य में तहलका मचा दिया है। दोनों पुस्तकें ऐसी लोकप्रिय हुई हैं कि सुदूर देहातों तक में फैल गई हैं, उनके संस्करण तैयार होते हाथों-हाथ बिक जाते हैं।

'एलोपैथिक चिकित्सा' इन्हीं डा० वर्मा की नई एवं और भी अधिक महत्वपूर्ण रचना है। इसमें उपसर्गजन्यरोग, वातरोग, मांस पेशियों के रोग, श्वासोच्छ्वास के अङ्गों के रोग, हृदय के रोग, रक्तवाहिनियों के रोग, मुंह, कंठमूल-ग्रंथि और कंठ के रोग, थूक पैदा करने वाली ग्रंथियों के रोग, अन्नप्रणाली के रोग, आमाशय के रोग, अन्त्र रोग, यकृत रोग, क्लोमग्रंथि के रोग, उदरकला के रोग, रक्त के रोग, प्लीहा के रोग, लसीका ग्रंथियों के रोग, प्रणाली-विहीन ग्रंथियों के रोग, मूत्र-ग्रंथ के रोग, चर्म रोग, अस्थियों और संधियों के रोग, नेत्र रोग, कर्ण रोग, मसूढ़ों और दांतों के रोग, स्त्री रोग और बाल रोग आदि सभी प्रमुख २ चालनी रोगों की अनुभवपूर्ण चिकित्सा विस्तार के साथ लिखी गई है। लेखक का दावा है कि कोई भी मुख्य रोग छूट नहीं पाया।

पुस्तक के प्रारम्भ में और परिशिष्ट में ऐसी कितनी ही बातें बताई गई हैं जिन्हें लाख रुपये की बात कहा जा सकता है और जिनको जान लेने के बाद कोई चिकित्सक कहीं धोखा नहीं खा सकता।

पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल और वर्णन करने की शैली पर्याप्त सुविधापूर्ण है।

महापण्डित राहुलसांकृत्यायन, पाकिस्तान में भारत के भूतपूर्व हाई कमिश्नर सरश्रीप्रकाश, महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति श्री नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् श्री सत्यकेतु विद्यालंकार आदि महानुभावों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है।

विद्यार्थी एवं चिकित्सक बन्धु इस पुस्तक की इतनी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे कि प्रथम संस्करण की अधिकांश प्रतियां छपते ही समाप्त हो गई हैं। काफी बड़ी संख्या में छपवाने के बाद भी बहुत थोड़ी प्रतियां बची हैं।

बड़े मोटे टाइप की नयनाभिराम छपाई, बढ़िया ग्लेज कागज, २०×३०×१६ के लगभग ५५० पृष्ठ, कपड़े की पक्की जिल्द—मूल्य केवल १२)।

अर्घ-मार्तण्ड

[तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ]

पञ्चाङ्गकर्ता

राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभजी कृत

इस ग्रन्थरत्न में रूई, सूत, वस्त्र, शेयर, ऊन, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा आदि धातु तथा गुड़, खांड, रसकस, इलायची, कालीमिर्च, मसाला, मूंगफली, करयाना, जवाहरात, घृत, तिल, तेल, सरसों, बाजरा, अलसी, गेहूं, चावल, खली, बिनौला, लकड़ी, रंग आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी के उत्तम अचूक सुनहरे शास्त्रों के योग सरल हिन्दी भाषा में दिल खोलकर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वह सब तेजी मन्दी के अनुभव सिद्ध गुप्त भेद २५ वर्ष की जांच के बाद लिखे गये हैं। ऐसा ग्रन्थ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में भी छपा हुआ नहीं मिलेगा। यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहें तो इसे मंगाकर देखने में देरी न करें। ग्रंथ के अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मीप्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिये हैं जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनीमानी) होकर सर्वसुख ऐश्वर्य की जिन्दगी भोग सकता है। व्यापारियों का तो यह जीवन ही है। ऐसे अनुपमग्रंथ को अविश्वास करके न मंगाना दुर्भाग्य ही होता है। व्यापार में हानि उठाये हुए व्यापारीभी यदि इस ग्रंथ को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे इस में संदेह नहीं। यह सदैव काम आनेवाली पुस्तक बढ़िया कागज तथा कपड़े की पक्की जिल्द सहित तैयार हुई है, मूल्य १०) रुपये। यह पृष्ठों का मूल्य नहीं, गुण की भेंट मात्र है। इस पुस्तक से अनेकों व्यापारियों ने लाभ उठाकर धन्यवाद पत्र भेजे हैं और बहुत सज्जनों ने इनाम देकर ग्रन्थ लेखक को सम्मानित भी किया है।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

मोतीलाल बनारसीदास पो० ब० ७५ नेपालीखपरा बनारस।

मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, बनारस।

किनारी बाजार—देहली

बाँकीपुर—पटना

[illegible]

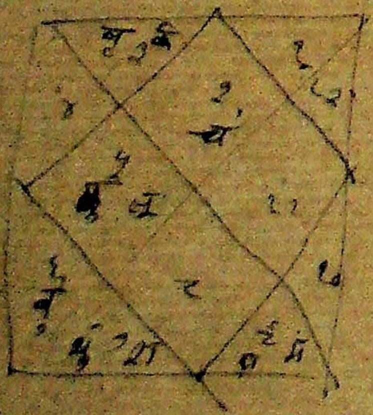

Hospi

Yogindra

J

Z